राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथो का सर्वेक्षण, भाग–२

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थो का सर्वेक्षण

भाग-२

डॉ० नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी ग्रन्थागार,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

[illegible]रण - 198[illegible]

संस्करण जून, १९८९

मूल्य चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक
भारत प्रिण्टर्स,
जोधपुर

प्रस्तावना

जोधपुर सर्वेक्षण के प्रथम भाग मे ख्यात, बात, वशावली, विगत, हाल, हकीकत और एतिहासिक काव्य-ग्रन्थो का सर्वेक्षण प्रेषित किया गया था। प्रस्तुत भाग ७ अध्यायो मे विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय मे स्फुट ऐतिहासिक काव्य कृतिया हैं जिनमे ऐतिहासिक पुरुषो के विविध काव्य कलापो का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त महाराजा मानसिंह (जोधपुर) जसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियो द्वारा रचित काव्य कृतियां भी ले ली गई है जो कि उस काल की अनेक ऐतिहासिक घटनाओ पर प्रकाश डालने के साथ-साथ कर्ता के व्यक्तित्व और उस काल की काव्य प्रणाली आदि पर भी प्रकाश डालती है। इस अध्याय मे सिलोका और गीत नामक रचनाओ की काफी बडी सख्या है जो कि इतिहास की अनेक गुत्थियो को सुलझाने म सहायक सिद्ध होती हैं। सिलोका जहाँ ऐतिहासिक घटनाओ के प्रति लोकाभिव्यक्ति का साधन बन कर आया है और जिससे जन प्रतिक्रिया को समझने मे सहायता मिलती है वहाँ वीर गीतो व कवित्तो मे चारण कवियो की आँखो देखी व सुनी हुई घटनाओ का काव्यात्मक अकन है। इसी प्रकार गजलो का भी देश वर्णन की दृष्टि से बडा महत्व है। वे उस काल के जन-जीवन और नगरा पर अच्छा प्रकाश डालती हैं। इनमें गीतों की सख्या सर्वाधिक है क्योकि मध्यकालीन डिंगल भाषा मे ये गीत हजारो की सख्या मे लिखे गए हैं। इनसे उन योद्धाओ पर भी प्रकाश पडता है जिन्होंने इतिहास को बनाने अथवा उसे बडा मोड दने मे वीरता प्रदर्शित की है और जिनका उल्लेख ख्यातो व बातो मे भी छूट गया है।

दूसरे अध्याय म भक्ति व दशन से सबधित कृतिया है। राजस्थान म सत साहित्य का खूब विकास हुआ जिसम दादू पथी, रामस्नेही, जसनाथी, विश्नोई आदि सम्प्रदाया का बडा प्रभाव जन-जीवन पर पडा। यह प्रभाव आज भी उन सम्प्रदाया के वाणी ग्रथा म देखा जा सकता है। यहाँ राम भक्ति और कृष्ण भक्ति का भी खूब प्रचार प्रसार हुआ और कृष्ण भक्ति की अनेक सुदर रचनाएँ साहित्य मे हुई जिनम यहाँ के जन जीवन का भी सुदर चित्रण मिलता है। इस काल के भक्तो का परिचय विभिन्न भक्त माला म मिलता है और कई टीकाकारो न अपनी जानकारी से उन्हें विस्तृत रूप भी दिया है। भक्त मालो की तरह सतो की परचियाँ भी लिखी गई। प्रत्येक परची मे किसी एक सत का परिचय काव्यात्मक ढग से लिखा मिलता है। यद्यपि इनम कई लोक प्रवाद व काल्पनिक बातें भी आ गई हैं पर फिर भी उनका जीवनवृत्त जानने की दृष्टि से इनका बडा उपयोग है। राजस्थान के सास्कृतिक अध्ययन हेतु ये कृतियाँ अपरिहार्य हैं।

तीसरे अध्याय म अश्व व हाथिया की चिकित्सा से सम्बधित कृतियो का परिचय है। राजस्थान के ग्रथागारा मे इस प्रकार की अनेक छोटी बडी कृतियाँ मिलती है। इनमे घोडा व हाथिया के न केवल इलाज आदि का वणन है परन्तु उन्हें पालने सवारी तथा युद्ध के लिये तयार करने आदि का भी विवरण है। खास तौर पर घोडो की जातियो और लक्षणो पर विस्तार से विचार किया गया है। यद्यपि यह विद्या हमारे देश की प्राचीन विद्याओ मे से है परन्तु मध्यकाल मे जब इनका युद्ध आदि की दृष्टि से बडा महत्व था अनुभवी लोगो ने अपने अनुभव भी इन ग्रथो मे जोड दिये हैं, जो आज भी बडे उपयोगी हैं।

चौथा अध्याय वैद्यक सम्बन्धी ग्रथो से सम्बधित हैं। इन ग्रथो मे नाडी परीक्षा और रोग के लक्षण व निदान का विस्तृत विवरण मिलता है। अमृत सागर जैसे बडे ग्रथ मे जहाँ ये बातें विस्तार से कही गई है वहाँ साधारण ग्रथों मे अनेक सस्ते नुस्खे भी लिखे हुए मिलते हैं, जिनका जन-जीवन मे खूब प्रयोग होता था। आयुर्वेद की शोध की दृष्टि से इनका बडा महत्व है क्योकि कई नुस्खे यूनानी तथा अन्य विदेशियो द्वारा ईजाद किये हुए भी इनमे सम्मिलित हैं।

पाचवें अध्याय म कुछ ज्योतिष सम्बन्धी ग्रथ हैं। यहाँ के शासको ने इस विद्या को भी खूब प्रश्रय दिया था। जयपुर के सवाई जयसिंह की देन इस

क्षेत्र में सब विख्यात हैं। इनमें तन्त्र मन्त्र सम्बन्धी कुछ बातें भी अंकित मिलती हैं जो उस समय की मान्यताओं पर प्रकाश डालती हैं।

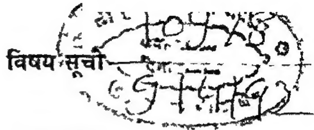
छठे अध्याय में कुछ महत्वपूर्ण ख्याता और ऐतिहासिक महत्त्व के काव्य-ग्रन्थों पर प्रकाश डाला गया है, जो यहाँ के संग्रहों में मिलते हैं और इतिहास तथा संस्कृति की दृष्टि से उपयोगी है।

सातवें अध्याय में बड़ी उपयोगी किन्तु अभी तक अछूती सामग्री का परिचय दिया गया है जो महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश जोधपुर में सुरक्षित है। यह सामग्री बहियों के रूप में है जो जनानी ड्योढ़ी से सम्बन्ध रखती है। इनमें जोधपुर के शासकों की रानियों पर होने वाले खर्च के अलावा रानियों द्वारा किये गये सार्वहितकारी निर्माण-कार्यों का प्रामाणिक ब्यौरा है। यह सामग्री उस समय के रीति रिवाज, धार्मिक मान्यताएं तथा निर्माण कार्यों आदि के अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी है।

इस प्रकार इस भाग की सामग्री न केवल इतिहास अपितु यहाँ के साहित्यिक व संस्कृति विकास के अध्ययन हेतु भी बड़ी उपयोगी है। इस भाग में ऐतिहासिक आधार वाली प्रबंधात्मक व फुटकर काव्य रचनाओं का बड़ी संख्या में उल्लेख किया गया है। साहित्यिक रचनाएं होते हुए भी इनकी विषय वस्तु ऐतिहासिक है। अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और वीर पुरुषों को इनका वर्ण्य विषय बनाया गया है जिससे मध्यकालीन समाज व जीवन आदर्शों और मान्यताओं पर तो उनसे प्रकाश पड़ता ही है साथ ही अनेक ऐसी बातों के संकेत भी मिलते हैं जो उस काल की बड़ी घटनाओं की पृष्ठभूमि को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं तथा उस काल की उथल पुथल में सामान्य योद्धाओं की भूमिका को भी उजागर करती है, इस प्रकार उस काल के जीवन्त इतिहास को समझने हेतु इस प्रकार के साहित्य का अध्ययन आज अपेक्षित है।

प्रथम भाग की तरह ही इस द्वितीय भाग के सर्वेक्षित ग्रंथों का अध्ययन प्रस्तुत करने में हुकमसिंह भाटी ने तत्परता से सहयोग दिया है। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अधिकारियों का भी बराबर सहयोग बना रहा, जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

—नारायणसिंह भाटी



विषय सूची

प्रथम अध्याय

डिंगल गीत, कवित, दोहा आदि संग्रह

दूसरा अध्याय

भक्ति व दर्शन

तीसरा अध्याय

अश्व एवं गज चिकित्सा

चौथा अध्याय

वैद्यक

पाचवा अध्याय

ज्योतिष

छठा अध्याय

ख्यात, बात आदि

सातवा अध्याय

ऐतिहासिक वहियें

प्रथम अध्याय

डिंगल गीत, कवित्त, दोहा सग्रह

१ राव अमरसिंह रो सिलोको

१ राव अमरसिंह रो सिलोको, २ रा० शो० स०, ३ ७५५, ४ २५×१०५ सेमी०, ५ २, ६ १३, ७ वि०स० १७१४, ई० सन् १६५७, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर के महाराजा गजसिंह के सबसे बडे पुत्र राव अमरसिंह के बारे मे ३६ सिलोका छदा म उनके जीवन की घटनाओ का वृत्तात है। जैसे—गजसिंह का रूष्ट होकर ज्येष्ठ पुत्र को राज्य के हक से वचित करना, अमरसिंह का बादशाह शाहजहा से मिलना व नागौर की जागीर प्राप्त करना, कई युद्धो म भाग लेना व अत मे राठौड अमरसिंह की वीरगति इत्यादि घटनाओ का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"सरसत सामिण तुझ पाएजी लागू जाणू हू घणो री बुद्धि ज मागू ।
कवर अमरसिंहजी रो कहु सिलोको, एक मना हुई साभलिस्यो सिलोको ।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। लिपि सुवाच्य है। ऐतिहासिक घटनाओ के प्रति लोक रूचि का इससे पता चलता है।

२ तेजसिंघ रा केया सवैया

१ तेजसिंघ रा केया सवैया, तेजसिंह कृत, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ७५३५, ४ ११४×२५४ सेमी०, ५ १६, ६ १४, ७ वि० स० १७४४, ई० सन् १६८७, सरखेज, ८ देव मुनि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ का पत्र लुप्त है। इसमे जैनो के चक्रवर्ती राजाओ का वृत्तात काव्य रूप मे दिया गया है। कृति का प्रारम्भ इस प्रकार से हुआ है—

" जरासंध प्रेषित दनार प्रति दूत वचन मात्रे ।
दूत दनार प्र मुखया जरासंध ते कह दवकी पुत्र दीया ज् रहा जरासंधु ॥६॥"

कृति का रचना-काल, ग्रन्थ समाप्ति पत्र १६ पर इस प्रकार लिपिबद्ध है—
'संवत सरतर वर्ष तनालीस मूरति नयर थामागा मवाई सघ मूर्या चाय चौर परिवारजन गवक रिउ गुरु मु सुप पदाई ।
इति श्री पूज्य श्री तर्जसिंघजी कृत चन्द्रयति मुद्दि वरणन सवइया ॥
पुष्पिका—
इति श्री मत् श्री पूज्य श्री तरजसिंघजी तद् न यन दवजी मुनि ना लखि । संवत १७४४ वर्षे भाग् वदि ५ दिन लिपतमिस्तु सरवज ग्राम ।"
प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । पत्र मूल हैं । अंतिम पत्र रंगीन बेलबूटों से सज्जित है । प्रारम्भ के पत्र लुप्त होने से कृति अपूर्ण है । जैन धर्म अनुशीलन हेतु कृति उपयोगी है ।

३ रायसिंह रासो आदि

१, रायसिंह रासो आदि, शकर भाट आदि, २ रा० प्रा०सं०, ३ १२८२७ ४ २१ x १६ । सेमी०, ५ ६५, ६ १३–२०, ७ वि० सं० १७४७, ई० सन् १६६०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० ग्रंथ के प्रारम्भ में सरस्वती छंद, शिव स्तुति, ग्रह विचार, माताजी का गीत आदि कृतियां संकलित हैं।
प्रारम्भ—
'बुध विविध करणी श्री बुद्धि करणी, रूप करणी, निरम्पए
वर दिवण वाळी पदम माळा ॥१॥"
१ राजा रायसिंघ बिकानेरीया रो रासो शंकर भाट कृत –
प्रस्तुत लघु काव्य बीकानेर के राजा रायसिंह (वि० सं० १६३०–१६६६) की प्रशंसा से संबंधित है—
प्रारम्भ—
'वलि आग त्रेय भुवण राय हरि हृदय सारी ।
इन्द्र करण आवीयो कव चतन [illegible] उतारो ॥१॥
अंतिम भाग—
रायसघ राया तिलक कीधो नाय विचार ।
ई दोइ दूहा जोवता, दाता वडा ससार ॥२६॥
॥ संकर भाट कह्या ॥'

२ गीत महाराणा जयसिंघ री –
प्रारम्भ—

"धजवड हथ जगड नमो तप धारी
सभळिया माडव पुरसीण, रिवासा पडते ॥१॥"

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे चोबोली कथा, चितामणी, हणमत रा दूहा, बुद्धि रासो, बारे मास रा दूहा, नागदमण, स्फुट पद आदि कृतिया सकलित हैं।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ मे लिपिबद्ध है। ग्रथ के कुछ पत्र लुप्त हैं, कुछ कीट भक्षित हैं और कुछ पत्र आपस मे चिपके हुए है। ग्रथ पर गत्ता एक ओर है। पत्र बहुत जीर्ण हैं।

४ कुण्डलिया महाराजा पदमसिंह (बीकानेर) री आदि

१ कुण्डलिया महाराजा पदमसिंह (बीकानेर) री आदि, चारण गोरधन, २ पु० प्र०, ३ २५ ४ २४३×१६ सेमी०, ५ ६, ६ १६–२१, ७ वि० स० १७१७, ई० सन् १६७४, ८ रायभाण, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १०, प्रस्तुत ४७ कुण्डलियो मे बीकानेर के महाराजा करणसिंह के पुत्र पदमसिंह के वीरतापूर्ण कार्यों व युद्धो का वृत्तात अकित है। वह धमतपुरा (धरमाट) व समूनगर आदि के युद्धो मे अपने भाई केसरीसिंह के साथ रह कर औरगजेब के पक्ष मे लडा था। फिर दक्षिण मे रहते हुए उसने कई युद्धो मे भाग लिया तथा अन्त मे तापती नदी के तट पर मराठो से लडता हुआ वि० स० १७३६ म वीरगति को प्राप्त हुआ।
प्रारम्भ—

"आपो लखोवर उकति हु सारद सुप्रसन होयहे गुण बषाण, पदम।
कमधज सुतन करन, करन तन बपाण, पदम।
अच डाकर रण पया ज रीत, अणजीत पत्रवाटपण।
दिली दळ सिधा धगत्यागि जस दापिजे, उकति गुण तेरिा क लखोवर
आपिजे ॥१॥

युद्ध सबधी कुछ कुण्डलिया उद्धृत है—
करता अमला नर कहै, द्यो धण थट्टा घाव
भागा पीछै बाहुडै तोनु रग चढाव
चढै रगे छोहि आवे हरी चापडै
लडे बुदेल राव छकियो सोहडै

अरि उपडियो आवियो उवारै
मळह् चो पुर उत अचड प्राजी करै ॥३४॥
वाजे जाणे लाहडे, भाजि न जाणे जाध
न्याय मुहगा रपीये, सावा बध सउध
सजोधा वाजीया हुवै जोध सभरि
जिहारी कुसल पगि पळा पाडै बिहारी
चाड राजा पदम पूरि वैकूठ चढै
लड रिणि प्राग न्ा भोमडा लोहडै ॥३५॥
धूम मतवाळा जिही छकी पियाला लोहि,
वणीयो रणताला विचै दळ नजाळाह् डोहि
डोहि पळन्ळा पगि कीध मगळ डळा,
वळा विळि ग्रीधणी चले रत वाहळा,
तडछीया भडा ग्रनडा घडा पूदता
घडा धूमडि वणीया पदम घूमतो ॥४५॥"

ग्रतिम—

'रहिसे नाम वियार जुग, जो लहिस रसाण
मरदा ज्या जीता मरण, ता जुग जीत वपाए,
वपाणे घणे जगि पदम आपणीयो जास चो मरण राहा कुळ जाणीयो
देव दीवाण विधि धना धन दापीयो, रिघु जुगि नाम जुग च्यारि लग
रापियो ॥४७॥

पुष्पिका—

'इति श्री कुडलीया महाराजा श्री पदमसिघजी री सपूण । सवत १७७४ वर्षे मीती वैसाख सुदि ७ रविवासर लि० महातमा रायभाण । वाचे ज्याने राम राम छै ॥ श्री शुभ भवतु ॥ कल्याण मस्तु ॥

इसके अतिरिक्त कुछ सवय साखी हरजस आदि ग्रथ म लिपिबद्ध हैं जो वाद मे अन्य व्यक्ति के हाथ से लिखे गय ह । मूल कृति की लिपि सुवाच्य है। कुछ पत्र चिपके हुए हैं । गत्ता नही है ।

५ वीर कवित्त गीत ग्रादि

१ वीर कवित्त गीत ग्रादि रतनू हमीर, रतनू साईदान आदि २ रा० ग्रा० स० ३ ६७२७ ४ १५२×१६ सेमी०, ५ ८६, ६ १८, ७ वि० स०

१७८३, ई० सन् १७२६, ८ जैनारायण ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ मे कुछ बिना शीर्षक के गीत लिपिबद्ध हैं जिनके लेखक अज्ञात हैं।

प्रारम्भ—

"सोलह सल सवर भूयग मर साहिब उहत अगम विप श्रत अणमग आदि।"

१ गीत दुरगादासजी रौ –

प्रारम्भ—

"एक सापना मू प्रानै रयो नाव बैसाण नावू न भूयै आदि।"

२ दातार सूर समवादो –

"वळ मागलि बिजमुग रायहर हय पसारै।
करण इद्र अम्पियो कवच तन हूति उतार ॥१॥"

३ सुकन बत्तीसी –

शकुन सबधी दोहे लिपिबद्ध हैं—

प्रारम्भ—

"राजा डावो जीमणो ज भरव किरणाय।
सुकन विचार पथीया पग पग लाप लहाय ॥१॥"

४ गीत अर्जुन गौड रौ –

प्रारम्भ—

पडीयो नह धरा न भपीयो पपीहा, उपाडे न लागियो आगि।
अरजन गौड तणी सारी अग लडता गयी लोहडे लागि ॥१॥"

५ पाबूजी रौ छद (मेहेजो कृत) –

प्रारम्भ—

"वस कमधज पालह वरदाई
वेगड बिरद बहण वरदाई,
वेहर रे वाका वरदाई,
वाका पाधोरणा वरदाई ॥१॥'

६ उमादे भटियाणी रा कवित्त –

प्रारम्भ—

"गारहरे राज गिर, चाडै जल रूपक चाड
मेदपाट चित्रकोट, भलो जोधपुर ममाडै ॥१॥"

७ गीत चापावत जर्तासंघ रो –

प्रारम्भ—

'कीया हमला दिली रा नाथ सतरा सु कीध हुवा ।
कराड़ा वजाय आगी वापूवारे वैंता रा ॥१॥"

८ गीत दुरगदासजी रो –

प्रारम्भ—

'गुरड दुरग प्रसण गिलण, भारथ दुरग अभग,
मोहण असुर चच पग भयण वाव रिपुरा विहग ॥१॥"

९ गीत कूपावतो रा (रतनू हमीर कृत) –

प्रारम्भ—

दवा दातारा जूजारा प्यारा बेदा अवतारा दसा,
धारा हरा वारा गिरा रूप सुरा धाम ॥१॥"

१० गीत महाराजा अभैसिंघजी रो (रतनू साइवान कृत), (गुजरात थी घरे पधारिया तिण समै रो) –

प्रारम्भ—

"घजा फरूके मैंगळा बाजै नवागळा बाज ।
घ्रीह सावळा उजळा दळा सबल त्रिसींग ॥१॥"

११ गीत महाराजा अजीतसिंघ रो –

प्रारम्भ—

'आचार चिहु छक उधरा, तरवार तूटे तेज रा
हींदूअाण अजमल भाण मळहळ, ताडवा तुरकाण ॥१॥"

१२ गीत महाराजा सिवसिंघजी अणदसिंघोत रो ईडर र राज रो, बहूक र भाव रो –

प्रारम्भ—

कूदा सागरा चढावै सुदा रोगाना सुचगा कोध ।
दीध ते उमेदा धुरा माल सेहस दोय ॥१॥"

१३ गीत रावत प्रतापसिंघजी रो –

प्रारम्भ—

"दळ मेल रहचण देवला वेडा कचेथ वचि हुवला
चित वध धारे पतो चढीयो धूण मुज धाराल ॥१॥"

इनके अतिरिक्त ग्रथ मे विवेक वार री नीसाणी, नागदमण, गूढाथ रा दूहा, हरिरस, घोडो रा बखाण रा दूहा और अनेक स्फुट कवित्त गीत सकलित है। ग्रथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है, सभवत कुछ पत्र इसके गायब हैं।

६ वीरमदे सोलकी रा दूहा

१ *वीरमदे सोलकी रा दूहा, आढा दुरसा कत* २ *रा० शा० स०,* ३ १४६६६, ४ १६ ५ × २६ सेमी०, ५ १२, ६ ८-१०, ७ *वि० स० १७८४,* ई० सन् १७२७, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० वीरमदे सोलकी की प्रशसा मे ५६ दोहे अ कित है।

प्रारम्भ—

"आपर द अभि आस सक लबोदर सारदा।
विरुद विरमद तणो चीत्र छद प्रहास ॥१॥"

अन्तिम भाग—

"जिण वाका गढ तपीया वाकै मनि विदेह
तिण ही कहीयो ददतण, वाको वीरमदेह ॥५६॥"

पुष्पिका—

'सवत १७८४ रा वैसाप वदी ९ लीपतु ? राजा श्री गुमानसिंघजी रै पठनाथ।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिखावट पत्र के एक ओर है। मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य के अध्ययन के लिय भी कृति उपयोगी है।

७ अमरसिंह रा झूलणा तथा वीरगीत आदि

१ अमरसिंह रा झूलणा तथा वीरगीत आदि, आढा किसना, आढा गोयददास, मेहडू विहारीदास आदि, २ रा० शो० स०, ३ १४६६५, ४ २० × २६ सेमी०, ५ २७, ६ ६-१२ ७ वि० स० १७८४, ई० सन् १७२७, ८ चतुरभुज, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे लिपिबद्ध कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ झूलणा राव अमरसिंह (आढा किसना कृत) —

प्रारम्भ—

"हिवडागर हीदुव राव भला मडे वजीये जग
हत वधीया नय थड जपे ।" (अपूर्ण व त्रुटित है)

२ गीत राठौड किसनदासजी रो (बाढ़ा गोपदवास कृत) –
प्रारम्भ—

पगे आंबाळा हाहाली रोठ, रणताल वेढ रचै
सुभट वेभट घट जु जू घट गाज ॥१॥"

३ दवावेत राव अमेराजजी रो (मेहडू गिरधरीदास कृत) –
प्रारम्भ—

अरवद ग चहुआण वस, हिंदुस्थान का सिणगार
गाउ राव अभमाल हीदू का अवतार, मो किमा ।

अतिम भाग—

'ला रहीम उमर दराज अठार गीरू का
पुदी मालम तर्फ राव अमैराज
दवावेत सपुरण सवत १७८४ रा असाढ सुद ८ लिखतु जो० चतुरभुज ।'
(पत्र-२३)

८ गजल चित्तौड री

१ गजल चित्तौड री, २ रा० प्रा० स०, ३ ५०० ४ १०.५×२५.५ सेमी०, ५ ३ ६ १२, ७ वि० स० १७९९, ई० सन् १७४२, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत गजल मे चित्तौड के अजेय दुग व नहर की प्रशसा की गई है । ग्रथ एक दोहे से प्रारम्भ हुआ है—

चरण चतुभुज वसर चित ठीक करै मन ठोड

अतिम भाग—

' झाली याव से झुकते झरणा भगी झुड दरपत की जोर झाई,
कहे कवि पेलयो कवि तारे गद गल गढ चीतोड की पूब गाई ।"

इति श्री चीतोड गढ री गजल सपूरण स० १७९९ मिति वैसाख सुदि ८, दिने शनवारे ।"

यह गजल एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध की गई है ।

१० बात गीत कवित सग्रह

१ बात गीत कवित सग्रह २ रा० प्रा० स०, ३ ४६७३, ४ ११.५ ×१४.५ सेमी० ५ ९७, ६ १०–१४, ७ वि० स० १७९९, ई० सन् १७४२, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ का प्रारम्भ "दाढाला वाराह री वात" से हुआ है—

'जबू दीप भरथ षड मे अठारा गिरा रा घिर अरबद सो अरबद विसडो एक छै, ईण दूहा जिसडो आदि ।"

वार्ता पूर्ण है, पहले सर्वेक्षित ग्रंथो मे आ चुकी है ।

१ राठोड हिन्दूसिंघ रो कवित्त –

रघुनाथसिंह के पुत्र राठोड हिन्दूसिंह की प्रशसा मे एक कवित्त अकित है—

प्रारम्भ—

"रिण वाला रावता वालि हेमरा वडाळी
दळ नायक दीपीयो ।"

अन्तिम भाग—

'बाटै लकाळ हिंदु कमध रिण रढाळ रघुनाथ रौ ।" (पत्र–½)

२ गीत औरगजेब पातिसाह नु –

यह औरगजेब बादशाह का एक प्रशस्ति गीत है ।

प्रारम्भ—

'खरा खजाना पेम का झूठा टिक न कोय
औरग आग सो टिकै जो तेरा बदा होय ।"

अन्तिम भाग—

"सात दीप नव खड मे मन गोब्ल अवरग साह जस ।' (पत्र–½)

३ गीत महाराजा अभैसिघ नु –

प्रस्तुत गीत जोधपुर महाराजा अभैसिंह का है ।

प्रारम्भ—

'इसो वणायो परम हीदु दुहु वाता तणै साटै
थरके अरिंद नित प्रोथी तणै आटै"

अन्तिम भाग—

"राजा दहु राहा तणी बाजी बीहु बहु राखै
राजा तणी साजी बाजी राखै सुरा राय ॥१॥" (पत्र–१)

४ राणा राजसिंह रो कवित्त –

प्रस्तुत कवित्त उदयपुर के राणा राजसिंह की प्रशसा मे लिखा गया है ।

प्रारम्भ—

"मजि धरा मेवाडियेउ मडे उदयापुर, प्रसिघ डाळ पसरे ।"

अन्तिम भाग—

"राजड नरेस जगतेस रो रचै त्रिप कीरत रो ॥१॥" (पत्र–½)

ग्रथ ग्रनक व्यक्तिया के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है, ग्रथ मे ग्रनक डिगल गीत कवित्त दोहे सकलित हैं।

११ कवित्त सग्रह

१ कवित्त सग्रह   २ रा० ना० स०   ३ ५४७०,   ४ १५×११.५ सेमी०, ५ ७४ ६ १५–२१, ७ वि० स० १८०२, ई० सन् १७४५, ८ प० गुलालचद ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ ग्रमरसिंह रौ कवित्त –

ग्रथ के प्रारम्भ मे राठौड वीर ग्रमरसिंह का एक कवित्त लिपिवद्ध है जो अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"अडाभीड राठौड साह दरगह जद ग्रायो
निजर न की पतिसाह पैर हाजर वतलायौ   आदि।"

२ प्रतापसिंघ उदावत रौ छद –

प्रतापसिंह उदावत की प्रशसा मे छद लिपिवद्ध है।

प्रारम्भ—

'लुळि लुळि पाए लागु लवोवर ग्रागेवाणी सुरा लवोदरि   ग्रादि।'
(पत्र–२)

३ राठौड रतन महेसदासोत रौ वचनिका –

यह वही कृति है जो ग्रथाक ६३४ रा गो स मे वर्णित है।

मूल ग्रथ एक व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रथ म इसक अतिरिक्त खेत्रपालजी रौ छद, गगाजी रौ गीत माताजी रौ छद, उपदेश गीत भगवानजी रौ छद महादेवजी रौ छद, ग्रायुर्वेदिक नुस्खे इत्यादि सकलित हैं।

प्रारम्भ के ८ पत्र लुप्त होने से ग्रथ ग्रपूर्ण है।

१२ नेमनाथ ग्रर ग्रमरसिंह रौ सिलोको

१ नेमनाथ ग्रर अमरसिंह रौ सिलोको   २ रा० शो० स०   ३ ३६४८, ४ १०.५×२५ सेमी०, ५ १, ६ १७, ७ १८ वीं शताब्दी का मध्य, ८ ग्रज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रथ का प्रारम्भ नेमनाथजी के सिलोके से हुआ है—

प्रारम्भ—

समरू सारद न गुणपति राणी, विमन टाळै द्यो ग्रविरल वाणी
कहु सिलोको नेमनाथ केरौ जादव वस माहि वडेरो ॥१॥'

पत्र के दूसरी ओर महीन अक्षरो मे असरसिंह का सिलोका लिपिवद्ध है, यह सिलोका प्रथाक ७५५ रा० शा० स० के समरूप है। यहा केवल सिलोके का अंतिम भाग दिया जा रहा है—

"देख्यो वयारो हिवा रौ हीयो, इण पतिसाही म ओ काम कीयौ
कुमर अमरं रौ अहकार साले कोय न उपरि छोडोजी काले
साहिब खान रौ दीवाण जुडीयौ वाघारो विमणो जी मानो
नागौर उपर चढीयो जीका नै सुर सापी अविचल दापी,
राव राठोडा सदा सुपी रापी ॥२५॥"

प्रस्तुत ग्रथ की यह कृतिया भिन्न भिन्न व्यक्तियो के हाथो से लिखी गई हैं।

१३ बारेमास रा दूहा, अमरसिंह रौ छद इत्यादि

१ बारेमास रा दूहा, अमरसिंह रौ छद इत्यादि, २ रा० शो० स०, १ ३२८, ४ १५ × १३ सेमी०, ५ १४७, ६ १४, ७ वि० स० १८०७-१८१२, ई० सन् १७५० १७५५, ८ अमीचद, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० ऐतिहासिक कतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है —

१ बारे मास रा दूहा –

प्रस्तुत छोटी सी कविता मे १२ महीनो का परम्परागत वृत्तात है। (पत्र–१)

२ अमरसिंघ रौ छद —

यह ११ छदो की रचना नागौर के शासक राव अमरसिंह राठौड की प्रशसा मे अकित है।

प्रारम्भ—

''अमरसिंघ जब मुजरै आया, पातसाह कु सीस नमाया
भया अचुक से आन हि मारी असा जाध कुण है अहकारी ॥१॥"
(पत्र–२)

ग्रथ मे इसके अतिरिक्त जलाल गाहणी री वार्ता, चौथ माता री कथा, गिरधर रा दोहा, सुदामा चरित्र आदि कृतियाँ सकलित हैं।

ग्रथ पर गत्ता वही है। प्रारम्भ के १६ पत्र गायब हैं। ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। अनेक पत्र कीट भक्षित हैं।

१४ राव सुरताण रा झूलणा, वीर गीत आदि

१ राव सुरताण रा झूलणा, वीर गीत आदि, दुरसा आढा गोयन्दास, मेहडू दला आदि २ रा० प्रा० स० ३ १४६७५, ४ १८ ५ × २८ सेमी०, ५ १७ ६ ११-१२ ७ वि० स० १८०७ १८१९, ई० सन् १७५० ६२, ८ आढा उदासिंघ, ९ राजस्थानी देवनागरी १० सिरोही के राव सुरताण के स्वाधीनता प्रिय व्यक्तित्व की प्रशंसा की गई है।

१ झूलणा राउ सुरताण रा (दुरसा कृत) –

'साम गुणेस प्रसन्न हो सुर मागेवाण
सुडाडड म सुधि वधि वरण ।"

पुष्पिका—

"सवत १८१९ आसाढ वद ११ आढा उदासींघ लिषतु।"
कुछ अन्य गीत भी उपयोगी हैं। (पत्र–९)

१५ ढोला मारू रा दूहा तथा केसरीसिंह रो सिलोको

१ ढोला मारू रा दूहा तथा केसरीसिंह रो सिलोको, २ रा० शो० स०, ३ १६३७ ४ १७ × १५ सेमी०, ५ ५६, ६ सवत १८२२, ई० सन् १७६५, ७ १३-१५, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० संग्रहीत फुटकर कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

ग्रंथ का प्रारम्भ पारसनाथ की स्तुति से हुआ है —

'श्री गणेशायनम वरकाणे वर मडणाया टाळे भव दुख तणो नयास।
सकट भाज पारसनाथ भर उठी नीत कर प्रमाण ।"

१ ढोला मारू रा दूहा –

ढोला और मरवण के प्रेम सबधित दोहे वार्ता है, प्रस्तुत कृति अधूरी है। पूर्ण वार्ता व दोहा के लिये देखें ग्रथाक ३८ और २७९ (रा०शो०स०) (पत्र–१३)

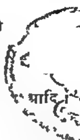
२ केसरीसिंघ (राठौड) रो सिलोको –

प्रस्तुत काव्य मे राठौड केसरीसिंह की प्रशस्ति अकित है।

प्रारम्भ—

'सरसते साजण तुज पाये लागु
जाण धणेरी बुध जी मागु
राठौड केसरीसिंघजी रो कैसु सिलोको
इक मना दे साभळ सौ लोको

गाव पीवाडी दीवाण वाडी
जठ तो तुठी सारद माता
सारद माता सवद सुणाव
गुण केसर रा सरूप गावै



अतिम—

"कवर अणदसिंघ ने केसर मलीया
घरीया नगारा वाजीया थाजा,
जठ उठीया केसर राजा ।

'इति केसरसिंहजी रो सीलोरो सपूरण, सवत १८२२ मिती माघ वदि थी । (पत्र–४)

ग्रथ मे इन कतिया के अतिरिक्त होली री फाळ री परग अमल रा सवादा नीसाणी भाग री, भाग रो छद, दादा पारसनाथजी रो सिलाको, चद कवर री वात, सदेवच्छ व सावलिंग रा दूहा माजन रा दूहा साचल रा गीत हीयाळी अर्थ सहित, (उपदेश सबधित), स्फुट मत्रादि बहुत सक्षेप म सकलित है ।

ग्रथ के अतिम पत्र पर जनियो के आदि तीर्थंकर 'रिखभजी से सबधित दोहे लिखे हैं और इन दोहा के साथ ही ग्रथ समाप्त हो जाता है ।

अत–

'सवत् १७८६ सुदि मूल त्रिक दिम फागण मासे हारीप
सरस्वती मूल स्यघ सवाई सेवग बालचद गुण गाइयो ।

ग्रथ एक ही हाथ स लिपिबद्ध किया गया है । ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है ।

१६ दोहे, गजल इत्यादि

१ दाह, गजल इत्यादि, २ रा० शो० स०, ३ ३४५, ४ ११× १५ सेमी०, ५ १०५, ६ १५ ७ वि० स० १८२८, ई० सन् १७७१ कन-कापुर, ८ फतचद, ६ राजस्थानी, देवनागरी १० ग्रथ म निम्नलिखित कृतिया सग्रहीत हैं—

१ राठौडो री झमाल –

प्रस्तुत झमाल मे राठौडा की चापावत व मेडतिया शाखा के सरदारा का गुणगान (काव्य रूप मे) किया गया है ।

प्रारम्भ—

देवा नायक वर दीयो, सु परव न हुवो सगत ।
वापाणु राठौड वस अवरल वाण उक्त ॥१॥" (पत्र-४)

२ उदयपुर री गजल –

इसमे उदयपुर शहर की प्रशसा अकित है ।

प्रारम्भ—

जपु आदि एकलिंगजी नाथ दुवारै नाथ ।
गुण उदयापुर गावता सता करो सनाथ ॥१॥" (पत्र-५)

३ गुण विवेकवार नीसाणी (गाडण केसोदास कृत) –

प्रारम्भ—

'नीसाणी—ऊकार अरूप रुप निरगुण निरवाण नाथ निरालब निराकार प्राण हदा प्राण मनछा देवी दूसरी शिव सकति समाण । (पत्र-१०½)

४ मदन राजा री बात –

प्रस्तुत पौराणिक गाथा पूर्व देश के राजा मदनसिंह की है ।

प्रारम्भ—

रिस्वानद पाये नमी सुत दच चीत धार ।
मदन सतक जो मिले, जु किनो विस्तार ॥१॥' (पत्र-१८)

बात—

'श्रीपुर नगर के विप जनानदव ती का माहे वामदेव को प्रसाद । तिहा मदन कुमार घोडो बाधे आदि ।'

ग्रंथ अलग अलग व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक कृतियाँ ग्रंथ मे सकलित हैं ।

१७ कवित्त बात दूहा आदि

१ कवित बात दूहा आदि कवि जीवण इत्यादि, २ रा० प्रा० स०, ३ ३२९१ ४ १०×११.५ सेमी० ५ २५५, ६ १३–१६ ७ वि० स० १८३५ ई० सन् १७७८ ८ प० विजचद इत्यादि ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ का प्रारभ जमराज,बावनी कृति से हुआ है । प्रारम्भ—

'ऊकार अपार भगत अधार सब नर नार ससार जप है ।
बावन अक्षर म धुर अक्षर जोत अयो तन काट तप है ।' (पत्र-१२)

१ महाराज वखतसिंह रा कवित (कवि जीवण कृत) –

य कवित्त जोधपुर के शासक महाराजा वखतसिंह की प्रशसा मे लिखा गया है।

प्रारम्भ—

'चलीय चवर चिहुचक्क, मिलीय सुर गण गणम कीय
रलीय फलीय राजेम क्लीय चित वात सु किजीय आदि"

अतिम भाग—

"हाथ वखतस भनिहारत वजा महवा गयो हा
सवाई सव रह्यो पुण होय क।" (पत्र–४)

२ सावलिगा सदवच्छ री चोपाई –

३३३ चौपाई छदो म सावलिग सदवच्छ की प्रेम-कथा वर्णित है।

प्रारम्भ—

स्व स्त्री सोहण सुभाग वचित-सील विलास
दायक जिन नायक नमु पूरण आस उतार ॥१॥
सरस वचन कवि गुण सुमति सकळ कळा दातार
सु प्रमन प्रणमु सरसती वर दाई मु विचार ॥२॥"

अतिम भाग—

दूहा— 'वेधक जो वाचे सुणे हवेत सुख वित होय
सावलिग मुख तरही मदेवच्छ सुत धाम।' (पत्र–२३)

३ राजा रिसालू रा दूहा –

राजा रिसालू की वार्ता स सबधी ५४ दोह सकलित है।

प्रारम्भ—

"काळा मृगाउ झाडिका अपअप पहलेव,
ताका हठीयो तणा आवतडा झालेव ॥१॥"

अतिम भाग—

"फूलमती हठीयो कीयो धारू कीयो सानार
दील सावलदे पाळियो राजा सोभ वुहार ॥५४॥"

४ दुर्गादास राठौड री गीत –

यह वीर दुर्गादास राठौड का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

"मडा राम रोज सारा एतो अतर भयो दुह राम उरा नरा पेखो।
राम उभा थका हणू लडीयो रिमा दुरग जसराज विण लडे देपो ॥१॥"

प्रारम्भ—

' देवा नायक वर दीयो, सु परव न हुवो सगत ।
वापाण राठौड वस, अवरल वाण उक्त ॥१॥" (पत्र-४)

२ उदयपुर री गजल –

इसमे उदयपुर शहर की प्रशसा अकित है ।

प्रारम्भ—

जपु आदि एकलिंगजी नाथ दुवारै नाथ ।
गुण उदयापुर गावता सना करो सनाथ ॥१॥" (पत्र-५)

३ गुण विवेकवार नीसाणी (गाडण केसोदास कृत) –

प्रारम्भ—

नीसाणी—ऊकार अरूप रूप निरगुण निरवाण नाथ निरालब निराकार प्राण हुदा प्राण, मनछा देवी दूसरी शिव सक्ति समाए ।" (पत्र-१०३)

४ मदन राजा री वात –

प्रस्तुत पौराणिक गाथा पूर्व देश के राजा मदनसिंह की है ।

प्रारम्भ—

रिस्वानद पाये नमी, सुत दच चीत धार ।
मदन सतक जो मिले, जु किनो किरतार ॥१॥" (पत्र-१८)

वात—

"श्रीपुर नगर के विषे जनानदन ती का माहे कामदेव को प्रसाद । तिहा मदन कुमार घोडो बाघ आदि ।'

ग्रथ अलग अलग व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । उपरोक्त कृतियो के अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक कृतिया ग्रथ मे सकलित हैं ।

१७ कवित्त वात दूहा आदि

१ कवित वात दुहा आदि, कवि जीवण इत्यादि, २ रा० प्रा० स०, ३ ३२६१, ४ १०×११५ सेमी०, ५ २५५, ६ १३–१६, ७ वि० स० १८३५ ई० सन् १७७८, ८ प० विजैचद इत्यादि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ का प्रारभ जमराज बावनी कृति से हुआ है । प्रारम्भ—

"उकार अपार भगत अधार सब नर नार ससार जपे है ।
बावन अछर मे धुर अम्मर जोत प्रयो तन काट तपे है ।' (पत्र-१२)

१ महाराज यखतसिंह रा कवित (कवि जीवण कृत) –

ये कवित्त जोधपुर के शासक महाराजा वखतसिंह की प्रशसा मे लिखा गया है।

प्रारम्भ—

'चलीय चक्र चिहुचक्क, मिलीय सुर गण गणम कीय
रलीय फलीय राजेस कलीय चित वात मु किजीय आदि"

अंतिम भाग—

' हाथ बखतस ग्रनिहारत वजो महवा गयो हा
सवाई सव रह्यौ पुण होय क।" (पत्र–४)

२ सावलिगा सदवच्छ री चोपाई –

३३३ चोपाई दोहा म सावलिग सदैवच्छ की प्रेम कथा वर्णित है।

प्रारम्भ—

"रूप सिरी सोहण सुकास, वचित-मील विलाम
दायक जिन नायक नमु पूरण श्रास उतार ॥१॥
सरम वचन कवि गुण सुमति सकळ कळा दातार
मु प्रसन प्रणमु सरसती वर दाई सु विचार ॥२॥"

अंतिम भाग—

दूहा— मेधक जो वाचे सुणे हवेत सुख चित होय
सावलिंग मुख तरही सदेवच्छ सुत धाम।" (पत्र–२३)

३ राजा रिसालू रा दूहा –

राजा रिसालू की वार्ता स सबधी ५४ दोह सकलित हैं।

प्रारम्भ—

"काळा मृगाउ काटिका ग्रपश्रप पहलेव
ताका हठीयो तणा आवतडा कालेव ॥१॥"

अन्तिम भाग—

"फूलमती हठीयो कीयो धारू कीयो सोनार
शील सावलदे पाळियो राजा साफ बुहार ॥५४॥"

४ दुर्गादास राठौड रो गीत –

यह वीर दुर्गादास राठौड का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

' मडा राम रोज सारा एतो ग्रतर मयो दुहु राम उरा नरा पखो।
राम उभा थका हणू लडीयो रिमा दुरग जसराज विण लडे देयो ॥१॥"

अंतिम भाग—

"रामायण जिण जिमो महाभारथ रचे जोध जुड़ता थका सार जोय।
देवता मानवा सुरा बीच देखता कमध री बराबर न कोय ॥४॥"

(पत्र-१)

उपरोक्त कृतियो के अतिरिक्त ग्रंथ मे अन्य अनेक साहित्यिक कृतिया लिपिबद्ध हैं।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र कीट भक्षित होने के कारण कही कही अक्षर पढने म नही आते हैं। ग्रंथ जीर्ण होने के कारण कुछ पत्र जिल्द से अलग हो गये हैं। लिपि सुवाच्य है। कही २ अक्षर बहुत महीन लिखे गये हैं। ग्रंथ के बीच के पत्र चिकने हैं।

१८ उदयपुर रौ वर्णन

१ उदयपुर रौ वरणन, २ रा० शो० स०, ३ २५७६, ४ १०.५×२४ सेमी० ५ ३ ६ १६ ७ १८ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रंथ मे उदयपुर शहर का वरणन किया गया है, जो उस समय की स्थिति को दर्शाता है।

प्रारम्भ—

समरू माता सरस्वती मागु वाणी माय
अनोपम उदयपुर तणो वरणव कहू विणाय ॥१॥"
"सहिर घणा श्रवणे सुण्या दीठा नयण अनेक,
उदयापुर नी ओपमा नही कोई आवे ऐक ॥२॥"

इसके अतिरिक्त छिनाल (कुलक्षणी स्त्री) पच्चीसी के २५ दोहे भी अंकित है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है।

१९ विमलशाह पोरवाड रौ सिलोको

१ विमलशाह पोरवाड रौ सिलोको, भोज भाट, २ रा० शो० स० ३ ३६३८, ४ १०.५×२३ सेमी०, ५ ६ ६ १५ ७ १८ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत सिलोका आबू के दण्डनायक विमलशाह पोरवाड[1] का है।

---

[1] मुहता नैणसी के अनुसार (ख्यात प्रथम भाग स० रामनारायण दूगड पृ० २२१ की पाद टिप्पणी) आबू पर विमल वसही नाम का ऋषभदेव का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाने वाला विमलशाह पोरवाड भीमदेव की ओर से दण्डनायक होकर आबू पर रहता था।

प्रारम्भ—

"सरसति सामण वे कर जोडी चाहु वरवाणे गीरनार गोडी
जाईये सेत्रुजे दिल सुध दोडी कविता ने कुसल कल्याण कोडी ॥१॥
मुरधर माहे तीरथ ताजा आबु नव कोटी ना कहीजे राजा
गाम गढ ने देवळ दरवाजा चोमुख चपा न उपर छाजा ।२॥

सिलोके मे सब प्रथम आबू पवत का वणन करते हुए पाटण का वृत्तात किया है फिर विमलशाह से राजा द्वारा धन छीनने का प्रयत्न करने पर विमल द्वारा आबू पर ऋषभदेव का मन्दिर[1] बनवाने का वृत्तात है। मामा विमलशाह को शादी करने के लिये आग्रह करता है परन्तु भानजा इस प्रस्ताव को ठुकरा देता है और विशाल मन्दिर बनने के पश्चात् जो धन बच जाता है वह भी भोज इत्यादि करके खच कर देता है।

अन्तिम भाग—

'पीतावर जोग कनकदे जायो नाम पर्णो नाम गो कहवायो
पदित विनय विमय गुण गायो भोज भाट ससार कीरत कहवायो ॥११०॥"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है पर कही कही काट छाट आवश्य है।

२० कुशलसिंह तथा महाराजा वखतसिंह रा सिलोका

१, कुशलसिंह तथा महाराजा वखतसिंह रा सिलोका बखता, लिखमीचद, २ रा० शो० स०, ३ ६०२७, ४ ११३×२४ सेमी०, ५ ७ ६ १० ११, ७ वि० स० १८४७, ई० सन् १७६०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कुशलसिंघ रो सिलोको (बखता कृत) –

यह सिलोका ग्रथाक ८८०४ रा० शो० स० मे आये सिलोके से समरूप है। *यह काव्य पूरा है। यहाँ केवल अन्तिम भाग दिया जा रहा है।*

अन्तिम भाग—

'जठै इन्द्र लोक री या लबी आवै राठौड कुसलसिंघजी सुरग सिधावै।
राणी भटीयाणी सत ज कीधो कवर जैतसिंघ नै टीको जी दीधौ ॥६७॥

[1] रासमाला (प्रथम भाग स० गोपालनारायण बहुरा पृ० १८४) यह देलवाडा का मन्दिर विमलशाह ने वि० स० १०८८ म बनवाया।

बाप सु बेटो सवायो होसी उसडा प्रवाडा बयतो सा गावै
मता नै मुरकी मोजा रा पावै घोडा नै सीरपाव मोजा रा पावै ॥६८॥

पुष्पिका—

'इति श्री राठोड कुमलसिघजी रो सिलोको सम्पूरण सवत् १८४७ से रा वर्षे मीती चत वद ११ दिन लिपत ।'' (पत्र-५)

२ राजा बपतसिघ रो सिलोको (लिखमीचद-कृत) –

प्रस्तुत सिलोका नागौर के शासक बखतसिंह का है। इसमे वर्णित है कि उक्त महाराजा ने रामसिंह से किस प्रकार राज्य अर्जित किया।

प्रारम्भ—

''राजा बपतसिघ रा कहिसु सीलोको
एक मना थं साभळज्यो लोका
सरस्वत दीसे गढ नागोरो
पतसा महमदषा कागद लीपावै आदि''

अन्तिम भाग—

''गाधी लीषमीचद सिलोको जोडो
सिलोका राजाजी रो हुवो सवायो
श्राको तो राजा बगतसिघ कवायो
बाप सु कवर हासी सवायो।

इति श्री बगतसिंह रो सिलोका सपूरण सवत १८४७।' (पत्र-२)

यह ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है।

२१ अमरसिंह तथा अजीतसिंह रो सिलोको आदि

१ अमरसिंह तथा अजीतसिंह रो सिलोको आदि २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २३६८, ४ १०×१५४ सेमी०, ५ ६०, ६ ६-१२, ७ वि० स० १८४८, ई० सन् १७९१, नेमजी दाहया, ८ नमजी ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ के प्रारम्भ मे गणित विषयक कुछ कृतिया लिपिबद्ध हैं, ऐतिहासिक कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ अमरसिघ रो सिलोको –

नागौर के शासक राठौड अमरसिंह से सम्बन्धित प्रशस्ति काव्य है। मिलावें ग्रथाक ७५५ रा० प्रा० स०।

प्रारम्भ—

"सरसती सामणि तुजि पाये जी लागु
जाण् तो घणे री बुधि जी मागुं,
राव अमरसिंघ जी को कहु शिलोको,
एक मना थ साभलज्यो लोको ॥१॥
गाव तिलवासणो महादेवजी रो थाणो,
जठै बधीयो छै राठोडा मानो,
गढ जो'याणे गजसिंघ राजा,
जिण रै तो वाजै नित प्रति बाजा ॥२॥"

अन्तिम भाग—

"चद सूरिज लगि नामोजी चाढयो,
भावसिंघ जी री साचो लडाई,
सनमुष माने पतिसा मवाई,
थानसिंहजी री साचो भलाई ॥२१॥" (पत्र—३)

२ अजीतसिंघजी रो सिलोको –

लोक-शैली मे लिखित इस काव्य मे जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बहादुरशाह प्रथम से फर्रुखशियर के समय की कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओ का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

'माता सरसती मोटी माहा माह,
तोनै तो समर्या कमणा नही काह,
कहीयो सीलोको सुणज्यो इण काजो,
महाराजा अजमल रो बषाणु राजो ॥१॥
महाराजा बैठा जालोर माहै,
पतस्या औरग ने लागु जी पाए,
अब होय कासीद दीली सु आया,
पातस्या औरग नै मोष पुहचाया ॥२॥"

अन्तिम भाग—

"समै इक्यासै आसाढ मासो,
राजाजी कीयो देवलोक वासो,

चौथे सीलावे पमाजी छाजै,
जोध्याणे वाजा अविचल गाजै ॥३१॥"

पुष्पिका--

इती श्री अजीतसिंहजी का सीलोको सपूरण। मिती वैसाप वदि ११ समत १८४८ रा लीपत नेमविज दाह्या मध्ये जसवीजे जी का चेला नमजी लीप्यो छ। काळ में लीपी छै धान को भाव रुपीयो १) सर ३६ छो ।" (१-४½)

३ तारा तबोल की वारता -

यह वही वारता है जो प्रथम रा० शा० स० में वर्णित है।

प्रारम्भ--

'मुल्तान वासी नाव ठाकुरसी बुलवादास
दूरदस की सु वारता दपि आयो सु लीपी छ।

प्रथम गुजरात सु कोस ३०० अहमदाबाद नगर छै अहमदाबाद सू कोस ३०० से आगरा छै, आगरा सु कास ३०० लाहोर छै आदि।" (पत्र-३½)

४ हीर विजय सूरि सिझाय -

यह एक लघु काव्य हीरजी नामक साधु तथा बादशाह अकबर से सम्बन्धित है। साधु के आग्रह से अकबर गौ हत्या इत्यादि बन्द करा देता है।

प्रारम्भ--

ब कर जाडी जी विनवु सारद लागु जी पाय
वाणी आपाजी निरमळी गाय स्यु तप गछराय
ते मन मोह्यो हो हीरजी अकबर कागद मोकळा
हीरजी वावन जोय तुम मिलवा आजो ।

मरती रापी चीडकली कटती रापी जी गाय
अकबर स्याह प्रति बाधने लीधो जस जग माहि ॥७॥' (पत्र-१)

५ चौरासी सीख -

इसमें ८४ नीति सम्बन्धी बातें संग्रहीत हैं। यथा--

प्रारम्भ--

आपण देवतो के उपरे द्रढ मन रापीज
जिण के गाव वसीज तिण रो भलो तावीज

इसमें लोक मान्यताओं का अच्छा परिचय मिलता है। (पत्र-५)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में सुरजजी का सिनारो, सातिनाथ जी को स्तवन, चैत वदणा, नेमनाथजी की विनती, नेमनाथजी को तवन लघु चरणाय राजनीति शास्त्र तथा अनेक मंत्रादि लिपिबद्ध है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। प्रारम्भ का एक पत्र गुम है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र कुछ बिखर हुए एवं अस्त-व्यस्त हैं। मध्यकालीन मान्यताओं के अध्ययन हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

२२ वीर गीत फुटकर कवित्त-संग्रह आदि

१ वीर गीत फुटकर कवित्त-संग्रह आदि चारण रामचंद, दवीदास दौलत राम, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ १३५११, ४ ११ ५ × १५ ५ सेमी० ५ २३०, ६ ११-१४, ७ वि० सं० १८४६, ई० सन् १७६२ जालोर ८ सेवग विरदीचंद, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में समाविष्ट कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराजा बीजेसिंघ रो —

प्रारम्भ—

रैण जमायो अमल रूक भिळा हो अगजी राजा,
सदा रैत जैत कीध ओमाया सरब ॥१॥

इसके अतिरिक्त कुछ बिना शीर्षक के गीत भी अग्रिम पत्रों में लिपिबद्ध है। फिर नासकेत की कथा दी है। पुष्पिका इस प्रकार है —

इती श्री नासकेत री कथा सपूरण लीपतु सेवग बीरधीचद्र थानमलोत लीपी जालोर म दोलतरामजी री पोथी सु ऊनारी संवत १८४६ रा भाद्रवा सुद १० सोमवार सपूरण।" लिपिबद्ध गीतों व कविता की सूची इस प्रकार है —

(२) गीत सपखरी इंद्र री
(३) गीत सपखरो जलधर री
(४) गीत सपखरो मलीनाथजी रो
(५) गीत महादेव री (चारण रामचंद्र कृत)
(६) माड रागणी रो छंद
(७) गीत सुपखरा सारदा माता रो
(८) गीत पतलाजी रो
(९) गीत करणी माता रो
(१०) गीत त्रकुटबंध श्री कृष्णजी रो (जगा खिडिया कृत)

(११) दूहा हाथिया रा
(१२) कवत करूणा रस गजसिंघ रो
(१३) कवत अमैसिंघ रौ
(४) कवत वखतसिंघ रौ
(१५) कवत विजैसिंघ रौ
(१६) कवत नव काटा रौ
(१७) गीत वखतसिंघ रा
(१८) केसोदास बावनी
(१९) देवीदास रा मह्या कवत – (१२२ नीति विषयक कवित्त)
(२०) कुडलिया जसराज हरषवलोत रौ (२८ छद ईसरदास कृत)
(२१) छद खेतरपाल जी रो
(२२) दवावेत छत्रसिंघ रामसिंघोत री
(२३) गीत मुता मोकमसीग चाणोद रा कामदारा रौ (दौलतराम कृत)
(२४) गीत भडारी मानमल रौ

इसके अतिरिक्त ग्रथ म पर्यायवाची शब्द (इद्र, नाग, चद्रमा, ज्वाला, पृथ्वी) प्रस्ताविक कवित, नाम रा कवित, फुटकर कवित सिंघ रासो, समा सार रा कवित, केहर कृत कुण्डलियाँ, देवीदास रा कवित, राग रागनियाँ, परणी री पाली, महादेव जी रा सवेया इत्यादि कृतियां निपिबद्ध है।

२३ आसथानजी रो साको, महेसदास कूँपावत रौ सीलोको इत्यादि

१ आसथानजी रो साको, महेसदास कूपावत रो सीलोको इत्यादि, २ रा० शो० स०, ३ ५४६४, ४ १०.५ × १५ सेमी०, ५ १२८ ६ १०–१२, ७ वि० स० १८५८, ई० सन् १८०१, रीया नगर ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ आसथान जी रौ साको –

ग्रथ का प्रारम्भ गणपति की स्तुति से हुआ है।

"प्रणमिप आदि सुर सव सिधाई रवनी तार्यूमति वरदाई।
वर वरण नेव पु रूप वडाई तो सगति सहय माय सरराई ॥१॥"

इस काव्य मे वर्णित है कि, राव सीहाजी के ज्येष्ठ पुत्र आस्थान ने खेड से आ कर पाली गोदावाव पर फीरोजशाह से युद्ध किया और सवत १२४८ वैशाख सुदि १५ को मारा गया।[1]

---

१ रेउ के अनुसार यह घटना १३४८ वशाख सुदि १५ में घटी (जोधपुर का इतिहास पृ० ४४)

साके का कुछ अतिम अश यहा दिया जा रहा है—

" सवत बारै अठातालीसे वरसे वैसापी पुनम प्रवित आवीया काम आसथान इम

सतावीसा सुभटा महिन एक पडै राठौड चालिस सात सोलकी सेहता,
पनरै पडे पमार पाच पडिहार वदिता ।
भाटी दस धर पडे आठ गेहलोत इधकाई,
चोहवाण पाच पग झडै गोहिल दस गोणीयां भाई
सावला सात दस बाणास झनै विप्र बीस सग्रामे सीर
आसथान क्मध साको कीया पाली गोदावाव पर ॥१॥"

२ मेहदास कूपावत रौ सिलोको –

प्रस्तुत सिलोका आसोप के ठाकुर महेशदास कुपावत (दलपत का पुत्र) का है। इसमें इनके विवाह मराठा से युद्ध करने और अत मे वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"समरू सारद ने गुणपत वरदाई बावन भैर ने चौसट मेहमाई
केसु सीलोको मेहदास केरौ पाप कुपावत मसलत माहे वडेरौ
दलपत रो कवर दूजो सादुलौ राणी नरूकी नपतेत जायौ आदि।"

यह घटना १८४७ की है जसा कि सिलोके की अतिम पक्तियो से पता चलता है—

" ठाकुर तो कीधो बैकुठ वासा जाधाणा सतारो अडियो
लूण रै खातर मेडते पडियो
आसोप मालम प्रेथवी म कीनौ राज नै पाट रतनसिंघ नै दीनौ
सवत अठारे वरस सैताले मास भाद्रवो बीज उजावळी
सीपे सुणे जिण रा दालद्र जाव रीध सीध घरमे अपतेडी आवै।"

(पत्र–५३)

मूल ग्रथ एक व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है। ग्रथ मे इसके अतिरिक्त उपदेश सबधी व अधिकाश जन कृतिया सकलित हैं।

२४ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह

१ ऐतिहासिक कवित्त सग्रह, शिवनाथ, नददास आदि, २ रा० शो० स०, ३ ३९, ४ १३४×१८५ सेमी०, ५ १११, ६ २०–२५, ७ वि० १

१८६१, ई० सन् १८०४, सोजत, ८ सवाईमल सिंघवी, ९ राजस्थानी, व्रज तथा देवनागरी १० ग्रन्थ के प्रारम्भ म अनेक फुटकर कवित्त लिपिबद्ध हैं। एतिहासिक कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित महाराजा अमंसिघ रा (शिवनाथ कृत) –

महाराजा अमरसिंह की प्रशसा मे ४ कवित्त और ■ दोहे अंकित है।

कवित प्रारम्भ—

"गुन गन आगर उजागर सुजस कर सुधा को सागर समर ओज सावधान। महादान महजान वान ऐसौ राव र की गावत सुजस सुप पावत कळानिधान॥"

दोहा प्रारम्भ—

पाप हमाऊ कल्प वृछ पारस समद सुरेस
या पाचा हु ता अधिक, अमरमल तपे नरेस ॥१॥" (पत्र–१)

२ वीर रस के कवित्त हाडा छत्रसाल के –

प्रस्तुत काव्य बूदी के स्वामी रतनसिंह हाडा के पुत्र छत्रसाल हाडा की वीरता मे सबधित है।

प्रारम्भ—

'औरग औं दारा लर ते दोउ आगरा पे केक भजि गये केक मारग एचाप म,
काहु करि बाजी दगा बाजी कर जीय राय तेऊन बच न पाये ऐसे महाकाल म, (पत्र–१)

३ वीर रस के कवित्त महाराजा अभयसिंह के –

महाराजा अभयसिंह अहमदाबाद युद्ध मे विजयी हुए उससे सबधित हैं।

प्रारम्भ—

'ऐसो जुध जीतो अभमल राज राजेसर समर,
विलद गयौ तासा मत मडी है ।१॥" (पत्र–१)

४ नाम माल (नददास कृत)

पर्यायवाची शब्द विषयक कृति।

५ पातसाह अकबर फोज राणा प्रताप उपर लायौ जिण री कविता –

६ नवाब खानखाना के कवित्त –

खानखाना से सम्बन्धित एक कवित्त है।

प्रारम्भ—

"वरम के खानखाना विरच्यो विराने देस रुमिनि की फौज मटी
पग मुप जो परी

माते माते हाथिन पै टलया हजाय मारे भानू झठा डारत
भपाय मारे झापरी ॥१॥

७ पातसाह के कवित्त –

इसमें आलमगीर और जहागीर के एक एक कवित्त हैं।

प्रारम्भ—

(आलमगीर) गढ न गडी सेदल मढल मडी सल्न वीजापुर दल मल आच्यौ–।

(जहागीर) मजन दाव औघट घाट भए जहागीर चढे गज ढालन मो–।

(पत्र–१)

८ दारासिकोह के कवित्त –

दारासिकोह की धार्मिक उदारता आदि से सम्बन्धित हैं।

प्रारम्भ—

मारे महि मडळ मे कीरत पसारी भारी दारा साही जग दिल्ली सरनाह की
नरम परम चित धरम मरम ज्ञान सरम समुद्र है निवाई बोल बाह की ।

(पत्र–$\frac{3}{2}$)

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में अनेक फुटकर कवित्त दोहे आदि कृतियाँ सकलित हैं। ग्रन्थ अपूर्ण है। मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध है। लिपि में लाल स्याही का प्रयोग है।

२५ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि सुन्दरदास आदि, २ रा० शो० स० ३ १६३३, ४ २२×१६ सेमी०, ५ ७६, ६ १३ १६ ७ वि० स० १८५६, ई० सन् १८०२, सोजत, ८ प० राजसागर ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में व्याकरण, नन्ददास कृत मान मजरी, (नाम माला), और हरिरस इत्यादि कृतिया लिपिबद्ध है।

ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) कवित्त दोहे (मारवाड के राजाओं के वशावली सम्बन्धी कवित्त)

(२) विरद सिणगार

(३) महाराजा भीमसिंह रा कवित्त

(४) गीत किशनगढ राजा राजसिंघ रो

(५) गीत तृग मेडतिया काम आया तिण रो

(६) गीत केसरीसिंघोत जोधा रो

(७) गीत सिंघवी जोधराज री
(८) गीत मा० मानसिंघजी री
(९) गीत महाराजा अजीतसिंघ री
(१०) महाराजा विजैसिंघजी री निसाणी (सुन्दरदास कृत) —
ग्रंथ निर्माण के बारे मे एक जगह लिखा है—

'संवत ग्रठार गुणसठे मधु मास पष सेत ।
मंगल दिन एकादसो लिपी रिध धन हेत ॥

लि० प० राजसागर श्री सोजत मध्ये । श्री जसवंतराजजी वाचनार्थ ।"

यह ग्रंथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है । ग्रंथ के बहुत से पत्र लुप्त और त्रुटित है ।

२६ कुशलसिंहजी री सिलोको

१ कुशलसिंहजी री सिलोको, वखता, २ रा० शो० सं०, ३ ८८०४, ४ १२ × १७ सेमी० ५ ८०, ६ ११-१५, ७ वि० सं० १८७५, ई० सन् १८१८, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० ग्रंथ के प्रारम्भ मे अनेक जैन कृतियाँ लिपिबद्ध है ।

कुशलसिंघजी रो सिलोको (वखता कृत) –

प्रस्तुत काव्य आउवा ठाकुर चापावत कुशालसिंह की प्रशसा मे लिखा गया है ।

प्रारम्भ—

'माता सरसती मोटी महमाई
तोने समरू तो दुमणा नही काई
राठोड कुसलीघजी री कहू सरलोको
एकण मन ती साभलो लोको आदि

अंतिम भाग—

इक दिन रामसींघजी बोलाज वायो
कुसलेस राठोड गाढो रीसायो
कुसलेस रीसाया भूडो जी हासी
धरती वारी मे धुंपर वेसी ।" (पत्र–३)

सिलोका अपूर्ण है । इसके अतिरिक्त ग्रंथ मे अनेक महत्वहीन कृतियें संकलित है । ग्रंथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है । ग्रंथ पर गत्ता नही है अनेक पत्र ग्रंथ से लुप्त है ।

२७ जती रासौ

१ जती रासौ, करणीदान   २ रा० प्रा० वि० प्र०   ३, २८८७२, ४ १३·७×१४ सेमी०, ५ ४, ६ १३-१४, ७ वि० स० १८७७, ई० सन् १८२०, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह दुर्लभ कृति सूरज प्रकाश काव्य के रचयिता प्रसिद्ध कवि करणीदान रचित है। इसमें जतियों के प्रति कवि ने अपने उद्गार प्रकट किये हैं। तत्कालीन जातीय विचारधारा का इसमें पता चलता है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम अथ जती रासौ कवीया करणीदान रौ कहियौ ॥ गाथा ॥

सर सर प्रफुल सरोज तर तर सुर वाणी पढ कोकल
मद धर धर छक मोन मोय जोय इसडो मुज नग्गर ॥१॥

दूहा—

पुत्री तया रै पदमणी, अदभुत रूप अपार,
आप परणवा आवसा, कमधज राज कुवार ॥१॥

अन्तिम भाग—

मिष कामल रिप्प इसा सरणै
भव सिंध सतोत्र करण भणै ॥३४॥

इति जती रासौ सपूरण स० १८७७ रा मृगसिर वद ६ ॥ अदितवार ॥"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अन्तिम ४ पत्र खाली पड़े हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

२८ गिरनार नी गजल

१ गिरनार नी गजल, कल्याण,   २ रा० प्रा० वि० प्र०,   ३ ८८४, ४ १०·७×२०·५ सेमी०,   ५ ३,   ६ १२-१३,   ७ वि० स० १८८८, ई० सन् १८३१, प्राचीन,   ८ कीर्ति कुशल,   ९ व्रज मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें गिरनार का तत्कालीन वर्णन है। कृति सांस्कृतिक अध्ययन के लिये भी उपयोगी है।

प्रारम्भ—

दूहा—

"वर दे माता वागेस्वरी गजल कहु गुण पाण
जवर जग है जीणगढ वाचा तास वर्षाण ॥१॥

महबतषान महीपती रिधु विराजे राज
गय थट हय थट गाजता सबही सारे साज ॥२॥"

प्रस्तुत काव्य मे ५९ दोहे सग्रहीत हैं। ५८वें दोहे म कृति का रचना काल इस प्रकार अंकित है—

"सवत अठार अठवीसक, महा विद बीज के दिवसेक
कीनी यात्रा गढ गिरनार, कहता गजल ग्रति सुपकार ॥५८॥"

पुष्पिका—

'इति श्री नेमनाथ गजल गिरनार नी वरणव ताकथ सिद सपूरण ॥ सवत १८८८ नावर्षे चैत्र मासे कृष्ण पक्षे पचम्या तिथौ भृगुवासरे इद गजल गिरनार ना सपूरण ॥ लिखित प० श्री १०८ श्री प० ज्ञान कुशाल जी गणिपत सिष्य प० कीर्ति कुशल लिखित ग्राम श्री आघाई मध्ये ।'

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध हुआ है। कृति पूर्ण है। पत्र खुले हैं।

२९ फुटकर कवित्त

१ फुटकर कवित्त, बारहट ग्रमर ग्रादि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ११२२, ४ २३×१२ सेमी० ५ ८८, ६ २९-३०, ७ वि० स० १८८८, ई० सन् १८३१ ८ कीर्तिकुशल, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ म ग्रनेक कृतिया सग्रहीत हैं। महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ पद्मणी वरणन –

इसमे स्त्री की ४ जाति के लक्षण बताये हैं। मध्यकालीन सौन्दय भावना और सामाजिक मान्यताएँ इससे स्पष्ट होती है।

प्रारम्भ—

"पदमनी पर स्वदते कसतूरी की सी वास
कमल गध मुपत चल भमर तजत नहि पास ॥१॥

कवित्त—

पदम गध पदमनी भमर तिहु फेर भमतह
चद वदन चहु रग ग्रग चदन सुवासह आदि।

अतिम भाग—

ता ससा पुरस मुप जोग नारि पदमावति सोडे
हिरण पुरस मुष जाग नारि चित्राणि हित जोडे

वपभ पुरसह हस्तनी भोग त्यो ही सुष पावै
अस्व पुरूप सजोग नारि शंखिनी सुहाव
मृग शशिक वृषभ अस तुरग ज्याति च्यार पुरसा तणी
अल्लावदीन सुलतान सुणि जाति च्यार नारी तणी ॥८॥"

२ जाम लाखे री निसाणी –

भादेसर के लाखा जाम की प्रशसा मे ३० नीसाणी छद सग्रहीत है।

प्रारम्भ—

'मो भर भवानी मेहरवानी अपर आगेवान
वापाणण लाइक सुर विनाइक दे सवाइक दान ॥१॥

अन्तिम भाग—

हुनू दीय साज धनी दौलत सत्र दत सवाई
असमान जमी ताम अमर जाम नाम न जाइ ॥३०॥"

३ लाखा फुलाणी ना कवित्त –

लाखे फुलानी की प्रशसा मे ५ छप्पय कवित्त सग्रहीत है।

प्रारम्भ—

"प्रथम चउदह कोडि सेनगह मिळै सुभट्टा
घर पूरब उमड वहै सिरवाट उवट्टा ॥१॥"

४ दातार सूर नो सवादो (बारट सकर) –

यह २३ छदो की छोटी सी कविता दातार और सूर के बीच होने वाले विवाद पर लिखी गई है। देखें ग्रथाक ६७२७, रा० शो० स०। प्रस्तुत कृति का अन्तिम पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है, इसमे केवल १५ छद ही है।

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे अनेक छद दोहे, अमल नो छद, वल्लभाचार्य विरचित मधुराष्टक, गोडी पार्श्वनाथ नो छद, इश्क चिमन, राम भैरव नो छद, राधा कृष्ण सवाद, उपदेश चितामणी, माताजी रो छद, भारती नो स्तोत्र, कोटेसर नो छद इत्यादि कृतिया सकलित है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। प्रारम्भ और अन्तिम एक पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है। पत्र कुछ कीट भक्षित हैं। ग्रथ पर गत्ता नही है।

३० कवित्त कथा सग्रह

३ कवित्त कथा सग्रह, चतुभुजदास आदि २ रा० शो० स० ३ ६६३२, ४ १५×१४ ५ सेमी०, ५ १७३ ६ १३-१६, ■ वि० स० १८६२ ६

ई० सन् १८३५-३७, सिरोही, ८ पचोली जैकिसन, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ प्रस्ताविक कवित्त –

प्रारम्भ मे कुछ प्रस्ताविक कवित्त लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

'प्रथम जग्य के हुत आपदा सत्रु सिंघारन
मित्र व्याह कुन होय दाम तैं काम सुधारन ॥१॥"

आगे महाराजा मानसिंह कृत एक कवित्त दिया गया है।

' वेरी मारण मीरणा राज काज इदर राज।
मैं तो सरणैं नाथ के नाथ सुदार काज ॥"

२ मारकडे पुराण टीका का अनुवाद –

इसम मारकडे पुराण काव्य की टीका का ग्रथ लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ-—

"श्री सारदाय नम श्री मारकडे पुराण माहे श्री भगवती जी री आधान सतसी पाठ छै तिण री टीका री अर्थ लिषते अध्याय १३ छ तिणरी विगत—१ मधुकीटभ री बध, २ महेषो सुर सैंया बध ३ महेषासुर बध, आदि।"

पुष्पिका—

"सुभ भयतु किल्याणम सतु सपुरण १८९२ रा
चैत मासैं सुकल पषे तीथ १३ बुधवार"

३ मधुमालती कथा (चतुरभुज दास) –

यह मधु और मालती की प्रेम वार्ता कथा रूप म है। मिलावें प्रथाक ७८, रा० शो० स०। कृति अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"वर विस्वतनयावर पाउ सक्र-सुत, गणपति सिर नवाऊ आदि'

पुष्पिका—

'सयत १८९४ रा आसोज सुद ९ असटमी वार शनीसर वार सिरोई नगर मध्ये लीपी लिखन पचोली जैकिसनजी सुत देवकीसन माथुर जात नारनोलीया पाची पत सुरजमाणजी री देप देप उतारी ।"

प्रस्तुत ग्रन्थ दो व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। इसक अतिरिक्त ग्रन्थ में स्फुट दोहे कुण्डलियाँ तथा नवरात्रि की कथा लिपिबद्ध हैं।

३१ चापावत केशवदास रो झमाल आदि

१ चापावत केशवदास री झमाल आदि २ रा० शो० स०, ३ १६२४६, ४ ३०×२३ ५ सेमी०, ५ २५, ६ १७ २४, ७ वि० स० १८९७, ई० सन् १८४० ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० विवरण क्रम इस प्रकार है—
चापावत केशवदास रो झमाल –

प्रस्तुत झमाल काव्य चापावत माडण के पुत्र केशवदास की प्रशसा मे है। इसके वशज केशवदासोत चापावत कहलाये।

प्रारम्भ—

'देवा नायक वर देयो सुप्रसनु हुओ सगत
वायाणु राठोड वस अवरल वाणा उक्त
अना साचोजा अपरा, समर सगत गुणपन हो मै ज्या सपरा
पैहला मर आक चारघ जलघर पीर ती आदि।"

पत्र लुप्त होने से झमाल अपूर्ण है। इसके अतिरिक्त सिणगार झमाल, सीह छत्तीसी, सूर छत्तीसी विदर बत्तीसी, दातार बावनी, मुरजात भूषण आदि बाकीदास कृत कुछ कृतिया सग्रहीत है। ग्रथ अनेक व्यक्तिया द्वारा लिपिबद्ध है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

३२ फुटकर कवित्त इत्यादि

१ फुटकर कवित्त इत्यादि (१) बखता खडिया लालस रामदास, सेतबर अमरचदजी, २ रा० शो० स०, ३ ६१८, ४ १७×१२ सेमी० ५ ६२, ६ १८, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे ऐतिहासिक कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ महाराजा अमरसिहजी रा कवित्त (बखता खिडिया) –

महाराजा की प्रशसा से सम्बधित १६६ कवित्त है, अन्त मे महाराजा द्वारा भाग लिये युद्धो इत्यादि का वर्णन है।

प्रारम्भ—

"आद सिवत इसरी मगल करी चितामण
कामधेन पोरछो तुही पारस सिव भामण ॥१॥" (पत्र–३७)

२ इँदा रा कवित्त (लालस रामदास कृत) –

पडिहार इदो की उपलब्धिया व गुण गान से सम्बधित २५ कवित्त हैं, अन्त मे मुगलो से युद्ध कर मडोर पर अधिकार करने इत्यादि का वृत्तात है।

प्रारम्भ—

"गणपत उकत गहोर यदन गयरवड विराज
महा रदन एक मह मदन एक मडह् साजै ॥१॥" (पत्र-६)

३ चहुवान सेरसिंह रा कवित्त (अमरचन्द कृत) –

चौहान शेरसिंह के झाबर शेख से युद्ध करने सम्बन्धित १६ कवित्त हैं।

प्रारम्भ—

"सुघ उदार सरस्वति, सहज मण परस कोमल
वार एण गुण चुवण, धर गिर थानक धमल ॥१॥" (पत्र-४)

४ हाला झाला री कुण्डलीयाँ –

हाला झाला की वीरता से सम्बन्धित २७ कुण्डलिया हैं।

"हाला झाला होवसी सीहा ज लयो वध
के धर पली आपणी क आपाणी पर हुध ॥१॥" (पत्र-६)

५ गीत खेतपालजी रो (अज्ञात कर्तृक) –

प्रारम्भ—

"तरा उ धरा सिखर गिरा आदि।" (पत्र-२)

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

३३ कवित्त सग्रह

१ कवित्त सग्रह, २ रा० प्रो० सं० ३ ६७१५, ४ २४ ४ × १६ सेमी०, ५ २१८, ६ ७-३१, ७ १६वीं शताब्दी का ग्रन्थ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, व्रज, १० अनेक विषयों से सम्बन्धित इस ग्रन्थ में कई कवियों के कवित्त सकलित किये हुए हैं। यहाँ उन कवियों के केवल नाम दिये जा रहे हैं। अधिकांश कवित्त रीति काल के है तथा कई कवित्त ऐतिहासिक भी हैं।

प्रारम्भ—

"कवित्त केसवदासजी रा—
सुल से फुल सुवास कुवास सी
माकसी से भये मौन समागे।"

कवियों के नाम इस प्रकार हैं—

१ कवि जग ठाकरा	२ कवि राव	३ कवि सोमनाथ
४ कवि घनश्याम	५ कवि सेनापत	६ कवि रसखान
७ कवि चितामन	८ कवि पुसी	९ कवि नीलाधर

१० कवि सेख	११ कवि सीपत	१२ कवि निवाज
१३ कवि वेणी	१४ कवि नगरदारा	१५ कवि अभिरामन
१६ कवि गग	१७ कवि जेराम	१८ कवि बलभद्र
१९ कवि निपट निरजन	२० कवि श्रीधर	२१ कवि नरोतम
२२ कवि सेन	२३ कवि सुन्दर	२४ कवि नाथ सागर
२५ कवि सखी अखरा	२६ कवि आनद	२७ कवि मनराम
२८ कवि नीलकण्ड	२९ कवि छिनपाल	३० कवि पारम
३१ कवि व द	३२ कवि ममारग	३३ कवि माधव
३४ कवि रसरास	३५ कवि मडन	३६ कवि आलम
३७ कवि गघ	३८ कवि गुपाल	३९ कवि परवत
४० कवि चद	४१ कवि भीम	४२ कवि परसाद
४३ कवि मुनीनाथ	४४ कवि परमराम	४५ कवि बिहारी
४६ कवि दयानिध	४७ कवि सुजान	४८ कवि कल्याण
४९ कवि निहाल	५० कवि कालदास	५१ कवि देव
५२ कवि भूपण	५३ कवि उदनाथ	५४ कवि मेहमद
५५ कवि मोतीराम	५६ कवि कासीराम	५७ कवि सायब
५८ कवि रिझवार	५९ कवि भरमी	६० कवि किसोर
६१ कवि सुखदेव	६२ कवि रग खान	६३ कवि भरू
६४ कवि राजाराम	६५ कवि ठाकुर	६६ कवि करीम
६७ कवि ताप	६८ कवि गोकन	६९ कवि सिरोमण
७० कवि जगदीस	७१ कवि दुलह	७२ कवि घनीराम
७३ कवि नतुर	७४ कवि दतराम	७५ कवि सामात
७६ कवि प्रहलाद	७७ कवि नद नागर	७८ कवि हमीर
७९ कवि सिघारा	८० कवि गगाधर	८१ कवि रामकरण (नागोर)
८२ कवि रसकनाथ	८३ कवि मुरार	
८४ कवि सेखर	८५ कवि दास	८६ कवि गिरधर
८७ कवि बलदेव	८८ कवि सेवक	८९ कवि रघोनाथ
९० कवि द्विजदेव	९१ कवि नन्द	९२ कवि राज
९३ कवि पदमाकर	९४ कवि कवीद्र	९५ कवि सीतल
९६ कवि महाराजा मानसिंह	९७ कवि गोपाल	९८ कवि महाराज जसवतसिंह
	९९ कवि जायस लाडूनाथ	

१००	कवि गाप	१०१	कवि रामानन्द	१०२	कवि सातमन
१०३	कवि सबलानन्द	१०४	कवि राम दुरगारा	१०५	कवि ईश्वर
१०६	कवि रूपरा	१०७	कवि गुमर	१०८	कवि हनुमान
१०६	कवि हरीदास	११०	कवि मणिदेव	१११	कवि हरिवंश
११२	कवि परमरा	११३	कवि प्रमाण्र	११४	कवि सूरज
११५	कवि दयादेव	११६	कवि गुसीराम	११७	कवि सुबत
११८	कवि लाल	११६	कवि कुंदन	१२०	कवि भगवान
१२१	कवि महर	१२२	कवि याधा	१२३	कवि मुरलीधर
१२४	कवि तिमुरा	१२५	कवि राम	१२६	कवि ससीनाथ
१२७	कवि करणीदान	१२८	कवि गुरत	१२६	कवि कादरा
१३०	कवि सरदार	१३१	कवि नरस	१३२	कवि रासुस
१३३	कवि रघुनाथ री मा	१३४	कवि प्रेम	१३५	कवि सुखराम

इसमे प्रत्येक कवि की कविता नये पृष्ठ से प्रारम्भ हुई है। इसके अतिरिक्त भी दोहे, कवित्त आदि ग्रन्थ मे सकलित हैं। प्रस्तुत ये सिला ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है जिस पर चमडे का गत्ता है। मध्यकालीन साहित्य की दृष्टि से ग्रन्थ महत्वपूर्ण है।

३४ पाबूजी के दोहे, सालिहोत्र व ऐतिहासिक घटनाए आदि

१ पाबूजी के दोहे, सालिहोत्र व एतिहासिक घटनाए आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३५५०, ४ १५×७×२ सेमी० ५ ६२ ६ २०, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ कपि दिया, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) पाबूजी रा दूहा, (२) गजल गढ चित्तोड री तथा (३) शालिहोत्र के अतिरिक्त निम्न एतिहासिक घटनाए दी गई हैं—

(४) ऐतिहासिक घटनाए —

ग्रन्थ के अन्त मे कुछ एतिहासिक घटनाए उनके सवत इत्यादि दिये हैं यथा—

"(अ) सवत १७४६ वर्ष पास वदि निवाब अमाइतखान री बटो रावण यहो तिण नु मेमेतिय जाध पाडा सु मारीयो।

(आ) सवत १७४६ वर्षे पोस माहे महाराज अजीतसिंघजी अजमेर गया, महा वदि ८ तुरक सिजीखान सु मिळीया ।

(ऋ) सवत १७४६ माह फागुण माहे गढ सिवाणे गया, अजीतसिघजी उरा आया स० १७४६ मगसिर सुदि ५ गढ विजै गढ गोढा नु मारनै लीधो मुजाणसिघ केशरीसिघात लीधो ।

(ई) मवत १७४६ माहे राजा मुजाणसिघजी सु सोभ्रत जैतारण उतरिया।

(उ) सवत १७४६ फागुण वदि ४ दिने तुरक लसकरीपान सोभ्रत प्रायो।

(ऊ) १७४६ चैत्र सुदि १४ दिन नाथजी री गुढो लसकरीपान पोसीयो ।

(ए) सवत १७५५ आसोज वदि १२ माह राणो जैसिघजी देवलोक विस हूवा ।

(ऐ) सवत १७३५ वर्षे चैत वदि ७ वार शनी निबाव बहादरपान मेडते प्रायो ।

(ओ) सवत १७४३ रा चैत्र माहे दुर्गादास अकबर प्राया ।

(औ) सवत १८४८ रा फागुण सुद ३ वगडी महाराज कु वर जालिमसिघजी वगडी प्राया, वगडी रै लावा नै दुष दीनौ घणो, रू० १७ हजार लीया, पछै चैत सुद ३ कूच कीयो सो बीलाडे जायै पडीया।

इसके अतिरिक्त ग्रथ म अनेक महत्वहीन कृतिया भी सग्रहीत हैं। ग्रथ के अधिकाश पत्र लुप्त होने व त्रुटित होन से अपूर्ण है। ग्रथ पर गतर जीर्ण है। ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

३५ महाराजा भीमसिह रा कवित्त

१ महाराजा भीमसिह रा कवित्त, विठू उमेद, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१७, ४ २१×१६ ५ सेमी०, ५ १३, ६ २३ २५, ७ १९वी शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ के प्रारम्भ म राजस्थानी छद शास्त्र से सम्बधित कृति लिपिबद्ध है। (पत्र–२)

भीमसिह रा कवित्त –

प्रारम्भ के छप्पया मे जोधपुर के महाराजा भीमसिह के परिवार की जानकारी दी है। फिर उनकी कुछ उपलब्धियो को प्रकट किया गया है।

प्रारम्भ—

'करै कमधज, जोधो दस वरस जळाहळ
तीन मास ईम तवै वीस दिन पाच वळाहळ,
फता सुतन घर फबै जगत दीन दुलहो जोवै
दाळद कविया दबै, माज सुरपत जू मर्गे

किलमाण दीपण वाळा वटक मुरधर ग्रावण मटियौ ।
अठार समत साठे वरस भीम सुरपुर भेटीयौ ॥१॥"

अतिम भाग—

"भीव तणो भणकार सुण नागौर सिगाली   ॥७॥"

कृति पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। इसके अतिरिक्त छद शास्त्र सम्बन्धी अपूर्ण कृति रूप दीप सग्रहीत है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ स लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ अपूर्ण है।

३६ फुटकर गीत कवित्त सग्रह

१ फुटकर गीत कवित्त सग्रह   २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१३ ४ २४ × १६ सेमी०, ५ ४३ ६ २३ २५ ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रारम्भ मे शृगार और भक्ति सम्बन्धी कवित्त दोहे, सवये इत्यादि लिपिबद्ध हैं तदुपरान्त कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियो पर कवित्त हैं। कृतियो का क्रम इस प्रकार है—

१ सीगार कवत

२ गीत प्रस्तावीक मारणोर (बीकानेर कल्याणदान की मृत्यु पर लिखा)

३ क्वत पोपरणा री

४ गीत प्रोयता री

५ कवत सेवगजी थानमलजी री

६ क्वत गुसाईजी रा

७ कवत पारखार आसराज री

८ गीत मोदी टीकमदास री

९ गीत भाटी सुरजमल री

१० क्वत कोठारिया रा

इसके अतिरिक्त ग्रथ म प्रस्ताविक क्वित, चौथ माताजी री छद, गूढाथ रा दोहा, फुटकर दोहा, कळजुग री निसाणी वीसर जानी रासौ इत्यादि कृतिया सकलित हैं। ग्रन्थ पर गत्ता नही है। प्रारम्भ व अन्त मे पत्र लुप्त होने स ग्रन्थ अपूर्ण है। लिखावट अशुद्ध है।

३७ राठौडा री रास

१ राठोडा री रास, २ रा० शो० स०, ३ १७६९, ४ १२ × २३ ५ समी०, ५ ५ ६ १०, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ७ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत काव्य मे राठौड राजवशो की प्रशस्ति है।

प्रारम्भ—

पहिलौ विनायक दवता वीनवु हु लुळि लुळि लागु माता सारद रै पायमि,
राम आपुजी राठौड रो माने भूलो चूको आखर देज्यो समदायमि।'

इसमे दूदा मेडतिया, राव मालदेव, बगडी मे पृथ्वीसिह, जैतारण के जता, सोजत के वयर महेश, डीडवाणा के कू पा और मडता के पीथा इत्यादि राठौडा के वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण अकित है।

अन्तिम भाग—

"यगडी थारे जी गोखे मातो उविर ही धू वा धरकोल की
माया री माणी राणी रालडी हाथ रा मोत्या राणी हसती दात की।
सरसो रहै दाजी यो मरता।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नही है।

३८ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत, कवित्त सग्रह, करनीदान, हरीरामदास, नगजी कविया, आडा जवानजी मेहडु महादान आदि, २ रा० शो० स०, ३ १३५०६, ४ २६ × १७ सेमी०, ५ , ६ १६-२३, ७ वि० स० १९१३ ई० सन् १८५६, ८ वैष्णव निरजन, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ मे कुछ स्फुट कवित्त लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेसाय नम, श्री भगवत देवाय नमे, श्री सुरसती जी नमे, श्री जोगमाया नमे ।"

१ विरद सगार (करनीदन कृत) –

मिलावें ग्रथाक २०६, रा० शो० स०। (पत्र–६$\frac{3}{2}$)

२ छद रत्नावली (हरीरामदास) –

भक्ति सम्बन्धी काव्य कृति है। इसम छदो के लक्षण दिये गये है।

प्रारम्भ—

दोहा छद—

"गुरू गनपति गोविंद को, नाम सीस हरि राम
पिंगल मति भाषा विष, रचत रुचिर पर काम ॥१॥"

पुष्पिका—

'इति श्री हरिरामदास निरजुनी डोडवाणीया कृत छद रत्नावली नाम ग्रथ सपूरणम। यथ लिपिकृत वैष्णव निरजन हरीदासोत वृक्त पठनाय बारठ सेणीदान समत १९१३ का मीति असाढ सुदि १४ वार बुधिवासरे।" (पत्र–१४)

३ गीत नगजी कवियां री केयोडो –
प्रारम्भ—

' रोसी तो सयायो नीजर वीमह्र दीपता
माम धम देपता जगत सायी ॥१॥"

४ गीत –
प्रारम्भ—

"दल सवल दीपण उलटीया दोल,
पट घटका करतो दळ पाय ॥१॥"

५ गीत महाराजा तखतसिंह री –
प्रारम्भ—

"गजा याट घुमे भडा ग्राज साजा गरव
उरडछत्र चढे फौजा ग्ररडीग, आप री राज ॥१॥"

६ गीत कवर छत्रसिंह बामोणरा री (ग्राढा जवानजी कृत) –
प्रारम्भ—

जागी ज्यालो तोपपाना वाळी, जुभाउ नीयसे जगी
ताळी पुले पत्र पाळी कपाळी ताडीस वाघ आळी ॥१॥

७ गीत पोकरणा ठाकुर बभुतसिंह री –
प्रारम्भ—

छडे ऐल चौक समत वरस ईक गणीसै
वार नीमाणी बीस वावीसे, दूजो को आधार दीसे ॥१॥"

८ निसाणी महाराजा विजसिंहजी री –
प्रारम्भ—

"जोध प्रतपी जोधपुर, बोहो तेज ग्रपार
वरदायक वकतेस का भुज आके ग्रधारे ॥१॥'

९ पोकरण रा ठाकरों देवीसिंध महासिंघजी रा री झमाल –
प्रारम्भ—

"भाटी केसोदासजी देवनायक कवर दीयो सु प्रसन होय सगत
वापाणु राठोड वस ग्रवरल वाण उक्त ।"

१० उदयपुर राणा भीमसिंह री झमाल (मेहडु महादास कृत) –
प्रारम्भ—

झड लागा ग्रतरा झीलम जोप हुवा जाण
भीमाजल ग्रसीयो भवर महला ॥'

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ मे पृथ्वीराज के दोहे, वृद सतसई (कवि वृद कृत), शनिशर की कथा, स्फुट दोहे आदि सकलित हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध है। अनेक पत्र त्रुटित हैं तथा पानी से भीग हुए हैं।

३६ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, आढा किसना, आढा मुणजी, मेहडु महादान और चुतराराम आदि, २ रा० शा० स० ३ ६०४८, ४ १७.४ × १५.५ सेमी०, ५ १६० ६ १२-१६, ७ वि० स० १६२८, ई० सन् १८७१ ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ मे अनेक अनैतिहासिक कवित्त आदि लिपिबद्ध हैं ऐतिहासिक काव्यो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत ठाकर सुरताणसीगजी रौ (आढा किसना कृत)
२ कवित्त वीरमदे रा
३ कवित्त गिगोजी मदराजजी रा (आढा मुणजी कृत)
४ गीत वीरमदेजी रा (भादा क्रपाराम कृत)
५ कवित्त राणा भीमसिंघ रा (मेहडु महादान कृत)
६ गीत महाराज कुमार जसवतसिंघ रा
७ गीत बदूक रा
८ गीत महाराज गजसिंघ रौ (चुतरराम कृत)

इनके अतिरिक्त अनेक बिना शीर्षक के तथा अपूर्ण कवित्त ग्रन्थ मे सकलित हैं। ग्रथ के अनेक पत्र फटे और भीग हुए हैं। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है, लिपि सुवाच्य नही है।

४० ऐतिहासिक कवित्त सग्रह

१ एतिहासिक कवित्त सग्रह आदि, चनदान कृपाराम आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३७८४, ४ १३ × १६ सेमी०, ५ , ६ ६-१०, ७ वि० स० १६३७, ई० सन् १८८०, ८ कृपाराम, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ म छद रत्नावली कृति लिपिबद्ध है जो पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है।

१ मानसींघजी रौ कवित्त (वणसूर चनदान कृत) –

प्रस्तुत शोक काव्य महाराजा मानसिंह (जोधपुर) की मृत्यु पर रचित है।

प्रारम्भ—

"समत बुरौ उगणीस सईको वरस सुणायौ
रूत वरषा नभ मास, सुक्ल पष दुय सरसायौ

वळे इगारस वडी वार निस नाथ वचाणी
रही रात पट घडी, रसा थळ घोर रचाणी

अंतिम भाग—

चौवीस साप चहुवाण री, अपोज वान उजालिया,
सिव उरी आद नीवज सहज उर सधीर देपलिया ॥३१॥"

(पत्र-३१)

२ जैसलमेर महाराजा री कवत्त –

जैसलमेर के रावल वैरीसालसिंह से सम्बन्धित एक कवित्त लिया है।

प्रारम्भ—

भोर घनघोर ज्या चकोर कंत छत्र पत
मौर मकरद मेघ राग ज् मलार की

३ जसलमेर रावल वैरीसालजी रा कवित्त (कृपाराम कृत) –

इन २० छप्पय कवित्त मे जैसलमेर रावल वैरीसाल (वि० स० १६२१ १६४७) की प्रशस्ति है।

प्रारम्भ—

राजन के राज वरीसाल महाराज तोने
दिवस दियारी ग्रेसो उछब करायो है।
ग्रनत कृपाल नम नारी वेस वारी
नृत्य करत अलाप सोर ग्रद्भुत मचायो है ॥१॥

ग्रतिम—

अहा वरीसाल महाराज ग्रहरि रूप ह्वै कता
पृथ्वी गजराज श्रव कुरव दरावता ॥२०॥ (पत्र-८३/४)

४ म्हाराज जसवतसिघजी रा कवित्त –

जोधपुर के शासक महाराजा जसवतसिंह से सम्बन्धित १२ छप्पय कवित्त लिपिवद्ध हैं।

प्रारम्भ—

वीकम करन हरचद भोज ग्राददे के हुते
सो विला गये कीरत सुनत हैं ॥१॥

ग्रन्तिम भाग—

समता न पावै वार वार हार जावै तो हू
हर ना तजाव यही घ्याल म रहाव है ॥१२॥ (पत्र-५)

/

५ जसल छत्रसीघजी रो कवित्त –

प्रारम्भ—

उगै गेडासी चर विडग गेदि मान धीम
सेम फुन सीस घर भार काज डोलेला ॥१॥ (पत्र–१)

इसके अतिरिक्त ग्रथ म जोगमाया रा कवित्त, कवि कुल कठा भरण, विहारी दूहा, वीर मायए री नीसाणी, व्यगाथ कौमदी रा कवित्त, अलकार रत्नाकर रा दूहा इत्यादि कृतिया सकलित ह। एक जगह पुष्पिका इस प्रकार दी है—

"१६३७ रा फागण सुद १३ दा० कृपाराम रा छ श्री रस्तु।"

ग्रथ अनक व्यत्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। बीच बीच मे अनेक पत्र रिक्त पड हैं। पत्र नुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गत्ता नही है।

४१ छप्पय दूहा कवित्त

१ छप्पय दूहा कवित्त, मानसिंह २ रा० शो० स०, ३ १३६६४, ४ १३ ५ × १७ सेमी० ५ ६, ६ ११, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात ६ राजस्थानी, दवनागरी, १० महाराजा मानसिंह कृत कृष्ण, विष्णु, गोरखनाथ क छप्पय, दूहे, कवित्त इत्यादि सकलित है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम छप्प—

दुरद वनद मडत प्रचड सिंदुर ललाट धर
रुचि कपोल मिल कर तम पङ्कज विलास बर ॥

अन्तिम भाग मे पहेलिया दी गई ह—

हरीया मू ग मडोर रा जैसलमर जवार।
म्ह कीड़ू कुटा पीचडी कुटणहार गीवार ॥
सोना गेरो नगरी, कुपा हदी गई।
दुटा मारा सिरक पथरणा, परणी थारी जाई ॥ सपुरण छ ॥

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गत्ता नही है।

४२ महाराज तखतसिंह के स्वर्गवास पर कवित्त

१ महाराज तखतसिंह के स्वर्गवास पर कवित्त, वैजनाथ खिडिया, २ रा० शो० स७, ३ १४६७६, ४ १५ ५ × २० सेमी० ५ १, ६ ११,

७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर के शासक महाराजा तखतसिंह के स्वर्गवास पर एक कवित लिपिबद्ध है। प्रारम्भ—

आज छत्र छत्रि को भान सो अस्त भयौ
अज पात पछिन को पारिजात परगो
आज मान सिंधु फूटो मगन मरालन कौ
आज गुन गान को सिरीमन गज गिर गौ

अन्त में एक दोहा इस प्रकार अंकित है—

बिसर गयो बट बमरी गो गापन को गह।
तखत कन्हैया की गजा ।

यह कृति एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध की गई है। लिपि पुरानी नहीं है। पत्र का एक किनारा खण्डित है। इससे चारण कवि परम्परा प्रकट होती है।

४३ फुटकर ऐतिहासिक कवित्त (प्रतिलिपि)

१ फुटकर ऐतिहासिक कवित्त (प्रतिलिपि), दुरसा आढा, बखता खिड़िया बदन मीसण, जगा खिड़िया, सबला सांळस, बारट भंजन, बारट लाला, बारट ईसर हरजी भाटी आदि २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १५६५४, ४ ३३×२०८ सेमी०, (रजिस्टर नुमा) ५ १७० ६ २५–३१, ७ १९ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ बारट जैतदान आदि (प्रतिलिपिकार), ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस रजिस्टर में कुछ ऐतिहासिक कृतियों की प्रतिलिपियां इस प्रकार दी हैं—

१ नागौर अमरसिंघजी गजसिंघोत रा झूलणा आढा चारण दुरसा कृत –

यह महत्वपूर्ण कृति ७० झूलना छन्दों की कविता नागौर के राव अमरसिंह राठौड से सबंधित है जो अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

आद वडा घर हिंदवा राव माल मंडोवर
जीपे जग हथ बंधिया नव खंडा उपर
लख रावत आफळिया नव लाख बहादर
दस दिस छायी मदनी जिण मेघाडबर ॥१॥

अंतिम—

भोज मुओ जगनाथ का अखियात उबारे
गिरधर गांगावत मुऔ राव अम्र अढार ॥४॥ (पत्र–२)

२ कवित्त महाराजा अमैसिंघ जी रा खिड़िया जगता जी कृत –

इन १६६ छप्पय कवित्त मे अमैसिंह व सरबुलन्दखा के बीच अहमदाबाद के युद्ध का वर्णन है।

आद सगत ईसरी मगल कारी चित्रामण
कामधन पोरसो तुहिज पारस सिव भामण ॥१॥

३ झमाल ठाकुर देवीसिहजी पोकरण ठाकुर अर जाणिया लारा भाटिया सू वेढ़ हुयी तिण दिये कवि जुडिया रा लालस चारण सबलजी कृत –

यह ३० झमाल छदो की रचना पोकरन ठाकुर देवीसिंह चापावत व भाटिया के बीच युद्ध से सबधित है।

झमाल प्रारम्भ—

दवा नामक वर दियो मु प्रसन्न होय सकन
धाराण राठोड वस अवरल वाण उकत
अवरल वाण उकत मकाडा अकरव रो ॥१॥

अन्तिम—

गुण कता कव राव नामण गाव ही
ज्या लग सूरज चद गुजस नह जावही ॥३०॥ (पत्र–४)

४ गीत सपखरो आसोप ठाकुर विजसिघजी दिवाणीया री फोज सू मेडते झगडो कर काम आया तिण समे रो –

प्रारम्भ—

घावा वाणासा तिलका धू सावळा गगा जळ धोव
वील पना कटारा अपभ्रा गाळी वाण ॥१॥ (पत्र–२)

५ रूपनगर री सतिया रा छप्पय (बारट भजन जी कृत) –

इसमे कुल ५२ छप्पय कवित्त लिपिबद्ध हैं।

६ रूपादे जी री वेल (हरजी भाटी) –

प्रस्तुत वेल का निर्माण मारवाड के शासक मल्लिनाथ और उनकी चमत्कारी विदूषी रानी रूपादे के जीवन प्रसगो को लेकर किया गया है।

प्रारम्भ—

धर धारू रै धरणी धर आप परिहरिये पूरवाला पाप,
अहकार जग रहया अनाप, जग आरंभियौ ॥१॥

रचना काल के बारे मे लिखा है—

समत चवद सौ श्री मार, गुणचालीसा वरस विचार
उजल जीव सनीसर वार, चत भयो परधो परवार ॥६८॥

इसम कुल ६६ वेलियो व छद गीत है । (पत्र-२)

७ रूपक राव श्री सिवदानसिघ मारवसिघोत वारट लालेजो कह्यो –

इसम जाथा वसरीमिघान लाडणू का वणन है ।

प्रारम्भ दोहा—

"सुराराम सु प्रसन हुय दीजे सुहि वरदान
मुज गाउ भाग्थ मुतन दळनायक सिवदान ॥४॥

छद पाघडी—

जोधाण नाथ राजा विजेस, सुज विभो देख लाजत सुरेस
मद छुटे द्वार रघुम्मन मतग ॥१॥

अतिम भाग—

सुत भ्रात भ्रवर रीका सुकाज,
समापिया पटा गहण समाज
कर मुजा पाण भारत सक्रोघ
जोध हूर वश्र इण भान जोध ॥२०॥

लियतू सग्रह करता वारहट जैतदान ।" (पत्र-१२)

८ भ्रजीत प्रथ, पोकरजी सिरदार काम आया तिका समे –

गाथा—

' भ्रमिया भ्रसक्ति भ्रादेस वाचत प्रभत वद पुण वायक
सिधि रिध वयण दियण सुर राणि सुभ सुप्रसनि सुरस्वति मात ॥१॥

भ्रन्तिम भाग—

भ्रेह वीराड वीधी इळा नाम नह जाम भव
कमधजा भ्रेम साक किया कथी भ्रोत ईसरस कव ॥७१॥

इति श्री पुसवर जुघ सपूरणम् वारट इमरदासजी री कह्यो ।" (पत्र-१४)

इसके अतिरिक्त ग्रथ म रम गुलजार महाराजा मानसिह री बदनजी मीसण कृत (देखें प्रयाक ३६ पु० प्र०), राठौड रतनसिह री वचनिका जगा खिडिया कृत, (देखें प्रयाक ६३८, रा० शो० स०) तथा उमादे भटियाणी रा कवित (देखें प्रयाक १०८४२, रा० प्रा० वि० प्र०) आदि कृतिया सग्रहीत हैं ।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति क हाथ से की गई है ।

४४ मान जसो मडण

१ मान जसो मडण, बाकीदास, २ पु० प्र०, ३ ३६ ब द २, ४ ५ ३५ मीटर × २५ ५ सेमी०, ५ १, ६ २६७, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तराद्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत इसी लम्बे पत्र मे महाराजा मानसिंह पर २२७ दोहे सग्रहीत हैं। ये दोहे उनके राज्याश्रित प्रसिद्ध कवि बाकीदास कृत है। साहित्यिक और सास्कृतिक दृष्टि से इनका बडा मूल्य है।

प्रारम्भ—

"।। श्री श्री श्री १०८ श्री पावदा री हजूर म दवागीर
आसीया बाकीदास दूहा बध रूपग मान जसो
मडण कहयो सो मालम हुमे ।।दोहा।।
निराकार निरगुण नमो सगुण नमो साकार
जालधर जोगसवर अनघ चरित्र उदार ।।१।।

अ तिम दोहा—

नभ ससहर भाण मे जा लग ता लग अपे
जोधा गढ जोधाण गोधा करो गुमान रौ ।।२२७।।

।। इति श्री मान जसो माडण सपूण ।

लिखावट एक व्यक्ति के हाथ से की है। कई पत्रो को जोड कर यह लम्बा पत्र बनाया गया है। लिपि एक ओर ही है।

३५ राजा हरीसिह रौ सग्रह

१ राजा हरीसिह रौ सग्रह (फाइल), २ रा० शो० स० ३ १६४६१, ४ ३५ × २१ ५ सेमी०, ५ ६६, ६ २२–२४, ७ २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ६ हि दी, राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे कुछ राजपूत राजाओ उमरावो से सबधित घटनाओ एव प्रशस्ति-काव्यो की प्रतिलिपिया दी गई है जिनमे से कुछ कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

"प्रारम्भ छप्पय रजपूत री खात री —

राजी छै रजपूत दुसह दाळिद्र धो देवे
रूठे जद रजपूत खळा जड सू खो देव
रूठा तो जम राण राम सा तूठा राजी
हाण लाभ नह हुव जका क्यू जाया माजी
दुख सुख समान बरते सदा तेग उप्रवट ताणणा
बदगी बर भूले न वे जे रधड भड जाणणा ।।१।।"

१ कवित्त –

राठौड़ ग्रमरसिंह ने सलावतखां को आगरे के किले में कटारी का प्रहार कर प्राणान्त कर दिया उस समय का—

प्रारम्भ—

"वजन माहे भारी थी की रख मे सुधारी थी,
हाथ मे उनारी थी कि सावे तू मे ढारी थी।
मेखजी के दद माहि गद को जमाई मद,
पूरे हाथ साधी थी कि जोधपुर मवारी थी ॥१॥"

(२ कवित्त, १ दोहा)

२ उम्मेदसिंह तथा भीमसिंह के पद्य –

कुछ पद्य देकर ७ दोहे दिये है, इनके बारे मे लिखा है—

सन् १९२४ ई जनवरी मास म कोटा महाराजा श्री उमेदसिंहजी और महाराज कुमार श्री भीमसिंहजी बीकानेर पधारया तरा नीचे लिखा पद्य बणाया गया—

ग्राज कोटा पति अधिक छवि छायौ
उर धर दया दीन दुखियन को
सब ही दुख मिटायौ आदि।"

३ गीत बडो सणोर पोकरण ठाकुर देवीसिंघ रो –

प्रारम्भ—

" कहे विजो महाराज सुण सवाई देव क्रण
म्हे कहा बात सो उदर माही
पडदली माहि जोधाण मातो परो
नरिद्र का कटारी छै क नाही ॥१॥

इसमे अतिरिक्त महाराजा प्रताप से सबधित भी कुछ कवित्त, विविध रागो के काव्य इत्यादि अनेक कृतिया अकित हैं। एक जगह लिखा है कि वि० स० १९६८ मे हरीसिंह के एक फोडा हुआ जो चीर फाड से ठीक नही हुआ अन्त मे रामदेव बाबा की कृपा से ही ठीक हुआ जब उन्होने २३ दोहे सोरठा की रचना की।

प्रारम्भ—

'कष्ट हि दूर करोह सुणो अरज हरीसिंह री
भक्ति भाव भरोह, रूणेचे रा रामदेव ॥१॥"

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। लिखावट साफ सुथरी है।

४६ फिरगी रो गीत

१ फिरगी रो गीत, २ रा० शो० स०, ३ ६५८१, ४ ११ ५×२६ ५ सेमी०, ५ १ ६ १० ७ २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत काव्य-कृति अग्रेजी सरकार से सबधित है। इसमे इनकी आलोचना करते हुए कलकता शहर की प्रशसा की गई है।

प्रारम्भ—

दस म आयो फिरगी, हल का को भगी
रसाला तोपखाना जगी, बीवीया फिरती सिर नगी आदि।"
कृति अपूर्ण है।

४७ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि गाडण केसवदास, लालस जतसी, जोसी गगदास, बारट हरसुर खिडिया ईसरदास, आढा डुगरसिह, उदेराज, बारट शिव दान, कविया पचायण चिंतामण आदि, २ रा० शो० स०, ३ १५००६ ४ ११४ ×१६ सेमी० ५ १३२ ६ १६-२१, ७ वि० स० १७४६, ई० सन् १६८६, हयुडिया ग्राम, ग्राम गुढा आदि, ८ कल्याण, नाथा, पुनमिया रावत आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ का प्रारम्भ 'विवेक वार री निसाणी' (गाडण केसवदास कृत) से हुआ है। प्रथम पत्र खडित होने व पत्र भीगे होने से ठीक से पढा नही जाता है। कुछ कृतिया इस प्रकार है—

१ गीत महाराजा जसवतसिघ रो (लालस जत कृत)
२ गीत राजा सूर्यसिघ रो
३ गीत राजा गजसिह रो (जोसी गगदास कृत)
४ गीत राव मालदेव रो (बारट हरसू कृत)
५ गीत पाबूजी रो
६ सोलकियो रो कवित्त
७ गीत राठोड दयालदास अमरावत रो
८ गीत जगनाथ कचरावत रो (खिडिया ईसरदास कृत)
९ गीत मुकदराम किसनसिघोत रो
१० गीत केसरसिघ भगवानदासोत उदावत रो
११ गीत राठोड भगवानदास रो (आढा डूगरसिह कृत)
१२ दोहा सग्रह (उदैराज कृत)

इसमे प्रेम श्रृगार इत्यादि विविध विषयो के ४६१ दोहे सग्रहीत है। पुष्पिका इस प्रकार अकित है—

'इति उदैराज कृत दूहा श्री श्री लिखता सा नाथा हयुडीया ग्राम वाडा मध्ये स० १७४६ रा मिगसर वदि १२।"

शास्त्रीय व साहित्यिक दृष्टि से इस कृति का बड़ा महत्व है।

१३ गीत सपखरो, भाटी अमरा रौ (वारट सिवदान कृत)

१४ कवीत राव रिणमल रै २२ बेटा रौ

१५ श्री रतन महेसदासात रो नाटको

१६ कवित महाराजा गजसिंघ रा (कविया पथाइण कृत)

१७ गीत रतन महेसदासात रौ (चिंतामण कृत)

१८ दातार मूरा रौ सवाऱो

१६ गीत सवाईसिंघ रौ साहिबा सुरताणीया री केयो

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध है व ग्रंथ के कुछ पत्र त्रुटित हैं, जिल्द से अलग है। लिपि के अक्षर कहीं बहुत बारीक व कहीं मोटे हैं।

४८ गीत राव कल्याणमल अर विठू पदमा रौ तथा नागणेचीया देवी रा सोरठा आदि

१ गीत राव कल्याणमल अर विठू पदमा रौ तथा नागणेचिया देवी रा सोरठा आदि २ रा० प्रो० स०, ३ १४०२८ ४ २३×१३ समी०, ५ ४०, ६ १८-२३, ७ वि० स० १७४८, ई० सन् १६६१, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत राव कल्याणमल रौ।—

प्रारम्भ— जारज्या

' सू डाइड प्रचड सुड वरा सुर मूह
श्रागेवाण सुड गुणेसर ॥१॥"

२ गीत वीठू पदमा रौ —

प्रारम्भ—

"मामू हू नव धाम गति महमहण
राणा कीरत न समरण सेवे अरखणी वदण ।"

३ सोरठा श्री नागणेचीया देवी रा —

राठौड़ो की कुल देवी नागणेचीया से सम्बन्धित ■ सोरठे लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

'घूहड सुभ ध्याई प्रगट करड कीधौ प्रिथी
पूजे जिण वस पाई, सेवग तदि हता सक्ती ॥१॥'

इन कृतियो के अतिरिक्त अनेक दोहे, सवैये, आयुर्वेद के नुस्खे, वेगराज चारण की जन्म पत्री (वि० स० १७२६) आदि कृतिया सग्रहीत हैं।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। पत्र जीर्ण होने के कारण किनारा से खण्डित हैं तथा कुछ पत्र लुप्त हैं। ग्रथ पर गत्ता नही है।

४६ स्फुट कवित्त गीत वशावलिया आदि

१ स्फुट कवित्त गीत वशावलिया आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २२५५४, ४ १०.५ × १६ सेमी०, ५ ४५, ६ १४२०, ७ वि० स० १७६५, ई० सन् १७०८ पिपाड नगरे, ८ जीवण, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे निम्नलिखित कृतिया सग्रहीत है—

१ पृथ्वीराज चहुआण पर स्फुट छद आदि —

प्रारम्भ—

''पच सेर फुलेल पच मरद जनन अगाह
बाहु दड प्रचड भुज सेन दजधा ॥१॥''

२ गीत ठाकुरा रौ —

प्रारम्भ—

,'आणद घणा किम अहो निस उलग,
आनन काई रिदा मभि उन चित ॥१॥''

३ गीत राजा राइसींघ रौ —

प्रारम्भ—

पाताळ तवो वळि रहए न पाक रीध मडे अन सरग रहे
महि अत लोग राइसिंघ मारै, कठे रहु ॥१॥''

४ गीत अकबर रौ —

प्रारम्भ—

'वाणा पति लपणि कहा अरजन वाणापति
सिरह लहए, कस सधार, सर्सं भाज हमाउ समोभ्रम ॥१॥''

५ गीत सूरसिंघ रौ —

प्रारम्भ—

''सपत भळभळै समुद सेस न हुवे सुथिर
विउरे इद रा हसत वजीया, सगाधर हळमळा ॥१॥''

६ गीत संखरो दुरगदासजी री –
प्रारम्भ—

"मन मम पति साह दाय राह आलम विसम
इगा भट पाय तब पाट अरग ॥१॥"

७ गीत उग्रसेन घुड़ासवा री गिरनार राग्ये –
प्रारम्भ—

पत पुब सादया हान हर साडे पाग
विग्रोन डेडी मगु दा कनक सी पाय ॥१॥"

८ दोहा अमरसिंघ री कटारी रा –
प्रारम्भ—

"दरहती दीसी हुइ राव मनी अमदक
पृथी दहली पयली, यह मदली बाड ॥१॥" (१८ दोहा)

९ राठौडो री वंशावली –

आदि नारायण से राव चन्द्रसेन तक राठौड राजाओ की वंशावली अंकित है। सीहा के पश्चात् कुछ राजाओ से संबंधित घटनाओ का जिक्र भी किया है।

१० राणा री पट्टावली –

इसमे सीसोदीया महाराणाओ की वंशावली गहलोत्य मे राणा संग्रामसिंह तक अंकित है।

११ शाखाओं री विगत –

इसमे चौहानो की २४, गहलोतो की २४, परमारो की ३५, तथा सोलंकिया की १० शाखाओं के नाम अंकित हैं।

इसके अतिरिक्त ग्रंथ मे स्फुट कवित्त छंद, कोक शास्त्र व्याख्यान (आनंद कृत) भवानी जी री छंद इत्यादि कृतियां लिपिबद्ध है। कोक शास्त्र कृति के अन्त मे पुष्पिका इस प्रकार है—

पुष्पिका—

इति श्री कोकसार आनंद कृत संपूर्ण संवत १७६५ रा कार्तिक वदि १ तिथौ लि० पीपाड नगरे जीवण न लि० ।"

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से महीन अक्षरो मे लिखा गया है। प्रारंभ व अन्त के पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रंथ पर जीर्ण कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

५० वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, महाराजा राजसिंह, खिड़िया गोवधन, राठोड जोगीदास मनरूप खिड़िया मथुरादास, हरनाथ खिड़िया आदि २ पु० प्र०, ३ १६१ ४ २५×१६ ५ सेमी० ५ ८७, ६ २०–२८ ७ वि० स० १७७२, ई० सन् १७१५, ८ राठोड हरीसिंह, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे सग्रहीत ऐतिहासिक कतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ दूहा महाराज राजसिंह रा कह्या –

प्रेम विषयक ४७ दोहे ग्रथित हैं।

प्रारम्भ—

काम सुघट बादर कहे विरहन के उर दाह
सिलाह वारी ले सोघु ते भई सेत ते स्याह ॥१॥

अत—

कब की टेरत दिन राती, हो तुम साम सहाई
सोनु लागी जगु जग नाईक जग वाई ॥४७॥

पुष्पिका—

इति दूहा म्हाराज श्री राजसीघजी रा कह्या सपुरण मीती आसोज सुदी २ समत १७७२ लिपि राठोड हरीसिंघजी वास कुचल मध पोथी लपी।" (पत्र–३)

२ दूहा महाराजा राजसिंहजी न राठोड जोगीदास कहे –

प्रारम्भ—

'गग सुर घर, गेर, गैगन श्री जल सु पवन
सेव इद चद ब्रमा सक तेता लग भान सुन ॥१॥"

३ गीत राजसिंघ रो मनरूप खिड़ियो कहै –

"पडै तालाबिलद ग्रोळा साही उमै कहै
चहु फौजा राजसीघ धक ग्रणि चाडि,
बधि पाल वटा बधि साहीजादा ग्रडि बटी
राडि उलो नही ग्रजि सही पातिसाहा राडि ॥१॥"

(१० द्वाला का गीत)

४ गीत रावत प्रतापसिंघजो रो मथुरादासजो कहे –

"सुरिज हवै राणा राह हरीचद सुत,
छळ दापे सीसोद छतो,

समन्द राणा ता राजन अगोमित
पटहथ राणा तो मीच पता ॥१॥"

५ गीत पदमसिघजी रो, मुघरादास पधशाडो कहै –

प्रारम्भ—

"पही बीज अण गाज री अमुर सिरि उपरा,
केसरो सीघ गज सिरि कुप्पियो
लाय लागो नीपडो वन लागयो
घाडो मुवो विना पदम विपीयो ।।१॥'

६ गीत प्रोहत जसा अचलदासोत रो –

प्रारम्भ—

'जुध जाजर हुवै जीता पगि जीप,
घणु ठीकाण घणु घणा
मही हैसाइत प्रोहीत मुरघर
ताह हैसाईत मरण तणा ।।१॥"

७ निसाणी हरिसिघजी री खिडिया हरनाथाजी कही –

प्रारम्भ—

सिधि बुधि आपो सुरसती गुण भेद गुणपत्ति,
विसन ब्रहमा वीस हवि मोटी आखति,
गाऊ जा गावत गुणा नर मोटे नपत्ति आदि ।" (पत्र-१)

८ खेतपालजी री छद (खिडिया हरनाथ कृत) –

जोगीदास कृत पद हरजस साखियो के अतिरिक्त नददास कृत मानमजरी इत्यादि कतिया अकित है। पुष्पिका इस प्रकार दी है—

"इती श्री मानमजरी नददास कत
भाषा समापता सपुरणे, मिती जेठ
सुदी १ वार दित वरस समत १७७२
लीषी पोथी ।'

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साधारण है। ग्रथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है। अन्तिम कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

५१ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह आढा पहाड़सिह, जगा, कमो नाइ सावल ढोली आदि, २ रा० शो० स०, ३ ४८६२, ४ १६×१८५ सेमी०, ५ ६६, ६ १३-१८, ७ सवत १७८८-९१, ई० सन् १७३१-३४, लाबीया ग्राम ८, प० नेमीदास आदि, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) महाराजा अजीतसिहजी रौ गीत
(२) गीत देवताम्रा रौ
(३) गीत महाराजा अभसिघ रौ (पहाड़सिह कत)
(४) गीत महाराजा जसवतसिघ रौ
(५) गीत राणा जगतसिघजी रौ
(६) गीत माधोसिघ अमरसिघोत रौ (जगा कत)
(७) उदावत जगरामजी रौ गीत (जगा कृत)
(८) कवित्त राजसिघ जगतसिघ रौ (कमो नाई)
(९) गीत राव बखतसिघ रौ
(१०) गीत अरजन गौड रौ
(११) गीत मेडतीया प्रतापसिघ गोपीनाथोत रौ (जगा कत)
(१२) कवित्त मेडतिया सूरसिघ प्रतापसिघात रा (जगा कत)
(१३) मेडतिया मोहकमसिह रौ कवित्त (जगा कत)
(१४) गीत मेडतिया ग्यानसिघ मानसिघोत रौ
(१५) गीत अजीतसिह रौ (सावल ढोली कत)
(१६) गीत करनोत थीमकरन आसकरनोत रौ (जगा कत)
(१७) गीत चापावत मुकनदास सुजाणसिघोत रौ (जगा कत)

उपरोक्त गीता के अतिरिक्त ग्रथ मे अनेक कवित्त दोहे गीत इत्यादि कतिया हैं इन कृतियो का कोई क्रम नही है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है, ग्रथ अपूर्ण है। ग्रथ के बीच मे वहुत से पत्र जीर्ण होने के कारण फटे हुए है।

५२ वीर गीत सग्रह आदि

१ वीर गीत सग्रह आदि, भूषन आदि, २ पु० प्र०, ३ ३९ वद २, ४ १३ ५×१२ सेमी०, ५ २२२ ६ १४–१६ ७ वि० स० १७९६, ई० सन् १७३९, ८ पचोली नाथ जैरामोत, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ

में विविध विषयों की अनेक कृतियां संग्रहीत हैं, ऐतिहासिक कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) पू भाजी री गीत
(२) महाराणा प्रतापसिंघजी री गीत
(३) महाराणा करणसिंघजी री गीत
(४) महाराणा राजसिंहजी री एक कवित्त
(५) महाराणा सग्रामसिंघजी री एक कवित्त
(६) सिवाजी रा कवित्त भूषन कृत

प्रस्तुत ग्रंथ के निर्माण इत्यादि के बारे में प्रारम्भ में लिखा है—

'महाराजा धिराज महाराणा श्री जगतसिंघजी आग्येस सु सवत १७६६ वर्षे आसाज सुद १० री वड रै दिन पोथी बाधी कविता री महाराज श्री नाथजी री हवेली म श्री महाराज री पाथी लिखी पोथी पचोली नाथ जरामौन गुमान री लिखि छत पचोली नाथ ।'

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। उपरोक्त महाराणाओ के गीत आदि बाद मे लिखे गये हैं। बीच बीच म अनेक पत्र खाली पडे हैं। ग्रंथ पर कपड का गत्ता चढा हुआ है।

५३ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, खिडिया सेवग तेजसिंह आढा गोयददास बारट सकर, कु० भगवनदास, मुकन मेहडू आदि, २ रा० प्रा० स०, ३ १४६६६, ४ २०×२८ सेमी०, ५ ६, ६ ६–११, ७ वि० स० १८०६ ई० सन् १७४६, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रंथ मे लिपिबद्ध कृतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) कवित्त चालकनैचीजी री अपला री खिडिया (सेवग तेजसिंह कृत)
(२) गीत रा० जोधराज री राजा जैसीघ री मेलो
(३) कवित्त ठाकुरा अइसीघ प्रतापसिघोत री पेरवा रा धणी री (आढा गोयददास कृत)
(४) कवित कछवाहा रामदास दरवारी री (बारट सकर कृत)
(५) गीत दवडा जेसीघदे वणाउत री (आढा गोयददास कृत)
(६) कवत मेडतिया किसनसिंघ री (आढा गोयददास कृत)
(७) गीत ठाकुरा मोहकमसिंह री (कुवर भगवानदास कृत)

(८) गीत राव बुधसिंह रो (मुकन महडू कृत)
(९) गीत प्रभुजी रो (आढा गोयददास कृत)

५४ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, आढ़ा गोयददास, २ रा० शो० स० ३ १४९९७, ४ २० × २७ सेमी०, ५ ६, ६ ११, ७ वि० स० १८०७, ई० सन् १७५०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे सकलित कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत दुरगदासजी रो सानगजी रो भेळो
(२) गीत महमाई हीगुलाजजी रो (आढा गोयददास कृत)
(३) गीत ठाकुर अड्डसिंघजी रो (आढा गोयददास कृत)
(४) गीत ठाकुर मोकमसिंघ रो
(५) गीत देवडा हठीसिंघ लाडाउत रो (आढा गोयददास कृत)

५५ वीर गीत सग्रह आदि

१ वीर गीत सग्रह आदि, भीव बीठू आदि, ५ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १४८३७, ४ २८ ७ × २२ सेमी०, ५ ८४, ७ २७–२९, ■ वि० सं० १८१२, ई० सन् १७५५ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे सग्रहीत कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत राज श्री जगरामजी रो
(२) श्री प्रियाजी के नाम
(३) पाबूजी रा छद
(४) गीत ठाकुर केसरीसिंघ वपतसीघोत रो (खिडिया केसर सरघरो कृत)
(५) गीत कूपा मेहराजोत रो (भीव बिठू कृत)

इसके अतिरिक्त गीत हनुमानजी को', कागज री ओपमा' आदि कृतिया लिपिबद्ध हैं।

मूल ग्रथ की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा हुई है। अन्य कृतिया (१, ३, ४, ५) किन्ही दूसरे व्यक्तियो के हाथ से बाद मे लिखी हुई प्रतीत होती है।

ग्रथ पर जीर्ण कपडे का गत्ता चढा हुआ है। ग्रथ की लिखावट सुन्दर है।

५६ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह खिडिया हुक्मीचद, २ रा० शो० स०, ३ १६४८६ ४ ११ ५ × १५ ५ सेमी०   ५ ६८,   ६ १०–१३,   ७ वि० स० १८४१, ई० सन् १७८४, जालोर (चाचोडी), ८ सेवग सतोखराम,   ९ राजस्थानी, देवनागरी १० महत्वपूर्ण कृतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

प्रारंभ मे 'समय सुप्यार मनमई' कृति अंकित है (पत्र–३६) जो प्रारम्भ के ४ पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। पुष्पिका इस प्रकार दी है—

'इति श्री समे सुप्यार सतसेई सपूरण समापत सवत १८४१ रा मिति फागुण सुद १३ वार सोम लिपतु सेवग सतोखराम दोलतराम पुत्र वास जालोर चाचोडी मध्ये लिपी छ सुना श्री चिमनीरामजी री पोथी मु लिपी छ श्री रस्तु।"

(१) गीत जात सुपपरो महाराज श्री बिजसिह रौ (खिडिया हुकमीचद कत)

(२) गीत राजा उमदसिंघजी रौ (खिडिया हुकमीचद कत)

(३) गीत साह धनरूपमल रौ

इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर गीत, सवया, पनर तिथि रा दूहा, आठ पोहर रा दूहा आदि कृतिया लिपिबद्ध हैं। ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। प्रारम्भ व अन्त मे कुछ पत्र खाली पडे हैं। ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है। ग्रथ अपूर्ण है।

५७ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह माधोदास भाट, दोलतराम, जगा खिडिया आदि, २ रा० शो० स०, ३ १६४६०   ४ ११ × १४ सेमी०   ५ १६४, ६ ८–१३ ७ वि० स० १८४०, ई० सन् १७८३ जालोर,   ८ सेवग सतोखराम   ९ राजस्थानी, देवनागरी,   १० प्रस्तुत ग्रथ मे सग्रहीत ऐतिहासिक कतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त नवरस रा, माहाराज गजसिंघ रा (माधोदास भाट कत) –

विविध ९ रसा के १२ छप्पय कवित जोधपुर के शासक गजसिंह की प्रशसा मे अकित है।

प्रारम्भ—

"गुन निधान गजसाह दान दरसन सुप दायक
मडोवर महैपाळ मुरधर मूरत रति नायक   आदि।"

पुष्पिका—

"इति श्री नव रस ग कवित भाट माधोदास कत सपूरण श्री रस्तु सवत १८४१ मवे साय सुद मा वार सुक्र।" इसके अतिरिक्त ये गीत लिपिवद्ध है—

(२) महाराज गजसिघजी रौ गीत (जालोर की चढाई पर)

(३) महाराज जसवतसिह रौ गीत

(४) महाराजा अजीतसिह रौ गीत

(५) महाराजा अभैसिघ रौ गीत

(६) गीत महाराजा भाएदसिघ रौ

(७) गीत बखतसिह रौ

(८) गीत महाराजा किसोरसिंघ रौ

(९) गीत महाराज विजयसिंघ रौ

(१०) गीत जात सणोर (सेवग दोलतराम कहे)

(११) गीत महाराजा निजयसिंह रौ

(१२) गीत महाराजा बादरसिहजो रा वास किसनगढ

(१३) गीत महाराज गजसिह महाराज कवर राजसिह तफे बीकानेर

(१४) गीत बीठलदावता रा ठाकुर देवीसिह रौ

(१५) गीत चूक रै भाव रौ

(१६) गीत कवर उदैराज तथा जीवराज रा (उदैराज कत)

(१७) अमल री कुण्डलिया

इन कृतियो के बाद नीमाज माताजी री छद' (सेवग हरीराम कृत) और गुण हरि रस' (बारट ईसरदास कृत) लिपिवद्ध ह, पुष्पिका इस प्रकार अकित है—

'इति श्री गुण हरि रस बारट ईसरदास कत सपूण सवत १८४० रा काती सुद ११ वार बुध लपतु सेवग सतोषराम जालोर मध।"

(१८) पवन पचीसी वृदावन कत

(१९) गीत रामचद्रजी री सेवग दौलतराम कहै

२० राठौड रतनसिह री वचनिका (जगा खिडिया कृत) —

यह वही कृति है जो ग्रथाक ६३४, रा० शो० स० मे वर्णित है।

पुष्पिका—

"इती श्री राजा रतन महेसदासोत री वचनिका पडीया जगा री कही सपुरण लिपतु सेवग सतोष राम दोलतराम उत सवत १८४२ मिति चेत्र सुद १५।"

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे नासकेत की कथा, सजाय रा कवित, बारामासो,

सजोगणी नायका वर्णन (कवि अमराम कृत), इत्यादि कृतिया लिपिबद्ध हैं। मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, कुछ फुटकर गीत आदि दूसरे व्यक्ति के लिखे हुए हैं। लिखावट सुवाच्य है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

५८ गीत रूघे सुरजमल रौ तथा राजा भीमसिंह रौ रूपक आदि

१ गीत रूघ सुरजमल रौ तथा राजा भीमसिंह रौ रूपक आदि, नाथू निरभाराम आदि, २ रा० शो० स० ३ १६६८८, ४ २२.५ × २५ सेमी०, ५ ८, ६ १६, ७ वि० स० १८४२, ई० सन् १७८५, ८ गुटका, चतुर्भुज आदि ९ राजस्थानी देवनागरी १० काव्य कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत रूघे सुरजमलोत रौ –

प्रारम्भ—

"पाडण घरा पळा गुजाळा रूघपत
अरीयदा ढाहण अवनाउ ॥१॥'

२ महाराज भीमसिंह रौ रूपक (नाथू निरभाराम कृत) –

प्रारम्भ—

प्रस्तुत काव्य जोधपुर महाराजा से सम्बन्धित है

अथ कवत

सिरीय राम सिव नाथ, आदि माता सुरसती
राजि यता रीता रीझीया ॥१॥

३ गीत सपखरो (महाराजा बखतसिंघ) –

यह ११ द्वाला का गीत जोधपुर के शासक बखतसिंह का है—

'कठठ फोज वेहु कड सडण कज्य कावलै
जेठ प्रसाद री घटा जाणी ॥१॥

अन्तिम भाग—

धराधणी परमोध इण धीजोया राजयो इद बखतेस राजा।
बधीया मे तुझ देसा पटा बधार बजावो लाडणु लाड बाजा ॥११॥

इसके अतिरिक्त ग्रंथ मे अनेक कृतिया लिपिबद्ध हैं स्याही उड जाने व लिपि अशुद्ध होने के कारण ठीक से पढने मे नही आती है। कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। पत्र हाथ से बने हुए हैं।

५६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह आडा पाहड खान नथावन आदि, २ रा० शो० स०, ३ ६१५१, ४ १६ × ११.५ सेमी०, ५ १६, ६ १२-१८, ७ १८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रारम्भ के पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है, अधिकांश गीत कुशलसिंह व शेरसिंह के युद्ध में भाग लेने वाले सरदारों से सम्बन्धित है। गीतों का विवरण-क्रम इस प्रकार हैं—

१ गीत मेड़तिया सुगनसिंघ कीसोरसिंघोत रो –

प्रारम्भ—

'सुगनेस कहै सुणजो सिरदारो मंडिया कटक मेड़ते आण
धणी काम लड़णो पग धारो आज मती चूको अवसाण ॥१॥"

२ गीत सबलसिंघ देवीसिंघोत रो –

प्रारम्भ—

'हुवो चूक जिण वार इम वचन देव कहा,
सुवो राजा विजा सु सहि साथ,
श्रवण आ वात सब सै साभली,
हमें जोएजो वूठी पावे हाथ ॥१॥"

३ गीत मेड़तिये जालमसिंघ किसोरसिंघोत रो –

प्रारम्भ—

'जालमसिंघ कहै सुणजो,
मुरधर हर न धरो मन माहि,
मो जीव रो इती छै मालम
जोधाणो राम सु जाय ॥१॥"

४ गीत सेरसिंघ रो –

प्रारम्भ—

कहै एम सेरो कमध सुण कुसलो कथन
अधिक बोली मती लोग आगा ॥१॥"

५ गीत चापावत देवीसिंह महासिंघोत रो –

प्रारम्भ—

मुरधर रो थभ मिसल रो मामी
लीया मुज पत्रवाट लजा

दत्तासिंघ जिगी भड डाग्णा
श्रया विम मारजे विना ॥१॥

६ गीत चापावत कुसालसिंघ न सरसिंघ री –
प्रारम्भ—

वडा वालतो बोल वाता धणी बणातो
जोम दस धारतो ठगव जाम्ही
सदा री वक्षारे सेर ऊभो समरि
मुदा रा हुरा रा आव माम्ही ॥१॥'

७ गीत मेडतिया सेरसिंघ[1] सिरदारसियोन री (आढा पहाडखान कृत) –

इस गीत मे रामसिंह और बखतसिंह के बीच वि० स० १८०७ माग गाप सुदि ६ को हुए मडते के युद्ध का वत्तात है, पर गीत वाला पत्र लुप्त है।

आगे महाराजा बखतसिंह और मा० रामसिंह क बीच हुए युद्ध सम्बन्धी अन्य गीत दिये गय ह। यह ग्रथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। पत्र भीग जाने से कही कहीं पढना असभव है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

६० वीर गीत दूहा सग्रह

१ वीर गीत दूहा सग्रह खिडिया तेजसी वृ दावनदास आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ ४०७१४ ४ १३ २ × १४ ६ सेमी० ५ ८४ ६ १० १३, ७ वि० स० १८३८ ६८, ई० सन् १७८१ १८११, जोधपुर, ८ भडारी तेजमल आदि, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ जोधपुर महाराजाओ की जन्म कुण्डलिया –

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे महाराजा अभैसिंह, बखतसिंह, विजैसिंह, भीमसिंह तथा मानसिंह, कुंवर छत्रसिंह, कुंवर सिवदान, तखतसिंह की जन्म कुण्डलिया अकित हैं।

२ गीत आमेर रा धणी राजा रामसिंघजी री –
प्रारम्भ—

"गस मही आगमण नमो जैसिंघ रा रामसा
कूरम इसा वदवायो, वडो केकाण ॥१॥"

---

१ रेउ के अनुसार महाराजा रामसिंह की ओर स रीया के ठाकुर शेरसिंह और राजधिराज बखत सिंह की ओर से आउवा के ठाकुर कुशलसिंह के बीच बडी वीरता स युद्ध हुआ दोनो योद्धा आपस में लडकर वीर गति को पहुँचे। (मारवाड का इतिहास पृ० ३६३)

३ भाव पचासका (वृंदावन दास) –

इस कृति में सम्बन्धित ५७ दोहे सवये लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

'अद्भूत अमित अनिति अति अगम अपार अनूप
व्यापक दृश्य मय, जय जय जोत सरूप ॥१॥'

पुष्पिका—

'इति श्री कवि वृंदावनिदास विरचितायां भाव पचासिका संपूर्णम् संवत १८३७ रा वर्षे मिति भाद्रवा शुक्ल पक्षे एकादशमी ॥ वार बुधवासरे दिने लिपत भंडारी तेजमल पठनार्थ श्री नगर जोधपुर मध्य ।' (पत्र–१४½)

४ गीत महाराजा विजैसिंघजी रौ –

प्रारम्भ—

'रैणा जमायो अमल रूका घना जी अगजी
राजा सदा जत रत मीया भोमिया मरज ॥१॥"

५ दुरगदास आसकरणोत रा दूहा (खिड़िया तेजसी कृत) –

दुर्गादास की प्रशंसा में १५ दोहे अंकित हैं जिनमें उनके वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन है—

प्रारम्भ—

"श्री आरंग अधीयार जात मिट राजा जासा
तु हुवो दुरगा त्यार अधा लकड़ी आसउत ॥१॥

पुष्पिका—

'दूहा ४७ छै लिण इताई उतारीया १८६८ रा मा सुद १२।"

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में राठौड़ो की शाखाओं रा कवित्त गहलोतो की २४ शाखा, देवीदास रा कवित आदि कृतियां लिपिबद्ध हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

६१ राठौड़ देवीसिंह रौ गीत आदि

१ राठौड़ देवीसिंह रौ गीत आदि, २ रा० शो० स०, ३ ४६६३, ४ १४.५×१७.५ सेमी० ५ २३१, ६ १४२०, ७ १८७० ८३, ई० सन् १८१३-२६, आसाढ़ा, पाडलाऊ ८ वेलचंद, प० लखमीचंद ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में ३६ कुलों का उल्लेख हुआ है—

प्रारम्भ—

'धारा नगरी पमार १ नाडूरगढ चहुवाण २, आहडनगर गहलोत ३, साहलेगढ दहीया ४, ५।

१ राठोड देवीसिंघजी रौ गीत –

यह प्रशस्ति गीत पोकरण के राठौड देवीसिंह चापावत का है जिसे महाराजा विजयसिंह ने धोखे से सन् १७६० म कैद कर मरवा दिया था।

प्रारम्भ—

भाण घायो नी तमासो दप क्दे री उमायो भूरा,
इळा गणे छायो निक् पू-आघो रै आज
इळा गैणे छायो नि राग ताहरै उपरे देवा
आप रूद आयो नही करतो आराणा ॥१॥"

अंतिम भाग—

'राधा पाण बलाकारी वाकारतो तोनू राजा
मगळा करतो दूक चापा हदा मोड
माण री दुजीधण मूप चूक सो वियात माह
रूक थारै चूक न को वडाळा राठौड ॥४॥" (पत्र-१)

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिबद्ध किया गया है लिपि सुवाच्य है। ग्रन्थ म कुछ पत्र त्रुटित हैं और कुछ खाली पड़े हैं। ग्रन्थ म अन्य अनेक कृतियां लिपिबद्ध हैं जिनका क्रम इस प्रकार है—पुरुष री बहतर कळा, रात्रि भोजन सिभाय, मानतुग मानवती चौपाई, धन्नो सालिभद्र चौपाई, गज सुकमाल चोढालियो गोडीजी रो चोढालियो विक्रम भूपति चौपाई चद्रलेहा चौपाई जिनसार इत्यादि।

६२ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह सिडिया हुकमीचद डूगरसी बाफडी, उतम राव रतन, देवीदास गिरधर, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १८३ (इन्द्र गढ सग्रह), ४ ३०.५ × २३.५ सेमी० ५ ३४४, ६ १५, ७ १६वी शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह ग्रथ महत्वपूर्ण एतिहासिक गीतो, दोहो और कविताओ का समृद्ध सग्रह है प्रारम्भ एक दोह से हुआ है— दूहा—श्री गणेशायेन॥

कोयला पैरवत चड कुप कणीयर सरण कपाट
हरदा म हिंगुल री बाल्ही लागै वाट ॥१॥

कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ कवित हींगलाज का
२ कवित बीजासणिजी को
३ गीत नरसिगजी का
४ निसाणी मीराद्दनतन की
५ गीत हामाजी को
६ गीत चितमलाल हनुमतजी (हनुमान) का
७ गीत गोप डाडो दवजी रा
८ कवित्त चवाणा (चाहान) की उत्पति
९ गीत गोगा चवहाण को
१० गीत राव कोलण को
११ गीत हालुजी का
१२ गीत राव अरजनजी का
१३ गीत लाला हाडा को
१४ गीत भाया पद्यु काल को
१५ गीत राव सुरजन का
१६ गीत राव सुरजमलजी का
१७ निसाण राव सुरजन की
१८ निसाणी दादूजी की
१९ निसाणी राव दूदा की
२० गीत दादूजी को
२१ गीत राव भोज को
२२ गीत पाडगति
२३ राव भावसिंघजी का गीत
२४ गीत भगोतसिंह को
२५ गीत राव उमेदसीघजी को
२६ गीत (जोध) सिंघजी लार सती हुई जीको
२७ गीत राव छत्रसालजी को
२८ गीत महाराजा इन्द्रसालजी को
२९ गीत महाराजा सरदारसिंघजी का
३० गीत महाराजा मघसिंघजी को
३१ गीत म्हाराजा छत्रसिंघजी का
३२ गीत म्हाराजा देवसीघ को
३३ गीत वेतियो सारणोर
३४ गीत त्रीकुट वध
३५ रूपक माहाराजा जी भगतरामजी का कवित
३६ गीत मुक्ताग्रह
३७ गीत चौसर
३८ गीत त्रिकुटबध
३९ गीत भाखडी (साथ म स्फुट कवित्त भी है)
४० साखी म्हाराजा सरदारसिंघजी की कही
४१ रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी को गीत पचसर
४२ गीत मुक्ताग्रह सुनमानसिंह को
४३ गीत सुपखरा गुमानसिंह को
४४ गीत त्रिकुटबध सुनमानसिंह रो
४५ गीत (कु) वरजी अमानसिंघजी का
४६ गीत प्रतापसिंघजी को
४७ गीत राव अजीतसिंघ को
४८ रूपक महाराजा अमरसिंघजी को गीत वेलीयो
४९ गीत महाराजा फकीरसिंघजी को
५० गीत म्हाराजा जोगीरामजी को
५१ गीत महाराजा सालमसिंघजी को

५२ गीत घासीरामजी को
५३ गीत महाराजा प्रतापसिंघजी को
५४ गीत दलेलसीघजी को
५५ गीत महाराजा मरजादसिंघजी को
५६ गीत कंवर फतेसिंघजी सुजाण-सिंघजी इंद्रसालोत को
५७ गीत बेरीसालोयता को
५८ कवित रूपजी महासिंगोत रो
५९ गीत कवित माधोसिंघजी का
६० गीत मुकनसिंघजी का सावभड़ो
६१ श्रीजी किसोरसिंघजी का गीत
६२ गीत रामसिंघजी का
६३ गीत भीवसिंघजी का
६४ गीत स्यामसिंघजी का
६५ गीत दुरजनसाल जी का
६६ गीत जेराम बीयास (व्यास) को
६७ गीत मोहणसिंघजी का
६८ गीत गोरधनसिंघजी का
६९ गीत अजीतसिंघजी को
७० माहाराव छत्रसाल्जी का कवित
७१ गीत प्रथीसिंघजी को
७२ गीत नाहरसिंघजी को
७३ गीत नाथजी को
७४ गीत हरदनारायण को
७५ गीत दौलतसिंघ हरदावत को
७६ गीत भीवसी हरदावत का
७७ जतसिंघ हरदावत का कवित
७८ छत्रसिंघजी नेवाउता को गीत
७९ फतेसिंघ जेतसीघजी को कवित
८० कसुबा काम को गीत
८१ गीत हाड़ा भीवसिंघजी को
८२ कवित राव हमीर को
८३ प्रथीराज का छप्पे
८४ गीत गोख होडो करडोद को राणा भोजराज चहुवाण का
८५ कवित टोडरमल चहुवान नीम राणा को राजा
८६ गीत वेदला ठाकुर बखतसीघ चहुवाण को सुपखरो चोटी बंध
८७ गीत चहुवाणा को
८८ गीत सत्रसाल देवड़ा का
८९ गीत अखसीघ देवड़ा को
९० गीत सुरताण देवड़ो को
९१ गीत (बो) रमद सानगरा को
९२ गीत राणगदे सोनगरा का
९३ गीत जसा सानगरा को
९४ गीत कूभा खीची को
९५ धीरतसीघ खीची को
९६ गीत नगा खीची को
९७ गीत फतेसीघ खीची को
९८ गीत अकबर पातस्या को
९९ कवित्त साहिजादो दानसाह को
१०० कवित खानखाना नवाब को
१०१ कवित औरंगजेब पातस्या को
१०२ गीत सहीजादा का
१०३ गीत दली को
१०४ गीत राणा कुभा को
१०५ गीत रायमल राणा को
१०६ गीत राणा परतापसीघ को
१०७ गीत राणा अमरसीघ को
१०८ गीत राणा जगतसिंघ को
१०९ गीत राणा राजसीघ को

१६६ गीत गोयदास खराडा का
१६७ गीत अमरसिंघ भाटी जसलमर को
१६८ गीत सगळा भाटो का
१६६ गीत जाटू का
१७० गीत विजा सरवैया का
१७१ गीत करण सरवैया का
१७२ दुहा जसा सरवैया का
१७३ गीत राठोडा को
१७४ गीन राजा गजसीघ का
१७५ गीत राजा जसातसीधजी को
१७६ गीत अमरसीघ राठाड का नागौर का राजा
१७७ गीत राजा अजीतसिंघजी को
१७८ गीत राजा अभयसीघजी का
१७६ गीत बखतसीघ को
१८० गीत जीवा आपा दखणी का
१८१ गीत राजा विजैसिंघ री सपखरी
१८२ गीत राजसीघ रूपनगर को राजा को
१८३ गीत कूपा राठोड का
१८४ गीत नीव का
१८५ गीत रतन का
१८६ गीत बलू चापावत को
१८७ दोहा सानग बलू का बटा
१८८ गीत रामसीघ राठोड को
१८६ गीत दौलतसिंघ राठोड का
१६० गीत अमरसिंघ गरडावा को
१६१ गीत इद्रसिंघ खैरवा का ठाकुर को
१६२ गीत मोकलदास राठोड को अमर सीघ नागौर का ठाकुर न ग्राम काम आयो को
१६३ गीत जैतसीघ राठोड सुमीयाण को ठाकुर
१६४ गीत केसरीसिंघ उदावता का
१६५ गीत उदावता का
१६६ गीत मोहोकम राठाड का
१६७ गीत विजा राठोड को
१६८ गीत हठीसिंघ राठौड को
१६६ गीत तजसीघ राठोड का
२०० गीत कुसलसीघ चापावत को
२०१ गीन सेरसीघजी कुसलसीघजी का
२०२ गीत कुसलसीघ सेरसीघ का
२०३ गीत सेरसीघजी का
२०४ गीत दुरगादास राठौड का
२०५ गीत गोपालसीघ मेडत्या को
२०६ गीत अरधगोख किसनसीघ राठौड का
२०७ गीत चतुरा राठौड का
२०८ गीत परसा राठौड को
२०६ गीत करण राठौड को
२१० गीन साहबसीघ राठोड को
२११ गीत करण राठोड का
२१२ गीत सैसमल राठौड का
२१३ गीत माधोसिंघ राठोड को
२१४ गीत जसवतसीघजी का उमरावा को
२१५ गीत अभैसीघजी का उमरावा को
२१६ गीत परथीराज राठौड का
२१७ गीत जयसीघ राठोड को
२१८ रीत सवा बाद्रेस को

२१९ गीत धाणेराव को ठाकुर पदम सीघ का
२२० गीत सगतसीघ राठोड को
२२१ गीत मोकम चापाउत को
२२२ गीत अमरसिंघ राठोड को
२२३ गीत कमो राठोड को
२२४ कवित्त राव बीका को
२२५ गीत कल्याणसीघजी को
२२६ गीत प्रार्थीराज राठोड को
२२७ गीत रायसीघ को
२२८ गीत बीकानेर का माणसींघ का बेटा का
२२९ गीत सागार काणवत बेलीयो रामसीघ को
२३० गीत रायसीघ बीकानेर को
२३१ कवीत बीकानेर का राजा अनोपसिंघ को
२३२ गीत बीकानर पदमसीघ को
२३३ गीत केसरीसींघ बीकानेर को
२३४ कवित्त राजा गजसीघजी बीकानेर को
२३५ गीत भीव राठोड को
२३६ गीत दुदा राठोड को
२३७ गीत लखधीर दुदा का
२३८ गीत एकअखरी करण बीकानेर का राजा को
२३९ गीत आकु को
२४० गीत स्याम को
२४१ छप्पय राव भारा जाडेचा को
२४२ गीत चाडेचा को बीसर
२४३ गीत हीरा मागळया को
२४४ गीत महेड जाडेचा का
२४५ गीत राव देसल को
२४६ गीत दुरजनसाल सोडा को
२४७ गीत भोज दाबा को
२४८ गीत घामडी सोडा कवाड को
२४९ गीत सोडा राठोड की चूक को
२५० गीत सोडा भाटी की चूक को
२५१ गीत राजा मान को
२५२ कवित बडो जैसीघ का
२५३ गीत वडो जसीघ को
२५४ गीत जगतसीघ आमेर का राजा को सहचान गीत
२५५ गीत राजा रामसीघजी को
२५६ कवित्त राजा बिसनसीघ को
२५७ गीत राजा सवाई जयसिंघ को
२५८ गीत वडा जैसीघजी को
२५९ गीत दुमल मनोहर साँखलो वडा जैसीघ का उमराव का
२६० गीत सलाकसीघ राजाउत को
२६१ कवित्त कुशलसीघ नाथावत चामू ठाकर को
२६२ गीत गजसीघ नाथाउत को
२६३ गीत सोरठियो उदयसीघ सेखाउत को
२६४ गीत दीपसिंधजी को
२६५ गीत दौलतसिंघ को
२६६ गीत सोसीघ सेखाउत को
२६७ गीत मानसीघ बलभद्रोत को
२६८ गीत देवीसिंघ खगारोत को
२६९ गीत अमरसीघ खगारोत को
२७० गीत गोरधन कल्याणोत को

२७१ गीत मानसिंघ कल्याणोत को
२७२ गीत कमा कल्याणोत को
२७३ गीत जैचंद कल्याणोत को
२७४ गीत फतेसीघ नागा का
२७५ गीत जैसीघ नरुका को
२७६ गीत जैसीघ नरुका का
२७७ गीत सुजाणसीघ जगनाथोत को
२७८ गीत साहेबखा भाखरोत का
२७९ कवित्त राजसीघ भाखरोत को
२८० गीत राजसीघ भाखरोत का
२८१ गीत गुजरीका बेटा का नारायण दासजी को दैलतखा बेटो छै तीको गीत छै
२८२ गीत जैतसीघ मानसीघोत का
२८३ दूहा वाकाउत को
२८४ गीत सपूत का कवि हीमळाजदान
२८५ गीत कपूत को
२८६ गीत बैसर मानसीघोत को
२८७ दुहा सवाई जसीघजी को
२८८ गीत सगार कछवा का
२८९ कवित नाथाउत कछवावा का
२९० गीत जगलाडा राजा विठल्दास गोड को
२९१ गीत राजा अनाद का
२९२ कवित राजा बीठ को डूगरसी वाझडीका कह्या
२९३ गीत राजा अनरुद्ध गोड का
२९४ कवित्त सावझडी
२९५ गीत राजा नरसग का
२९६ गीत जाति हरामण
२९७ गीत अरट गोडां का
२९८ गीत अरजन गोड का
२९९ गीत समुराम गोड को
३०० गीत राजा मनारदासजी का
३०१ गीत राजा उतमरामजी का
३०२ गीत वीरभद्र गाड को
३०३ गीत अरजन वीरभद्र का
३०४ गीत जोरावरसिंघजी महाराजा छत्रसिहजी का नाथजी को
३०५ गीत उदयभाण हरभाण गोड का
३०६ गीत सगता गोड को
३०७ दूहो रासाणा सागा उतमराव रतन का कह्यो
३०८ गीत थानसीघ सागावत को
३०९ गीत किनसीघ गोड को
३१० गीत दला झाला का
३११ गीत राजा कीरतसीघ सादडी का ठाकरा का
३१२ गीत नाथजी झालाताण को ठाकुर का
३१३ कुडल्या जसात झाला का
३१४ दूहो माधवसीघ झाला को
३१५ दूहो मदनसीघ झाला को
३१६ कवित्त हमतसिंघ झाला का
३१७ मत्र हिंमतसीघ झाला उपर
३१८ गीत आलमसिंघ झाला का
३१९ दूहो कवित्त पुवारा का
३२० गीत सादुळ पुवार का
३२१ गीत रावत मयण उमट का
३२२ गीत परसराम उमट को
३२३ दूहा मानधाता पुवार बीजोल्या का ठाकुर का

३२४ गीत नगा खाती को
३२५ गीत नारगदे सती को
३२६ गीत राजपूता का गाढ को
३२७ गीत ग्रनोपसीध कछवावो को
३२८ गीत माधोसीघ कछवावो अजब गढ मानगढ का ठाकुर को
३२९ गीत गोयददास माधाणी का कछवावो
३३० गीत कमा माधाणी कछवावो
३३१ कवित्त सवाई जैसीघ को
३३२ कवित्त सतारा का राजा
३३३ कवित्त हृरदसाह बुदेला का
३३४ कवित्त ग्रातमाराम रूघनाथसीघ गोड भाखरोत को
३३५ कवित्त तवरसाह् भाट का
३३६ कवित्त धरती चकुवं हुवा का
३३७ कवित्त रुपगा की खोड (गीता के दोष) को
३३८ कवित्त प्रसताइक देवीदास को (नीति सम्बन्धी काव्य है)
३३९ कवित्त कुडल्या गिरधर की कही
३४० गीत अरठ ग्रमरसीघजी खातोली का ठाकुर का
३४१ गीत महाराजा भगतरामजी को चोसर, भीरयारीदास बागडी को कहयो
३४२ गीत डोढो पठनाळा सदासिव का
३४३ गीत सावझडा
३४४ गीत जानि अठनालो श्री रामच■ जी रो
३४५ गीत पदमसीघजी रहणावत को ठाकुर ज्या की ठुकराण्या मथुरा मे काम आयी ज्या का
३४६ गीत दोढो वागा को
३४७ निसाणी राव सोडा की (पत्र त्रुटित होने से अपूर्ण हैं)

यह महत्वपूर्ण वृहदाकार ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर मोट अक्षरो मे लिपिबद्ध किया गया है। पत्र सब खुले है, कागज जीर्ण होने के फलस्वरूप खण्डित हैं। पूर्वी राजस्थान के अनेक वीरो पर भी गीत हैं। यह सग्रह केवल एतिहासिक दृष्टि से ही नही डिगल गीतो की रचना के अध्ययन हेतु भी उपयोगी है।

६३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, सूरजमल, बारट दुर्गादत, खिडिया प्रताप आदि २ रा० शो० स०, ३ ४८ ४ २६.७×१७ सेमी० ५ २६, ६ १६–२२, ७ १९ वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ वश भास्कर के छद (सूरजमल कृत) –

इस प्रसिद्ध ग्रथ वश भास्कर क कुछ छद है—

प्रारम्भ—

चढया मलार ले तुषार नौ हजार नच्चते (पत्र–७)

२ गीत वीरमदेजी रो –

वीरमदे का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

बरसे विरदेत समथ दाय वळ, लाह छत्तीस भुजा भडलेय
राणा रावळ मुरडता, दोयण हठ कीया वीरम देव ॥१॥ (पत्र–१)

३ महाराजा वलवतसिंघ री निसाणी (बारट बुरगादत्त कृत) –

यह रतलाम के शासक वलवतसिंह की निसानी (काव्य का एक प्रकार) है। मिलावें प्रथाक १६२६३, रा० प्रा० वि० प्र०।

प्रारम्भ—

"बदन कर गुण नाथ कू जे पूत गवर का,
मुध बुध दे गज का वदन लबा उदर का,
राजा बलवत सीघ न्रप रतन नगर का
कोड समापी रतन सीघ को जोड अवर का ।"

अतिम भाग—

विरदाता सिर मोलीया चुण काट विबर का
मान महा बळ सारपा राजा जैपुर का
दान दीया पट कोड का हद्दे सायर का
वीरमदे राठाड था राजा ईडर का।" (पत्र–४)

४ गीत पृथ्वीसिंघ रो (खिडिया प्रतापजी कृत) –

प्रस्तुत गीत किशनगढ के महाराजा पृथ्वीसिंह की वीरता से सबधित है।

प्रारम्भ—

'जरद भीडिया सुभट अस साझ जडका जडक,
खुळे फुण सेस रा थाय लडका लडक
वजे वाराह री डाढ वडका वडक
किसनगढ नाथ री चढी वडका कडक ॥१॥ (पत्र–१)

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा हुआ है। लिखावट साधारण है जो पत्र के एक ओर ही है।

६४ वीर गीत सग्रह आदि

१ वीर गीत सग्रह आदि, कविया दान कविया रामचद्र मुरारीदास, दुरसा आढा, खिडिया केसरीसिंह विठु जगराम, वारट भैरूदान आदि, २ रा० शो० स० ३ १२२६१, ४ २२.५×१५ सेमी०, ५ ११३ ६ १५–२४, ७ १६ वा

शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में संकलित कृतियों की सूची-क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत महाराजधिराज बाहदरसिंघजी रो
(२) गीत महाराज कवर बिडदसिंघजी रो (कविया दानजी कृत)
(३) गीत सेरसिंघजी रो
(४) गीत महाराज विजयसिंघजी रा (कविया दान जी कृत)
(५) गीत सवळसिंघ रा
(६) गीत (कविया रामचद्र कृत)
(७) गीत (मुरारीदास बारट कृत)
(८) गीत सावझडो अपाजी रो (दुरसा आढा कृत)
(९) गीत महाराज विजेसिंघ रा (खिडिया केसरीसिंह कृत)
(१०) गीत मोहकमसिंघ रूपावत (विठु जगराम कृत)
(११) गीत बन्दूक को
(१२) गीत महाराजा विजेसिंहजी रा (बारट भेरूदान कृत)
(१३) गीत महाराजा विजेसिंह रो (बारट भेरूदान कृत)

इन गीतों के अतिरिक्त अनेक कवित्त दोहे आदि ग्रथ में सकलित है जो एतिहासिक महत्व के नही है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नही है। कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है।

६५ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, बखता खिडिया, खिडिया देदाजी, लालस नवला खिडिया हुकमीचद बारट स्यामदान आदि, २ रा० शो० स० ३ १२७७२, ४ २५ × १६ सेमी० ५ १२४ ६ १८-२५ ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ नदराम आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ और अ त के कुछ पत्र लुप्त है। ग्रन्थ की प्रथम काव्य कृति (बखता खिडिया कृत) महाराजा अभयसिंह के अहमदाबाद चढाई से सबधित है जो अपूर्ण है। अन्य कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ कवत ठाकुरा द्वारकादासजी रो (खिडिया देदाजी कृत) —
प्रारम्भ—

"रीझ हुगम राठोड अमर रायण अथीयाता
कमध नाथ किरणाल, पाळ कीधी निज पाता ।"

२ गीत कुन्नलसिंघ री (सालस नयला कृत) –
प्रारम्भ—

नहो पाडी सहर देवसा ग्रमै तर
ग्राउवँ नही कुमलेस ग्रापा"

३ गीत राजा उमेदसिंघ री (सिढिया हुक्मीचद कृत) –
प्रारम्भ—

चन्नी बाजता बरमा पीठ पनामा ऊपरी बेत
मागा बाळ घडी दत पडा आसमेद ॥१॥"

४ नीसाणी नसीत की –
प्रारम्भ—

किणही का विण जाए मे बीमवास न कीजै,
गहणा गाठा वैच कै अन सूगा लीजै,
पड वाचा करणा नही बिन मौत मरीजै,
ठाकुर सु हित राम के ग्रेक दाम न दीजै।"

५ नीसाणी –
प्रारम्भ—

ग्रा माया जग मोहणी, अत हल गावत
क्या सीघा का साधका मुक्ता भरमावत,
कर गाढी पकडी तिका आडी नह ग्रावत,
कर चाढी सो उवरी गाढी सम भावत ग्रादि।"

६ गीत (बारट स्यामदान कृत) –
प्रारम्भ—

'समभर नह ग्रवर सहर दन सरवर
रह थर घर पर नजर भर ग्रादि।"

इसके अतिरिक्त 'भरव अष्टक' फुटकर दूहे कवित्त और बिना शीर्षक के कुछ गीत भी ग्रथ म सकलित है। ग्रथ मे एक ग्रलग से पत्र पर महाराजा मानसिंह के जालोर घेरे से सम्बधित वत्तात लिपिबद्ध—

प्रारम्भ—

'जालोर रा घेरा म सृ जुगताजी नै परची सारू मेलीया परची मिळी नहीं नरै लुगाई री गेणो ले ग्राया नै हाजर कीनो। तरै फुरमायो—कठासू लायो ? तर

कह्यो मारी लुगाई री ह । फुरमायो कीकर दीनो ? अरज करी भाळी छै सा पाटाय लायो छ । फुरमायो—थू घिरै जावै जदी कहो ।"

गीत—

मागण हूँ सदा मामणा मागण जाऊ जाचण वरन जठै

जाधाहर ग्ठवह जोधाण इळ नवपड रा सवच श्रठै आदि ॥१॥"

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है जो अपूर्ण है। इस पर गत्ता नही है कुछ पत्र कीट भक्षित हैं। लिपि सुवाच्य नही है।

६६ फुटकर वीर गीत सग्रह

१ फुटकर वीर गीत सग्रह २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २८१०६, ४ १५.५ × १८.५ सेमी०, ५ ३८, ६ १५ १७, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ मे राजपूत योद्धाओ से सम्बन्धित अनेक फुटकर प्रशस्ति गीत सग्रहीत हैं। प्रारम्भ म उम्मेदसिंह सिसोदिया का गीत[1] अकित है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नम ॥ अथ फुटकर गीत लिप्यते ॥

वटी वाजता धरमा पीठ वीनागा उघडी कैंत,

मागा अभागा लागा अठी आसमान छायी

उपडी वाजदा वागा यू आयो उमेद ॥१॥"

इस प्रकार इसमे ६२ गीत हैं पर सभी बिना शीर्षक के ह तथा किसी के भी साथ कर्ता का नाम नही है। ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट सुन्दर व सुवाच्य है। पत्र सब खुले हैं और गत्ता नही है।

६७ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, करणीदान, खिडिया तेजसी आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २६०८०, ४ १७.५ × २५ सेमी०, ५ ६, ६ १६, ७ १९वी शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ का पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है, इसमे सकलित गीतो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत कटारी रा भाव रो, साणोर

(२) गीत जात साणोर

---

१ प्रकाशित, स० नारायणसिंह भाटी रा० शो० स० जोधपुर (परम्परा, भाग २३)

(३) गीत जात गांणार छोटो
(४) गीत सरवुलंद सूं गढ़ बीथी निण सम रो
(५) गीत महाराजा वगतसिंघजी रो (करणीदान)
(६) गीत महाराजा प्रभैसिंघजी रो जात सावझड़ो
(७) गीत प्रभैसिंघजी रो घाट समै रो
(८) गीत महाराजा श्री प्रजीतसिंघजी रो जात सपखरो
(९) गीत प्रजीतसिंघ रो विढ़िया तेजसी रो कह्यो

इनके अतिरिक्त कुछ बिना "शीर्षक" के गीत भी लिपिबद्ध हैं। लिपि सुवाच्य है। पत्र सब खुले हैं। एक ही व्यक्ति के हाथ से ग्रन्थ लिखा गया है। पत्र पर श्रोर से कीट भक्षित हैं।

इन गीतों में उस समय के शासक-वर्ग के प्रति जन भावनाओं का भी चित्रण हुआ है।

६८ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, नवलजी, आढा खुमाण आदि, २ रा० शो० स०, ३ १४६७०, ४ २०×२८ सेमी०, ५ ३, ६ १३, ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अप्राप्त, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत चापावत कुशलसिंघ रो (नवलजी कृत) —

प्रारम्भ—

"करा घनो कुसलेस लघु वैस मोटा करम
तप सुरधर तणा वैर प्रजु ॥१॥

२ गीत मेड़तिया सीमसिंघ रो (आढा खुमांण कृत) —

प्रारम्भ—

"है चाडण तोह् पछाड़ हाथी सुकव नैवाजण हार तुज
मत्रै मजण सुरताण सागैमा ॥१॥"

३ गीत मेड़तिया सीमसिंघ रो (आ० खुमाण कृत) —

प्रारम्भ—

"माहावाहा कुत्रवाह फौजा तणा मुहरी
सुकव रीजै गुणा देय साथ ॥१॥"

४ गीत भाटी वीसलसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

"आपाड अडी गजा री अवीरच
धजा बधा बिहु पखा सजाघ ॥१॥"

५ गीत महाराजा बखतसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

"घेप में अण साधण वे अग जोधा धणी
तेज तप वदल गए तेज तप बूद गुण अजण अजण तेहो ॥१॥"

ग्रंथ के यह पत्र दो व्यक्तियो के हाथ मे लिपिवद्ध किये गये हैं।

६६ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि, सूयमल मिश्रण, मा० मानसिंह, सादू शकर आदि २ रा० प्रा० स०, ३ १४०२७, ४ ३३ ५ × २६ ५ सेमी०, ५ ५०, ६ १३ २६, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे अधिकाशत विभिन्न ठाकुरो के गीत लिपिबद्ध हैं, विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत ठाकुर भगवतसिंह रौ बूदी राज्य
२ गीत ठाकुर जैतसिंह रौ
३ गीत पुसालसिंह रौ (सूयमल मिश्रण कृत)
४ गीत ठाकुर माधोसिंह रौं (मा० मानसिंह कृत)
५ गीत ठाकुर कल्याणसिंह रौ
६ ठाकुर भगवतसिंह देवलोक हूवा तिण भाव रौ मरसीयो
७ गीत ठाकुर कल्याणसिंह रौ
८ गीत ठाकुर कल्याणसिंह रौ
९ गीत ठाकुर गोपालदास चापावत रौ
१० कवित्त ठाकुर सुरताणसिंह रौ
११ गीत ठाकुर सुरताणसिंह रौ
१२ कवित्त ठाकुर वगतावरसिंघ रौ
१३ गीत सिवाणे कलाजी रौ (कील्याण कृत)
१४ गीत राव जोधा रौ
१५ गीत हीमतसिंह मेवाडा रौ
१६ गीत जैतसिंह रौ
१७ गीत महाराजा मानसिंह रौ (अग्रेजो के विरोध से सम्बन्धित)
१८ गीत सीसोदिया अचलसिंह रौ
१९ गीत हाडा प्रतापसिंह रौ
२० गीत ठाकरा माधोसिंह रौ
२१ कवित्त बूदी रामसिंह रौ
२२ कवित महाराजा मानसिंह रौ
२३ कवित ठाकुर वगतावरसिंह रौ
२४ कवित नव कोटा रौ विगत रौ
२५ नीसाणी ठाकुर मोपतसिंह रौ
२६ नीसाणी ठाकुर दलपतसिंह रौ

२७ गीत सुरताणसिंह री
२८ गीत ठाकुर इंदरसिंह वखतावरसिंह, धनराजसिंह री
२९ गीत ठाकुर सुजानसिंह री
३० गीत ठाकुर माधोसिंह री
३१ गीत ठाकुर सुरताणसिंह री
३२ गीत ठाकुरां वखतावरसिंह री (खिला रा भाव री)
३३ गीत ठाकुर कल्याणसिंह री
३४ गीत ठाकुर सुरताणसिंह री
३५ गीत महाराजा मानसिंह री
३६ गीत राजाधिराज वखतसिंह री
३७ गीत आयस लाडूनाथ री
३८ गीत कोटे पृथ्वीसिंह री
३९ गीत उम्मेदसिंह सायपुर री
४० गीत आयस देवनाथ री
४१ गीत राणा अदमी री
४२ गीत राणा भीमसिंह री
४३ गीत महाराजा गजसिंह री
४४ गीत महाराजा धर्मसिंह री
४५ गीत चानरवा रा रामसिंह भाग री
४६ गीत रतलाम बलतसिंह री
४७ गीत महाराजा मानसिंह री
४८ गीत ठाकुर वखतावरसिंह री
४९ गीत रतलाम बखतसिंह री
५० गीत महाराजा मानसिंह री
५१ गीत महाराजा अजीतसिंह री
५२ कवित्त मानसिंह रा
५३ कवित्त रतलाम बलवतसिंघ री
५४ गीत ठाकर कलाणसिंघ री (साद् धावर कृत)

इन गीतों के अतिरिक्त ६३ फुटकर दोहे और कुछ बिना शीर्षक के गीत कवित्त भी ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

७० वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह, आढा पहाड़खान, आढा हिमता, माडू चना वखता खिड़िया, हुकमीचद खिड़िया, बद्रीनाथ, खिड़िया सुजा मेहडू महारान खिड़िया हेजमी, मोतीसर कोलाजी, करणीदान, डूगरजी, बारठ दुर्गादत्त आदि, २ रा० शो० स०, ३ १६०८३, ४ २९.५×२५ सेमी, ५ १३३, ६ १६ २१ ७ वि० स० १५५२ ई० सन् १७९५ और १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ माधव चद, आढा दोला ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ के प्रारम्भ में अवतार चरित्र (नरहरिदास कृत) लिपिबद्ध है पत्र लुप्त व त्रुटित होने से ग्रंथ अपूर्ण है। पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

'संवत १८५२ वर्षे मासोत्तम मासे चैत्र मासे कृष्ण पक्षे 'एकदशी तिथौ चंद्रवारे सकल पंडित शिरोमणी प्रवर पंडित प० फतेचंद्रजी शिष्य प० रामचंद शिष्य प० माधवचंद लिपता ॥ श्री रस्तु ॥

इसके पश्चात् किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से ऐतिहासिक गीत आदि कृतिया लिखी गई हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गोगादेजो (राठौड) रौ छद जोइया दला न मारियो जिए भाव रौ (पहाडखान कृत) -

अकित है कि राव वीरमदे के पुत्र गोगादे ने जोईया दला का मार अपने पिता का वर लिया।

प्रारम्भ—गाहा—

'अत मत का अव सुथल उगती
सुप्रसन होय दीज सुरमती
पाह राठोड गढ चत्रपती
कहु तँ गोगा कीरती

अतिम—

सत मात तात वधव सैम्रण,
सध गोगा थारे मरण।'

छद सख्या नही दी है।

पुष्पिका—

'समापता, चद पुरास लपतु आढा दोला। कहिया आढा पाडपानजी रा, फागुण सुध पाचम घोळोया मेहल म लषीया।' (पत्र–१६)

(२) गीत ठाकुर सरसिघजी रौ (पहाडखान कृत)
(३) गीत वनसीघ रौ (आढा हिमता कृत)
(४) गीत अटवुवध दीवाणजी रौ (आढा पहाडखान कृत)
(५) कवित्त ठाकुर सरसिघजी रौ (आढा पहाडखान कृत)
(६) गीत शिवसीघजी रौ (सादू चनजी कृत)
(७) कवित्त महाराजा वखतसिह रा (वखता पिडिया कृत)
(८) नीसाणी प्रतापसिघजी जपुर रा घणी री (हुकमीचद कृत)
(९) गीत ठाकुर पुसालसिघ, सेरसिघ रौ (आढा पहाडखान कृत)
(१०) गीत मेडतीया सेरसिघ, सूरजमल रौ (आढा पहाडखान कृत)
(११) गीत ठाकुरा कुसलसीघजी रौ (आढा पहाडखान कृत)
(१२) गीत जालमसिघजो रौ (खिडिया हुकमीचद कृत)
(१३) गीत रायसीघ रो (हुकमीचद कृत)
(१४) गीत रावळ पृथ्वीसिघजो रौ (हुकमीचद कृत)

(१५) छंद महाराणा अरसी रौ (आढा पहाड़खान कृत)
(१६) छंद ठाकुर सेरसिंघजी रौ (आढा पहाड़खान कृत)
(१७) गीत उरजणसिंघजी रौ (खिड़िया बद्रीनाथ कृत)
(१८) गीत गढ रा भाव रौ (खिड़िया हुकमीचंद कृत)
(१९) गीत कालीगजी रौ (खिड़िया सुजाजी कृत)
(२०) गीत राघोल्जी रौ (खिड़िया हुकमीचंद कृत)
(२१) दूहा राणा भीमसिंघ रा (महड़ू महादान कृत)
(२२) गीत राणा भीमसिंघ रौ (महड़ू महादान कृत)
(२३) गीत रायपुर धणी भापरसी हिरदेनारायणोत रौ (खिड़िया तजसी कृत)
(२४) गीत ठाकुर प्रतापसिंघजी रौ
(२५) गीत ठाकर आनदसिंगजी रौ (मोतीसर कोलाजी कृत)
(२६) गीत महाराजा अभसिंघजी रौ
(२७) गीत महाराजा बखतसिंघजी रौ (करनीदान कृत)
(२८) गीत ठाकुर चानणसिंघजी रो सागधसी रै धणी रौ (आढा पहाड़खान कृत)
(२९) गीत ठाकुर आणदसीघजी रौ परवा रा धणी रौ (आढा पहाड़खान कृत)
(३०) गीत कवर नारपानजी रौ भुजनगर रौ धणी रौ (आढा पहाड़पान कृत)
(३१) गीत महाराजा अभसिंघजी रौ (आढा पहाड़खान कृत)
(३२) गीत चहुआण जोधसिंगजी रौ (खिड़िया बद्रीदास कृत)
(३३) गीत रावतजी जैतसिंघजी रौ (आढा पहाड़पान कृत)
(३४) गीत राजा रायसिंघजी रौ (आढा पहाड़पान कृत)
(३५) गीत हरीसिंघजी रौ (चोटाला डूगरजी कृत)
(३६) गीत राजा गभीरसिंघजी रौ (आढा दौला कृत)
(३७) दातारा री (बलवतसिंह की) स्तुति निसाणी एक, बारठ दुरगादत्त री कही

इसमें राजस्थान के विविध दातार वीर राजाओं की प्रशसा की गई है। अन्त के पत्र लुप्त होने से कृति अपूर्ण है।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साफ नहीं है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

७१ गीत भाण सोनगरा रो

१ गीत भाण सोनगरा रो (सादडी के ठाकुर), २ रा० प्रा०, सं० ३ १४६८३ ४ ४६ × १५ सेमी० ५ १ खरडा, ६. २६, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० गीत का विषय इस प्रकार अंकित है—

'गीत सादडी रो ठा० सोनीगरा भाण अपराजोत कुंभलगढ महाराणाजी श्री प्रतापसिंघजी री वषत म साको कर काम आयौ तिण रो—

गीत प्रारम्भ—

जुग च्यार न जावैं नाम जद जस
कान्हडद जालोर कर, भाणवौ रतन जडायो भारथ ॥१॥

अन्तिम भाग—

दूहा—

छत्र ज्यूही छायो मन छत्रपतीया उपरा
दस दिस दरसायो जस प्रताप थारो जसा ॥३॥

प्रस्तुत पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। पत्र हाथ का बना प्रतीत होता है लिखावट साधारण है।

७२ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि द्वारकादास, हिमता खिडीया आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१८ ४ २३ × १७ सेमी०, ५ १२, ६ १८-२१, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) गीत जात सावभडो म्हाराजा गजसिहजी रो
(२) गीत सपषरा महाराज अजीतसिंघजी रो (द्वारकादास कृत)
(३) गीत सावभडो कूपावत हरीसिंघजी रो, चूक रा भाव रो
(४) गीत सावभडो वीसनसिंघजी रो (हीमता खिडीया कृत)

इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर कवित्त इत्यादि लिपिबद्ध हैं। लिखावट कहीं-कहीं बहुत अशुद्ध है। पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है।

७३ उदैभाण रो गीत

१ उदैभाण रो गीत, वामणसी, २ रा० शो० स०, ३ ३२६२, ४ २०×१० सेमी, ५ १ ६ १७, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत गीत जोधपुर के राव चन्द्रसेन का वंशधर और श्यामसिंह के पुत्र उदैभाण का है।

प्रारम्भ—

अडण जोध चहुग्रान चीत्तोड थानै अडै
वटक दील्ली तणी न्हवाट कीधौ
वाप रै हुकम उदैभाण भरे वळ
टताळ पगा तलवाडी दीधौ ॥१॥

अंतिम भाग—

फते करी फोजा पग फेरी श्याम रा काम सुधारीया एम
असुर पछाड आवी उदो राम रावण सीर मारीआ जेम।"

यह पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिपि साधारण है।

७४ महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

१ महाराजा जसवंतसिंह रो गीत, २ रा० शो० स०, ३ ४०५६, ४ ४१×१४३ सेमी० ५ १, ६ २६, ७ वि० सं० १९०७ ई० सन् १८५० ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत लंबा गीत महाराजा जसवंतसिंह के धरमाट युद्ध से सम्बन्धित है।

प्रारम्भ—

'करा पाकडै नै पेक छाडे कमध वजाडै विचै पचै पच सवद वाजा।
साह रा पुगटा जसो आपडसिध रमाड मक्डा जेम राजा ॥१॥"

अंतिम भाग—

"पाणा केवाण घमसाण दळ पाम्सी दापीयो जोध जोधाणा दूजो
माणा कुळ जिसा फरमाणा पगला भरै सरिखा मकड पद राग सूजा।७॥"

यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है।

७५ वीर गीत कवित्त संग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त संग्रह आदि, वखता खिडिया, ओपा आढा, मोतीसर चत्रा आढा ओपा, मोतीसर प्रभुलाल खिडिया हुक्मीचंद आढा किसना, आ

दुरसा, आढा जवान, ढोली तिलोका, सादू भोपालदान आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२२६६ ४ २४×१७ सेमी० ५ १५८, ६ १८-२१, ७ वि० स० १६०७, ई० सन् १८५०, ८ कविया सेणीदान, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में प्रारम्भ के ५ पत्र लुप्त हैं। प्रस्तुत ग्रंथ की प्रथम कृति राजनीत रा कवित्त' है—मिलाव ग्रथाक २३५ पु० प्र०।

पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

'इति श्री कवि दवीराम कृत राजनित रा कवित्त सपुरण लीपत कवीया सणीदान नग्र जोधपुर वालसमद रा डेरा मडनीया कवर चत्रसालजी ' डेरे समत् १६०७ का कानी व्द बाचे सुणें जासू राम राम है वाच जो।"

१ कवित्त राजा सिवराजजी का (भूषन कृत) –

इद्र जिम जभ पर बाडव जीम अब पर
रावन कुटब पर रघु कुल राज है ॥१॥

२ गीता री सूची –

इसमे १४६ गीतो की प्रथम पक्तिया की सूची दी गई है। यथा—

१ गीलडा समज रै सगळी जग दार्प।
२ पडै नाग कोड धीक आप्रप प्रजळै।

३ कवित्त महाराजा अभसिंघजी रा (वखता खिडिया कृत) –

महाराजा अभसिंह मे अहमदाबाद युद्ध आदि घटनाओ को लेकर १२० कवित्त छप्पय लिखे गये है। मिलावें ग्रथाक १३५१८, रा० प्रा० वि० प्र०।

४ गीतो की सूची –

फिर इसम १७८ गीता की सूची दी गई है।

५ गीत भगती री (ओप आढा कृत)
६ गीत राजा भीम (सीसोदिया) को (मालीसरा चत्रा कृत)
७ गीत रावत राधोदास माहाराजा माकमसिंघजी का (आढा ओपा कृत)
८ गीत राजा गोपालदास को (पिडीया वडदास कृत)
६ गीत माडणोत हरनाथसीघजी गाँव अळाय री (मोतीसर प्रभुलाल कृत)
१० गीत भगती रौ (आढा ओपजी कृत)
११ गीत साहुपुरा उम्मदसिंघ रौ पीडीया हुकमीचद कृत)
१२ गीत राठोड अमलजी रो
१३ गीत सेलार दोढो हीमतसिंघजी को
१४ गीत मीमा घना रौ
१५ गीत जालमसिंघ किसोरसिंघोत रौ
१६ छप्पय कवित्त राणा प्रतापसिंघ का (आढा दुरसा कृत)

१७ गीत राणा भीमसिंघ रौ (आढा किसना कृत)
१८, गीत राणा जवानसिंघ रौ (आढा जवान कृत)
१९ गीत (ढोली सीलाक भदोरा कृत)
२० गीत जयपुर राजा रामसिंघजी रौ (सादू भोपालदान कृत)
२१ गीत झाला परीथीसिंघ रौ (सेणीदान कृत)
२२ गीत महाराजा मानसिंघ रौ कैयौ चारणा रौ

इन गीतो के अतिरिक्त सतियो के नाम, नव कोटा के कवित्त, फुटकर कवित्त और कुछ बिना शीर्षक के गीत भी सकलित हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

७६ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह नगजी खिडिया आदि, २ रा० ना० स० ३ ३४, ४ १२ ७ × २० सेमी०, ५ १८, ६ ८-१३, ७ वि० स० १९२० ई० सन् १८६३, लछमणपुरा, ८ देव चारण, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे कुछ उमरावो से सम्बन्धित प्रशस्ति गीत सग्रहीत हैं, विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत खिडियौ लक्षमण रौ कह्यौ –

ग्रन्थ मे प्रारम्भ के ३ पत्र लुप्त हैं। प्रस्तुत गीत अधूरा है।

" मोम गाम थवा घोर तोपा सार वोर वागा
तोर वागा गात वळा असोम जग तार
अबीड अराड चडा होड हाक टाक वागा ॥६॥"

पुष्पिका इस प्रकार अकित है—

गीत लिख्यो देव चारण जाति खिडिया लछमणपुरा मध सम्त १९२० जेठ सुदि २।' (पत्र–४३)

२ गीत हुकमसिंघ रौ (नगजी खिडिया कृत) –

प्रारम्भ—

' करग झलि कैवाण देईवाण मचना वळट
पद आपाण धरै रोस पाठ आनीयो, रूप जमराण हुकम प्रवल ॥१॥'
(पत्र–१३)

३ गीत बूढसू ठाकर प्रतापसिंघ रो (खिडिया नगजी कृत)
प्रारम्भ--

"वागा त्रमाळा कराळा सदा हुदा वीर लागा योम्य
वोम वोम जागा गरढा प्रसोम पखा घाण ॥१॥
(पत्र-१½)

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे ४५ गीत और लिपिबद्ध है पर गीता के शोपक नहीं है। लिपि साधारण है। प्रारम्भ म लाल स्याही स लिखावट है ग्रन्थ दो व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है।

७७ वीर गीत, अवतार चरित्र आदि

१ वीर गीत अवतार चरित्र आदि, बारट नरहरदास आदि, २ रा० शो० स०, ३ १४०७५, ४ ३२ × २१ सेमी०, ५ २८५, ६ ३०-३२, ७ वि० स० १८४१ १९३५ ई० सन् १७८४ १८७८, ८ खिडिया बावनदास माधोसिंह आदि, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रथ के प्रारम्भ मे कुछ वीर गीत, आयुर्वेद नुसखे इत्यादि दिये है।

१ गीत बडली लालसिंह रो –

गीत म प्रथम पक्तिया पदमा सादू के गीत की है फिर लालसिंह का वृत्तात आ जाता है।

प्रारम्भ—

'आटीला उठ सतारा वाळा तो उपर वागा त्रमाळा
नाह भाग जागो नीदाळा, कैईक कटक आविया ॥१॥"

अन्तिम भाग—

जुनी येह जाता हद जूटो, पूनी सीह सावळा छूटो,
छूटा प्राण पछै हट छूटो सीस पछै गढ तूटो'

(२) कवित्त (अज्ञात कर्तृक)

(३) विजय अवतार गीत (अवतार चरित्र) बारट नरहरदास कृत

४ राठौडा री पीढ़ियाँ –

जोधपुर के शासक महाराजा सरदारसिंह से आदि नारायण तक की पीढिया का नामोल्लेख है।

(५) राठौडा री पीढियो

(६) गीत सावभडो

७८ वीर गीत कवित्त संग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त संग्रह आदि, २ रा० शो० सं०, ३ ८२१६, ४ २६.४×३१ समी, ५ १४१ ६ एकसी नहीं ७-२२, ८ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ विविध एवं अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अधिकांश गीत जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समसामयिक हैं। कई गीत अभय सिंह अजीतसिंह, दुर्गादास व लूणकरण सम्बन्धी प्राचीन हैं। कई गीत मारवाड़ के सामन्तों पर भी हैं।

१ गीत ठाकुरां श्री गोरधनजी रा –

यह प्रशस्ति गीत चंडावळ के ठाकुर गोवरधनसिंह का है।

२ गीत उदावतां रा, सोमडावस जोरजी कृत –

इसमें उदावत राठोड़ों की प्रशस्ति है।

३ कवत राणा कूभाजी रौ –

प्रस्तुत कवित्त के बारे में ग्रंथ में इस प्रकार उल्लेख है—

राणोजी कूंभोजी श्री एकलिंगजी रै दरबार दरसण करण पदारिया न पाछा पदारता गउ ताडी तद राणाजी भड फरमाई काम ६न काम ६न तारेम कर' लिए री समस्या पूरण करण नै चारण कवत बणायी—

घर उतर पूरब धारता निजर नागौर धरती
गोवत्री संग्रहे दप मन भाय डरती आदि ॥" (पत्र–१)

४ फुटकर गीत कवित्त –

इन गीत कवितों में (बोगसा गंगाराम, बोगसा हररामजी, सरवडीया बोगसा रायसिंह कृत) क्षत्रियों का यश वर्णन है। (पत्र–२)

५ गीत रास ठाकुर केसरीसिंह (वासणी के कविया कुताराम कृत)

६ गीत पालडी ठाकुर जवानसिंघ रौ (प्रभूदान कृत)

७ गीत अकुटवध (रतनू वीरभाण)

८ गीत तेमा (ग्राम) रा गोयादे सुदरदासजी रौ (बोगसा राय सिंह कृत)

९ गीत भाटी हरदासजी रौ (बोगसा रायसिंह कृत)

१० गीत भाद्रजण उदसिंघजी रौ (बोगसा उकारसिंह कृत)

११ गीत बाळ नारोगजी रौ (बोगसा रायसिंहजी कृत)

१२ गीत पाचोटे वगतसीगजी रौ (पटावस रौ कहौ)

१३ गीत कला रायमलोत सिवाणा रौ

१४ गीत रतनसिंघ महेसदासोत रौ (बोगसा करमचद कृत)

१५ गीता भायला रा

१६ गीत पाचोट रूपसीगजी रौ
१७ गीत चामू ठाकुर लिछमणसिंघ (गाडण मगलजी कत)
१८ गीत रावळ सिवसिंघजी रौ
१९ गीत सेपावता रौ
२० गीत लाडपानीया रौ (छीला के वारठ भोजराज कृत)
२१ गीत भरूदानजी रौ (रायपुरीया के ग्राठा दौनजी लछमीरामजी के पुत्र का कहा
२२ गीत अजीतसिंघजी रौ (दमामी राम कृत)
२३ गीत तखतसिंघजी रौ (तुवर सावतसिंह कृत)
२४ गीत भरथपुर राजा रौ (आसिया बाकीदास कृत)
२५ गीत रामपुरा चद्रावत मोहकम सिंघजी रौ
२६ गीत कुचामण ठाकुर सिवनाथ सिंघजी रा (चुरली के गणा राम कृत)
२७ गीत मुडकी के बहादरसिंह रौ (गुमानपुरा के सूजा कविया कृत)
२८ गीत रायपुर ठाकुर केसरीसिंगजी रौ
२९ गीत भाकरसर (ग्राम) रा (बारसा रायसिंह कृत)
३० गीत महाराजा मानसिंघजी रौ (देवल सदाराम कृत)
३१ गीत सवाईसिंघजी रौ पोकरण रा रौ चोवारी री राड रौ (पिड़िया केसर कृत)
३२ गीत ठा० देवीसिंघजी रौ
३३ गीत करण सवाईसिंघ रौ (चूक से मारने का वृत्तांत)
३४ गीत चवाण वलूजी रौ
३५ गीत राणा भीमसिंगजी रौ
३६ गीत चवाण जोरावरसिंघजी मानसिंघोत रौ
३७ गीत ठाकुर दवीसिंह पोकरण रौ (ब्रमदास कृत)
३८ गीत ठा० जैतसिंघ रौ (ब्रमदास कृत)
३९ गीत चापावत बलूजी गोपाल-दासोत रौ
४० गीत सलूबर राणा रौ
४१ नीसाणी जैसलमर रावल री (बोगसा गगाराम कृत)
४२ निसाणी (ग्रोरगजेब री)
४३ निसाणी सेरसीगजी कुसलीगजा री
४४ गीत ठाकुर कुसलसिंघजी सेरसिंघजी रौ
४५ गीत मानसिंघजी रौ (कविया बावनदान कृत)
४६ दूहा मानसिंहजी रा (मोसण भाना कृत)
४७ गीत राजाओ की दानशीलता का (बारट हरदान कृत)
४८ गीत ठा० जुगताजी रौ (सादू मोहवत कृत)

४९ गीत ठा० जुगताजी रौ (बारठ गिरवरदान कृत)
५० गीत ठा० जुगताजी रौ (लाळस उमद कृत)
५१ गीत मा० मानसिंघजी रौ (सोयटायस के गाडण जोरजी कृत)
५२ गीत महाराजा मानसिंघ रौ (बारठ सोभजी कृत)
५३ गीत महाराजा मानसिंह रौ (आसिया हुरस्पजी कृत)
५४ गीत महाराजा मानसिंह रौ (गाडण आइदान कृत)
५५ गीत महाराजा मानसिंहजी रौ (बारहठ बिजैराम कृत)
५६ गीत महाराजा मानसिंहजी रौ (मोतीसर आवडदान कृत)
५७ गीत मा० मानसिंह रौ (मीसण भोमजी कृत)
५८ गीत भरूदानजी रौ (सोजत के सेवग आसाराम कृत)
५९ गीत महाराजा मानसिंहजी रौ (बारहठ हरदान कृत)
६० गीत मानसिंहजी रौ (आसिया दाना कृत)
६१ गीत ठाकुरा तेजाजी रौ (मोतीसर प्रभूदानजी कृत)
६२ गीत ठाकुरा जुगताजी रौ
६३ गीत ठा० भरूदानजी रौ (किसाजी कृत)
६४ गीत ठा० जुगताजी रौ
६५ गीत भैरूदानजी रौ
६६ गीत ठा० जुगताजी रौ (मातीसर जगमाल कृत)
६७ गीत वएासूर गोयदजी रौ (रावळ विसराम कृत)
६८ दूहा जुगताजी रा (मा० मानसिंह कृत)
६९ मरसिया ठाकुर जुगताजी रा
७० गीत ठाकुरा भैरूदानजी रौ
७१ गीत जुगताजी रौ (रावळ किसनाजी कृत)
७२ गीत महाराज प्रजीतसिंह रौ (पिंडिया तेजसिंह कृत)
७३ गीत महाराज रायसिंघजी रौ
७४ गीत नीबाज ठाकुर कल्याण सिंघजी रौ (सादू उम्मेदसिंह कृत)
७५ कवित्त उमादजी रा (बारठ ग्रासा कृत)
७६ गीत कवित्त श्री लाडूनाथजी रा
७७ गीत माधोराव व मीरगशाह रौ
७८ गीत महाराजा विजसिंघजी रौ (सादू उम्मेदसिंह कृत)
७९ गीत विट्ठलदास चापावत रौ (रामजी कृत)
८० गीत धतडी रा
८१ गीत महाराजा विजसिंहजी रौ (जोरजी सादू कृत)
८२ गीत महाराजा विजैसिंघजी रौ (उम्मेदसिंह कृत)
८३ गीत देवीसिंघ रौ (उम्मेदसिंह कृत)

८४ गीत जगरामजी रौ (सादू जोधजी कृत)

८५ गीत ठा० शिवसिंघजी आउवा रौ (जोरजी कृत)

८६ गीत चारणो रै मान रा (उम्मेदसिंह कृत)

८७ गीत उदसिंघ रो (साद् लालजी कृत)

८८ गीत मा० विजयसिंघजी रौ (सादू लाल कत)

८९ गीत वलू चापावत रो (साद उम्मेदसिंह कृत)

९० गीत विट्ठलदास चापावत रौ (सादू राम कृत)

९१ गीत उदैभाण रौ (सादू उम्मेद कृत)

९२ गीत राव लूणकरन रो (सादू उम्मेद कत)

९३ गीत राव डूंगा रौ (सादू गगादान कृत)

९४ गीत भाटी उरजण रा (सादू जोधजी कत)

९५ गीत मा० अभयसिंह रौ (सादू सुरतानजी कत)

९६ गीत राव डूंगाजी रौ (सादू प्रतापजी कत)

९७ गीत सेहसमल रौ (सादू उम्मदसिंह कृत)

९८ गीत कुशालसिंघजी री (सादू लालजी कृत)

९९ गीत महाराणा रै कीर्ति रौ (सादू नाथूराम कत)

१०० गीत मा० बख्तसिंह रौ (सादू पृथ्वीराज कृत)

१०१ गीत अभसिंघजी रौ (कविया करणीदान कत)

१०२ गीत कुशालसिंघ रौ (उम्मेदसिंघ कत)

१०३ गीत मा० तख्तसिंघ रौ (सादू भोपालदान कृत)

१०४ गीत मा० विजैसिंघजी रौ (सादू सुरता कृत)

१०५ गीत नारसिंघजी रौ (नाथूरामजी लालस कत)

१०६ गीत विजा सरवहीया रौ (बारठ ईसरदास कत)

१०७ गीत छडावळ ठाकुर सेरसिंघजी री (सादू जोरजी कृत)

१०८ गीत युद्ध री भीषणता रौ (सादू उम्मेदसिंह कृत)

१०९ गीत युद्ध रै ताडव रौ हुकमीचद खिडिया)

११० गीत साणार (पृथ्वीराज सादू कत)

१११ गीत युद्ध वीर री लक्लीफा रौ (सादू पृथ्वीराज कृत)

११२ गीत दुगदास रौ (सादू सबळा कत)

११३ गीत राठाड अमरसिंह रौ (आढा दुरसा कृत)

११४ गीत महाराजा विजयसिंघजी रौ (मातीसर प्रभुदान कृत)
११५ गीत राणाजी रौ (सादू उम्मर्दसिंह कृत)
११६ गीत महाराजा विजयसिंघजी रौ (मोनीमर प्रभुदान कृत)
११७ गीत वीर उम्मर्दसिंह रौ (खिडीया हुकमीचंद कृत)
११८ गीत राजपूतां री वीरता रौ (सादू लालजी कृत)
११९ गीत कुशलसिंघ री वीरता रौ (कविया करणीदान कृत)
१२० गीत महाराजा अभयसिंह रौ (सादू पृथ्वीराज कृत)
१२१ गीत (सादू राम कृत)
१२२ गीत वलू चापावत रौ (आढा दुरसा कृत)
१२३ गीत वलू चापावत रौ (सादू सुरताजी कृत)
१२४ गीत गारधन रौ (बारठ कानजी कृत)
१२५ गीत (बारठ दलपत कृत)
१२६ गीत वीरता रौ (बारठ सतीदान कृत)
१२७ गीत (बारठ सतीदान)
१२८ गीत (खिडीया वगता कृत)
१२९ गीत गोवरधनजी रौ (चुतराजी बालण कृत)
१३० गीत वीरता रौ (चुतरजी बालण कृत)
१३१ गीत महाराजा जसवंतसिंह रौ (सादू राम कृत)
१३२ गीत सीसोदिया रौ (धधवाडिया पालाजी कृत)
१३३ गीत महाराजा बिजैसिंह रौ (सादू उम्मर्दसिंह कृत)
१३४ गीत कुशालसिंह रौ (कविया करनीदान कृत)
१३५ गीत (खडीया सूजाजी कृत)
१३६ गीत मा० मानसिंह रौ (बोगसा गोरधन कृत)
१३७ गीत मा० मानसिंह रौ (दवल सदाराम कृत)
१३८ गीत रावळ बैरीसाल सामान (सादू जोधाजी कृत)
१३९ गीत महाराजा जसवंतसिंघ रौ (आढा गुलाबसिंह कृत)
१४० गीत महाराणा श्री सर्दुसिंघजी रौ (आढा गुलाबसिंह कृत)
१४१ गीत भींडर महाराज हमीरसिंघजी रौ (आढा गुलाबसिंह कृत)
१४२ गीत वघाली जालमसिंघ रौ (आढा गुलाबसिंह कृत)
१४३ गीत रायपुर ठाकुर माधोसिंग रौ (आढा गुलाजी कृत)
१४४ गीत नीवाज ठाकुर छत्रसिंग रौ (आढा गुलजी कृत)
१४५ हरियाडाणे ठाकुर हणूंतसिंघजी रौ (आढा गुलजी कृत)

१४६ गीत आउव ठाकुर बगतावरसिंह जो रो (आढा गुलजी कृत)
१४७ गीत नारायणदासजी पीलवा वाळा रो (आढा गुलजी कृत)
१४८ गीत आसोप ठाकुर शिवनाथसिंघ रो (आढा गुलजी कृत)
१४९ गीत आउवे ठा० देवीसिंघ रो, आसोप ठाकुर चैनसिंहजी रो
१५० जैसे सरवैया रा सोरठा
१५१ चाप मनैउत रा दूहा
१५२ हमीर गुलह रा दूहा सोरठा
१५३ चावेवोउत रा दूहा
१५४ जबदल रा दोहा (विहारि कृत)
१५५ उगवाला रा दूहा
१५६ राउल जाम रा सोरठा
१५७ महणसी सूरावत रा सोरठा
१५८ माइण कूपावत रा दूहा सोरठा
१५९ दूहा नागराजरा सारगोत रा
१६० धारूनै आनलोत रा सोरठा
१६१ वाले धमळउत रा सोरठा
१६२ पीठवा रा सोरठा
१६३ दादूवे पठाण रा सोरठा
१६४ दूहा उनड रा
१६५ दूहा इले चावडे रा
१६६ मूर्जे वाढे रा सोरठा
१६७ वणारउत रा सोरठा
१६८ मूळवा रा सोरठा
१६९ जपरै रा सोरठा
१७० राहू रा सोरठा
१७१ बाघरे रा सोरठा
१७२ ओढा रा सोरठा
१७३ राणा प्रताप रा सोरठा
१७४ दूहा सोरठा राणगदेव रा
१७५ दूहा सोरठा चुगलउत रा
१७६ दूहा सोरठा राणा सोनग रा
१७७ वाघा कोटडीया रा आसाजी बारठ रा कहीया सोरठा
१७८ राव गागा रा सोरठा
१७९ फाफना रा सोरठा
१८० राणा सागा रा सोरठा
१८१ दूहा सोरठा राणा हमीर रा
१८२ संजसी डूगरसीहोत रा सोरठा
१८३ दूहा सोरठा गाग डूगरोत रा
१८४ दूहा सोरठा अचलदास रायमलोत रा
१८५ दूहा सेप सूजावत रा
१८६ दूहा वीकमसी चहुवाण रा
१८७ दूहा सोरठा पत सूडे रा
१८८ वीका भाटी रा सोरठा
१८९ दूहा सोरठा रावळ तेजसीहोत रा
१९० दूहा सोरठा काधळ रा
१९१ दूहा सोरठा सागे नगराजोत रा
१९२ दूहा सोरठा बीजाणद रा
१९३ नग भारमलोत रा सोरठा
१९४ दूहा सोरठा विजै देवडे रा
१९५ दूहा सोरठा साकर चहुवाण रा
१९६ दूहा सोरठा अखेराज सोनगरा रा
१९७ दूहा सोरठा मानसिंघ सोनगारा रा
१९८ दूहा सोरठा जसवत सोनगरा रा
१९९ दूहा सोरठा अचलदास सोनगरा रा (किसना बोहगुणोत कृत)

२०० दूहा, सोरठा जगमाल हिगोतोत रा
२०१ साचेला रा दूहा सोरठा
२०२ दूहा सोरठा सूरे महाउत रा
२०३ दूहा सोरठा सकेला रा साधु रा
२०४ दूहा सोरठा सूरजमल पीमावत रा
२०५ दूहा सोरठा जोधाजी रा
२०६ दूहा सोरठा पृथीराज जैतावत रा
२०७ दूहा देईदास जैतावत रा
२०८ दूहा राव श्री रिडमल रा (चादण पडीया कत)
२०९ नीसाणी रतलाम महाराजा श्री बलवतसिंघ री (लोळावास दुरगादत कृत)
२१० गीत कवत्त वरसिंघ जोधावत रा
२११ गीत जैस सिहावत रो
२२१ दूहा गीत भीम रामसिघोत रा
२१३ गीत वरसिंघोत केसोदासोत रौ
२१४ गीत केसोदास भीमोन रो
२१५ गीत राव चद्रसेन मालदेवोत रौ
२१६ गीत राव चद्रसेन री (आसिया दूदाजी)
२१७ गीत उग्रसेन चद्रसेनोत रो (आसिया दलाजो कृत)
२१८ गीत करमसेन उग्रसेनोत रौ
२१० गीत रामसिंघ कमसेनोत रौ
२२० गीत रामसिंघ कमसेनोत रो (आढा केसोदास कत)
२२१ गीता नरबद सूजावत रो
२२२ गीन जसूत कलावत रो (राजसी अयावत कत)
२२३ गीत जगनाथ जसवतोत रौ (आढ किसना दुरसावत कृत)
२२४ गीत कछवाइजी रौ (गोवरधन बोगसा कृत)
२२५ गीत राव केसरीसिंघ रौ (बारहट जसा कत)
२२६ गीत राव केहरीसिंघ रौ
२२७ गीत सुजानसिंह जगनाथोत रौ (बोगसा करमचद कृत)
२२८ करमसी जोधावत रौ गीत
२२९ गीत प्रतापसिंघ हरचदोत रौ
२३० गीत महेसदास दलपतोत रौ
२३१ गीत ठाकुर हरिदास रौ (साडु ईसरदास मालावत कत)
२३२ गीत जोगीदास भाटी न जगमाल रतनू कहे
२३३ गीत जोगीदास भाटी रौ (केसोदास गाडण कत)
२३४ गीत सुरजमल हाडा रौ
२३५ गीत सख उदेसिंघोत रौ (भालण वरसडा कत)
२३६ गीत राव कला रामोत रौ (दुरसा कृत)
२३७ गीत आउवा रा ठाकुर हरनाथ सिंघजी रौ
२३८ गीत आउवा ठाकुर हरनार्थसिंघ रौ (सिंघवी कुसलराज कत)
२३९ गीत राठौड दुरगादास रौ

यह वृहदाकार ग्रथ अनेक व्यक्तिया के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । इस ग्रथ मे कुछ महत्वहीन अपात कविर्ता भी हैं, जिन का विवरण यहा नहीं दिया गया

है। ग्रन्थ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं। ग्रन्थ के पत्र हाथ से बने हुए हैं। ग्रंथ पर गत्ता मढ़ा हुआ है।

७९ वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह, पृथ्वीराज करनीराम, बारट रूपा, ओपा आढ़ा, परमराम बोगसा गोरधन, नदलाल भादा, करनीदान, बद्रीदास खिड़िया, भादाजी बाजी, मोतीसर चतरा खिड़िया हुकमीचद, बखता खिड़िया, जीवराम भादा, खिड़िया तर्जसिंह, सोभा नदलाल कृपाराम, आढ़ा महादान, आसिया भीम, बारट पदमसिंह, आढ़ा दुरसो पहाड़खान बारट बगसीराम कवि राव दाना, पनजी आढ़ा, बारट हरसूर, बारट रामदान, अजन बारट, बांकीदास, मेहड़ू महादान, सादू चैना, खिड़िया केसर, आढ़ा भोपालदान, लाळस नवला, लाळस नाथूराम, मेहड़ू रिवदान, सादू भोपालदान, बोगसा रतना, सादू हरिसिंह, बारट तिलोक, बारट चालकदान, रतनू जाला सायबोजी सुरताणिया, सादू अनोप, सादू पृथ्वीराज, सादू नाथा, धीरण माला, सादू उम्मेद, बारट जोधाजी मुहता रूपा, महाराजा मानसिंह सेवग धनजी, सेवग मगजी आदि २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ २४४१९ ४ २६ ५ × १९ ५ सेमी०, ५ ९७ ६ २० ३५, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ आढ़ा भोपालदान आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में राजस्थान के विभिन्न राजाओं, सामन्तों तथा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के प्रशस्ति गीत लिपिबद्ध हैं। इस म प्रारम्भ ८ गीत भक्ति सम्बन्धी हैं। राणा प्रताप के गीत से ऐतिहासिक गीत प्रारम्भ होते हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है।

१ गीत बारट सायबदानजी के कह्यौ
२ गीत सावझड़ो री
३ गीत साणोर प्रथीराजजी को कह्यौ
४ गीत करनीराम री कह्यौ
५ गीत बारट रूपजी री कह्यौ
६ गीत ओपा आढ़ा कृत
७ गीत अजतुला को
८ गीत श्री हनुमाजी री कह्यौ वंद परसरामजी री सूरदास बलुदा वास
९ गीत राणा प्रतापसिंघजी को गोरधनजी कृत)
१० गीत साणोर राणा अमरसिंघ री
११ गीत म्हाराणा राजसिंघ को
१२ गीत महाराणा श्री सग्रामसिंघजी का
१३, गीत नदलाल भादा री कह्यौ
१४ गीत करणीदान कविया को कह्यौ
१५ गीत बदरीदास खिड़िया को कह्यौ
१६ गीत अरसीजी री भादाजी बाजी री कह्यौ

१७ गीत राणा श्री ग्ररसीजी थी हाडै चूक कीदौ जणी उपर
१८ गीत महाराणा भीमसिंघजी को
१९ गीत साणोर ग्राढा ओपाजा रौ कह्यौ
२० गीत राजा भीम का मोतीसर चतरा रौ कह्यौ
२१ गीत राजा माधोसिंघजी रौ पडीया हुक्मीचद कत
२२ गीत पृथ्वीसिंघ प्रतापसिंघजी को बारट रूपा कृत
२३ गीत राजा वपतसिंघजी का वपताजी कृत
२४ गीत राजा ग्रमसिंघजी को वपताजी रौ कह्यौ
२५ गीत महाराजा विजैसिंघजी को
२६ गीत राजा उमेदसिंघजी को हुक्मीचद कत
२७ गीत रावत श्री सग्रामसिंघजी को
२८ गीत महारावत जसवतसिमजी रौ पिडिया बदरीदासजी कृत
२९ गीत जीवराम भादा कृत
३० गीत रावत सावतसिंघजी को पिडिया तेजसी कृत
३१ गीत रावत जसुतसिंघजी का बारट रूपा जी कत
३२ गीत पिडिया हुक्मीचद कत जसवतसिंह को
३३ गीत पिडीया बद्रादास कृत
३४ गीत छोटो साणोर रावत दयोसिंघ का
३५ गीत ग्रकुटवध रावत श्री राघो दासजी को भादा नदलाल कृत
३६ गीत रावत राघोदासजी को पडीया बद्रीदास कृत
३७ गीत हुकमीचदजी कत (रावत राघोदासजी का)
३८ गीत रावत राघोदास तथा म्हाराज मोपमसिंघजी को आढा ग्रोपा को कह्यौ
३९ गीत साणोर राजा बाहादरजी गोपाळदासजी को
४० गीत राजा गोपाळदासजी को रामदानजी कृत
४१ गोपालदासजी का गीत पडीया बद्रीदास कृत
४२ गोपाळदासजी का गीत बारट रूपजी कृत
४३ गोपाळदासजी को गीत सोभा नन्दलालजी कत
४४ गीत राजा गोपाळदासजी को रूपजी कृत
४५ गीत राजा गोपाळदासजी को कृपाराम कृत
४६ गोपाळदासजी को गीत ग्राढा महादान कृत
४७ गोपालदास को गीत ग्रासिया भीमजी कृत
४८ गीत गोपालदास को हुक्मीचद कृत
४९ गीत गोपालदास को बारट पदमसिंह कृत

५० गीत पातसाह अक्बर को आढा दुरसा कृत
५१ गीत ठाकुर सेरसिंघजी को पहाड़खान कृत
५२ गीत मेड़तिया सूरजमलजी को
५३ गीत वासवाला रावळ को
५४ गीत उम्मेदसिंघसिंघ सगतावत को
५५ गीत राणा राजसिंघजी को
५६ गीत कुंवर प्रथीराज को
५७ गीत मालदेव को
५८ गीत माराज नाथजी को बारट बगसीराम कृत
५९ गीत किसोरसिंघ रावराजा दलेल सिंघ को कविया करनीदान कृत
६० गीत राठौड़ सुरजमलजी को
६१ गीत उदावत अमरसिंघ को
६२ गीत बपताजी कृत
६३ गीत दौलतसिंघजी को पडिया बखता कहै
६४ गीत जालमसिंघ केसरीसीघोत को
६५ गीत बलूजी चापावत को
६६ गीत दुरगादासजी को पडीया तेजसिंघ कृत
६७ गीत माडणोत हरनाथसिंघजी को मोतीसर प्रभुदान कृत
६८ गीत ठाकुर दुरजणसिंघजी धाणोराव धणी को
६९ गीत चहुवाण उदसिंघजी को हुकमीचद कृत
७० गीत सावझड़ो सैलार दोढो हिमतसीघजी को
७१ गीत सहसमल करणोत को मोतीसर तुलछा कृत
७२ गीत रावराजा उम्मेद को कविराव दानजी कृत
७३ गीत सावझड़ो धाडायता को
७४ गीत बीकानेर राजा रायसिंघ री दातारी रो
७५ गीत स्वामिधम के भाव का पनजी आढा कृत
७६ गीत भाटी गुलाबसिंघ को बारट रूपाजी कृत
७७ गीत साणोर कुंवर बषतावरसिंह जी राजावत को
७८ गीत भीमा धना को
७९ गीत कुंवर अजीतसिंघजी को
८० गीत मूळवा का हरसूजी बारहट कृत
८१ गीत रायसिंघ गोयल को छोटो साणोर
८२ गीत हरद्वार की राड को बपताजी कृत
८३ गीत कमालपा बीहारी को
८४ गीत कूंपा देवड़ा लपावत को
८५ गीत अबक्डो बड़ा चहुवाण को
८६ गीत राणा दीपसिंघजी को बारट रामदान कृत
८७ गीत सुपसरो राजा बाहादरजी गोपालदासजी को बारट रूपाजी कृत

१२३ गीत महाराजा बख्तसिंह रौ सादू अनोपजी रौ कह्यौ
१२४ गीत महाराजा अभैसिंघजी रौ
१२५ गीत अभैसिंघ रौ सादू प्रथीराज गाव खीउरा रौ कह्यौ
१२६ गीत महाराजा अजीतसिंघ रौ
१२७ गीत महाराजा अजीतसिंह रौ बाघीदास कृत
१२८ गीत सादू नाथाजी कृत
१२९ गीत महाराजा गजसिंघजी रौ
१३० गीत जसवंतसिंघजी रौ उजैण री लडाई रौ धीरण मालाजी कृत
१३१ गीत महाराजा सूरसिंघजी रौ गुजरात सोवो हुवौ तिण समै रौ
१३२ गीत महाराजा उदयसिंघजी रौ सादू मालाजी कृत
१३३ गीत महाराज (जयपुर) माधोसिंघजी रौ हुकमीचंद कृत
१३४ गीत महाराज बहादुरसिंह किसनगढ रा हुकमीचंद कृत
१३५ गीत महाराजा प्रतापसिंघजी रौ
१३६ गीत महाराजा राजसिंघजी रौ
१३७ गीत महाराजा बहादरसिंघजी रौ
१३८ गीत राणा भीवसिंघजी रौ महडू महादान कृत
१३९, गीत राणा अडसीजी रौ
१४० गीत राणा राजसिंघ रौ
१४१ गीत राणा प्रतापसिंघजी रौ
१४२ गीत सूरतसिंघ हरीसिंघोत चापावत हरसोळाव रा ठाकुर रौ सादू उम्मेद कृत
१४३ गीत सेरसिंघ प्रथीसिंघात चडावळ रा ठाकुर रौ
१४४ गीत महेशदास दल्पतोत कूंपावत आसोप ठाकुर रौ सादू उमेद कृत
१४५ गीत महेशदास रौ मेहडू महादान कृत
१४६ गीत महेशदास रौ मोतीसर प्रभूदान रौ कह्यौ
१४७ गीत सामसिंघ अभैसिंघोत चापावत बलूंदा रा ठाकुर रौ
१४८ गीत जैतसिंघ कुसलसिंघोत चापावत आउवा ठाकुर रौ
१४९ गीत सवाईसिंघ सबळसिंघोत चापावत पोकरण ठाकुर नै रा० सिभुसिंघ दौलतसिंघोत उदावत नीबाज रा ठाकुर रौ भेळौ (सादू उम्मेद कृत)
१५० गीत केसरीसिंघोत जोधा रौ उमेदसिंघ कृत)
१५१ गीत रा० कनीरामसिंघोत कूंपावत आसोप रा ठाकर रौ
१५२ गीत सरसिंघ सिरदारसिंघोत रौ
१५३ गीत हरीसिंघ सेरसिंघात रौ कूंपावत चडावळ ठाकुर बारट जोधाजी कृत
१५४ गीत मुहणसिंघ सभसालोत कूंपावत चादेळाव रा ठाकुर रौ
१५५ गीत विसनसिंघ हरीसिंघोत चडावळ ठाकुर रौ बाकीदास कृत
१५६ गीत भाटी जैतसिंघ उदैभाणोत बालरवा रा ठाकुर रौ
१५७ गीत फिलाय रा बखतावरसिंघ रौ

१५८ गीत चैनसिंघ झीलाय रौ हुकमीचद कृत
१५९ गीत पश्री हरसाहजी जपर फौज मुसाहब रौ हुकमीचद कृत
१६० गीत सेखावत भोपालसिंघ रौ हुकमीचद कृत
१६१ गीत सेखावत चादसिंघ सीकर रौ हुकमीचद कृत
१६२ गीत भरतपुर रौ कविराज बाकीदास कृत
१६३ गीत दादू पथिया रौ भडेच सू लडाई कीवी जिए रौ सादू उम्मेदसिंह कृत
१६४ गीत सायपुरा रा राजा उम्मेद सिंह रौ हुकमीचद कृत
१६५ गीत सिवसिंघजी जुनीया रा रौ कविया करनीदान कृत
१६६ गीत जोधा सेसमलजी रौ
१६७ गीत राव राजा बुधसिंघ बूदी रा रौ
१६८ गीत राव राजा अजीतसिंघजी बूदी रा रौ हुकमीचद कृत
१६९ गीत राजा जालमसिंघ झाला रौ महडू महादान कृत
१७० गीत धारोराव ठा० बीरमदेजी रौ सुरताणीया सायबजी रौ कह्यौ
१७१ गीत सायबाजी नै ओपजी रौ कह्यौ
१७२ गीत लाळस नवलाजी कृत
१७३ गीत पडोया इदरदासजी मेडता रौ राड मे काम आया जिण रौ महादानजी कृत
१७४ गीत षीची गोरधनजी रौ हुकमीचद कृत
१७५ गीत राव इदरसिंघजी रौ
१७६ गीत रावत परतापसिंघजी चूडावत ग्रावेर रा रौ
१७७ गीत रावत फतेसिंघजी आवर रा रौ पडिया बदरीदास कृत
१७८ गीत रावत जसवतसिंघजी देवगढ रा पडिया बदरीदास कृत
१७९ गीत चूडावत उरजनसिंघजी रा पडिया बदरीदास कृत
१८० गीत सायपुरा रा रैणसिंघजी रा हुकमीचद कृत
१८१ गीत राव श्री बीकाजी रौ
१८२ गीत रायसिंघ बीकानेर रा रौ
१८३ गीत राव श्री अमरसिंघजी रौ
१८४ गीत चहुवाण उमेदसिंघ रौ हुकमीचद कृत
१८५ गीत भाटी दुरजणसिंघजी राव ळोत मवाड रा रौ महादानजी कृत
१८६ गीत रिणछोडदास जगनाथोत चापावत आहोर रा ठाकर रौ
१८७ गीत भाटी रामसिंघ मुकनदासोत बालरवा ठा० रौ मु० रूघा रौ कह्यौ
१८८ गीत भाटी सवळसिंघ आसकरणोत राव महेव रा रौ
१८९ गीत बलू गोपालदास चापावत रौ
१९० गीत महेसदास सूरजमलोत चापावत आउवा रा ठाकुर रौ

१९१ गीत प्यारा री भेळी (हल्दी घाट री राड री)
१९२ गीत गोपाळदास सुरताणात मडतिया री
१९३ गीत बघनोर रा ठा० जैतसिंघजी री मेहडू महादान कृत
१९४ गीत अमल री मेहडू महादान कृत
१९५ गीत उरजणसिंघजी रामपुर ठा० री बाकीदास कृत
१९६ गीत दिपणी आवा ईंतसिया सू गाव घोरीया लडाई हुई तिण समे री लाळस रामदान कहै
१९७ गीत ठाकुरा वीठलदास गोपाळदास चापावत री
१९८ गीत ठाकुर जालमसिंघ भादराजण री सादू हरीसिंघ मूगेसर री कहयो
१९९ गीत ठाकुरा बषतावरसिंघजी भादराजण री मेहडू रिवदान कृत
२०० गीत ठाकुर सुरतसिंघजी हरसोळाव री सादू उम्मेद कृत
२०१ गीत ठाकुर जालमसिंघजी कुचामण लुहावास री लडाइ में काम आया जिण समे री हुकमीचद कृत
२०२ गीत रावळ प्रथीसिंघजी री हुकमीचद कृत
२०३ गीत राव प्रतापसिंघजी माचोडी रा री हुकमीचद कृत
२०४ गीत सेखावत गोपाळसिंघजी पेतडी रा री हुकमीचद कृत
२०५ गीत सालमसिंघजी मेवाड रा री हुकमीचद कृत
२०६ गीत भेरूसिंघजी ढुढाड रा हुकमीचद कृत
२०७ गीत सिंघवी भीवराज री तुगे पटेल माधाजी सु राड कीवी न फते हुई तिण री सादू उमेद सिंह री कहयो
२०८ गीत सिंघवी अखैराज री सादू चैनजी कृत तळाव अपसागर बाग करायो तिण री
२०९ गीत सायवजी सुरताण री कह्यो
२१० गीत अखैराजजी री भगदत्तजी धनजी री कहयो
२११ गीत सिंघवी इन्द्रराज रा हजूर सायबा (महाराजा मानसिंह) सुप सू पुरमायो घेरा थका
२१२ गीत महाराजा मानसिंह री सादू चनजी कृत
२१३ गीत महाराजा मानसिंह री सादू प्रथीराज री कह्यो
२१४ गीत भादा दौलजी मेवाड रा कह्या
२१५ गीत सेवग भगदतजी तथा धनजी री कह्यो
२१६ गीत सिंघवी गुलराज री लाळस नाथूराम कृत
२१७ गीत सिंघवी वनराज रा जाळोर हमलो कीनो १८६० रा सावण वद ७ परभातरा ने कायम कीनो ने काम आया जिण समा रा सेवग धनजी रा कहया गाव बडलू रा

२१८ कवत्त माळवा रा दवळ नैं माडणोता मारीयो तिण रो

२१९ कवित्त गढ जोधपुर घेरा मे कवि लोक हाजर रेया तिणा रा सेवग मगजी कृत

२२० कवित्त प्रियागराजजी रो गोपाल कृत

८० वीर गीत कवित्त आदि सग्रह

१ वीर गीत कवित्त आदि सग्रह, २ रा० शो० स०, ३ ८२२७, ४ १५.५×१०.५ सेमी०, ५ १६७, ६ १४–१५, ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ के प्रारम्भ मे भक्ति, नीति सबधी अनेक कृतिया सकलित हैं, आगे जोधपुर महाराजाओ की वशावली राव कमधज से मानसिंह तक तथा बीकानेर की वशावली बीकाजी से सूरतसिंह तक अकित है। काव्य कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत बलूजी रो
२ गीत रतनू वीरभाण कृत
३ गीत महाराजा विजैसिंघ रो
४ गीत महाराजा बगतसिंघजी रो
५ गीत भक्ति सबधी (ओपे आढे कृत)
६ गीत अमरसिंघ रो
७ गीत महाराजा विजैसिंघ रो
८ गीत आयस देवनाथ रो
९ गीत महाराजा मानसिंह रो
१० गीत कवत्त अमरसिंघ रो
११ गीत महाराजा विजयसिंह रो (आढा ओपा कृत)

इसके अतिरिक्त ग्रथ मे कबीर री साखी, सकुन विचार, स्फुट कुण्डलिया, गूढाथ रा दूहा, छद तुलसीदासजी रा और गोरखनाथजी रा, स्यामजी रा कवित्त, शनीश्चरजी री कथा, कामलो चिरत करे तिण री विगत इत्यादि कृतियाँ सकलित हैं। यह ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र जीर्ण होने के कारण त्रुटित हैं। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं। ग्रथ मे अनेक पत्र खाली पडे हैं। ग्रथ अपूर्ण है। प्रारम्भ के ६ पत्र लुप्त हैं।

८१, वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह नवला आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १६२६३, ४ १८×१३.५ सेमी०, ५ ११६, ६ १२ ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ में सग्रहीत कृतिया का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ निसाणी रतलाम बलवतसिहजी री
२ कवित्त ओसवाळा री उत्पत रा
३ गीत अमरसी रो मोदलवाडा वाळा को सावभड़ो
४ गीत मेहता मोतीरामजी रो
५ गीत मेहता अगरजी को
६ गीत सेठजी फतैचदजी को
७ सेठ जोरावरमलजी को सवीयो
८ गीत सेठ जोरावरमलजी को
९ गीत मेहता सेरसीघजी का
१० गीत किसनमल सीगवी को
११ कवित्त देलवारे राज वैरीसाल रो
१२ गीत नाडोल राज माहासीगजी का
१३ गीत मेरपुर रावजी गुमानसिग रो
१४ गीत दरबार जवानसिघजी का व्याद का भाव का
१५ गीत रावजी माधोसिघजी रो दासजी रो
१६ गीत रावत फतेसीगजी को
१७ गीत रावतजी प्रतापसिगजी रो
१८ गीत रावत पृथ्वीसिघजी को (नवला कृत)
१९ गीत रावत प्रतापसिघजी को
२० गीत ठाकुर नाथजी जीलोला वाळा रो
२१ गीत मेळवे ठाकुर मोखमसिंघ रो
२२ गीत ठाकुर जतसिंघ रो
२३ गीत देवले दीवाएाजी रो
२४ गीत रावत प्रतापसिघजी रो
२५ गीत वदनोर ठाकुर जैतसीघजी को पाग रा भाव रो
२६ गीत प्रतापसीगजी जैपुर वाळा को सायता विजसीगजी जोधपुर वाळा की जो भाव को
२७ गीत जालमसिंघ झाला को
२८ गीत राणा सागा रो
२९ गीत दरबार प्रतापसिंघजी रो
३० गीत अमरसिंघजी को
३१ गीत राणा राजसींघ रो
३२ गीत दरबार भीमसिंघजी रो, वीवाह रा भाव रो
३३ गीत दरबार सरूपसीगजी को

इनके अतिरिक्त बिना शीर्षक के अनेक कवित्त, गीत दोहे आदि लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है। ग्रंथ पर जीर्ण गत्ता मढा हुआ है।

८२ फुटकर गीत कवित्त इत्यादि

१ फुटकर गीत कवित्त इत्यादि २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १३५१६, ४ २२×१७ सेमी०, ५ १८, ६ १८–२२ ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ मे अंकित सभी कृतियां अज्ञात कर्तृक हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत भंडारी भवानीदास दीवाण रो

२ कवत्त भडारी किलाणदास रौ
३ गीत सपपरो देवीसिंघ सार्मासिघोत रौ
४ गीत सपपरो माधोसिंघ रौ
५ गीत साणोर देवीसिंघ सार्मासिघोत रौ सावझडा

इन कृतिया के अतिरिक्त फुटकर कवित्त, बिना शीर्षक के गीत, लहर बत्तीसी, ऋतु सबधी दोहे इत्यादि सग्रहीत हैं।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट अशुद्ध है। प्रारम्भ व अन्त के अधिकाश पत्र गायब होने के फलस्वरूप ग्रथ अपूर्ण है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

८३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, २ रा० शो० स०, ३ ६५००, ४ १६×२३ सेमी०, ५ ४८, ६ ७–१४, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे सग्रहीत ऐतिहासिक महत्व की कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ महाराजा भीमसिंह रौ गीत	२ रावळ जतमाल रौ गीत
३ गीत पनजी रौ	४ गीत महाराजा अजीतसिंह रौ
५ गीत महाराजा जसवतसिंह रौ	६ महाराजा गजसिंह रौ गीत
७ गीत महाराजा जसवतसिंह रौ	८ गीत राणा राजसिंघ रौ
९ गीत राणा रामसिंघ रौ	१० गीत रावजी श्री वीरमदे रौ
२१ गीत राणा जगतसिंह रौ	१२ गीत सीसोदिया सालमसिंघ रौ
१३ गीत सीगी जेठमलजी रौ	

ग्रथ अनेक व्यक्तिया द्वारा लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य नही है, काट छाट अधिक है। प्रारम्भ व अन्त के पत्र लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है।

८४ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आढा गोयददास, आढा सगता, सादू माला चुतरा राव बुधसिंह कल्याणदास, वरसता खिडिया आदि, २ रा० शो० स०, ३ १४६७१, ४ २०×२८ सेमी०, ५ २८, ६ ११–१४, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० ग्रथ म सकलित कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ कवत्त मेडतिया प्रतापसिंघ रो (भाढा गोयददास कृत)
२ गीत रावन जैसीघ रो
३ गीत ग्रमरसीघ रो (भाढा सगता कृत)
४ गीत महाराजा बपतसिंघ रो (भाढा गोयददास कृत)
५ गीत राठौड किसनदासजी रो (भाढा गोयददास कृत)
६, गीत प्रसतावीक राज श्री हीमोलोत रो
७ गीत राव सुरताण रो (सादू माला कृत)
८ गीत राजा भीम रो (चुतरा कृत)
६ गीत राजा कीरतसिंघ रो (राव बुधसिंह कृत)
१० गीत मेडतीया पदमसिंह रो (कल्याणदास कृत)
११ गीत राव सुरताणजी रो
१२ कवत्त जैतावत केसरीसीघ कहै
१३ गीत विजैसिंघ रो
१४ गीत मानसिंघ रो (भाढा गोयददास कृत)
१५ गीत महाराज अमैसिंह रो (बखता खिडिया कृत)
१६ गीत राठौड पदमसिंघ रो (भाढा गोयददास कृत)

इसके अतिरिक्त ग्रथ म बिना शीर्षक के गीत कवित्त भी लिपिबद्ध हैं। ग्रथ के पत्र खुले ह। पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है।

८५ वीर गीत दोहा सग्रह

१ वीर गीत दोहा सग्रह, सगराम, नगजी, दुरसा आढा महाबत आदि, २ रा० शो० स०, ३ ६६६, ४ २७.५×२० सेमी० ५ ७१, ६ २३, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ नाथूराम लाळस ६, राजस्थानी, देवनागरी, १० ऐतिहासिक कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत दोहा नाथों रा –

महाराजा मानसिंह के गुरु देवनाथ और जलधर नाथ से सबधित गीत लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

" पोरसा पारस्स कळी कुभ उगे प्रभात रे
तेणा री सुद्रिष्टी रे साथ रे हुरे ताप ।" (पत्र–८)

२ गीत वीरमदे सोनगरे रो –

यह जालोर के शासक कान्हडदे के पुत्र वीरमदे सोनगरे की वीरता से सबधित प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

'सर सेल कटारी पट न सकियो, डरै पयोहर अहर दुप।
फुरत इसी वीरमदे फिरियो, पिड विण सीस पराड मुप॥१॥"

३ गीत राव गागे रौ –

जोधपुर के राव सूजा के पौत्र और बाघाजी के द्वितीय पुत्र गागे का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

"लापा सात लहर अथाहा लोहडा, लडे पत ताय माहि लिया।
राय समद रूठे रवदायण, कटक लाप जळबोळ किया॥१॥"

४ गीत मालदेजी रौ –

यह गागा के पुत्र मालदेव का प्रशस्ति गीत है।

प्रारम्भ—

"कळह थोट नित पालट कमध कटकें किये
दूद सुत काढि पग झाट देना ॥१॥"

५ राजान राजावत रौ बात वर्णाव –

प्रस्तुत वार्ता आबू के शासक राजेसर के राजकुमार राजान की है।

प्रारम्भ—

"आ उकार महादेव परमातमा परम सिव परम सक्ति अचलेसर अचळ आसण कीयो। तिण थान करी ठौड नदी गिर हेमाचळ रौ वेटो मेरगिर अठार गिर रौ राजा आबू गिरद कहीजे, तिणरै वैसणे उपर ईसराव अवतार महाराज राजेस राज करै आदि।"

६ गीत राव करमसेण रौ (आडा दुरसा कृत) –

प्रारम्भ—

'करे फौज पारभ हेजम्म लसकर कहर
छिले रज गयण लग भाण छायो।
मागवा रायसिंघ अभिनमो मालदे
उठि सुरताण कमसेण आयो॥१॥" (पत्र-३)

७ गीत राजा बहादुरसिंघजी रौ –

प्रारम्भ—

"थम पायोद परखा नीम सीम जे पताळ थडे
भूमडे पुरजा जाळ पवे माळ भाव ॥१॥"

मध्य काल के सगीत कला, रीति रिवाज, खान-पान, वेष भूषा, शृगार इत्यादि के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

मूल ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पृष्ठ पर लाल स्याही से दोहरी लाइनें खीच कर दोनो ओर पर्याप्त मार्जिन छोडा गया है। लिखावट मे लाल स्याही का भी प्रयोग किया गया है। ग्रथ बे सिला लाल कपडे के सुन्दर गत्ते मे सुरक्षित है। ग्रथ म अधिकाश पत्र खाली पडे हुए है। पत्र मोटे, हाथ के बने हुए है। ग्रथ अपूर्ण है। पहले के कुछ पत्र गायब है।

८६ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह साद चेनजी आदि २ रा० शो० स०, ३ ८२३४ ४ ३१×२१ ५ सेमी०, ५ १५७, ६ २१–२८, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तराद्ध, ८ अप्राप्त, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे सग्रहीत कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवत्त व्यास कचरदास रा सादू चैनजी कृत
२ गीत गोरधनजी धाधल री
३ गीत सीरोपाव कुरब कायदा री सादू चैनजी कृत
४ कवत्त ठा० बखतावरसिंघजी भादराजूण री सादू चैनजी कत
५ गीत महाराजा मानसिंघजी री
६ गीत बरस गाठ री सादू चनजी कृत
७ गीत दातारा री
८ गीत नागोर रै हाक्म री
६ गीत नाथजी री सादू चैनजी कृत
१० गीत मानसिहजी री सादू चैनजी कृत
११ कवित्त पीढिया री रायपुर ठाकुर रूपसिंघजी री सादू चैनजी कत
१२ कवित्त कवरजी दलपतजी री खीवराज कृत
१३ गीत उम्मेदसीग सीसोदिया री
१४ गीत गुलराज सिंघवी री सादू चनजी कत
१५ गीत पाबू रै विवाह री
१६ गीत महाराजा मानसिहजी रै फुरमायाडा
१७ गीत सादू नचैजी कृत
१८ गीत कूपावत हरीसिंगजी रा सादू चैनजी कत
१६ गीत जगमालोत कृत
२० दूहा कटाळीयारा ढोली धोळा कृत
२१ गीत भगती री जगमाल कृत
२२ कवत्त महाराजा भीमसिंघजी री सादू चैना कृत
२३ गीत थोवसर ठाकुर वखतावर सिंग जी री सादू चैनजी कृत
२४ कवित्त राजनीत रा देवीदास

२५ गीत साद्रू चैनजी कृत
२६ गीत वोगसा मनहरजी रौ रावळ विसनराम कृत
२७ गीत भगती रौ ओपाजी आढा कृत
२८ गीत जोर्सी सिमजी रौ साद्रू चैनजी कृत
२९ गीत साद्रू चैनजी कृत
३० गीत कासली सेखावत जगतसिंघ रौ रतनू भैरूदास कृत
३१ फुटकर जूना गीत (विना शीर्षक के करीब ६० गीत हैं)
३२ कवित्त अपेसिंघ मेडतिया व वघनोर अमरसिंह महीया कृत
३३ फुटकर गीत
३४ गीत चैनजी कृत
३५ दूहा जेहा भाराणी जाडेजा री ठकुराणीया रा कहीया
३६ गीत धाय भाई देवजी रौ साद्रू चैनजी कृत
३७ गीत साद्रू चेनजी कृत
३८ कवत्त बीरभाण रतनू कृत
३९ गीत कुचामण ठाकुर रणजीतसिंघ जी रौ साद्रू चैनजी कृत
४० गीत ठाकुर केसरीसिंघ लारै सती पातर चौथा हुई जिण भाव रौ गीत साद्रू चैनजी कृत
४१ गीत " ढोली रामा कृत
४२ गीत महाराजा मानसिंघ रौ साद्रू चैनजी कृत
४३ गीत मोहताजी हरपचदजी रौ साद्रू चैनजी कृत
४४ कवित्त जोसी भूराराम कृत
४५ कवित्त महामाया रा साद्रू चनजी कृत
४६ गीत जगा कृत
४७ गीत मानसिंहजी रौ चिमना कृत
४८ गीत मसूदा ठाकुर देवीसिंघ रौ घोडी रा भाव रौ
४९ गीत कवित्त भादराजण ठाकुर रौ साद्रू चैनजी कृत
५० भाटिया री साप रा कवित्त
५१ गीत जैमलजी रौ
५२ झमाळ विरमदे दूदावत नू
५३ कवत्त राठोडा रै तेरे साप रा
५४ गीत करणीजी रौ साद्रू चनजी कृत
५५ गीत रूपमा सतीजी रा साद्रू चनजी कृत
५६ गीत महाराजा मानसिंघजी रौ ब्याव रै भाव रौ साद्रू चैनजी कृत
५७ कवत्त राव मालदेजी रा आसा बारहठ कृत
५८ गीत गिरवरदानजी रौ कहयो
५९ गीत महाराजा मानसिंघजी रा साद्रू चैनजी कृत

अलावदीन पातसा गढ लिया व अन्य घटनाओ रो विगत

इसमे अलाउद्दीन बादशाह द्वारा विजय किये गये दुर्गों के नाम सवत इत्यादि दिये गये हैं। आगे विभिन्न नगर कब किसने बसाये वर्णित हैं।

'सवत १३५१ जैसलमेर उपर कमलदेव नै विदा कीयौ घेरो बरस १२ रह्य न

पछ गढ हाथ आयौ । समत १३५२ फागण वद = दौल्तावाद लीयौ । दीपण म सवन १३५३ गुजरात लीवी गहलोत करण काम आयौ । समत १३५५ गढ चीतौड लीयौ, राणा रतनसेन न पकडीयो लखमणजी बेटा १२ स काम आयौ । समत १३५८ जेठ वद = गढ रीणथभार लीयो । राव हमीर जैतसिघोत काम आयौ । ममत १३६४ गढ अवेणी लीयौ, चहुआण मातल सोम काम आया । ममत १३६५ मडावर लीयौ । ममत १३६५ अजमेर लीवी । समत १३६८ जाळोर लीयौ । वैसाप सुद ५ कान्हे जल परवेस लीवी वीरमद काम आयौ । समत १३७१ अलावदीन मुवौ समन १६७४ मीगसर वद २ नै पातसाह लागौ चैत वद ११ तुटी । समत ११७२ राणो रतनसी जुहर करन काम आयौ । समत १५९२ चापनर मुगल आया राव प्रतापसिंघ चहुआण जुहर कीयौ । सवत १६०० जोधपुर पालटीया पातसाह सेरसाह आयौ । सवत १५७० राव लूणकरण जसलमर सवत १५८१ राव लूणकरणजी डासी काम आया । समत १६२६ राव मितारामल्जी जोधपुर लियौ, समत १२०० काती सुद २ सिहाजी द्वारकाजी री जात्रा कर पूठा फिरता लाप फूलाणी जाडोजा न मारीयौ समत १६२६ असाड सुद ११ राज श्री रायसिंघजी महतो करमचद बछावत बीकानेर आया, समत १६३३ सीरोही अकबर पातसाह लीयौ महाराज रायसीघजी साथे हुता प्रतमा (जन मूर्ती) ५०००० हुती जैन री सु लेनै सीकर फतेपुर पहोचती कराई । समत ८०६ दीली मडाणी वसाख सुद १३ समन १११५ नागौर मडाणौ । ११८१ फलोदी पारसनाथजी री प्रतमा थपी ।

१२९३ वसतपाल तेजपाल आबुजी देहरा कराया । समत १६६८ बीसनगढ मडाणो ।"

६१ गीत महाराजा मानसिंघजी रौ (सादू चैनजी कृत)
६२ गीत महाराजा उदयसिंघ री (माला कृत)
६३ गीत अकबर बादशाह रा (सादू माला कृत)
६४ गीत (कन्नजी मिसण कृत)
६५ गीत महाराजा मानसिंघ रा (सादू चैनजी कृत)

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि सुवाच्य है । ग्रंथ मे कुछ पत्र गायब हैं, ग्रंथ अपूर्ण है, ऊपर गत्ता नही चढा है । ग्रंथ के दोनो ओर कही-कही पर एक ओर लिखावट है । इसमे बहुत दुबारा लिख दी गई है जिन्हें यहाँ नही लिया गया है । इन ...

अतिरिक्त भी बहुत से दोहे, कवित्त ग्रन्थ में संकलित हैं। जिनका विशेष ऐतिहासिक महत्व नहीं है।

८७ महाराजा मानसिंह रा गीत कवित्त आदि

१ महाराजा मानसिंह रा गीत कवित्त आदि, बारट सीसराराम, सेवगजी वणराम, कविया हुणूतराम, वणसूर जुगता, ओपा आढा आदि, २ पु० प्र०, ३ ३३ ४ २६ × १६ सेमी०, ५ २६ ६ २३, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रन्थ के प्रारम्भ में गोरखनाथजी के पद आदि अनैतिहासिक कृतियां लिपिबद्ध हैं तत्पश्चात् जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह के प्रशस्ति गीत कवित्त (विविध कवियों द्वारा रचित) संग्रहीत हैं। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत मानसिंह री (अज्ञात कर्तृक)

२ गीत सादूजी री कहियौ

३ गीत बारट सीसराराम री कह्यौ

४ गीत बारट सीसराम री कह्यौ

५ सेवग जीवणराम रा कह्या कवित्त

६ गीत कविया हुणूतदान री कह्यौ

७ दोहा वणसूर जुगता रा कहधा

८ गीत छोटो सावभड़ो ओपा आढा री कह्यौ

इसके अतिरिक्त गोरखनाथ के पद 'गर्भावली' काफरबोध योग ग्रन्थ आदि कृतियां लिपिबद्ध हैं। प्रारम्भ के काफी पत्र लुप्त हैं। ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है लिपि सुवाच्य है। अन्त में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं। ग्रन्थ पर कपड़े का गत्ता मढा है।

८८ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह उमेदसिंह सादू, ओपा आढा और नवलों लाळस, २ रा० शो० सं० ३ १८७ ४ ३२ × २४.५ सेमी०, ५ ३, ६ २१, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमें चित्तौड़ के शासक राणा प्रतापसिंह, अमरसिंह तथा जोधपुर के महाराजा मानसिंह विजयसिंह आदि के प्रशस्ति गीत अंकित हैं। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ गीत राणा प्रताप रौ –

प्रारम्भ —

'पटवै पित बध सदा पहुडनो, दळपत न्यापतो पग दाव
अकबर साह तणा उदावा राण हियै चरणो अन राव ॥१॥"

२ गीत राणा अमरसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

'गयद मान रामहर ऊभो हुतो दुरत गत,
सिलहपासा तणा जूथ साथ ।
तद वाही न्व अणचूक पातल तणा
मुगल बहनालया तणा माथे ॥१॥"

३ गीत मानसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

' (पत्र खण्डित हैं)
नगारा धु स फरहर धना लाग नभ
वोलता जासाळा गजा वैसे
नृपत गुमना सुतन तणा चारण निरख
पुर पना छोड पह दुरग पैसे ॥१॥"

४ गीत महाराजा विजैसिंघ रौ (उमेदसिंह सादू कृत) –

प्रारम्भ—

"आले रापिया हीदुवा वस आगेई अजीत आजा
लिया जिका वळा लाजा मना रा लकाळ ॥१॥"

५ गीत प्रसतावीक छोटी साणोर (नवला लालस कृत) –

प्रारम्भ—

मउवै नै हस मित्राई कीधी
जळ सघणा तर दप जठै
वेहू मिळे परसपर बैठा,
तरला तरवर छाह तठै ॥१॥

६ गीत आबूजी रौ ओपो आढो नवलो लाळस भेळो कहै –

"आबहिया मोर कोयला वोलै, मद आयो गिर हेक मनो
टूका गळ नाळळ लपटाणी, वणियो अरबद नवल वनो ॥१॥"

यह किसी ग्रथ से अलग हुए तीन पत्र है । लिपि मोटे अक्षरा म सुन्दर है। पत्र हाथ के बने हुए है ।

८६ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, गाडण गोपीनाथ, सादू जालम, सादू जोधा, सादू चैनजी पालावत आईदान, बाकीदास आसिया और हुक्मीचद खिडिया आदि, २ रा० प्रा० स०, ३ १२१६७, ४ २३ ५ × १६ सेमी०, ५ ६८, ६ १४-२६, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ म अधिकाशत महाराजा मानसिंह सम्बन्धी गीत सकलित है । कुछ गीत सामन्तो से सम्बन्धित भी है । गीता का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराजा मानसिंह रो
२ गीत धाय भाईजी रो
३ गीत गाडण गोपीनाथ रो कह्यो
४ गीत (अज्ञात कृतृ क)
५ गीत (अज्ञात कृतृ क)
६ गीत सादू जालम रो कह्यो
७ गीत जोधा रो कह्यो
८ गीत सादा रो कह्यो
६ गीत जुझारसिंघ चनसिंघोत चीची गाधाणी रो
१० गीत रायमल मालदेवात रो
११ गीत भाग्राजण ठाकुर रौ
१२ गीत प्रतापसिंघजी लाडण रा
१३ गीत गोरधनजी उदेरामोत रो
१४ केहरीसिंघ घायल रो गीत
१५ गीत अज्ञात कृतृ क
१६ गीत कवत ठाकुर मगलसिंघजी रा (सादू चनजी कृत)
१७ नीसाणी उपदस री (रतन् जालम कृत)
१८ गीत ठाकुरा प्रतापसिंघजी री (सादू जोधजी कृत)
१६ गीत राव किल्याणमलजी री
२० गीत दुरगादासजी आसकरनोत री
२१ गीत महाराव जगतसिंघजी री (पालावत आईदान कृत)
२२ गीत कुसलेस का
२३ गीत (अज्ञात कृतृ त)
२४ गीत सगतीदान भाटी री (बाकीदास आसिया कृत)
२५ गीत सादू उमेदसीघ री क्यो
२६ गीत हुक्मीचद री क्यो
२७ गीत रावजी हणवतसिंघजी री (सादू जोधजी कृत)
२८ गीत अमेदसीघजी री (हुक्मीचद खिडिया कृत)

इनके अतिरिक्त कुछ बिना शीर्षक के अन्य गीत भी सकलित है जिनके कर्ता का नाम भी नहीं दिया है ।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। बीच-बीच मे बहुत से पत्र खाली पडे है। ग्रथ पर गत्ता मढा हुआ है।

६० वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह, महडू हरदान, अलू महा, हरसूर बारट, लाखा, नरहरदास, आसीया पीरा दलावत, रामा साढू दूदा वीठू, हरिसूर बारट, हेमराज सामोर बारट राजसिंघ, साढू माला बारट सतीदान गाडण खुमाण, खिडिया भैरवदास, साढ़ अनोपसिंह साढ़ू जगराम, आसीया श्रीराम, मेहडू हरदान लाळस माला, साहिबदान रतनू, मोतीसर प्रभूदान, साढू भानीदास आदि, २ रा०प्रा०स०, ३ १ ४ २१५×२३ सेमी० ५ ५१, ६ १७२२, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ हरदान आदि, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस लम्बे पत्र के प्रारम्भ म बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह की प्रशसा मे अनेक दोहे कवित्त इत्यादि सकलित है।

प्रारम्भ—

'श्री इष्टदेवाय नम श्री गणाधिपतये नम श्री सरस्वतिय नम अथ छद ग्रथ महाराजा श्री धिराज श्री सूरतसिघजी रो महडू हरदान कहे—

दोहा—

आइजो सु प्रसन हुवै दे आपर उपदस
कीरत तो वरणण करू निज बीकाण नरेस ॥१॥"

अन्य कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त पीव कळावत रो (अलूजी कृत) –

प्रारम्भ—

"लहे मति गुणपती सकति सिर मेर प्रकासै
चले मग गैणाग सहस पकज विकासै ॥१॥"

२ कवित्त भीम गोपाळदासोत रो –

प्रारम्भ—

' गै घटा ऊपडै गाज नीसाण गरजे,
वणे वाज वादळा वाव सूरत सवजै ॥१॥"

३ गीत भगवानदास वाघोत रो –

प्रारम्भ—

' क्रमीया नमि विग्रह तीया सू कोपै
आपाणा लागै असमान सारा ॥१॥"

४ गीत भोपति बुदसोंधोत रौ –

सादूळ पवार द्वारा भोपत इस युद्ध में मारा गया था उस सन्दर्भ का यह गीत है।

प्रारम्भ—

'पिड चढै निवड भड सरस पमारा, अग जैंडण तणो पग आवि
भागा दळा वभ भूपालो ॥१॥"

५ गीत कूपा महराजोत रौ (मेहाजी कृत) –

प्रारम्भ—

'सुरा राय सिव ससधर सूर नारद सहू
वदै वापाण ग्रन नमो हाथ वापू ॥१॥"

६ गीत जोधाजी रौ (हरसूरजी कृत) –

प्रारम्भ—

"राव जोधो विढै वर रावा कै नवै विहाणै नवी पटि
हणवत तणा फिरतै हणवत ॥१॥"

७ गीत वाघा सीहावत रौ –

प्रारम्भ—

'अन चेले कनक हुवो जिण औसरि सीहू तणो दिव राव साद
मोट तपत ऊबेलण भाणण वाघडै ॥१॥"

८ गीत सीहा सेतरामोत रौ –

प्रारम्भ—

"सूघै मनि तू चालियौ सीहा,
सेतराम सुत लीध साथ, मूलराज नाळेर मेलीयौ ॥१॥"

९ गीत सोभत सलपावत रौ –

प्रारम्भ—

परदेस थको छळ अव पाहूणो सूरा हेक एहडो समथ
सेहला हयी रूदेती सोभत हुवौ ॥१॥"

१० गीत सावळदास भोजराजोत रौ (बारट लधा कृत) –

प्रारम्भ—

'सूरा तन सूर दापता सूरा भम वाग पेय माराथ
मिटते साथ जेम पगि मडीया ॥१॥'

११ गीत नारायणदास पवारोत रो –

प्रारम्भ—

"अकबर चे काम दखिण दळ उपर असमर उद्धजीयं आराणि
मुहरी हवो नरो धाय मिळना ॥१॥'

१२ गीत सूरजमल जमलोत रो –

प्रारम्भ—

"जुध मरिमात अभिनमा जैसा वबर भयकर सूरजमाल
वागड तणो दाय बीहुडियो ॥१॥"

१३ गीत राजा मानसिंघ रो –

प्रारम्भ—

"जुजिठळ कजि ज्याग दळा कजि अक्बर
वधव भीच परठीया वय जुडि चहू ॥१॥"

१४ गीत पतिसाह अकबर रो –

प्रारम्भ—

' महि माडे आदि हूत लीला मन साह कीयो अकबर ततसार
भाणा त मडवा कजि भूधर ॥१॥ '

१५ गीत सामळदास मोजरावोत रो –

प्रारम्भ—

"राघव छळि हुए विज रामायण भाखे कविराय जडाव कहि
सामळ धाय सैगळ सभरा ॥१॥"

१६ गीत सूरजमल हाडा रो (कविया अलू कृत) –

प्रारम्भ—

"चहुवाण तणा पुरसातम चौरग तिभवण
सुजडी सूरजमाल रतनसी पाडीयो ॥१॥"

१७ गीत श्री नाराइण रो (नरहरदास कृत) –

प्रारम्भ—

"गरभ आदि जावण तरण जरा लगि गिरधरण
साकडै सम सासे वसौ ॥१॥"

१८ गीत राणा प्रतापसिंघ रो (आसीया पीरा दलावत कृत) –

प्रारम्भ—

"आलाडै जाइ गरड अकबर दे पैंतीस असट कुळ दाव
राण सेस वसुधा पत राषण ॥१॥"

१९ गीत राणा प्रताप रौ (रामा सांदू कृत) –
प्रारम्भ—

"विलव लाप वेकाण गज भाण छेडे वमक
वाव रै पप वळ दपि वळीयो
श्राभ पूमाण चा माय उढाडत   ॥१॥"

२० गीत रार्जासघ विसनदासोत रौ –
प्रारम्भ—

' पिलव सातुळ वळक्कै सार वळाह कळै
वळ वळ दले दिपण घवाए बाजुवा चढि भड   ॥१॥"

२१ गीत कचरा जसराजोत रौ –
प्रारम्भ—

"केवाणा हूत पारथी कटका, लोभि लागे भागलीया
कचरा तणा कमळ चा किरचा   ॥१॥ '

२२ गीत सुरताण मानावत रौ –
प्रारम्भ—

'पापतीया बिहु सिराती पगती पडीया भड धड आप प्रमाण,
समहर कहर अजर जरि मूतौ   ॥१॥"

२३ गीत ईसरजी रौ –
प्रारम्भ—

' काहे वेग चढ न कूजर आपे साह जलाल अकबर
भारथ भीम मुजाळ भयकर   ॥१॥"

२४ गीत जगनाथ कल्याणदासोत रौ –
प्रारम्भ—

' मछर कोट मन मोट राठौड सेहथा मूहा वाजीया लोह तै हूत वहळौ
वाघ भरतो पळा आवीयो   ॥१॥

२५ गीत आसकरन देईदासोत रौ (बारट लखा कृत) –
प्रारम्भ—

' सबळ वेळ पुरसाण असमान लगि सम जडै
धडकीया घोरडा धरे नह धीर,
करन अणथाग है लाज लघण करै   ॥१॥"

२६ गीत प्रथीराज कल्याणमलोत रो (लाखा कृत) –
प्रारम्भ—
"वपि वाधे नितू विराजै प्रविरच भले विहु विध हूर नवळी भाति,
प्रभू मू जैतो हेत प्रथीमल ॥१॥"

२७ गीत सूरसिंघ भगवानदासोत रो (बारट लखा कृत) –
प्रारम्भ—
'रामायण भारथ इळा तणै रसि पेवीया अनि अनि कलह सपूर
पिंड भूम नायक महोर पाइवा सूर ॥१॥"

२८ कवित्त साळवदास ववांसियोत रो (मलूजी कृत) –
प्रारम्भ—
'महा अद्र मेडते प्रउब प्रातस महरि सरफदीन जैमाल
उमै जमराव पवारे पाणे जारावना ॥१॥"

२९ गीत प्रथीराज जमलोत रो (दूदा बीठू कृत) –
प्रारम्भ—
'भिमर रतन पर विचारन विसहर कुंजर मचुहर माळ,
पीथल मेड्तीया सु प्रवधो ॥१॥"

३० कवित्त बीठलदास रो –
प्रारम्भ—
"ग घटा उपड हवा वजै नीसाणा
मारका मारका रून वाहे जमराणा ॥१॥"

३१ कवित्त गोपालदासजी रो –
प्रारम्भ—
' जिण वेळा दोय फौज हूवै आडा हयीहरा
उर फटै कायरा फजल कमळा भूभारा ॥१॥"

३२ गीत हरिसूर बारठ रो कहीयो –
प्रारम्भ—
"प्रबी पूरब पछिम प्रबी उतराधा कर दखयण प्रबी,
नायक सिर तूटतै नरम मिळो ॥१॥"

३३ नीसाणी भोजराज मनोहरदासोत रो (बारट नरहरदास कृत) –
प्रारम्भ—
"साहिजादा पतिसाह सू चित पडै विराडै
मूजा मेल न मानहो उखेल वगाडै ॥१॥"

अन्तिम भाग—

"जीवत रूपम सुजस का नीसाण वजाड़
जीता भोज अजानवाह धोळे दीहाड़ै ।।१।।"

३४ नीसाणी राणा जगसींगजी री (हेमराज सामोर कृत) –

प्रारम्भ—

"दीहे देवळ पाळट वेजा वेजारा
कोट गिरदा वाप नृप होए हेवारा ।"

अन्तिम भाग—

'काची माया माणता साचा सिरदारा
जरा न जोयो जगतसाह सरीषा दातारा ।।१।।"

३५ झूलणा महाराजा श्री गजसिंघ रा (बारट राजसिंघ कृत) –

१७ झूलणा छन्दों की इस रचना मे जोधपुर के राजा गजसिंह की वीरता पूर्ण उपलब्धियों का वृत्तांत अंकित है।

प्रारम्भ—

गाथा—

"सूडा डड प्रचड मात तात सिव अमर
अगेवाण सुराण पय लग मागि गुणपती ।।१।।
पय लगा गुण पति हु तौ अगेवाणा
अगे अगे रैहू ।।

अन्तिम भाग—

गजण पराक्रम ताहरा तिम कहै न जाणा
जतो कीय सरसति पमाई मत सार वषाणा ।।१७।।"

३६ झूलणा अचळा तिलोक कछवाह रा (सादू माला कृत) –

इन २१ झूलणा छन्दों की कविता में अचला तिलोकसी कछवाह की प्रशस्ति है। प्रारम्भ मे एक दूहा अंकित है।

दूहा—

'आग आहुडता गया धर उपर वरीयाम
पडे तुरका पाडिया परो करारो काम ।।१।।

झूलणा—

"अकबर साह निवाजिया चाकर आपाणा
सहर वळा थी वित्त ले दे हाथि प्रमाणा ।।१।।

अंतिम भाग—

"जिण घर दीनी अपणो मिरसो आपाणा
तूझ सिधाणा रयणसाह थानव राणा ॥२१"

३७ गीत भगवतसिंघ रो (बारट सतीदान कृत) –

प्रारम्भ—

'धरै प्रथी वापाण राव राण धिन धिन कहै
पळी लेयण दस दोय पापा ॥१॥"

३८ गीत जतसींघ रो (बारट सतीदान कृत) –

प्रारम्भ—

"मडै माल छळ वध पतिसाह सू मामले
कीया सांह जगत सुणीया सहू काज ॥१॥"

३९ गीत मेडतीया रो साणोर –

प्रारम्भ—

'मगज उफणा सदा मुप मोसरा
लुळ गया वीया मूछया तणा स्पेर
पळटनै जाधपुर जमला तणी पर ॥१॥"

४० कवत ठाकुरा मोर्मासंघ रो (गाडण कुमाण कृत) –

प्रारम्भ—

,अवे बाज गजराज साज सोभन सहेता
कह ढकै कुण आज ताज सारा तत वता ॥१॥"

४१ गीत केसरीसिंघ सेखावत रो –

प्रारम्भ—

"मरते जिण दाढ हजार मारीया पागा रत वृहा खळळ
कूरम सरन लीया गो केहर ॥१॥"

४२ गीत सूजाजी रो –

प्रारम्भ—

"घरहर घूघरा पायरा घम घम थरहरै
अरि थाट साम ताला राव सूजो विढै वैर वैराट ॥१॥"

४३ गीत महाराज सुजाणसिंह रौ –
प्रारम्भ—
"मना मज उतारीया महल सुप माळीया
मछर मछरीक घट मे लप ग्रमाण ॥१॥"

४४ गीत महाराजा श्री गजसिंघ रौ –
प्रारम्भ—
'कटक ग्राय कुरपत होदू तुरक कळहीया
दूसर माल गज माल दीयौ ॥१॥"

४५ गीत पिडिया भैरदास रौ कह्यौ –
प्रारम्भ—
'गज बध वहे उपगार पत्रीगुर बदन सहे सुज ग्रक बीया
मै उबर वडफरा ग्रोटा ॥१॥"

४६ गीत ठाकुर उदसिंघ रौ (सादू ग्रनोपसिंह कृत) –
प्रारम्भ—
"ग्रडे भुजा ब्रहमड जरदा कडा उबडै
गड गडै ग्रमागळ भडि गुरजा ॥"

४७ गीत ठाकुरा हरनाथसिंघ रौ –
प्रारम्भ—
"भृत जमवत तणै मामलै माट साह पेषीयौ मडावर साथ
उळट पाळट हुवा ग्रनेरा ॥१॥"

४८ गीत ठाकुर जोरावरसिंघ रौ (सादू जगराम कृत) –
प्रारम्भ—
"यधक बदंपुर हूत बहदा पडे ग्रमामो सूतधर विलूधा नको साधो
बोहळा बोभ थमै नही महाबळ ॥१॥'

४९ गीत ठाकुर हरनाथसिंघ रौ –
प्रारम्भ—
"जुग साह पळटीयौ जसवत जोयमीयै
ग्रवरग पाधर ग्रायै हरनाथ ॥१॥"

५० गीत राव करमसी रौ –
प्रारम्भ—
'वाजता विषम वाढाळै वस छतीस ग्रठार वन
कटका भागा थका करमसी मर ॥१॥'

५१ गीत ठाकुर भोमसिंघ रौ (आसीया सीराम कृत) –

प्रारम्भ—

"भिडज हाकले भलाळे साथि सकजा भडा पाट वज वज सरस पायौ,
अरी दळ जिवे मेगळ घडा येरखा ॥१॥"

५२ गीत ठाकुर जोरावरसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

'गजा यमरा लास भिडजा भडा थट गरट गीयण
आवास दरगह सतोरा,
पत्री वड चीत राजस करै पीवसर ॥१॥"

५३ गीत ठाकुर भोमसिंघ नू (महडू हरदान कृत) –

उदयसिंह के पुत्र भोमसिंह राठौड की प्रशसा म दोह, सोरठे आदि सकलित हैं।

प्रारम्भ—

गाथा— 'श्री देवा ससार सार बुधि दीयण सारदा ।

दोहा सोरठा— सूरज वस सकाज प्रतप भामो अज प्रगट
तरह सप सिरताज ॥२॥

अन्तिम भाग—

तुझ चपा रातोड रौ भोमा अदमुन भाति
मसह अमू भै ईपीया नामणि वाव काति ॥३॥"

५४ गीत कुसळसिंघ हरनायोत रौ –

प्रारम्भ—

'रती भळाहळ सुर दातार हरनाथ री सुरपती तराजै दीह साजै
अभपती तण भड कुसलसी ॥१॥"

५५ गीत ठाकुर भोमसिंघ रौ (लाळस माला कृत) –

प्रारम्भ—

'नरपति नर बराबर नाडा, ओछा जळ आचार इहो
जुग आचार ससार जोवता ॥१॥"

५६ गीत ठाकुरा हरीसिंह रौ (साहिबदान रतनू कृत) –

प्रारम्भ—

"करतो सोह कोड जिमातो काठ साझ दीह जतना करि सार
घटिया नह घिरत अन घलता ॥१॥"

५७ गीत मोतीसर प्रभुदान कहे –
प्रारम्भ—

"विहू अग जोध रा थम सिरा रा अजानवाह
तेगा ग्हि आडा जीत रिमा जडी ॥१॥"

५८ गीत हरनाथ रौ (साडू मानीदास कृत) –
प्रारम्भ—

"दळा नाथ हरनाथ धिन करमसी दूसरा
हाथ बळ वधे भाराथ बळ हूत ॥१॥'

५९ गीत ठाकुर कुसाळसिंघ रौ –
प्रारम्भ—

"महक नूर दव अवव मळ तोप भरळक तठै
जठै जोगण ग्रहक वीर जागै हुवै ॥१॥"

ग्रथ एक से अधिक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है। कुछ पत्र पानी से भीगे हुए है। कुछ बिना शीर्षक के गीत कवित्त भी लिपिबद्ध हैं।

६१ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, आला, करनीदान, बखता खिडिया, बाकीदास, महडू महादान, ईसर, रूपा, दुरसा, सखता लाळस, आसा बारट, २ रा० गो० स०, ३ ६०४५, ४ ३०५×२३ सेमी०, ५ ६६, ६ १७-२१, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० महत्वपूर्ण गीतो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत सलूबर भीमसिंघजी रौ –
प्रारम्भ—

भारथ रा पाथ वाण वागियौ न हमो भालो,
भालो जिसो वागियो नकाळ मूळा भूप ।

२ गीत कुचामण ठाकुर शिवनाथसिंघजी रौ –
प्रारम्भ—

' दिस उजळ सिवा अमनमा दूदा,
वडपण आर्प थीस विसा ॥१॥

३ गीत जसोल वैरीसाल रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

कीधा वरिया दहवाट कोपे दुझल्ल धोळे दीह,
कमर बाध जोम वरडै सघर भूरी सीह ।

४ गीत जसोल मोमजी रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

इळा फैलिया वळु आसत धरम उथापै,
सको नर वर थीया दान साढू ।

५ गीत सोढा सिवदासजी रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

अडर भोक आकाय सिवदास आपायत
कीया थे मीढ रा माण काने ।

६ गीत श्रमझरा राजा बगतावरसिंघजी रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

हाथ सोन री सावळा बाज हाथिया नागळे होदा,
लीधा सेघणा मीढ रा सालिया भड़ा लार ।

७ गीत ठाकुर लगतसिंग रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

भ्रई भोक आकाय फतमाल रा अगोभ्रम
सत्रा उर साल रा विरद साचा ।

८ गीत पापायता रा (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

आचा दातार कमध अंधळा,
पार गुणा नह पाव सुजस तणी वाता चुतराणी ।

९ गीत होटलु रामसिंघ रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

हाथो रो करन सुभावा हेलम,
वर दायक वाको तरवार ॥१॥

१० गीत मा० अमर्यसिह रो (करणीदान कृत) –
प्रारम्भ—

लग सउ पटा फौज गज थटा भुजल गलहर,
सुरत न ठहर जळ महर माजा,
पृथी पत अभौ आयो उलट छत्रपती ॥१॥

११ वाब रा राणा सरदारसिंघजी रो कवित्त (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

करै जगत कीरती न कसर हत दीसे काई
रहै सदा एक रग वहै कुळ वाट वडाई ।

१२ गीत अभैसिंघ रो (बखता खिड़िया) –
प्रारम्भ—

कळळ माचल अकळ काळळ सबळ कुजरा
चचळ उछळ सरळ धसळ चाळो ।

१३ गीत अजीतसिंघ रो –
प्रारम्भ—

बलवत साह सु अगजीत बराबर
चक्रवत पूठ न चालै
नाळ बिने वहता दोनाळी
हेकण नाळ न हालै ॥१॥

१४ गीत बखतसिंघ रो –
प्रारम्भ—

भई तूठ आवाय बपतेस छत्रधर अभग
वजाडै त्रबागळ समुप बाजा ।१॥

१५ गीत (बाकीदास कृत) –
प्रारम्भ—

अनल क्रोध धडहडी जमदढ अमर
बिर पडी बीचला परप कासी ॥१॥

१६ गीत (मेहडू महादान कृत) –
प्रारम्भ—

आयो अघायो कुरमानाथ जगाधार आटी पण
सामी फौजा माटीपणे हमामी सधीठा ॥१॥

१७ गीत (बाकीदास कृत) –

प्रारम्भ—

ढाबी रीत की ईसी श्रमरावा
लोक नर फरी छाड लज ॥१॥

१८ गीत मोकलसर चुतरसिंघ रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

बाका भड जठ ग्रनड पण बाको
साको है गोट राह सरै ॥१॥

१९ गीत डूगरपुर रौ (बाकीदास कृत) –

प्रारम्भ—

हुवो मपाटा रो पोल वोनो फिरगी धाटा री हली
मत्र पोटा धाटा रौ उपायो पाप भाग ॥१॥

२० गीत सरूपसिंग रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

करै ग्रीत दुनियाण रा वरियाम चित
कही दहै उर अदावा तणा दावौ

२१ गीत वामा सिवनाथसिंग रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

माया उधमै आचार माडे धरै वडपण धाव
हाथा चाढवा हलियौ ॥१॥

२२ गीत काणाणे ठाकुर केसरीसंग रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

सजै पैली धमसाण घोडा भडा मावळा
थडा जग वाधरै रूप थावै ॥१॥

२३ गीत (जाला कृत ३ गीत) –

प्रारम्भ—

(अ) कहै जालमौ पात सुणजो कमध ठाकुरा
चपावो मती जस तणी चेली ॥१॥

(ब) इसा रह्या सिरन्नार जोजो इळ उपरै
जका रा कहू कथ साच जोडै ॥१॥

(स) वडौ साभळै नाम जाचण थन आविया
थू श्रान पायो पावमा घरेदू सुजस थारो ॥१॥

२४ गीत भाटी हरदासजी रौ –
प्रारम्भ—

रूपा भारडी नवगड रेत, चग नामा चाड
हरदास आवै पड हुता, मद् नूठो माड ॥१॥

२५ गीत (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

भलपण त्यागीयो भुपग पारवत
गघा मरय म्यान ॥१॥

२६ गीत सरवीया जैसाजी रौ –
प्रारम्भ—

करिमरि करि इड जरद म कथा
म्यान सुरत निधरै न नींद ॥१॥

२७ गीत मालगढ रामसिंग रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

आई भाक आकाय वडचीत उवावरा
घरा घभ जस भुजा धारू ॥१॥

२८ गीत सरवईया भभूतसिंग रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

दे औरगणा दान आचार विधिया दुना
पार वडपण तणो न कू पावै ॥१॥

२९ गीत सरवईया विजाजी रौ (ईसरजी कृत) –
प्रारम्भ—

रगि राती चीत कैवट हर राजा
अवरा हुता उतरीयो ॥१॥

३० गीत रायपुर माधोसिंग रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

सकळ धरा ढूढाड मवाड दीठो सुकव
लेयण गुण पार पारपत को लाधा ॥१॥

३१ गीत रतलाम बखतसिंग रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

पाजा उजळै सात ही सघ मेर ही अजादा पळै
म्ल आग सिंघू रै चपा मे प्रळै भाळ ॥१॥

३२ गीत किशनसिंघ पोंवावत रौ –

प्रारम्भ—

वर पोति जिणसाल जयमाल धाराळ करि,
वहसि असि तीर विरदैत वैठौ ॥१॥

३३ गीत राव देसल भुजपती रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

ढोलत राजे समद्र रूपी कीरती वखाणा चायौ
पाणा सुरनद थायौ दान गै अपार ॥१॥

३४ गीत कुंभा खीची रौ –

प्रारम्भ—

घणा असुर पाडे घण धाय
कूमडा चे वूट मे अमदे अतौ ॥१॥

३५ गीत गोपाळदास सुरताणोत रौ –

प्रारम्भ—

कीया जिम वीर समसेर चर भागो वळहि
छिनै जैमाल मृत छतर वात ॥१॥

३६ गीत भुज राव देसल रौ (जाला कृत) –

प्रारम्भ—

पूबी धारिया जस वात पळ रचावै आचार
भाज वग सैंकडा मोती ॥१॥

३७ गीत महिपा पमार रौ –

प्रारम्भ—

सेदे सुदि देस सादा अद सवळा,
भिडता अरघळ है भाराणि ॥१॥

३८ गीत गगे सीहाउत रौ –

प्रारम्भ—

वडौ दातार झूझार सिणगार वरसिंघ वस
थाट सैं गळे तणी अणी थार ॥१॥

३९ गीत उद जतसिघोत रौ (रूपा कृत) –

प्रारम्भ—

भड सेज निभु विचि मार तणी भरि
आवै वर जोडे अछर ॥१॥

४० गीत (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

मचियो अत रोग मरी रो जग म
विषमी ओगट वार वणी ॥१॥

४१ गीत माडण कूपावत रो (दुरसा कृत) –
प्रारम्भ—

वडो वैर विढ वाळीयो मयक सीहा वहै
विसहरे नरे मानो सुरे वात ॥१॥

४२ गीत सालिमसिंघ कूंपावत रा (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

नमध न पावै पार गुण तूझ सोभा करे
प्रकट जुध पाथ ज्यू जत पावै ॥१॥

४३ गीत वडगाव मोकमसिंघ रो (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

हाक्ले हैमरा भडा प्रवाड धारिया हूस
गवाड सिघूम्रो राग वीरियो मगज ॥१॥

४४ गीत रावळ जाम रो (सखता साळस कृत) –
प्रारम्भ—

साहीयो बकवाद विधाता सरिसो
साख उयो रसुण ममाथ ॥१॥

४५ गीत वडगाव मोकसिंघ न अमराव सूता रो (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

मालक्दार जिसोई ज मुहतो
वडपण विरदावै ॥१॥

४६ गीत गढडे सोढा धना रो (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

वडम सुणी डीह आरण राव राण वपाणियो
गुणीजन कितोइक सुजम गावै

४७ गीत रावळ जाम रो (ईसर कृत) –
प्रारम्भ—

कहिम्या तो भूझ भलो करणाकर
वपि एकण सोह धर विचार ॥१॥

४८ गीत रावळ जाम रौ (ग्रासा दुरसा कृत) –
प्रारम्भ—

नरनाह निवाण नवळ दाई नावै
सदा वस तट जिके समद ॥१॥

४६ गीत रायपुर माधोसींगजी रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

रहणी एक रंग सुपाता राजी
भलपण रा लीधा भुज भार ॥१॥

५० गीत टापरे गुला रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

वड दातार ग्राथ सुपाता वाट
जोपा इंद तराजै माहू गुला तण जग माहे ॥१॥

५१ गीत टापरै वाघरा रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

माथा कधमै दातार महचौ
जोपा इंद तराजै ॥१॥

५२ गीत मा० तगतसिंह रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

मौजा धारतौ सुजा मैपला मारतौ धरा रै माथै
सूरमौ करारै जोस ग्राग्राजतो सही ॥१॥

५३ गीत जसोल उमजी रौ (जाला कृत) –
प्रारम्भ—

वजे नगारा जैत इळ सीस चहूम
वळा पागडै वीरवर फतै पाव ॥१॥

५४ ग्रंथ रस रतन –
प्रारम्भ—

इसमे काव्य रीति शृंगार रस और अन्य रसा के दोहे और उनके ग्रर्थ लिखे गये है।

प्रारम्भ—

कसल नयन कमल वदन, कमल नाभि कमलाप
चरन कमल तिन के रहो, मो मन गुन जुत जाप ॥१॥

५५ कमाळ ठाकुर रूपसिंघरी री (बांकीदास कृत) –

यह रायपुर ठाकुर रूपसिंह से सम्बन्धित एक काव्य कमाल छंद में लिखित है।

प्रारम्भ—

कुण्डलिया— श्री गुणपत दीज सुमत, नमू पगा सिवनद
रूपो कमधज रायपुर बीरातन जगवद ।
मयु हिक हुता मन पर मीरखान दळ मत
रोस घणें उर रायपुर, आयो करण उपत ॥२॥

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य नहीं है। इन कृतियों के अतिरिक्त फुटकर दोहे कुछ अज्ञात गीत आदि संकलित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। प्रारम्भ व अंतिम कुछ पत्र लुप्त हैं।

९२ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, मेहडु मुकान, आढा महेशदास, आसिया रामा, आढा पहाडखान, जैतावत केसरीसिंह मोतीसर चतुरभुज आदि २ रा० प्रा० सं०, ३ १४९७२ ४ १६.५ × २६.५ सेमी०, ५ १२, ६ ११-१४, ७ १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ में सन्निविष्ट कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

१ गीत राव रतनसींघ री (मेहडु मुकन कृत) –

प्रारम्भ—

यरय गोल फौज कर गजन अथर
ढोल सावल सबल मघणो डाव ॥१॥

२ गीत राव अखराज री (आढा महेशदास कृत) –

प्रारम्भ—

रण वण गड उघड पुडी रैणा तैं चडीओ राव अपो तई
वडगे मुहे वैरीआ वन ॥१॥

३ गीत मानसिंघ री (आसिया रामा कृत) –

प्रारम्भ—

सुरिति अति भलि भलु सुरातन
लगि पूगा दरिआ्रौ ॥१॥

४ कवित्त अचल माडणसीघोत रौ (आढा पहाडखान कृत) –
प्रारम्भ—

आज सत होय दुचत आज कीरत राढाणी
आज हुओ उतपात आज दन होय ॥१॥

५ गीत जाडेचा मोहड रो (आढा पहाडखान कृत) –
प्रारम्भ—

थाली घुधल भ्रुयण पल घुहड विथाली वध
सिघाली कथाली भाक ॥१॥

६ कवित्त स्याळ रा (ऊँतावत केसरीसिंह कृत) –
प्रारम्भ—

मझर बुबदी माणसा जबर री गत जोग्र
पाहरे पाहरे रैण वे ट टहुका दोअ ॥१॥

७ गीत गोकळदास भाणावत रौ (मोतीसर चतुरभुज कत) –
प्रारम्भ—

भीमाजळ मुहर भेलीआ भारथ
घूण पेस गज बोळण ॥१॥

ग्रथ म यह खुले पत्र अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किये गये है। लिपि साधारण है।

६३ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, गाडण गोकलदास, गाडण आईदान, साढू उम्मेदसिंह, साढू पृथ्वीराज, साढू जालम साढू प्रताप सूजा कविया, खिडिया बलता, दवाजी रतनु आदि, २ रा० शो० स०, ३ ११२६०, ४ १८ ५ × १८ सेमी०, ५ १६४, ६ १८-२१, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे अकित कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ परमेश्वरी की नीसाणी –
प्रारम्भ—

गुण विवेकवार लिपत, श्री परमेसवर री निसाणी गाडण केसादासजी कही—

ओम उकार अरूप निरगुण निरवाण,
नाथ निरालब निराकार प्राण हृदा प्राण आदि।

२ गीत महाराजा श्री अनोपसिंघजी रो (गाडण गोकळदास कृत) –
प्रारम्भ—

यळाचो लग्रण वळ ग्रमळ हमथरण थग ग्रडर,
रिव रिघा ग्राहा उड सरज जग रूप ॥१॥

३ गीत महाराजा अनोपसिंघजी री (गाडण आईदान कृत) –
प्रारम्भ—

समद रूप ग्रानुप रायहर संघणी
बिरद पतसा सुजस मोड बाधै ॥१॥

४ निसाणी गोगाजी री –
प्रारम्भ—

उतर देस सु गोरप चल्या
दिखण देस देपण कु मल्या आदि।

५ गीत महाराज बिरदसींगजी रो –
प्रारम्भ—

मगज घरै पवास घज वहर पहुर कर मठा
सिका न वदै क्वर उधरी ताण ॥

६ गीत महाराज प्रतापसींग रो –
प्रारम्भ—

फतै बाटवा झगरा गिरा फरा घेसाहरा फेरै
केता भाण उगा हेरै याहरा सकाज ॥१॥

७ गीत पहाडसिंघ करमसोत रो –
प्रारम्भ—

अनड मद करै अडर वाकारता उठीमो
जठै पडियो भडा जाडो ॥१॥

८ गीत राजा असतसिंघ रो –
प्रारम्भ—

तुरा साज कीघा फिरै पडा गज त्यारिया
साप रा चढो सिलहै गरक सारोया ॥१॥

९ गीत महाराजा बिजसिंघ रो (सादू उमेदसिंघ कृत) –
प्रारम्भ—

पढै वेद नित विदुप करके घजा प्रसादा
वडो मुप प्रजा हरचद वारा ॥१॥

१० गीत महाराजा बषतसिंह रौ (साढ़ू पृथ्वीराज कृत) –

प्रारम्भ—

ग्रई तुझ आवाय बषतेस छत्रधर ग्रमग
वजाड अवागळ समुप वाजा ॥१॥

११ गीत जगराम उदावत रौ –

प्रारम्भ—

दिली भगाणा पड़ै मन आगरौ वर डर
पावडे जेण पतसाह पायौ, जगा मव जोधपुर ॥१॥

१२ गीत महाराजा नीवसिंघजी रौ –

म्हो घोनप उघरौ ग्रीवा प्रमाण ढाल सो उरा
जवाहरा सुग्रना सापती सोह जेण ॥१॥

१३ गीत महाराजा सूरतसिंघ (बीकानेर) रौ (साढ़ू आलम कृत) –

प्रारम्भ—

गाजे सामळा गयद बाघा सारीप ग्रद्र जसा
गात वाजें डका नीवती छतीस राग वस ॥१॥

१४ गीत ठाकुर सिवसिंघजी रौ –

प्रारम्भ—

केहा वापाण चवीजें वेहा हुवै निकमी करा
दे हाता हैराय ग्रगा डाण जेहा दौड सनेहा ॥१॥

१५ गीत अमरसिंघ बगसीरामोत रौ (साढ़ू आलम कृत) –

प्रारम्भ—

कुपु पोहीर ठती पमत म ग्रळत तिस अकारी
सुजस दरपत सिथळ ॥१॥

१६ गीत भाटी जसवतसिंग वेईदानोत वेजडले रौ –

प्रारम्भ—

ग्रण मग ग्रोनाड पछ्र आरदा
दुत विभाड जु धाम गज दत आदि ।

१७ गीत जवानसिंघ वनैसिगोत रौ (रास ठाकुर) –

प्रारम्भ—

झगा झोकवे नतीठा वाज उपळौ सातवा जूथ
भला दळा अमधा सुपाता ॥१॥

१८ गीत केसरीसिंघ रतनसिंघोत आसोप रा ठाकुर रौ –
प्रारम्भ—

छाजै आवीया नविदा मायत राजे मेह री छौळ
पग जै करै वासग्रा देह री आपाण ॥१॥

१९ गीत जोधराज रौ (जालम कृत) –
प्रारम्भ—

तोन्हे मैवास अनमी तेगा सु मत्री उदार ताळा
सौ गुण रसाला वधै ।१॥

२० गीत नवलसिंघ सिवसिंघोत रौ (जालम कृत) –
प्रारम्भ—

जुधा प्रडर अणचाल नम सेस मार्य जडै
पगा सघा जुडै धापडै पेन ॥१॥

२१ गीत कोटा रा महारावजी रौ –
प्रारम्भ—

उरड थाट भड छमा गज पटा मद उफणै
भणै आसीस चारण अनै भाट ॥१॥

२२ गीत गुमानसिंघ रौ –
प्रारम्भ—

छाळा उपटै रूपगा मुएँ सदा ओछाह छाजै
सुपाता निवाजै सची नाहू रे समान ॥१॥

२३ गीत वगडी रा ठाकुरा रौ –
प्रारम्भ—

सदा जगत साधार रुव ज्या बोलै मुजस
धार ग्रद मुज वळ दहु विध धीग ॥१॥

२४ गीत सेखावता रौ (स दू उमेद कृत) –
प्रारम्भ—

मगज उपटत वीर रस चय चसत मुगाला
पग दसत तोलतो जास पायँ ॥१॥ (४ गीत)

२५ गीत समरथसिंघ सिवसिंघोत रौ –
प्रारम्भ—

सुरा औठभण मर हसा मानसर
प्राग तर तर्व औठभ पपाळा ॥१॥

२६ गीत सिवसिंघ रो –
प्रारम्भ—

उजाळ ग्रठ नव्का भाराय मान रखा
सोहे गढा सीस हुवाया ॥१॥

२७ गीत नवलसिंघ सादुळसिंघोत रो –
प्रारम्भ—

सथा जुध चलथा भिडज खोल कीज सिलह्
यहृण करि मारथा जास पाथ ॥१॥

२८ गीत नरसिंघदास नवळसिंघोत रो –
प्रारम्भ—

कळह धरीयो जैनगर वात सुण कुरस री
थट ग्रगर तुरस रीत रह थायो ॥१॥

२९ गीत हुए तसींग केसरीसींगोत रो –
प्रारम्भ—

तोपा ग्रवाज गाजती वजाडती सुड झाट तगा
मुरजा पाडतो माला दातुसुला भाव ॥१॥

३० गीत सुजाणसिंघ केसरीसिंघोत रो –
प्रारम्भ—

सीधु जमाव माढणी धु मर सावरा सुरा
उछाव वाव रा पुरा परी हुरा ईस ॥१॥

३१ गीत बाघसिंघ किसनसिंघोत रो –
प्रारम्भ—

चमु साज कर चहु बळ सीस महण हु चढै
समर बह ययद सह ग्ररिंद ॥१॥

३२ गीत ग्ररजनसींघ बपतसिंघोत रो –
प्रारम्भ—

महण सभावा कुळ मुगट ग्रमर दावा मळै
काम बा सुजस जग सिर कहावै ॥१॥

३३ गीत जोगीराम हाडीका रो –
प्रारम्भ—

मार बैरीया ग्रपुटी ग्राव मुपाळा पाडीयौ माण
तेग धारै तको पाण छाडीयौ तमाम ॥१॥

३४ गीत दलजी हाडीका रौ –

प्रारम्भ—

मरद वालीयौ श्रेम थग ताल श्राप हूमलौ
मन श्रडर यसौ पव्ङै पलौ मीच ॥१॥

३५ गीत मारथसींघ उरजनसिंघोत रौ –

प्रारम्भ—

उमैं श्ररावा श्राग भळ गाज तोपा उरट
निरप रथ पाच रहीयौ श्रहानाथ ॥१॥

३६ गीत श्रभसिंघ वागसिंघोत रौ (सांदू प्रताप कृत) –

प्रारम्भ—

श्रवण वित महुराण छत्नरी थाळा विलद
मघर जुघ जीत असहा हीयैं साल ॥१॥

३७ गीत जगतसिंघ उमर रौ राजगढ –

प्रारम्भ—

त्रवण तोल काट करण रूप कव भुप सधौ
काव टक्साल धण् चउ सुबुध वेस ॥१॥

३८ गीत लछमणसिंघ नाहरसिंघोत रौ (सांदू जालम कृत) –

प्रारम्भ—

दुजड धूण भारथ पवौ श्रामय उतालीये
हेडवैं लाप घड विचग चाढ हीयैं ॥३॥

३९ गीत दुलसिंघ लाडखानी रौ –

प्रारम्भ—

दायै फाक भोक प्रथी सारी तोपारा मोरणा देणा
धुपला आचारा छळा दहु वारा धीग ॥१॥

४० गीत ठाकर सिवसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

घड दोहु लडै उडै पग धाया, जोध सो ।

४१ गीत जालिम रौ कह्यौ –

प्रारम्भ—

श्रडरपाल भक्र विम भुपाळ गढ श्रोपीयौ
करग नाराज बज्र सत्रा कोपै ॥१॥

४२ गीत दौलतसिंघ नींबाज रौ –

प्रारम्भ—

पलौ झालीया सपत पहड नहो बिरदपत
बीदगा गला गिडगा वरीस ॥१॥

४२ गीत कल्याणसिंघ रौ

प्रारम्भ—

करता 'रपत अत हासा समै
काज सुरपत तणौ चारणा कामु ।

४४ गीत खरवा रा ठाकुर रौ –

प्रारम्भ—

मूछा सुधारं झाटके नळा मैमता गयदा मारै
जूनै थान होवार मकारै वर जोस ॥१॥

४५ गीत हरीसिंघजी चूरू रा ठाकुर कौ –

प्रारम्भ—

विजो भुपती बहादर गजण आउसी वळे
नाथ दरसण मिळ हीदवा नाथ ॥१॥

४६ गीत हिंदूसिंघ प्रतापसिंघोत रौ –

प्रारम्भ—

साज दिहाडै करीजै सदा होकवा हगाम सादी
नामजादी थान राज छाजै सुरा नाथ ॥१॥

४७ गीत सूजा कविया रौ कहीयौ –

प्रारम्भ—

अगा नित री सदा ही पती सीत रा उपासा आपा
जुगादु रीत राजगा जीत रा जोधार ॥१॥

४८ गीत कुसळसिंघ रौ –

प्रारम्भ—

करीवान रै धकै चढीया किलव,
मिळै असमान रै तिकै मघ माग ॥१॥

४९ नीसाणी साहू उमेदसी रौ कहो –

प्रारम्भ—

माता दे सारसत मनै सद आखिर माळा
गणपत सकर सुत गहीर व्रव उकत विसाळा ।

५० गीत किशनगढ रा –
प्रारम्भ—

हला करता तबना वाजि घेरीयौ गिरदा हींदू
जगायौ ग्रणादु जाए अपाडै जटेत ॥१॥

५१ गीत नीबा नींबडी रा –
प्रारम्भ—

मुगलपान सिर विलद जैसीध रै मामलै
भेळ केकाण प्रवसाए लाधै भळै ॥१॥ (गीत-६)

५२ गीत सावळदास राणावत रौ डावर को ठावर –
प्रारम्भ—

मगा ज्यारि फौजा रुगा जगा वीराण मह
घु गोहली सगत ज्यार चहुवै ॥१॥

५३ गीत मेडतीयो रौ –
प्रारम्भ—

घुरै बवाळा कराळा सदा सीधु नदा घोर
दहु ग्रार होदा नेजा फरकै दताळ ॥१॥

५४ गीत सेरसिंघ रौ –
प्रारम्भ—

घणी शाहिएो सिरा री वामे घणी
राडि हावल ग्रणी मिळै चढि रास ॥१॥

५५ गीत महाराज विजसिंघ रौ (स्वामी परसराम कृत) –
प्रारम्भ—

गाहे अरिंदा अनडा ओपा नरिंदा सदोपा गहे
नीसाणा निघात धोपा गरजै निहुग ॥१॥

५६ गीत चडावळ रा –

कळह वीन पर मिलेस बलेस ल्यायौ कटक
ग्रघायौ सोघला जुसा अरडीग ॥१॥

५७ कवत्त महाराजा ग्रभयसिंघजी रा (खिडिया बखता कृत) –
प्रारम्भ—

आद सगत ईसरी मगळकारी चितामण
कामधन पोरसी तु हीज पारस सिव मामण ॥१॥

५८ गीत नींवाज रा ठाकुर री -
प्रारम्भ—

साजा सुचगा सुरगा भ्रगा सारगा वछेव' साभ्रै
पातरी ऱत गार्जं भग्न ग भ्रगा पाव ॥१॥

५६ गीत खगारसिंघजी साडयानी री (देवाजी रतनू कृत) -
प्रारम्भ—

बका फाटी बादगरा हुवा सह हकवाका
रतन तणा जस हाका अमर रहीया ॥१॥

इसव' अतिरिक्त ग्र'थ म भ्रनेव' बिना शीपक के गीत सकलित है, जिनके कर्ता का नाम भी नहीं दिया गया है। गीतो के अतिरिक्त राजनीति के कवित्त (देवीदास कृत), मान मजरी (नददास कृत) तथा भ्रम्बाजी की स्तुति आदि भी लिपिबद्ध हैं।

ग्र'थ भ्रनेव' व्यक्तिया के हाथ स लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नही है।

६४ वीर गीत सग्रह

१ वीर गीत सग्रह, गाडण केसोदास, महाराजा मानसिंह, गाडण मैतापदान, साळस, रामदान भ्रादि, २ रा० शो० स०, ३ १२२२७ ४ १७ × २७ सेमी०, ५ १७६, ६ ६-१४, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ मे कुछ बिना शीपक के गीत लिपिबद्ध हैं जिनके कर्त्ता का नाम भी नही दिया गया है। अ'य कृतियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत कटाळीया ठाकुरा रा -
प्रारम्भ—

हरक उठाई बदगी धार माथै हुकम
अजमल भ्रचल हुय भार जुपौ रजु कर भ्रावीयो ॥१॥

२ गीत दूहा पदमसिंघ (चोहान) रा -
प्रारम्भ—

सुरसती सुप्रसन सदा, गाउ गुण गणेस
भ्रमता कर ने पदम री दरसाउ दस देस ॥२॥

३ भुरजाळ भूषण (बांकीदास कृत) –

चित्तौड़ गढ का वर्णन करते हुए महाराणा हमीर इत्यादि वहां के शासकों का यश-वर्णन किया गया है। प्रारम्भ में एक दूहा इस प्रकार अंकित है—

दूहा— साह तणा पूगी सबळ, भाय वचै इण ठौड़
औ आठू अकीलीण मे, चावो गढ चित्तौड़ ॥१॥

४ गीत ठाकुर अमरसींगजी रौ –

प्रारम्भ— ईराद ममद नेसाह हैदरकुळी, वगस पजं लागे न की दाव
अेक अमराव अगजीत रैं अटकीया ॥१॥

५ महाराज सबळसिंघ रौ गीत –

प्रारम्भ— पड़ै उपड़ै केवे बाजु घलन पोचै,
तड़फड़ै अड़ै अदवा पड़ै ताप आदि।

६ नीसाणी गाडण केसोदासजी री कही –

प्रारम्भ— अउकार अरूप रूप निरगुण नीरवाण,
नाथ नीरजण निराकार प्राणी हदा प्राण।

७ गीत कोलीमाणपुर राव दुरजणसिंघ रौ महाराजा मानसिंघ रौ फुरमायोड़ो –

प्रारम्भ— जद पड़ियौ ऋाट जोदपुर जैपुर, थाट पलट भ्रम लोभ थायौ
वण वण रण करवा कछवाहा, दुरजण झोका पवौ दीयौ ॥१॥

८ गीत सीकर रा राव मायोसिंगजी रौ (गाडण मैतापदान कृत) –

प्रारम्भ— पीडी पाच सु पड्या छा पाव पडा छा राज की प्रभा
पावा पीवा बठ ही न कीदो कदे प्यास आदि।

९ सुरजगढ़ ठाकुर साहब रौ गीत –

प्रारम्भ— अई सरसुत तान सागा पलक उनमुनी
तोड़तो पळ नसु मोह त्यागै ।

१० गीत ठाकुर उरजणसिंग रो (लाळस रामदान कृत) –
प्रारम्भ—

लापा वहुत प्रलस प्रत जग लीधो
कव अभरी कीधो कर काड, जगत तणा   आदि ।

११ गीत   आढा पाडयान रो कयो –
प्रारम्भ—

धर गाजे पगा धकाव धीगा, ज ममद राम जीम
सकजा भोडज सभा म साजा   आदि ।

१२ गीत जसलमेर वरोसाल रो –
प्रारम्भ—

अघट आवीयो जळ कळ समव अत उभेळा
फैल दुव्रत निगस सेत फाटो प्रभत ्रपती रायण"

प्रस्तुत ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नही है। ग्रथ के कुछ पत्र लुप्त हं और कुछ पत्र फटे हुए है। ग्रथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

६५ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आदि बारट अजनजी, मातीसर लछमण, चावडदान दधवाडिया भीकाजी दधवाडीया, कविया सालुजी, उम्मेदसिंघ सादू, बद्रीदास सादू, सादू लालसिह, मोतीसर कुसलाजी, आसिया जैतरूप, सैणीदान करणीदान, बारट भैरूदान हुकमीचद, बारट चतुभुज, मेहडू रामकरण, सादू गिरवरदान केसोदास गाडण आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२२८६ ४ १७× २४ ५ सेमी०, ५ १३२, ६ ११-१३ ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे सकलित कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ कवित्त मोकमसिंघ जतमलात रा (बारट अजनजी कृत) –
प्रारम्भ—

उपासरा पहल सीमरू गणपती
पछै मोहकम न सोमरा
बाया रो विमाह कीयो असाढ नम रो
जान परीदं जोके कुरब मोटा   ॥१॥

२ गीत मसूदे ठाकुर भैरूंसिंघ रौ –
प्रारम्भ—

कलजुग रो करन दान रो वीकम
वडो अकल रो समद तोवा रै भैरव मडतीया ॥१॥

३ गीत पिपळिया ठाकुर रौ (मोतीसर लछमण कृत) –
प्रारम्भ—

मावै पापा म नथी रै रही पळटा देर रा मूछा
कैका पुणो फैर रा भ्रमावे घके क्रोध ॥१॥

४ गीत (भोकजी दधवाडिया कृत) –
प्रारम्भ—

जिका बेवलड ज झाली परोती चौती जेम झप
तीप चोपा जाणी क्रीत रै गाली ॥१॥

५ गीत (दधवाडिया चावडदान कृत) –
प्रारम्भ—

गुण परगट कर छिपाडै अवगुण
घण चित बगसै घणु घणी ॥१॥

६ गीत (सालूजी कृत) –
प्रारम्भ—

ऊचा अर नीचा उभै गत आवु
हळवै पोकर अकल हजार ॥१॥

७ गीत (उम्मेदसिंघ सादू कृत) –
प्रारम्भ—

अई आगमण रपत घर गयद घड उपरा
भोम पर दपत पोरस मयद भेस ॥१॥

८ गीत (दधवाडिया भोकजी कृत) –
प्रारम्भ—

मदा भूना गजा हाथळा झाटकै कूभायला माथै
काटळै सामहु धूता समावा करूप ॥१॥

९ गीत (सादू बद्रीदास कृत) –
प्रारम्भ—

ताता तुरा तेज दाधा वहै फौज रा लडग तूट
अरी कहै पाधा आज भासै साज आन ॥१॥

१० गीत (सादू उम्मेद कृत) –
प्रारम्भ—

घावा वाण साति तिलका घूघावळा गगा घोव
वील पता कटारा अपगा गोळी बाण ॥१॥

११ गीत (मोतीसर सधुजी कृत) –
प्रारम्भ—

थट भडारा पुरसो मान अणथाग रा
लुटावण नाग रा सुजस लीधो ॥१॥

१२ गीत (लिडिया हुक्मीचद कृत) –
प्रारम्भ—

छोळा उपटँ रातगा जुही पतगा छुट
तारा गँण भगा खुटँ उमगा ऐसीग ॥१॥

१३ गीत (सादू लालसिह कृत) –
प्रारम्भ—

मुगलपान सिरविलद जैसीग रै मामले
भेळ केकाण अवसाण लाधै भळै
अत कियौ हरै गुजरात आप हूमळै ॥१॥

१४ गीत (कुसलाजी कृत) –
प्रारम्भ—

सुवर नगाडे घरा नवारी कमध सीलामा
अभा माहाराज हुता कर एम ॥१॥

१५ गीत महाराज रतनसिघ री (आसिया जैतरूप कृत) –
प्रारम्भ—

अगां साहीया जुगादु चाल रा सापणे मासै भिळा
धविदा किरादु जोग न रापै के कळेस ॥१॥

१६ गीत (सैणीदान कृत) –
प्रारम्भ—

वधीयौ चित हेत दयण दत वारण
धारण वरण वधारण धाव ॥१॥

१७ गीत रोया ठाकुर सेरसिंह आउवा कुशलसिंघ रो (करणीदान कृत) –
प्रारम्भ—

धणी दाहणै मीरै रो मीरै वामे धणी
राड हरवळ धोकै यप रीस ॥१॥

१८ गीत महाराजा विजसिंघजी रो –
प्रारम्भ—

पछै उठाय हण, जु चाह भूमी जेम सोघ पर्णं
वियो कास भाये मही घढ जु वाराह ॥१॥

१९ गीत पेमजी रो (बारहठ भेरू दान कृत)
२० गीत महाराज अभयसिंहजी रो (करनीदान कृत)
२१ गीत उदेसिंह रो (हुकमीचद कृत)
२२ गीत आईजी रो (पृथ्वीराज कृत)
२३ गीत सलूबर राव केहरीसिंघ रो (बारट चतुर्भुज कृत)
२४ गीत सलूबर रावळजी रो (महडू रामकरण कृत)
२५ गीत बीकानर राजा रतनसिंघ रो (सादू गिरवरदास कृत)
२६ गीत वलूजी चापावत रो (केसोदास गाडण कृत)

ग्रंथ में अधिकांश गीत बिना शीर्षक से लिपिबद्ध हुए है। ग्रंथ पर गत्ता मढा हुआ है। कुछ पत्र लुप्त है।

९६ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत सग्रह, मुथा रुपा, बारट वर्नसिंघ मोतीसर चुलरा, मोतीसर सेणीदान, खिडिया हुकमीचद, मीसण भान, बारट नवलजी आदि, २ रा० शो० स०, ३ १२८०३ ४ २५.५×१७ सेमी०, ५ ४३, ६ १८-२६, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में अधिकतर जोधपुर राजाओ एव राजवंशो के गीत सकलित है। विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ गीत महाराज विजयसिंघजी रो (दधवाडिया नवला कृत)
२ गीत सुरतसिंघ रो
३ गीत महाराजा अभयसिंह रो
४ गीत बडा महाराज वषतसिंघ रो
५ गीत महाराज अभयसिंह रो सपखरो
६ गीत महाराज अजीतसिंघजी रो

७ गीत महाराज अजीतसिंघ रौ

८ गीत जसवतसिंघ रौ (मुथा रूपा कृत)

९ गीत अमरसिंघ रौ (वारट एजन कृत)

१० गीत नीबाज ठाकुर सुरताणसिंघ रा

११ गीत महाराज गजसिंघ रौ (मोतीसर चुतरा कृत)

१२ दूहा ठाकुर अनाडसिंघ रौ (मोतीसर सणीदान कृत)

१३ गीत महाराजा माधोसिंघ जयपुर रौ (खिड़िया हुकमीचद कृत)

१४ दूहा ठाकुरा वपतावरसिंघ रा (भीमण भान कृत)

१५ गीत ठाकर बपतावरसिंघजी रौ

१६ गीत आसोप ठाकुर मेसदान कूपावत रौ

१७ गीत महाराज वगतसिंघ रौ (वारठ वनसिंह कृत)

१८ गीत अमल रै भाव रौ

१९ गीत माधोसिंघ चापावत रौ (लाळस नवलजी कृत)

२० गीत महाराजा प्रतापसिंघ जयपुर वाला रौ (लपवा सु भगडो हुवौ जिण भाव रौ, स० १८५६ वरस, ठाकुरा श्री किशनसिंघजी बणायौ)

२१ गीत महाराज तगतसिंह रौ (वारट वनसिंघ कृत)

९७ नाहरखान राजसिंघोत रौ गीत

१ नाहरखान राजसिंघात रौ गीत, २ पु० प्र०, ३ ३९ ब`द २, ४ १०×२२५ समा० ५ १, ६ १५, ७ २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० यह १२ द्वालो का गीत आसोप ठाकुर मुकनदास (नाहरखान) कूपावत की प्रशसा म है। महाराजा जसवतसिंह ने जब हाथी, घाडे आदि सरदारो को उपहार मे दिये तब मुकनदास ने कुछ बचे हुए घोडे चारण भाटो को दिलवाये।

उपना पुरसाप जडा पाणी पथा पापर होडा।
अेराकी आरबी सजोडा नाहरखान समापइ घोडा ॥१॥

गीत—

पडतात पयाल प्रमक्ष्ठि घो पुडि नापिय मकड फाल तुरी,
असराल विसाल धराक जचगल पयग उडाणी आदि

अन्तिम भाग—

वड कवीयणा त्यागी वपहर सेर वई
समीपीया पान राजान र कू प क्रन अभिनव ॥२॥

इति घोडा रौ गीत सपूण।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है। इस गीत में घोड़ों की विशेषताओं और सामन्तों की वदान्यता का अच्छा परिचय मिलता है।

६८ मानसिंह रा कवित्त गीत

१ मानसिंह रा कवित्त गीत, सेवग मगा, बारठ तीलोक, सादू चना, चालकदान, गिरवरदान आदि, २ पु० प्र०, ३ ३१ बंध ? ४ २७×१८ सेमी०, ५ १५, ६ २१, ७ २० वीं शताब्दी का प्रारंभ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० महाराजा मानसिंहजी पर रचे कुछ गीत, कवित्त विविध कवियों के अंकित हैं।[१]

१ गीत सेवग मगा, वास बडलू
२ रूपक बारठ तीलोक रा कीया
३ चैना रा कह्या दूहा गीत
४ गीत चालकदान रौ कीयौ
५ गीत गीरवरदान रो कह्यौ

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। पत्र व सिले, गत्ते रहित हैं। अन्त के आधे पत्र रिक्त पड़े हैं।

महाराज मानसिंह के समय की साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को समझने में इनका उपयोग लिया जा सकता है।

६९ वीर गीत संग्रह

१ वीर गीत संग्रह, भादा गोरखदास आदि, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ २२४३, ४ १०६×२३ सेमी० ५ २, ६ १०-११, ७ २० वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रंथ के प्रारंभ में एक बिना शीर्षक का गीत लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

कगई ससी वजाग राम कसी सधोमक कथा,
पाराथ भारथ री ससीस आपरै सजोस ॥१॥

१ गीत सपपरो उदैसिंघ मेड़त्या रो
२ गीत राणा भीमसिंघ रै तरवार रो

---

१ कूंपावत राठौड़ों का इतिहास ले० राव शिवनाथसिंह पृ० २३१, ३२

३ गीत सपपरो प्रतापसिंघ रौ (भादा गोरखदासजी कृत)

४ गीत कल्याणसिंघ रौ

उपरोक्त गीत एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किये गये है। लिपि सुवाच्य नही है।

१०० गीत कवित्त सग्रह आदि

१ गीत कवित्त सग्रह आदि, २ पु० प्र०, ३ ३६ व'द २, ४ २७४× १६५ सेमी० ५ ७६ ६ २७-२८ ७ वि० स० २००२, ई० सन् १६४५, जोधपुर, ८ बालाराम आदि, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे सग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ जयपुर महाराजाआ आदि रा कवित

प्रारम्भ म जयपुर महाराजाओ के गीत राग सहित - (सवाई रामसिंह, माधोसिंह आदि) लिपिबद्ध हैं।

२ पाबूजी रौ छद

३ गीत महाराज मानसिंघजी रौ (साहबदान कृत)

४ गीत महाराजा भीमसिंघजी रौ (सेवग राम कृत)

५ गीत महाराजा भीमसिंघजी रौ (गरीबदास कृत)

६ गीत महाराजा विजैसिंहजी रौ (खिडिया केसर कृत)

७ गीत महाराजा वीजयसिंघ रौ (बारट दलपत कृत)

८ गीत महाराजा विजयसिंह रौ (सेवग पिराग कृत)

६ गीत महाराजा विजयसिंह रौ (बारट उम्मर्दसिंह कृत)

१० गीत महाराजा विजयसिंह (सीरोही के भाकर आडा कृत)

११ गीत महाराजा विजयसिंह रौ (साहब सुरतान कृत)

१२ गीत महाराजा विजयसिंह (खिडिया हुकमीचद कृत)

१३ महाराजा बखतसिंह रौ गीत (रतनू लाला कृत)

१४ महाराजा बखतसिंह रौ गीत

१५ गीत बखतसिंह रौ लघु साणोर (बखता खिडिया कृत)

१६ गीत बखतसिंह रौ (सादू अनोपसिंह कृत)

१७ गीत बखतसिंह रौ (कविया करणीदान कृत)

१८ गीत महाराजा अमैसिंघजी रौ (आसीया द्वारकादास कृत)

१६ गीत अमसिंह रौ (खिडिया वखना कृत)

२० गीत अमैंसिह रो (मादू प्रथीराज कृत)

२१ गीत अमैंसिह रो (करणीदान कृत)

२२ गीत अमैंसिह रो (बारट सुभराम कृत)

२३ गीत अमैंसिह रो (कविया सावलदान कृत)

२४ गीत अमैंसिह रो (अपता पिडिया कृत)

२५ गीत अमैंसिह रो (करणीदान कृत)

२६ गीत अमैंसिह रो (दधवाडिया द्वारकादास कृत)

२७ महाराजा बखतसिहजी रा कवित्त (अज्ञात कृतक)

पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। इसमें ४५ छप्पय, दोहे संकलित हैं जिसमें नृप याग वर्णन, जस वर्णन, कीर्ति वर्णन, अश्व वर्णन, गज वर्णन, रथ वर्णन, सेना वर्णन, भुजदंड वर्णन चंवर वर्णन, धनुष वर्णन, भाला वर्णन, राज नायक वर्णन सब वर्णन आशीर्वाद वर्णन इत्यादि अध्याय हैं।

२८ गुण रूपक (हेम कवि कृत)

२९ महाराजा मानसिंह रो रूपक (सादू चैनजी रो कहियो)

यह ४२ कमाल छंदों की रचना जोधपुर महाराजा मानसिंह की प्रशंसा में रची गई है।

३० गीत मानसिंघजी रो (भूपालदान कृत)

३१ बखतसिहजी रो गीत सवैया

३२ उमेदसिंघ हाडा रो कवित्त

३३ गीत सेरसिंघ रो (आढा पहाडखान कृत)

३४ महाराजा मानसिंहजी रो गीत

३५ गीत मानसिंहजी रो (सादू चैना कृत)

३६ गीत मानसिंहजी रो

३७ मानसिंहजी रा कवित्त छप्पय

३८ महाराजा मानसिंह के कवित्त (विभिन्न कवियों द्वारा रचित)

३९ गीत मानसिंह रो (गूगा उदैराम कृत)

४० गीत सावभडी कमरबंध रा आटा रो सीतामऊ राजा रो कवर रतन सिंघ रो कह्यो

४१ नीसाणी जालोर रा गढ रा भाव रो (भापालदान कृत)

४२ हजूर रा कवित्त (बाकीदास कृत)

४३ छंद जलंधरनाथ रो मंडू महादान रो कहियो

४४ महादान रै बेटा मोडाराम रो कयौ तरवार रौ गीत

महादान कृत कुछ दोहे सोरठे भी दिये हैं, तत्पश्चात् ५ गीत देकर फिर दोहे लिखे गये हैं, जो कि उक्त महाराजा से संबंधित हैं। (पत्र–५)

इसके अतिरिक्त तखतसिंह के फुटकर कवित्त राठौड़ों की वंशावली आदि संग्रहीत हैं। ग्रंथ पर सुन्दर गत्ता चढ़ा हुआ है। ग्रंथ के कागज सब जिल्द से अलग हैं, कुछ पत्र इस ग्रंथ के नहीं हैं जो इसमें डाल दिये गये हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। कुछ पत्र खाली पड़े हैं।

१०१ राठौड़ इन्द्रसिंह री झमाल

१ राठौड़ इन्द्रसिंह री झमाल, २ जो० क० संग्रह, ३ ९९ ४ १४× १९ सेमी०, ५ २१, ६ १३, ७ १९ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इन १०७ झमाल छंदों में नागौर के राठौड़ इन्द्रसिंह का इतिवृत्त है। ग्रंथांक ९७२२, रा० शो० सं० में केवल १०३ झमाल छंद लिपिबद्ध हैं।[1]

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः अथ महाराजा श्री इन्द्रसिंहजी री झमाल लिपते—

सरसति गणपति हुय प्रसन दीज सत वरदान,
गाउं इंदराजा गुणै राजा पति राजान
राजापति राजान वडै वंस अवतरै
सहज जुठल भोक्षसि वरस ममत धरै
दिल उजल दातार पत्री भ्रम सहिया
रायसिंह सुजाव पै सिंह राईया ॥१॥

अन्त—

देषन श्री सापक बोपी इन्द्रवीया
चलै सवाडा दीय प्रवाहा कब्बीया ॥१०७॥

यह कृति एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध की गई है, लिपि सुवाच्य है। अन्त में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं। लाल कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। ग्रंथ फर्रुखशियर कालीन राजनैतिक हलचलों के प्रति जनता की प्रतिक्रिया को जानने के लिये उपयोगी है।

---

१ प्रकाशित सम्पादक डा० नारायणसिंह भाटी रा० शो० सं० जोधपुर

१०२ मरुधर क्षत्रिय वंश प्रकाश

१ मरुधर क्षत्रिय वंश प्रकाश, २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ ४ १६×८ सेमी० ५ १४४, ६ ३४, ७ वि० सं० १९३०, ई० सं० १८७३, जोधपुर ८ अज्ञात, ९ डिंगल व्याख्या हिन्दी में, देवनागरी, १० मारवाड़ के राठौड़ जागीरदारों की विभिन्न खांपों (चांपावत, चन्द्रसेनोत, कूंपावत) का विस्तृत इतिहास दिया गया है।

ग्रंथ इन सरदारों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१०२ जगत विनोद

१ जगत विनोद, कवि पद्माकर, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १०१८५, ४ १३×१६.८ सेमी०, ५ १४३, ६ ९-११, ७ वि० सं० १९०६, ई० सन् १८४९, रत्नावती, ८ नागर भट्ट कुबेर, ९ पिंगल, देवनागरी, १० प्रस्तुत रसालंकार संबंधी ग्रंथ का निर्माण जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह की आज्ञा से पद्माकर ने किया। नायक नायिका के भेद लक्षण बतलाकर विविध ९ रसों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जगत विनोद लिखयते ॥

दूहा—

सिधि सदा सुन्दर वदन, नंदनंद सुद मूल।
रसिक सिरोमनि सामेर, सदा रहे अनुकूल ॥१॥
जय जय सकति सिलमयी, जय जय गढ आमेर।
जय जयपुर सुरपुर सहस, जो जाहिर चहुफेर ॥२॥
जय जग जगतपति जगतसिंह नर नाह।
श्री प्रताप नदन बली, रवि बंसी कछवाह ॥३॥"

जयपुर राजाओं की प्रशंसा एवं वीरता संबंधी काव्य अंश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है—

"जाहा और सीरप रंधीर धन ताहि और जौर जग
आलिम को जाहि रही पात है।
कहे पदमाकर अरिन के अवाई परसाही तुरस
वाई की ललाई लहरात है।
परपी प्रचंड चमूह रचित हाथी पर देषत बनत
सोध माधव को गात है।

उद्धत प्रसिद्ध जुद्ध जीत हो कीसो दाहित री दाग्न का
रतन होदी में समात है ॥८३॥
पगसि बिनुड दय मुडन के मुडरिपु मुडन को
मानिका इन्द्र इयो त्रिपुरारी को।
कहे पदमाकर करारन के कोस न्य पाइ राहु दीन्हे
महादान अधिकारी कौ।
ग्राम दय धाम दान उदक ज्राम दये प्रन जल दीन्हे
जगती के जीवधारी कौ।
जाता जयसिंह दोड़ यात तान दीन्ही कहू बेरीन की पीठ
ग्रौर न पीठि पर नारी की ॥६१॥"

अन्तिम भाग—

'जगतसिंघ नृप हुकमते पदमाकर लहि मोद।
रसिकन के बस करन को कीन्हो जगत विनोद ॥२३॥"

पुष्पिका—

'सिद्धि श्रीमन्महाराजा श्री महाराजा
धिराजेन्द्र श्री विरचित जगत विनोद नाम काव्य
सुपूर्ण। शुभ समत १६०६ प्रवतमान्य मासोत्त
मासे मागसिर मासे शुक्ल पक्षो तिथी १२
सोमवासर लिखित रत्नावती मध्य, नागर भट्ट
कुबेर हस्ताक्षर शुभ भवतु। कल्याणमस्तु। श्री रस्तु।"
(पत्र-१२५)

ग्रन्थ साहित्यिक धारा के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है।

अन्त में कुछ स्फुट कवित्त आदि ग्रंथ निर्माण के बाद मे अन्य व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किए गये है, लिपि सुवाच्य है, पत्र हाथ के बने प्रतीत होते हैं। ग्रंथ पर जीर्ण कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है।

१०४ सांभर युद्ध

१ सभरि युद्ध आदि, कवि कलानिधि कृष्ण भट्ट, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ६८८६, ४ १०×१६ सेमी०, ५ २०, ६ ८, ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ पिंगल, देवनागरी, १० प्रस्तुत लघु काव्य-कृति में जोधपुर महाराजा अजीतसिंह एवं आमेर नरेश सवाई जयसिंह द्वारा सम्मिलित रूप

से शाही सेना पर किये गये आक्रमण का इतिवृत है। ई० सन् १७०८ में यह युद्ध साभर में हुआ जिसमे राजपूत सनिको की विजय हुई।

प्रारम्भ—

"। श्री गणेसायनम । अथ सभरि जुद्ध लिप्यत ।

दोहा—

गुरु गुविन्द गनपति गिरा, गवरि गिरीस मनाय ।
गावत गुन जयसाह को सु कवि कलानिधिराय ॥१॥
हुकम वहादुर साहि को आयो सद हुसन ।
हुते भूप जयसाह जय, समरि सर सजि सैन ॥२॥"

अन्तिम भाग—

"पिय महाकाल को वाल निजि, कालो परम पुस्याल तर ।
बिसनेस लाल भुवपाल जह, फले लहिय कर वाल कर ॥१॥'

पुष्पिका—

' इति श्री कवि कलानिधि श्री कृष्ण भट्ट
विरचित सभरि जुद्ध वर्णन सपुरण ॥१॥" (पत्र-८)

इसके अतिरिक्त ग्रथ में एक बिना शीर्षक की अपूर्ण काव्य-कृति अन्त में लिपिबद्ध है। ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिखावट सुवाच्य है। अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है।

१०५ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह आसिया बुद्धा आदि २ जो० क० सग्रह, ३ ५८, ४ १७५×२४ सेमी० ५ ४८३, ६ १३–१४, ७ १९ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे अधिकाश गीत, कवित्त आसिया बुद्धा कृत है जो वीर पुरुषो इत्यादि से सम्बन्धित हैं।

गीत जलधरनाथ रो (आसिया बुद्धा कृत) –

प्रारम्भ—

"सुकव पीर भीमोक दला कौन सेवळो सरस
प्रगट जग ताढीया पाछा पाता
रेण कर भरथ री मोगरामी गने ॥१॥

आसिया बुद्धा की कृतिया एव राठौड सरदारो की जीवन-घटनाओ इत्यादि के लिये सामग्री उपयोगी है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कपडे का गत्ता चढा हुआ है। प्रारम्भ के पत्र किनारो से खडित हैं। लिखावट साधारण है।

१०६ गीत कवित्त दूहा बात सग्रह

१ गीत कवित्त दूहा बात सग्रह, बाकीदास सतिदान आदि, २ जो० क० सग्रह, ३ ७४, ४ १५.५×२१.५ सेमी०, ५ २६६, ६ १०–११, ७ १६वी शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे बाकीदास सतिदान इत्यादि चारण कवियो द्वारा रचित अनेक प्रशस्ति गीत कवित्त आदि सकलित है। प्रारम्भ म राजकीय कपडा की विगत दी है।

प्रारम्भ—

"सवत १८७१ रा माघ सुदि १४ कपडा री मौजूदायत लीवी—
वागो १ आदरसा रा वागा होय सेलारा
या माहे १७ कळिया री फेर राज
वाळो ने श्री हजूर इनायत कीयो जीवी
कळिया १७३ री नै वागो एक गुलाबी
आदि।"

प्रसिद्ध व्यक्तियो से सम्बधित कुछ ऐतिहासिक फुटकर बातें भी दी है। जो उनके इतिहास अध्ययन हतु उपयोगी है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो द्वारा लिपिबद्ध है, कुछ पत्र कीटभक्षित है, चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

१०७ सिपर वसोत्पति पीढि वार्ता

१ सिपर वसोत्पति पीढि वार्ता, चारण कविया गोपाल, २ जो० क० सग्रह, ३ ११० ४ ३१×२० सेमी०, ५ ६०, ६ १५, ७ २०वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध (रचनाकाल वि० स० १६२३, ई० सन् १८६६), ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ मे शेखावतो के मूल पुरुष शेखाजी (मोकलजी के पुत्र) व उनके सतति का विवरण दिया है।[1]

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम अथ सिपर वसप्ति पीढी वार्ता चारण कविया गोपाल कृत लिपते वार्ता—

[1] प्रकाशित स० पुरोहित हरिनारायण काशी नागरी प्रचारिणी सभा वि० स० १९८५

राजा उदयकरणजी आमेर रा रै बेटा ३ नरसिंहजी १ बरसिंह २, बालाजी ३ । नरसिंहजी आमेर की गादी, बरसिंहजी माजासि, बालाजी बरवाट ।

बालोजी के पातावार पाटी ख्याति जांवा बधेरा आमेर का राजा साम्या बधेरा ख्यातो था बधेरो ख्याव गा थ गयो—थामू मामलो थावरो माथ। बालाजी बधेरा लिया । बालोजी क बटा तीन परम, पींवराजजी, मोकलजी। परमजी पींवराजजी नै गाव एक लेनू जाका वार्ने पाता मोकलजी बरवाट गादी बैठा, बरवाड़ै गू दाय कोस ऊपर घाटी की मरवान आद आदि।"

इस प्रकार एक फकीर की कृपा स शेखा के उत्पन्न होने, इस वीर पुरुष द्वारा अपनी पीढियों में बधेर आमेर के प्रमोरदवर चद्रसेन कछवाह का नहीं देन तदुपरान्त युद्ध होने इत्यादि, शेखाजी की मृत्यु, उपरान्तियों का वृत्तान्त देकर शेखावतों की शाखाओं उपशाखाओं के विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों का विवरण दिया है जो शेखावतों की अन्य ख्यातों से कुछ भिन्न है ।

अन्तिम भाग—

'पालट साहब भादरजी फुरमाई—पीढ का प्रवाडा का ग्रन्थ लावो साबत पीढा का प्रवाडा का ग्रन्थ आगे कोई बण्यो छो नहीं जद पालट साहब भादर चारण गोपाल नै फुरमाई—पीढा का प्रवाडा का वारताई ग्रन्थ बणावो, ठाकर साहब मुकनसिंघजी नै फुरमाई, पालट साहब भादरजी कमा बणवावो जाड नहीं करणी वात की रीति बणावणा जमू छप्पै, छन्द, दोहा नहीं बणया वारतीक बणायी है ।

इति श्री चारण कविया गोपाल कृत सिपर बसोत्पति पीढी वार्तीक गुन संपूर्ण ।"

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा सुन्दर लिपि में लिखा गया है । ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है । कुछ पत्र रिक्त पडे हैं ।

ग्रन्थ शेखावतों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है । पाउलेट ने राजस्थान की रियासतों के गजेटियर लिखते समय स्थानीय साधनों को किस प्रकार सकलित करवाकर उनको महत्व दिया इसकी जानकारी इस ग्रन्थ के निर्माण से मिलती है ।

१०८ वीर गीत कवित्त सग्रह

१ वीर गीत कवित्त सग्रह २ जो० क० सग्रह, ३ ६५, ४ २४× १७ सेमी०, ५ ५७६, ६ २०-२४, ७ १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह विभिन्न प्रशस्ति गीतों का

बड़ा ही समृद्ध संग्रह है जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजपूत सरदारों के ऐतिहासिक और परम्पराश्रुत कार्यों से है। कुछ अपवादों को छोड़ अधिकांश रचनाएँ अज्ञात कर्तृक हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साफ नहीं है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है अनेक पत्र खाली पड़े हैं।

इस ग्रन्थ को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि कविराजा के यहाँ आने वाले चारण कवियों से इस ग्रन्थ में जो उन्हें याद थे वे गीत समय-समय पर लिखवा लिए गये थे।

१०९ वीर गीत छप्पय कवित्त संग्रह

१ वीर गीत छप्पय कवित्त संग्रह २ जो० क० संग्रह, ३ ६५, ४ २४×१७ सेमी०, ५ ५७६ ६ २०-२४, ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रंथ में अनेकानेक योद्धाओं के प्रशस्ति गीत कवित्त इत्यादि लिपिबद्ध हैं। कुछेक अपवादों को छोड़कर प्राय सभी गीत चारणों द्वारा रचित हैं।

यह ग्रंथ वीर गीतों का भण्डार होने के कारण अनेक अज्ञात वीरों और छोटी बड़ी घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है।

११० राधा-कृष्ण दोहे और ऐतिहासिक वार्तें

१ राधा कृष्ण दोहे कवित्त और एतिहासिक वार्तें, २ जो० क० संग्रह, ३ ६४, ४ २७×१८ सेमी०, ५ १४०, ६ २७ पं०, ७ वि० सं० १८८३, ई० सन् १८२६, मुमटपुर, ८ दान विजय, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में कृष्ण-राधा सम्बन्धी कृति के पश्चात् राठौड़ दुर्गादास द्वारा नयी समदड़ी बसाने की वार्ता, चापावत विठलदास का कवित्त, 'याम वधा विषयक' तथा कुछ ऐतिहासिक वार्तें भी दी है, जिनके शीर्षक नहीं है।

प्रारम्भ—

"श्री राधा कृष्णो विजयै तेतराम ॥ दूहा ॥
श्री राधा पद कृष्ण के चरन चित लगाय।
करी ग्रंथ जह उलसयो वास गंग गुलवाय ॥

पुष्पिका—

"इति श्री मन्महाराज कुमार इन्द्रजिधिर
चिताया रसिक प्रियया अनरस वरणने
षोडश प्रभाव ॥१६॥ सवत १८८३ रा वर्षे

मिति आसाढ कृष्ण पक्ष तिथौ ३
गुरुवार सर लि० दानविजय सुभटपुर मध्ये ।"

ग्रंथ से अनेक प्रकार की स्फुट जानकारी मिलती है।

इसकी लिखावट सुन्दर है, ग्रन्थ कृतियां किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से बाद में लिखी गई हैं। ग्रंथ पर गत्ता चढा हुआ है।

१११ गीत कवित्त वात संग्रह

१ गीत कवित्त वात संग्रह, २ जो० क० संग्रह, ३ १३०, ४ १७×२३ सेमी०, ५ १६४, ६ ८-११, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, जणीयण ग्राम (जोधपुर), ८ आसिया बुधा आदि, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रारम्भ मे गोरखनाथ के कवित्त (गाडण केसवदास कृत) दिये हैं। पत्र खण्डित होने से यहाँ दूसरी कृति का प्रारम्भिक अंश दिया जा रहा है—

गीत व्यास तेजकरण रो —

'सिरै अकल अणथाग दरीयाव जोडे सदा
प्रगट जग जणइ बहु पासा ॥१॥"

ग्रन्थ में संग्रहीत अन्य कृतियां निम्नलिखित क्रम से लिपिबद्ध हैं—

(१) निसाणी रायपुर सरदारो री
(२) गीत बगड़ी रा सिरदारा रौ
(३) गीत ठाकुर अमृतसिंघ रौ बुधजी रौ कह्यौ
(४) छंद सूरजजी रौ मोतीसर कानाजी रौ कह्यौ
(५) रूपदीप छंद
(६) रतना हमीर री वात
(प्रारम्भ—कुसम तणा सरपाव कर, जग जिण लिनो जीत)
(७) गीत ठाकुर देवीसिंह रौ
(८) गीत आढा बनजी रौ
(९) गीत चामू रा सिरदार लछमणसिंघ रौ व्याव रा भाव रौ, बुधजी कहै
(१०) गीत कविराज वाकीदास रौ
(११) गीत साडेराव रा सिरदारा रौ
(१२) गीत बारठ केशरीसिंघ रा कह्या
(१३) गीत आसोप रा धणी रौ बुधजी कृत
(१४) गीत आलणीयावास रै सिरदार अजीतसिंह रौ

(१५) गीत बलवतसिंघ रौ
(१६) निसाणी जसलमेर री अधूरी अठै लिखी
(१७) रतना हमीर री वात लिखतु बुधा आसिया गाम जाणीयाणा मे
(१८) गीत मोतीसर प्रभुदान रौ
(१९) गीत सवाईसिंघ रो
(२०) गीत बलवतसिंघजी महाराज रौ आसिया बुधा कहै

बाकीदास के भाई बुधा की अनेक कृतिया इसम है। महाराजा मानसिंह कालीन राजस्थानी साहित्य और विशिष्ट व्यक्तियो के अध्ययन के लिये ग्रथ विशेष उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त कुछ बिना शीर्षक के गीत, कवित्त आदि कृतिया लिपिबद्ध हैं। ग्रथ अनेक व्यक्तियो द्वारा लिखा गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

११२ फुटकर ख्यात बात सग्रह

१ फुटकर ख्यात बात सग्रह, २ जो० क० सग्रह, ३ ७७, ४ ३०.५ × २१ सेमी०, ५ ३७४ ६ १६-१६ ७ १६वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ म उदयपुर, जोधपुर, जसलमेर इत्यादि राजस्थान के रजवाडा के शासका एव सरदारा के अतिरिक्त दिल्ली के बादशाहा की अनेकानेक फुटकर बात लिखी हुई हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम अथ बात हिन्दुआ री लिखी
हिन्दुआ का देव गगा सूरज, जसवतसिंघ कही
गोरधन कही, दरबारी काणी जाप आदि।"

बाता के अतिरिक्त कुछ कवित्त दोहे भी लिये है। इस सामग्री से अनेक प्रकार की उपयोगी जानकारी मिलती है।

ग्रथ अनेक व्यक्तिया द्वारा लिपिबद्ध है, लिपि अशुद्ध है, कपडे का गत्ता चढा हुआ हैं।

११३ ख्यात बात वीर गीत सग्रह

१ ख्यात बात वीर गीत सग्रह, २ जो० क० सग्रह, ३ ४४, ४ ३१ × २३.५ सेमी०, ५ २१४, ६ १३-१५, ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस ख्यात मे राजस्थान के

राजाओं एवं सरदारों से सम्बन्धित अनेकानेक एतिहासिक छोटी-मोटी बातें लिपिबद्ध की गई हैं। ग्रंथ का प्रारम्भ चापावत दलपत गोपालदास के प्रशस्ति गीत से हुआ है।

गीत चापावत दलपत गोपालदासोत रौ –
प्रारम्भ—

"माहबतषा सू छळ मार क मामौ
भार सार आवरै भन
दलसिंघ वलो आरियो दुजडा
दोमक्ष वाज जिहाज दल ॥१॥

एतिहासिक बातों के अतिरिक्त विशिष्ट सरदारों के वीर गीत, रतन पीगलसी के कहे सवैये, बांकीदास कृत 'मान जसो मडण', रावळ हरराज के कवित्त इत्यादि कृतियां संग्रहीत हैं। इस ग्रंथ से अनेक प्रकार की उपयोगी जानकारी मिलती हैं।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अक्षर मोटे हैं पर सुन्दर नहीं हैं। बहुत से पत्र खाली पड़े हैं।

११४ छंद प्रबंध

१ छंद प्रबंध, उदैचंद २ जो० क० संग्रह ३ १२, ४ ३३× २४ सेमी०, ५ ४२, ६ १८-२०, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में बिना शीर्षक की कुछ कृतियां छन्द शास्त्र व यंत्र-मंत्र सम्बन्धी हैं। बीच में छंद शास्त्र से सम्बन्धित कृति छंद प्रबंध (उदैचंद कृत) लिपिबद्ध है। इस विषय की अनेक तालिकाएँ भी दी हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम श्री सरसत्यनम अथ भंडारी जी श्री उदैचंदजी कृत ग्रंथ छंद प्रबंध रो लिखुज लिपन अथ पुलताद मात्र सज्ञा दोहा ।'

यह कवि महाराजा मानसिंह जोधपुर का समकालीन व आश्रित राज्याधिकारी था। तत्कालीन काव्य शास्त्रीय परम्परा का इससे बोध होता है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिपि साधारण है। गत्ता नहीं है।

११५ दूहा संग्रह आदि

१ दूहा संग्रह आदि, नरवद, रतनू डूंगरसी आदि, २ जा० म० संग्रह, ३ ५०, ४ ३२×२३ सेमी०, ५ ३१, ६ २०-२२, ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में जोधपुर के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की प्रशंसा में दोहे संग्रहीत है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ दूहा गजसिंघ रा पडीया नरवद रा कह्या –

प्रारम्भ—

सरसति वाणी सुवणि रस उकति दीयो अनवध
ज्या मत सार वरणायो सूर तणो गज वध ॥१॥

२ दूहा सूजा महेराजोत रा रतनू डूंगरसी रा कह्या –

प्रारम्भ—

सुर न असुर ससार जुग च्यूं ह लगै पैठा जुधै
जैत हुआ उभड ।   (१३१ दोहे)

३ जमल वीरमदेउत रा रतनू डूंगरसी देवाउत रा कह्या –

प्रारम्भ—

सुभृत मुल तणह उगते हीदूवे तण
वळीया सुहधाने बपत ॥१॥   (१९८ दोहे)

४ वीरमदे दूदावत रो गीत –

प्रारम्भ—

धर बेध नवे गढ वीरम धूण अर्गे मेछ अकारा
मानीयो ज्यार श्री सुप मालै ॥१॥

इसके अतिरिक्त राव सलखा, राव चूंडा, राव टीडा आदि के प्रशस्ति गीत लिपिबद्ध हैं।

मूल ग्रंथ की लिपि सुन्दर है। पत्र काफी जीर्ण है पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। इसकी काव्य-कृतियां प्राचीन हैं जो कि राजस्थानी साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए बड़ी उपयोगी है।

११६ वीर गीत कवित्त संग्रह

१ वीर गीत कवित्त संग्रह २ जो० क० संग्रह ३ १४, ४ २६×१८ सेमी०, ५ १२४, ६ २०-२३, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रारम्भ में रायपुर के ठाकुर रूपसिंह की १२ झमाल छंदों की कविता उनकी प्रशंसा में अंकित है।

झमाल ठाकुर रूपसिंह (रायपुर) की –

प्रारम्भ—

॥ श्री माताजी सत छै ॥

श्री गुणेशायनम अथ झमाल ठाकुरा श्री रूपसिंहजी री लिखत—
श्री गुणपत दीजो सुमत, नमू पगा सिवनंद,
रूपो कमधज रायपुर, चीरातन जग चंद।
॥१॥

इसके अतिरिक्त खेड़ के राठौड़ शासक मल्लीनाथ, रामदेव तंवर, पाबूजी व भेरुजी इत्यादि विशिष्ट व्यक्तियों की नीसाणियां व झमाल गीत दिये हैं। ऐतिहासिक प्रशस्ति गीतों का भी अच्छा संग्रह है। यह ग्रंथ देवोपम पूज्य व्यक्तियों के प्रति भावनाओं की जानकारी देता है। इन व्यक्तियों ने जनहित के अनेक कार्य किये थे।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साधारण है। अंत में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं।

दूसरा अध्याय

भक्ति व दर्शन

११७ पद मुक्तावली

१ पद मुक्तावली, २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ १८८२, ४ २६×१६.५ सेमी०, ५ १२२, ६ २१-२२, ७ वि० स० १८१६, ई० सन् १७६२, जयपुर, ८ नाथुराम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० भक्ति सम्बन्धी अनेक पद (राग सहित) इत्यादि लिपिबद्ध है। प्रारम्भ के १६ पत्र लुप्त है।

प्रारम्भ—

॥ राग सारग ॥ जय लिपत सग हरि जननि

अल्हाद कर परम रिप्यात त्रे लोके राजे ॥१॥

प्रस्तुत ग्रथ जयपुर नरेश माधोसिह के राज्यकाल म लिपिबद्ध किया गया।

पुष्पिका—

इति श्री पद मुक्तावलि सपूण ॥ सवत १८१६ का शाके १६८४ प्रवतमाने मासोत्तम मासे फालगुन मासे कृष्ण पषे तिथौ ॥ भोमवासरे

लिप्यकृता महात्मा नाथुराम ॥

लिषायत ठाकुर श्री सौभागसिहजी ॥ सवाई जयपुर मध्य ॥ माधोसिंघ राजे ।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिखा गया है, लिखावट सुदर है। लिखावट म लाल स्याही का भी प्रयोग किया है। ग्रथ पर गत्ता नहीं है। पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। मध्यकालीन सगीत के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

११८ भक्त माल

१ भक्त माल, नाभाजी (नारायणदास) २ पु० प्र०, ३ २८
४ २२.५×१८.५ सेमी०, ५ १८०, ६ १८, ७ वि० स० १८३५

सन् १७७८   ८ अनात,   ६ राजस्थानी, देवनागरी,   १० इसमे अनकानेक भक्ता सम्ब'धी जानकारी दी गई है।

प्रारम्भ—

"श्री कृष्णयनम श्री गुरुवेनम अथ भक्तमाल टीका सहित लिप्यते टीका करता को मगलाचरन तथा आग्या सिस्यन ॥ कवित्त ॥

महा प्रभु कृष्ण चैत'य मन हरण जू के चरण को ध्यान मेरे नाम मुप गाइये ताही समय नाभाजू ने आग्या दई लई धारि टीका विस्तरि भक्तमाल की सुनाइये"

भक्तमाल म अजामल, हनुमान विभिषण, सबरी गणपति, जटाय, अबरीक, विदुर, सुदामा, चद्रहास, समुदाय, कु'ती, द्रौपदी, वाल्मीक, रूकमागद, विष्यावलि, रतदेव, गुहराम, परीक्षित, सुखदेव, प्रहलाद, नियादित्य, रगदेव, गणानिदेव, तिलोचन, श्री वल्लभाचाय, कुल सखर, पुरषोतम करमाबाई, उमवाई, मुवन चौहान, कमधुज, जमल, श्रीधर, निह किचन, गोपाल, रामदास, हददास, जमू स्वामी, अलूजी, वार मुषी, नित्यानद, प्रमु चैत य महा प्रभु, गोपाल, भट्ट गुसाइ, अलि भगवान, वीठल विपुलजी, लोकनाथ गुसाई, मधु कासीमूवर, श्रीजी, राका पति, बाका, लडु भक्त, तीलोक सुनार, प्रताप रुद्र, गजपति, गोवि'द स्वामी, गुजामाली, नगेस देरानी, नरवाहन गोपाल भेला, करता नेद, नारायणदास प्रवाधानद सरस्वती इत्यादि अनेक भक्ता का वत्तात दिया है।

अ'तिम भाग—

काहू केवल जाग जिग, कुल करनी की आस
भक्त माला अगर उर वसो नारायणदास ॥२१४॥

॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायणदास कृत मूल समाप्त ॥

पुष्पिका—

इति श्री भक्तमाल भक्ति रस बोधनी टीका सपूरण
सवत १८३५ वरस सावण वदि। भृगुवासरे लिपित्वा मिद पुस्तक ॥शुभ॥

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सु'दर अक्षरो मे लिखा गया है। कागज हाथ के वने प्रतीत होते हैं। ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य तथा धार्मिक आ'दोलन के इतिहास के लिए ग्रथ बहुत उपयोगी है।

११९ भक्त माल[1]

१ भक्तमाल, राघोदास, १ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ २८०००, ४ १३ × ३० ५ सेमी०, ५ १२१, ६ १३, ७ वि० स० १६०४, ई० सन् १८४७, रामगढ़, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत भक्त माल के रचयिता दादू पंथी राघोदास है। इसमें वैष्णव भक्तों के पश्चात् संन्यासी, जोगी, जैनी, बौद्ध, यवन, फकीर, नानकपंथी, कबीर दादू निरंजन आदि सम्प्रदायों के भक्तों का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"श्री रामजी सत्य श्री दादूदयालुजी सवाई श्री संत भक्तय नमः।

ग्रंथ श्री भक्त माल टीका सहित लिषत श्री राघवदास कृत टीका करता के मंगलाचरण

साषी—

गुर नै सजन सारदा होर कवि सब दिन पूजि

भक्त माल टीका करो, मटिहू दिल की दूजि ॥१॥

पुष्पिका—

इति श्री भक्तमाल की टीका संपूरण समाप्त।

लिपतं सुभ सथान रामगढ मध्ये

सुकल पक्षे तिथ भादव सुदि पंचमी मंगलवार। संवत १६ ॥४॥

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट सुंदर है पत्र सब खुले है।

यह ग्रंथ भारत के भक्ति आंदोलन तथा दर्शन व साहित्य आदि के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

१२० अवतार चरित्र

१ अवतार चरित्र, बारट नरहरदास, २ रा० शो० स०, ३ ४६, ४ ३८ × ३३ समी०, ५ २१६, ६ ३८, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४, ८ सुखचंद, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ २४ अवतारों से सम्बन्धित है। इसमें विभिन्न अवतारों की कथाएँ काव्य-रूप में

---

१ प्रकाशित स० अगरचन्द नाहटा रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर

वर्णित है। इस ग्रन्थ का किसी समय राजस्थान में बहुत प्रचलन रहा है जो कि यहाँ धार्मिक आस्थाओं के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

प्रारम्भ—

उनम श्री सरस्वत्य श्री सन्गुरुभ्या नम, " नम, श्री मट्तेनम, छद सार्ग मुदाटइ प्रबह

या धवलागिरि धाम वेय धरणी हसवर वाहिनी
या धवळ अवतस प्रस अमळ कर बीन वाणी धरा ॥१॥

पुष्पिका—

'इति श्री चौवीस अवतार चरित्रे महा मुक्ति मार्गे भाषा बारट नरहरदासेन विरचित श्री विजय अवतार गीता सपूर्ण सवत १६११ वर्षे साके १७६५ फाल्गुन मास कृष्ण पष तिथी अष्टमी ८ शनीवासरे लीषित माहतमा परतर गछे प० पुषचद लिपि ठाकुर राज श्री १०८ श्री होमतसिंघजी पाठनाय पाप भाटी करजनात पाट गाव पजडलो ।"

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुन्दर है। लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पत्र कुछ चिपके हुए हैं। ग्रथ पर कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है कुछ पत्र रिक्त पड़े है।

१२१ परची सग्रह

१ परची सग्रह अनतदास, सुखराम, परमानद, २, रा० प्रा० वि० प्र०, ३ १२५८५ ४ १६.५ × १५ सेमी०, ५ ३६०, ६ ११-१३ ७ वि० स० १६२७, ई० सन् १८७० वदनोर ८ प्रारतराम, शिष्य सुलभराम, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ म अनेक सतो का जीवन वृत्त सकलित है जिनमे भक्तो की जीवनी इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है। परचियो का विवरण क्रम इस प्रकार है—

(१) पीपाजी री परची (अनतदास कृत)
(२) कबीरदासजी री परची (अनतदास कृत)
(३) रैदासजी की परची (अनतदास कृत)
(४) तिलोकचदजी की परची (अनतदास कृत)
(५) नामदेव की परची (अनतदास कृत)
(६) मलूकदासजी की परची (परमानद कृत)
(७) उदैगिरजी री तथा किस्तुरा बाई री परची (सुपसागर कृत)
(८) राना बाई री परची (सुपसारण कृत)

(९) फूली बाई री परची (सुपसारण)

(१०) करमेती बाई री परची (सुपसारण कृत)

(११) करमा बाई री परची (सुपसारण कृत)

(१२) सिवरी बाई री परची (सुपसारण कृत)

(१३) मीरा बाई री परची (सुपसारण कृत)

(१४) मुगता बाई री परची (सुपसारण कृत)

(१५) मेउ समन री परची (अनतदास कृत)

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है। ग्रन्थ पर सुन्दर कपडे का गत्ता चढा हुआ है। अन्त मे कुछ पत्र रिक्त पडे है, पत्र बारीक व पीले रग के हैं। कुछ पत्र चिपके हुए है।

यह मध्यकालीन धार्मिक सम्प्रदायो के प्रचार तथा भक्तो के जीवन के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

१२२ श्री कृष्णजी की बारे मासा पोशाकें

१ श्री कृष्ण की बारे मासा पोशाकें, २ रा० शो० स० ३ ७३२२, ४ २०×१६ सेमी०, ५ २५ ६ २४-२८ ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अनात, ९ ब्रज मिश्रित राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे भगवान श्री कृष्ण के प्रत्येक मास और प्रत्येक दिन की पोशाको के वृत्तात के साथ विशेष उत्सव के दिन पोशाक आभूषणो इत्यादि का वृत्तात है। ग्रथ अपूर्ण है। ग्रथ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

॥ गडील उ दाहुरी एक पला की एक मोती की।

आगे माघ वदी ९ के दिन पोशाक आभूषण इत्यादि का वृत्तात इस प्रकार दिया गया है—

॥वागा बनारसी पीले रूपे री बूटी को घेरदार। पटका लाल दुरगी बेलदार पाग पीली छाजेदार। ता पर कलगी पर चद्र का लीलम के डाक को डोरा मोती की लडी को करन फूल मकेरे। आभरन को जोड लीलम को। सीगार हलको मोजा वागा जैसे। गदल पचरगी बेलदार बलदमजी के टोप पीले अतलस को।

अन्तिम भाग—

'काति सुद १० वागा गुलाबी तास के घेरदार पटका पीले तास को चीरा गुलाबी तास। कलगी पर चद्र का डोरा पन्ना के बडे। करन फूल मकेरे आभरन पन्ना के हार १ माला १ पदम नेठी वाके लोल कन्दी।"

ग्रथ के पत्र लुप्त होने से अपूर्ण हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है। लिखावट साधारण है। वस्त्र व अलकरण सम्बन्धी जानकारी हेतु उपयोगी है।

तीसरा अध्याय

अश्व एव गज चिकित्सा

१२३ गज चिकित्सा

१ गज चिकित्सा, मीरा बुला २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३७०३४, ४ १८×१७ ५ सेमी० ५ २११, ६ १० ११, ७ वि० स० १७७५, ई० सन् १७१६, ८ मीरा बुला, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ हाथियो के विविध रोगा व चिकित्सा सम्बधी है।

प्रारम्भ—

'सवत १७७५ मीती असाढ सुदी १२ मगल्वार श्री फरकसर प्रवीन दीली सुर ठाले ॥"

प्रारम्भ म लिखा है कि यह ग्रथ बादशाह फररुशियर क समय लिखा गया। उस समय बूदी मे रावराजा बुधसिंह थे तथा तत्कालीन सैयद अहमदफीलजाह हाथियो क पीर के नुस्खे मीरा सहवाज जाति भाटी के शिष्य मीरा बुला ने लिखे हैं।

प्रस्तुत ग्रथ मे हाथियो क विविध रोगा उनके देशी औषधियो हाथियो को लडाते समय उनको मस्त करने तथा मद उतारने की विधियाँ दी गई हैं। इसमे एक विशेष बात यह है कि तन्त्र मन्त्रो स हाथियो क रोगो के इलाज इत्यादि का वृत्तात भी है।

मूल ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है। परन्तु चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि स यह बडा महत्वपूर्ण है।

१२४ घोडो री सालोत्र, कवित्त दोहा आदि

१ घोडा री सालोत्र, कवित्त दोहा आदि गोविददास, २ रा० प्रो० स०, ३ २६७५ ४ १४×१० ५ समी०, ५ ११६, ६ १४ १७ ७ वि स०

१७७४, ई० सन् १८१७ = अनान, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

घोड़ों री सालोत्र –

प्रस्तुत ग्रंथ घोड़ों की चिकित्सा से प्रारम्भ हुआ है। सर्व प्रथम बतलाया गया है कि पहले घोड़े आकाश में उड़ते थे उनके पर होते थे—

प्रारम्भ—

"श्री गणेशाय नम श्री गुरुभ्यो नम अथ सालोतर शास्त्र लिख्यते। पहिला घोड़ा र पांख हुती आकास उडता इन्द्र र हुकम मे सालोहोत्र रिष स्वेत री पाख काटी तरै वर दीयो नोवा माहि थारी पूजा होसी, पहिली पगे लागसी पछै उपर चढसी। तठा ती सोलह हजार ग्रंथ अस्व चिकित्सा नकुल पाडव प्रगट कीया।"

इस प्रकार आगे के वर्त्तान में घोड़ा की चार जातियां ब्राह्मण क्षत्रीय, वैस्य, और शुद्र बतलाये हैं। अच्छे घोड़े व खराब घोड़ा के लक्षण बतलाये हैं, तत्पश्चात् घोड़े के रंग (सफेद, लाल, पीला मृगवरण, कतोला नीला और काला) बतलाये जिनमें सफेद रंग का घोड़ा सबसे उत्तम माना गया। घोड़े की बनावट (कान, पिंड, मुख, दांत, पूछ) पर प्रकाश डालते हुए भवर की स्थिति का भी ज्ञान करवाया है। आगे वर्त्तान में दांतों को देखकर घोड़े की उम्र का पता लगाने का ज्ञान करवाया गया है। आगे यह भी लिखा है कि घोड़े की देखभाल किस प्रकार करनी चाहिये और अन्त में घोड़े की विभिन्न बीमारियां और उसकी चिकित्सा का उल्लेख है।

"घोड़ा री चिकत्सा कही। घोड़ा रा आकार कह्या। वले भमरा साप जाणवौ। भलो बुरो पिछाण लीज इति श्री घोड़ा री सालोत्र सपरण स० १८७४ रा द्वतीयक श्रावण वद ५ दिने-सूय वासर।" (पत्र–८)

प्रारम्भ—

"जोधाणा जसवत हुतो राजा अवतारी।
अेह् वात ठाकुरा लषी, लीयी सो हुई परारी॥"

अन्तिम भाग—

"हिरणाकुस अवरग, इता दुष दीयो अवतर
सकट भगता सयी प्रजा पहीला जस तपी पर।
अजीतसिंघ भगत तारण अबै कमध कीजै विलब किम
भला थभ फाड प्रगट भयो तु साही वनर सघ तिम।"

(पत्र–३$\frac{1}{2}$)

इसके अतिरिक्त ग्रथ म शकुन शास्त्र, फसल पैदावार विचार, मत्र-तत्र, बिहारी के दोहे, ग्रौषदा का नुसखा इत्यादि कृतियाँ सकलित हैं। ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथो से लिपिबद्ध किया गया है, ग्रथ पर गत्ता नही है। कही-कहीं पर ग्रक्षरो की स्याही उड गई है। लिपि सुवाच्य नही है।

१२५ ईलाज हाथी को

१ ईलाज हाथी का, २ रा० शो० स०, ३ १४०८२, ४ १६८×१४ सेमी० ५ १११, ६ १५-१७, ७ वि० स० १८७६, ई० सन् १८२२, ८ ग्रारता राम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ हाथियो की चिकित्सा सम्बन्धी है।

प्रारम्भ —

"श्री गणेसाह नम ईलाज हाथी को ग्राविद बाल पर हुई गरमी का इलका वेहता तो प्रतीव जोपिद—

बबुल का पात टाक अढाई २॥, अफीम टाक २॥, हलदी टाक ग्रढाई २॥, अजु टाक अढाई २॥, पोसत टाक ग्रढाई २॥, जीरो टाक ग्रढाई २॥, ग्रादि।"

इस प्रकार हाथी के ग्रनेक ग्रवयवो के रोगो एव उनकी चिकित्सा का विवरण दिया गया है।

पुष्पिका मे लिखा है—

"इति श्री पोथी हाथिया के इलाज की समपूरण श्रुय दसपत ग्रारतराम पीढु का मिति प्र० ग्रासोज सुदि ६ स० १८७६।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

१२६ शालि होत्र

१ शालि होत्र, पाडव नकुल, २ रा० शो० स० ३ ६१६२, ४ ११५×२४५ सेमी० ५ ३६, ६ ११ ७ १६ वी शताब्दी का मध्य, ८ ग्रज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ ग्रश्व चिकित्सा सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

"॥शालहोत्र रहस्य॥ जे घोडउ ग्रगु ताणे तो गोयरु नु मूल दूध सिउ दीजे भलु हुइजे, घोडा ने भमहि सुजह ग्रग मोडे नु मृगावत सुभ लक्षण जाणवो तो पीपर वेसण घृत सु दीजई ।"

इस प्रकार घोडो के विभिन्न रोग और उनकी चिकित्सा हेतु किये जाने वाले उपाया व ग्रौपधियो का वत्तात है।

पुष्पिका—

"इति श्री नुक्ले पाडव कृत (सालहोत्रा)"

यह ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है।

१२७ घोडो री चिकित्सा तथा ग्रश्व पिछाण ग्रादि

१ घोडो री चिकित्सा तथा ग्रश्व पिछाण ग्रादि २ रा० शो० स०, ३ २८७, ४ १५५×२० सेमी०, ५ १२२, ६ १५ ७ १६ वी शताब्दी का मध्य, ८ ग्रज्ञात, ■ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ के ग्रधिकाश पत्र खुले हैं, प्रारम्भ मे हितोपदश सब धी क्रियायें वर्णित है। ग्रन्त मे घोडो की चिकित्सा सब धी कुछ नुस्खा के अतिरिक्त अच्छे बुर घोडो की पहिचान सब धी वृत्तात दिया है। (घोडो के रग के अनुसार नाम व पहिचान)

प्रारम्भ—

"धवळो वरण सपरी हसराज कहीज, वरण पीळो पग थारैं धवळा सफेद नैत्र तिको घोडो चक्रवाळ कहीजो। राजा जोप उत्तम मुप चद्र काति वरण जाबू सारीषी पग ज्यारे सफेद तिको घोडो भमर राक्षस कहीजै। उत्तम जाडी धवळो कान पग काळा ता जमदूत कहीजे। हसो बूरा आदि।'

ग्रन्तिम भाग—

' घोडा री त्रिकला कही घोडा रा आकार कहया, वळे भमरा सोप जाणवी ग्रोपद देणा, भलो बुरो पिछाण लिजे। इति श्री यसता गम तू सत। अश्व पिछाण पुस्तक सपूण श्री ।' (पत्र—२२)

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। कुछ पत्र किनारो से खडित हैं।

१२८ हाथियो को सालिहोत्र

१ हाथियो को सालिहोत्र, २ रा० शो० स०, ३ १४०८३, ४ १४× ११५ सेमी०, ५ ८७, ६ ९–१२, ७ १६ वी शताब्दी का मध्य, ८, ग्रज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ हाथियो की चिकित्सा सब धी है।

प्रारम्भ—

'इलाजी हाथी मोटा करवा का हीगोटा की छाल कूट कर घोडा के पेसाव मे छोडे, पीछु पीलावं, बडा हाथी कु पेसाव पीलावे रोज तो मोटा होई आदि।'

इस प्रकार हाथियो के इलाज सम्बन्धी १२८ नुस्खे सग्रहीत हैं ।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रथ म बीच के ८ पत्र लुप्त हैं । ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है ।

१२६ घोडा री सालोतरी

१ घोडा री सालोतरी, २ रा० शो० स०, ३ २८२, ४ १५×१०.५ सेमी०, ५ १४, ६ १४–१६, ७ १६ वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे घोडे की चिकित्सा सबधी वत्तात है। प्रारम्भ मे घोडे के शुभ अशुभ भवरे का ज्ञान कराया गया है ।

प्रारम्भ—

"।। अथ घोडा री सालोतरी लप्यते ।। श्री ईश्वरी जी सहाय छ जी ।। भमरे री पोड जाण जी । जिए घोडा रै निलाडी १ भमरो हुवे त अश्व घणा सुभ । जिए घोडा रै निलाडे दोय भमरा हुवे जाडे रा तो चद्र सुरज कहीजे तो सुभ करे जिए घोडा रै निलाडे तीन भमरा हुवे ते त्रिकुट कहीजे ते घोडो सदा दुप दीये असुभ । जिण घोडा रै निलाडे च्यार पाच भमरा हुव तो सुपदायक कहीजे पुत्रे परिवार सुप करे । सग्राम माहे जस करे आदि ।'

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है । लिपि सुवाच्य है। अतिम कुछ पत्र खडित व लुप्त होने से ग्रथ अपूर्ण है ।

१३० शालीहोत्र, वीर गीत सग्रह

१ शालीहोत्र, वीर गीत सग्रह, आसीया गुमान साळस सवळा आदि, २ रा० शो० स०, ३ ८१८६, ४ १२×१५.५ सेमी०, ५ ६२, ६ १०–१२, ७ वि० स० १८६१–१६०२, ई० सन् १८१६–१८४५ आगोलाई, बाघावास, ८ विनेषद ६ राजस्थानी देवनागरी, १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ शालीहोत्र –

प्रस्तुत ग्रथ की यह प्रथम रचना है इसमे घोडा के चिकित्सा सम्बन्धी वर्तात है, जसा ग्रथाक २६७५ मे है । इसका प्रारम्भ भिन्न है ।

प्रारम्भ—

"प्रथम रवतजी री उतपत कहे छै, आदि ब्रह्मा । तिणरो पूत्यो तिको पोत दिन प्रतै जप होम कर एक दिन रै समै होम करता आदि ।"
(पत्र–२३)

२ चूडा रो गीत

३ गीत राणा अजवसीघजी रो (आसिया गुमान कृत)
४ गीत राणा अजवसिंघ रो (लाळस सवला कृत)

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। ग्रथ के बहुत से पत्र खाली पडे हैं, कुछ पत्रो मे लिखावट पेनसिल से है, जो पढने मे नही आती। ग्रथ मे इसके अतिरिक्त हरीरस का एक श्लोक व रामायण और भागवत इत्यादि कृतिया सकलित है। पत्र सख्या २ के पश्चात ५ पत्र गायब है।

१३१ हाथी को सालोतर

१ हाथी का सालोतर २ रा० शो० स०, ३ १४०८१, ४ २६ × १६.५ समी०, ५ ३८, ६ २१–२६, ७ २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे हाथी के विविध रोगो और उसकी चिकित्सा का वृत्तात दिया गया है। प्रारम्भ एक दूहे से हुआ है।

प्रारम्भ—

'श्री गणेशायनम अथ हाथ्या का सालोतर लीपत—

दूहा—

दाणा चारा पेलहुई, माटो पाय चुरयत साप।
पसुधन रस उपावता, चगा कर जुदाय ॥१॥

हाथी पाव फेरै, दात तोटू (नख) फाट तो यह ईलाज करें—

कुटक पावडा मवर चोणी पावडा या दो या को कूचा करो पीलाव तो रस मुता नाव, पावे फेर नही, दात फाट नही, नहू फाटे नही आदि।"

हाथी को स्वस्थ रखने व मोटा करने के लिये औषधियो आदि का उल्लेख किया गया है। अत मे विषय सूची भी अकित है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि मे लिखा गया है। लिपि मे लाल स्याही का भी प्रयोग किया है। ग्रथ पर गत्ता नही है।

१३२ सालिहोत्र (प्रतिलिपि)

१ सालिहोत्र (प्रतिलिपि), येशफखानि, पडित हरनाम द्वारा अनुवाद, २ पु० प्र०, ३ १३४३, ४ २१ × १६.५ सेमी० (पु० नुमा), ५ ७६, ६ १७ ७ २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ हिन्दी मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत ग्रथ घोडो की चिकित्सा से सबधित है। प्रारभ मे बतलाया है कि अश्व चिकित्सा ग्रथ निर्माण की आवश्यकता किस प्रकार हुई—

"श्री गणेशायनम ॥दोहा॥

अलष निरजन आप है और दूजा नही कोय ।

अपने आप उपाये से उन कीना सब कोय ॥१॥

॥ अथ सालोत्र ग्र थ अस्व वेध जाग सास्त्र लीपते ॥

अला ताला ने वही भेजी हजरत सुलेमान कु आप कासमीर सहेर बसावो तुमारे उपर पेगवरि की मोहरबान हुई, जद हजरत सुलेमान बोले यहा की जमीन अछी नही है जद अलाताला न हुकम दिया के मेरे दोस्त के वास्त फिलसतलेन की जमीन ले जावो जीसमे केसर पैदा होवेगी सबके बादसाह तुमेकू कीये और अस्य एक जोडा सवारी के वास्ते भेजा है अश्या ने हजरत सुलेमान से अरज करी जमीन के उपर राग बहुत सा है जद हजरत सुलेमान ने अश्य शानि कू बूलाये तीन किताब सालोत्र की बनाई हजरत सुलेमान ने हुक्म दिया के घोडा की परा काटो जीससे उडा न जावे और बदी नही करे, जद मेश्य सानि ने परा काटी और घाव आछा कीया ।"

प्रारम्भ मे घोडो की ११० जातियो के नामोलेख, घोडो के रग, शुभ अशुभ घोडे के लक्षण तथा विभिन्न रोग व उनके निवारण हतु अनेक औषधियो का विवरण दिया गया है।

पुष्पिका—

'येसफशानि जी ने कासमीर म ग्र थ कीदा हजरत सुलेमान पेगबर के बखत मे ग्रथ बना छै ॥ ईती श्री पडित हरनाम आप की भासा म करके लिपा है राजा विक्रमजीत के पहिले कासमीर मे पडित हरनाम हुवा है ॥ ईति श्री सालोत्र ग्रथ सपुरण ।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है । ग्रथ पुस्तकनुमा है ।

चौथा अध्याय

वैद्यक

१३३ वैद्य रत्न

१ वैद्य रत्न गोस्वामी जनार्दन भट्ट २ रा० प्रा० म० ३ १०३७२ ४ ११×२६,३ सेमी०, ५ २७ ६ २०, ७ वि० सं० १८६१ ई० सन् १८०४, ८ कस्तूर चंद ९ राजस्थानी देवनागरी, १० प्रस्तुत आयुर्वेदिक ग्रंथ दोहा तथा छप्पया में वर्णित है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशाइनम श्री सरस्वतनम अथ लिख्यत वद्यरत्न

दुहा—

सारदा दिसे ठत जिन पारन विसद प्रकास।
सारद विध वदन वसे हिय सारदा वास ॥१॥

अथ नाडी परीक्षा

दूहा—

हाथ अगूठा निकट की नाडी जीवन मूल।
तासु पंडित तेह को जानो सुष दुष मूल ॥४॥'

प्रारम्भ में नाडी परीक्षा से विविध रोगों की जाच करने, फिर रोगों के निवारण हेतु देशी औषधियों का प्रयोग करने का विवरण दिया है।

पुष्पिका—

"इति श्री गोस्वामी जनादन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने सप्तम प्रकास ७ इति श्री वैद्य रत्न संपूरण ॥ सं० १८६१ माह बदि ३ लि०पं० कस्तूर चंद बिलाडा मध्ये ॥"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। पत्र सब खुले हैं।

१३४ अमृत सागर

१ अमृत सागर सवाई प्रतापसिंह, २ रा० प्रा० स०, ३ ८६०६, ४ ४१५ × २८ ५ समी० ५ २४० ६ २३ ७ वि० स० १९१५ ई० सन् १८५८, जोधपुर ८ रुघनाथ, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक ग्रंथ जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह द्वारा रचा गया है। इस वृहदाकार ग्रंथ का प्रथम पत्र त्रुटित है।

प्रारम्भ—

"महाराज धिराज महा श्री सवाई प्रतापसिंह जी विचार करि मनुष्य का रोग करिवावे वास्ते परम करुणा करिवे आदि।"

सर्वप्रथम नाड़ी परीक्षा किस प्रकार की जाती है उस पर प्रकाश डाला गया है। आगे विभिन्न रोगों और उनके निवारण हेतु किये गये उपायों, औषधियों आदि का वृत्तांत विस्तार में है जिनका विवरण-क्रम इस प्रकार है—

मूत्र परीक्षा, सुपन परीक्षा, दूत परीक्षा (वैद्य को बुलाने वाला कैसा व्यक्ति हो), काल ज्ञान, औषधि विचार, देस विचार, कर्म विचार अग्नि बल विचार, रोग की असाध्य परीक्षा, मन का रोग छींक रोकवा को रोग, भूख रोकवा का रोग, नींद रोकवा का रोग, सास रोकवा का रोग, उबासी रोकवा को रोग मल रोकवा को रोग कामदेव रोकिबा का रोग, आठ प्रकार के ज्वर-इलाज, अतिसार रोग री उत्पत्ति, इलाज पित्त का रोग, इलाज, कफ की संग्रणी की उत्पत्ति इलाज, बबासीर रो रोग, इलाज रोगां री उत्पत्ति, रक्तपित्त रोग लक्षण इलाज, उन्माद रोग उत्पत्ति लक्षण, मिरगी रोग उत्पत्ति लक्षण जलन रवचा सबधी रोग, इसी प्रकार आगे कोढ़ और क्षय रोग जैसी भयंकर बिमारियों के विभिन्न लक्षण इलाज आदि दिये हैं। अन्त में स्त्रियों के विविध रोगों व उनके इलाज आदि का वृत्तांत है। इस प्रकार अनेक बिमारियों का विवरण दिया गया है।

पुष्पिका—

"इती श्री मन्माहाराजा धिराज महाराजा ज श्री सवाई प्रतापसिंहजी विरचित नाम अमृत सागर नाम ग्रंथ रीतु वरणन रितु चर्या दिन चर्या ३ रात्रिचर्या सरीर सव अगां संयुक्त वरणन नाम एकवी सति मस्तरंग २५ संपूरण अमृत सागर ग्रंथ संपूरण लिषत कुंवार रुघनाथ वास जोधपुर मध्य मोलो रावत रो बास समत १९१५ रा मिति असाढ सुद १०, वचनाथ पानावत विरजा।"

यह ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य मोटे अक्षरों में है। ग्रथ के पत्र मोटे हाथ के बने हुए प्रतीत होते हैं। ग्रन्थ पर कपडे का गत्ता चढ़ा हुआ है। ग्रन्थ के अन्त में सूची पत्र दिया गया है आगे कुछ पत्र खाली पड़े हैं। इस ग्रन्थ में अनेक प्राचीन ग्रन्थों का सार है।

१३५ अमृत सागर

१ अमृत सागर, सवाई प्रतापसिंह जयपुर २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ६८३१, ४ २५ × १७ सेमी०, ५ ४६७ ६ २१ २४, ७ १९वी शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह आमेर नरेश सवाई प्रतापसिंह कृत आयुर्वेद से सम्बन्धित कृति रा० शो० स०, ग्रथाक ८६०६ से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

'श्री गणाधिपयेनम अथ श्री महाराजाधिराज महाराज राज राजेन्द्र महाराज श्री सवाई प्रतापसिंघजी विचार करि मनुष्या का रोगा का दूरि करिवाके वास्ते परम कल्याण करि ।"

यह सवाई प्रतापसिंह कृत मूल ग्रथ की प्रतिलिपि है। नकल पूर्ण न होने के कारण कृति अपूर्ण है।

अंतिम भाग—

"इति लवगादिचूर्ण अथवा मारवा अभ्रक टका २। (सवा दो) भर भीमसनी कपूरमासा ४ दालचीनी मासा ४ दाल विना का फूल मासा ४ पाव धाका फूल मासा च्यार ।'

मूल ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। प्रारम्भ में लिखावट महीन है फिर क्रमश अक्षर मोटे होते गये है। ग्रथ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है। किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ से सूची पत्र भी अंकित किया गया है।

१३६ वैद अमृत रस्य

१ वैद अमृत रस्य(रहस्य), २ रा० शो० स०, ३ ८३६८, ४ ३२ × २० ३ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५ ११२, ६ ३१ ३५, ७ वि० स० १९४५,

ई० सन् १८८८ ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में व्यक्ति की विभिन्न बीमारियों के निवारण हेतु देशी औषधियों का विवरण दिया गया है। वृत्तान्त गद्य पद्य में है। प्रारम्भ में नाडी परीक्षा का भान कराया गया है—

प्रारम्भ—

अथ नाडी परीक्ष्या पुरसा दीपण हस्तस्य
सत्रीया वाम कर सनु अंगुष्टा मुलगा नाडी,
परी पत भीषग्वर।

औषधियों के अतिरिक्त अनेक बीमारियों के मन्त्र के अतिरिक्त भूत प्रेत के मन्त्र आदि भी दिये गये हैं। यथा—

"दषण देस थी हनुमंत आए सवा मण साकल ताडता आव, नर हणमत वीर तरक स ना यहक, कारा वासिंग सार के पीछाण हनुमन की हाक भूत प्रेत ज्याही गमडा रा मसाण रा चाटा रा समर रो पीर पगवर सलेमान सइ दइठाय ससुभ चडालणी सुत जता कर उ ठ ठ ठ स्वाहा ॥ वार १०६ जाटा दीजे।

अंतिम भाग—

" सात जाड के पना फुल नागा कु चडाय पुजा कर, जल म उभा रह मत्र १०८ वर जप मीषा हाय। पीलणी धुप बतीसा पवणा ।"

यह ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं। इसमें उस समय की मान्यताओं पर भी प्रकाश पड़ता है।

पाचवा अध्याय

ज्योतिष

१३७ मुहूर्त मुक्तावलि

१ मुहूत मुक्तावलि, २ रा० गो० स० ३ १२६८ ४ ८४×२४ ८ सेमी० ५ ६ ६ १२ ७ वि० स० १८१२, इ० सन् १७५५ ८ दवेन्द्र, ६ सस्कृत, राजस्थानी, दवनागरी १० विवरण क्रम इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

'श्री गणेशायनम श्री २१ श्री हर शारदा गणपति ॥१॥

टीका—श्री महा गणपतेयनम श्री गुरुयोनम श्री कृष्णनै श्री महादव श्री सरस्वती नमस्कार कर गणेशन विधाता ३३ दवता प्रति ॥१॥'

इसम मुहूर्त सम्बन्धी सारी सामग्री है जिसम विवाह, यज्ञोपवीत, गृहारभ, ग्रहस्थापना, नवीन व्यापार, यात्रा आदि मुहूत के नक्षत्र, वार, तिथि, योग आदि बताते है। इस प्रसिद्ध ग्रन्थ की अनक प्रतिया मिलती है।

पुष्पिका—

"इति श्री मुहूत मुक्तावलि सपूरण सवत १८१२ वर्षे मिति फागुण सुद ६ दिन।'

१३८ ताजिक सार

१ ताजिक सार हरिभद्र भट्ट २ रा० शा० म०, ३ १००२ ४ १२×२६ ३ समी०, ५ ६८, ६ १५, ७ वि० स० १८३०, ई० सन् १७७३, जालार ८ अजीत विजय, ६ राजस्थानी, सस्कृत देवनागरी १० यह ग्रथ भी ज्योतिष सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम
श्री रामस्य पदारविंद युगल नत्वाथ वागीश्वीरी हेरब तपना
दिक ग्रह ग्रण रूद्र
यशोदा सुत,
वक्षे ताजक सार मत्य सुगम रम्य सुबोध प्रद नाना
ताजिक तो विलोक्य रचित दैवज्ञ हृप प्रद ॥१॥"

इसमें मूल रूप से वर्षफल निकालने की विधि व ग्रहों का स्थान पर शुभ फल देने वाला विचार प्रदर्शित किया गया है।

अन्तिम भाग—

'ताजिक सार नाम वर्ष फल ग्रंथ कीधो हरि नामा
भट्ट विचित्र स्वर्ध की बात कही सुगम प्रकारें करो
ज्योतिषीया र ग्रर्थेत सापद्य श्लोक करी ॥३६॥"

पुष्पिका—

'इति श्री हरि विरचितो ताजिक सारे दिन प्रवेश प्रकरण समाप्तम् संवत १८३० वर्षे शाके १६६५ प्रवत माने माघ मास कृष्ण पक्षे ३ तिज तिथौ शनिवासरे श्री जालार गढ माहा दूरगे श्री महावीर स्वामी प्रशादात् लिखिता अजित विजय ।"

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रंथ के पत्र खुले हैं।

१३९ रत्नमाला

१ रत्नमाला श्रीपति २ रा० शो० प्र० ३ ४४८ ४ १२८× २४ सेमी०, ५ ४८ ६ १८२०, ७ वि० स० १८३७, ई० सन् १७८०, ८ किसनदास, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथ काव्य रूप में है जिसकी टीका बाद में की गई है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेसायनम
प्रभव विरति मध्या ज्ञान वध्या नितांत विदित
परम तत्था यत्र ते योगिनोपित्व ॥१॥

रत्ना माला रो ग्रंथ मगळा नैं समझण रै वाजै वात उण लिखू छू तीर्थ काल नू नमस्कार जाये काल री उत्पति विच नैं हुई कोई यागीश्वर तीन जाणैं जिके योगीश्वर ग्रात्मा रो तत्व जाणैं छैं पुण्य काल न जाण इणैं ससार नौ निमित कारण छै ।"

इसम यह बतलाया गया है कि शुभ अशुभ काय कब किस दिन, वार का करना चाहिये। यथा—

"इतरा काम मगलवार कीजे जिही कामण सामाह प्रसताव कीयौ जाईज तो मगलवार कीजे, धूड रा काम कीजे विष रा काम कीजे, अग्नि रा काम किजे, हथीयार रो काम कीजे, कोणी रो घात कीजे सग्राम कपट कीज कटक रौ मल्हाण कीज, पाणि रो काम सोना रूपा धातु रो काम, सानो घडाइजे, परवाली घडाइजे ए काम मगलवार कीजे इतरा काम बुधवारे कीज—चतुराई सीखीजे चौसठी कला सीखीजे, घरा रा काम कीजे आदि।"

अंतिम भाग—

"श्री पति आचार्य मगळी सभा माहि भला माणस हू कहै छै भाई कहता मिन आज रा ब्राह्मण कीयो शास्त्र जाणैं इति श्री जा० भाषा टीका परम काहणिक दामोदर विरचिताया देव प्रतिष्ठा प्र० विसन म सपुण स० १८३७ फा० वद १३ वा० किसनदास लिपतु ।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र खुले हैं।

१४० मुहुर्त चिंतामणि

१ मुहूत चितामणि २ रा० प्रा० स०, ३ ११२३१, ४ १०.X २१ सेमी० ५ ६४, ६ १०, ७ वि० स० १८५४ ई० सन् १७९७, जोधपुर ८ अज्ञात, ९ संस्कृत, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे १२९ श्लोक मुहूत सम्बन्धी सकलित है। पहले गणपति व गौरी की स्तुति की गई है, फिर मूल कृति का प्रारम्भ हुआ है—

श्री गणपतये नम
गौरी श्रव केतक पत्र भग माकृष्णव स्तन ददमुपाग्र
विधूने मुहूर्ता कल्पि द्वितीय देत प्ररो होहर तुहि पास्य ॥१॥
नदा च भद्रा च जया चरिक्ता पूर्णे तितिथ्या शलमध्य
त्रामता

मित मित नाम्न समाज मास्यु सित ययोमार्कि गुरौ
चमिचा ॥८॥

आजकल मुहूर्त आदि देखने का प्रचलन दिन दिन कम होता जा रहा है परन्तु मध्यकाल में प्रत्येक कार्य मुहूर्त देख कर प्रारम्भ किया जाता था। अतः उस काल की मान्यताओं के अध्ययन की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है।

१४१ विवाह पडल

१ विवाह पडल, २ रा० प्रा० स०, ३ ६७१५, ४ १२.५× २७.५ सेमी० ५ २१ ६ १८-२१ ७ वि० स० १८६१ ई० सन् १८०४, बिलाडा, ८ उग्रचंद, ९ संस्कृत राजस्थानी १० विवरण इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः ॐ तारातिं पुरोहित हरि गते
मुम्ने मदे विता ॥१॥

अर्थ—

श्री गणपत देव ने नमस्कार करी न वीवाह पडल अर्थ ममत लिपीये छ। जभ कहता देत्य आरातिं कहता इन्द्र तेहना पुरोहित न बृहस्पति हरि गत ॥१॥"

प्रस्तुत ग्रंथ में विवाह सम्बन्धी मुहूर्त आदि का वर्णन है। इसमें कन्या पक्ष और वर पक्ष नाडी, दोष, पूजा गुण, कन्या का नेष्ट नक्षत्र आदि सभी प्रकार के दोषों का वृत्तांत है।

पुष्पिका—

"इति श्री कौल विचार संपूर्ण गत श्री विवाह पडल संपूर्ण सवत १८६१ रा मति फागुण वदि १२ उग्रचंद बिलाडा मध्ये संपूर्ण शुभ भवतु कल्याण रस्तु रात्रो प्रहर। मन् ॥"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। पत्र खुले हैं।

१४२ लग्न पत्र

१ लग्न पत्र, २ रा० प्रा० वि० प्र०, ३ ३१७३०, ४ १०.४× २५.५ सेमी०, ५ २, ६ ८-१० ७ वि० स० १८७६, ई० सन् १८२२,

८ रामदास, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इन पत्रो मे जोधपुर, जालोर, नागौर, पोकरण नगरो के अक्षाश पर लग्न निकालने की प्रक्रिया अकित है।

पुष्पिका—

'स० १८७९ वर्षे वैशाष सुद १५ पूज्यजी श्री १०८ महा रू श्री मानजी जी साहिब तत् सिष्य रु रामदास लिषत।'

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध है।

१४३ नार चद्रिका

१ नार चद्रिका नार चद्र, २ रा० शो० स० ३ १०२८८, ४ १६.५ × २५.५ सेमी०, ५ ७९ ६ १७-१९ ७ वि० स० १९१५, ई० सन् १८५८, मोभन, ८ जोसी सालगराम, ९ राजस्थानी, सस्कृत, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ ज्योतिष सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम अथ नारचन्द्र लिष्यत
अर्हते श्री जिन नत्वा नरचद्रेण धीमता
सार मुद्धीयते किचि ज्योतिष श्रीर नीरध ॥१॥

इसमे चार प्रकरण है और सभी ग्रहो के राशि और नक्षत्र के आधार पर मुहूर्त आदि को लेते हुए सामान्य फलो का निरूपण किया गया है। आवश्यकतानुसार स्थान स्थान पर ज्योतिष सम्बन्धी तालिकायें इत्यादि अकित की गई है।

पुष्पिका—

'इति श्री नारचद्रे ज्योतिषशास्त्रे सामान्य फलानिरूपण चतुर्थो प्रकरण सपूर्ण। सवत १९१५ वर्षे शाक १७८० प्रवर्ति माने असाढ मासे शुभे कृष्ण पक्षे ४ तिथौ बुधवासर लिषतु जोसी सालगराम मोभन मध्ये श्री सुभमवतु कल्याणमस्तु दीर्घमायु कल्याणमस्तु।''

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। ग्रथ के पत्र खुले हैं।

१४४ विवाह पद्धति

१ विवाह पद्धति, २ रा० शो० स०, ३ १५०९ ४ ११.५ × १० सेमी० (गुटकानुमा), ५ ४३ ६ ११-१३ ७ १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ मे विवाह

में प्रारम्भ से विवाह सम्पूर्ण तक ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले विवाह-कृत्यों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

बींद बींनणी कपड़े कर जानीवास जान धुपणी करजे। जानीवास जायन बारए उभो रास बींद की मा तीलक करे।"

बरात प्रस्थान के समय वर-वधु की ओर से की गई तयारियां, वर वधु के कांकण डोर बांधने, गुलवान के समय किये जाने वाले दस्तूर का हाल दिया है। आगे के वृत्तांत में पहल की सामग्री इस प्रकार दी है—

"पहला की वाळी ७ खापरा की बाटका ८ नारेळ ४ खारका का, मीसरी की गुड़ की डळी ८ दमी दावो रूपीया क्या ४, टालम चुनडी, बीछावणी, रेसम की पटोली, पगरखी जोडो छोटो डालम गणी कडी जोडी, रमझोळ जोडी माठा जोडी, छाक गाल्या बाका २ बेडला सोन का ७, बाडला सोना का १ मेंदी मजीठ की पुटी आदि।'

इस प्रकार विवाह विधि, दुल्हे के द्वारा तोरन पर तलवार मारने की विधि, दुल्हे को आमन्त्रित करने की विधि फिर फेरा खाने की विधि, ढोल इत्यादि बजाने की, दुल्हन की ननिहाल से आये मामरा का वधाये जाने की और दूल्हा-दुल्हन की ओर से की गई प्रतिज्ञाओं तथा विवाह से सम्बन्धित विधियों का वृत्तांत है।

अंत—

'मन सुध कर ध्यावे भणत सिवानंद स्वामि वांछित फल पावे जय ॥१०॥

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। अंत में अम्बाजी की आरती दी हुई है, अंतिम कुछ पत्र खाली है। यह राजस्थान के वस्त्र, आभूषण विवाह संस्कार आदि की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

छठा अध्याय

ख्यात, बात आदि

१४५ महाराजा मानसिंह री ख्यात

१ महाराजा मानसिंह री ख्यात, २ रा० शो० स०, ३ १०६१०, ४ ६६ ५ × २५ ५ सेमी०, ५ १२६, ६ ३५-४२ ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ प्रनात, ६ राजस्थानी देवनागरी, १६ प्रस्तुत ख्यात मे जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह के पूरे राज्य काल (वि० स० १८६० १६००) का वृत्तात दिया गया है।

प्रारम्भ—

'महाराजधिराज महाराजा जी श्री १०८ श्री मानसिंघजी गुमानसिंघोत जालोर सु जोधपुर री राजगद्दी विराजीया। महाराज श्री भीवसिंघजी जोधपुर मे धाम समत १८६० रा मिती काती सुद ५ दवलोक हुवा, पछ्ढ सवत १८६० रा मिगसर वदि पधारीया ग्रर राज कीयो जितरै ग्रवाल भुगतीयो देषीयो तथा काने सुणीयो तथा ख्यात मे लिपीयाडो तिणरी नकल उतारी—

महाराज श्री मानसिंघजी रो जन्म समत १८३६ रा म्हा सुद ११ रो समत १८४७ मे दिवणीया रा दशा मे छोटा थका पासवानजी री मरजी सु जालोर पधारीया आदि।"

१ भीमसिंह की मृत्यु का समाचार जालोर एक राइके द्वारा भिजवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

'कागद ले राइको जोधपुर सु भदर हुवोडो जालोर इदराजजी मगारामजी कने आयो। कागद वाच पुरा उदास हुवा, क ग्रापाणी चाकरी कीयोडी हम कुए देपसी। पछै डेरा सु उठ पाणीवाडे ग्राय भदर हुवोडा पोतीआ बदीयोडा डेरा मे अदायला बैस मामा भाणेजा आपस मे सला कीवी के भीमसिंहजी तो धाम प्रापत

हुवा जाधपुर वाळा लिखियो थे जालोर दोळा माग्चा घालीया बठा रहीजो अर सवाईसिघजी पोकरण सु ग्रठ ग्रावै पछै अठा सू ज्यू कीजा हम सला ग्राहीज है कै महाराज मानसिह आपणा धणी गढ मे चालो सो इ दराज गगाराम मुजरो कियो ग्राप (मानसिह) फुरमाग्रो भदर क्यू ? जद इणा ग्ररज करी भीवसिहजी धाम पदारिया, जद सुण न महाराजा मानसिघजी पूरा कु द हुय गया ग्रर फुरमायो क जीवता जीवा रा झगडा था हम मानु कुण लडसी नै मैं किण सू लडसा ।"

इन्दराज ग्रौर गगाराम के आग्रह से मानसिह का जालोर स जोधपुर जान ग्रौर राजगद्दी सम्भालने का उल्लेख है । ग्रागे इ दराज ने जोधपुर एक पत्र भेजा उसमे लिखा—

' जोधपुर री राजगद्दी रा मालक महाराज मानसिह है सा जाधपुर पधारे है थे किणी काचा ग्रादमी री सला सु काची सला नु कान सरवथा दीजो मती ।"

२ महाराजा भीमसिह के मरणोपरान्त चादपाल ग्रादि दरवाज बद करन सवाईसिह चापावत के ग्राग्रह पर दरवाजे नही खोलन आदि का उल्लेख इस प्रकार है—

' पोकरण सु सवाईसिह भदर हुय जोधपुर चादपाल दरवाज आया सो दरवाजा सैर रा मगळ (बद) था अर मीठडी रा ठाकुरा रो बदोबस्त थो सवाईसिह हला पाडियो क दरवाजो खोला मीठडी वाळा कह्यो—"म्हे मे धणी ग्रावसी जद खुलसी, जद सवाईसिह कह्यो तो राजाजी रा सामधरमी छा ग्रर मैं हरामखोर छा तिण सु मानु माह नही लेवो ।'

गगाराम द्वारा सवाईसिह का मालावास तक सामन आकर महाराजा स भेंट करने के लिए ग्राग्रह किय जान पर सवाईसिह द्वारा रोष प्रकट करन का उल्लेख इस प्रकार है—

"वाणीया री कीयो राजा हुवै नही राजा तो उमराव थापसी तिका हुसी थे जालोर सु लेन आया छा सा विना विचारीया काम कीयो है सा थारा हक म चूकी होसी म्हे तो जमीदार हा सो उचा नीचा हाथ तिसरमा तिण थ इज मामा भागेज घणा पिस्तावसा ।'

• भीमसिह की गमवती रानिया का चोपासनी गुसाई विठलराय क यहा से वापस तलटी के महल म रखन का उल्लेख है ।

४ वहाराजा मानसिंह क राज्यारोहण के समय विभिन्न उमरावो आदि क ओहदे, गाव इत्यादि पट्टे म दिय उसका वत्तात है।

५ महाराजा जालोर से आय उस समय सरदार साथ आय उनक नाम और महाराजा विजैसिंह के समय जालार मे ओहदेदार इत्यादि नियुक्त थे उनका विस्तार स वरणन किया गया ह।

६, सवाईसिंह चापावत द्वारा भीमसिंह का नकली पुत्र धाक्लसिंह बनाकर विद्रोह करन का उल्लेख है।

७ महामदिर की नीव दन और महाराजा विजसिंह क पुत्र सरसिंह और सूरसिंह को चूक से मारन वाला को मृत्यु-दण्ड दन का उल्लेख इस प्रकार है—

"गुलाबसागर री आथूणी तरफ नाथजी रौ मिंदर करायौ नाम निजमदर दीयो, जिणरी सेवा आयस सुरतनाथजी नु भळाई अर नागौरी दरवाजा बारे नाथजी रो मदिर महामदिर नीव दिराई ।

बीजसिंहजी रा क्वर सरसिंहजी सूरसिंहजी नु मारा श्रीबसिंहजा चूक करायौ था सो चूक करण म पास पासवान था तिणा नु सजा रौ हुकम पकड कद कर दीया घर लूट लीना पछ कुमात मारीया। अहीर नगा तिण रै माथा मे पील ठरोकाय मरायौ।"

८ सवत् १८६१ मे बन्दी वनाय गये व्यक्तियो के नाम लिखे है।

६ महाराजा भीमसिंह के समय गच्छापुरा ठाकुर भारथसिंह का आसाप का ठिकाना मिला, अब केशरीसिंह रतनसिधोत को वापस आसोप देन का उल्लेख है।

१० इसी प्रकार जवानसिंह को रास सम्भुसिंह का नीवाज, भानसिंह को लाबीया, इन्दरसिंह को रोहट अनाडसिंह चापावत का मडतिया का गाव कालु आसीया चारण बाकीदास को भाडलियावास ग्राम और कवीराज की पदवी तथा लाख पसाव रतनसिंह पहाडसिंघोत को (जालार के घेरे म था) परवतसर का गाव पीपळाद तथा साभपुरो आदि चौहान स्यामसिंह (मानसिंह के मामा) का गाव जोजावर, उहड जैतमाल को कोरणा गाव, मोकलसर ठाकुर को मिणली गाव, भाटी जोधसिंह युद्ध म मारा गया उसके पुत्र शक्तिदान को जालोर का गाव दुमडी पट्टे म और भटियानी रानी (जैसलमेर रावळोन की पुत्री) को गाव लावा और वाहाळो तथा १५ हजार का पट्टा लिख देने का वत्तात है।

११ महाराजा विजयसिंह के पुत्र सेरसिंह की दो रानियाँ और २ पुत्रियाँ कद मे थी उनको मुक्त कर गाव आदि पट्टे मे दिये जान का उल्लेख है।

हुवा   जाधपुर वाळा लिखियो थ जाट
रहीजो अर सवाईसिंघजी पोकरण सु ग्रठ ग्रावै पर्छ
सल्ला ग्राहोज है कै महाराज मानसिंह   आपए
इन्दराज गगाराम   मुजरो कियो ग्राप (मानसिंह
इएा ग्ररज करी   भीवसिहजी धाम पदारिया, ज
पूरा कुद हुय गया ग्रर   फुरमायो कै जीवता
कुण लडसी नै मैं किए सू लडसा   ।'

इन्दराज ग्रौर गगाराम क आग्रह से मानसि
ग्रौर राजगद्दी सम्भालन का उल्लेख है। ग्राग इन्द
उसम लिखा—

' जोधपुर री राजगद्दी रा मालक म
पधार है थ किणी काचा ग्रादमी री सला सु काट
मती।"

२ महाराजा भीमसिह के मरणोपरान्त च
सवाईसिंह चापावत के ग्राग्रह पर दरवाजे नहीं
प्रकार है—

' पोकरण सु सवाईसिंह   भदर
आया सो दरवाजा सैर रा मगळ (बद) था   ग्रर
यो   सवाईसिंह हला पाडियो क दरवाजा खोल
मे धर्णी ग्रावसी जद खुलसी, जद सवाईसिंह कह्यो
ग्रर मैं हरामखोर छा तिण सु मानु माह नही लेवो

गगाराम द्वारा सवाईसिंह का सालावास
भेट करने के लिए ग्राग्रह किये जान पर १७
उल्लेख इस प्रकार है—

"वाणीया रो कीयो राजा हुवै नही, राज
थे जालोर सु लेन आया छा, सा विना   रो
भूडी होमी म्है ता जमीदार हा सा उचा नीचा
भाएेज घणा पिस्तावसो   ।'

३ भीमसिंह की गर्भवती रानिया का
से वापस तलेटी क महला म रखन का उल्लेख है।

"सवाईसिहजी जयपुर वाळां नु कुतो दियो क महाराज भीमसिहजी रो माग है जिण रो तो निरदावो करा देसां न भीमसिंघजी रा कयर धाकलसिंघजी नु जोधपुर रो राज थे मस्त कर दिराय देजो ।

पर उदयपुर वाळा नु सवाईसिंह कवाई कै महाराजा भीमसिंघजी रो सगपण आपरं उठं कियो न मा मानसिहजी नु ता परणायजो मती नै । जयपुर माराजा जगतसिंघजी नु परणाय दा मैं इण माग रो टंटा या सु क्रसा नहीं ।

माराज मानसिंघजी सु अरज कराई नै आपाणी माग उदयपुर वाळा जैपुर राज जगतसिंघजी नु परणावं छै अर जगतसिंघजी परणीजण नु त्यार हुवा छै सो ओ काम सही पड गयो तो इण म आपाणी बात राजस्थान म थाप न हळकी घणी लागसी इण तरह री मुखदा सवाईसिंघजी पोकरण बैठा चलाव ।'

२२ मानसिंह और धोकलसिंह के पक्षपातियों के बीच लड़ाई होना, जसवंतराव होल्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना और उसे सम्मान नहीं दिये जाने पर होल्कर का दक्षिण की तरफ जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

'हुलकर जसवत राव कूच कर सावठी फौज सु श्री हजूर रै बुलायाडो आयो जसवतराव रा डेरा नादर नाके हुवा होलकर रे सामो पधारिया नहीं नै बराबर बैसाणिया नहीं तिण सु पूरो कराजी हुवा ।"

नादर थाव इन्द्रराजसिंघवी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"फौज म एक परदमी तरवार म्यान बारे ले सिंघवी इन्द्रराज रे बावण लागो। इन्द्रराज नाडी चालतो था पछ आदमी कने उभा था तिणा पकड लीयो पछै इंद्रराज रा आदमी तरवार बावण वाळा नु मारण लागा तरै इंद्रराज मारण दीनो नहीं श्री हजूर इन्द्रराज री सुख पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटो बधायो ।"

२३ महाराजा द्वारा नयकरण को पोकरण सवाईसिंह के बुलाने पर नहीं आने पर उसको कैद करने का उल्लेख है।

२४ जयपुर महाराजा जगतसिंह और बीकानेर महाराजा सूरतसिंह का सेना सहित मारोठ आने और मानसिंह का भी सेना सहित मुकाबले में जाने का उल्लेख है। सरदारों का महाराजा की सेना से अलग होकर धाकलसिंह के सहायक में शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

१२ देवनाथ, हरनाथ, सुरतनाथ, ओपनाथ इत्यादि सभी नाथो को पट्टे आदि लिखने का उल्लेख है।

१३ जालोर के घेरे मे सिरोही के शासक उदयभाण द्वारा मानसिंह को मदद नही देने पर महाराजा के द्वारा सिरोही पर आक्रमण करने तथा युद्ध म लडे योद्धाओ की सूची भी अकित है।

१४ पाणेराव पर मेहता साहबचद की अध्यक्षता मे सेना भेज कर वहाँ महाराजा का अधिकार होने का उल्लेख है।

१५ सिरोही और घाणेराव म विद्रोह होने के कारण भडारी गगाराम और सिघवी गुलराज को सिरोही और इन्द्रराज को घाणेराव सेना सहित भेजे जाने का वृत्तात।

१६ साजत की ओर बखेडा होने पर अखेमल को २०० घोडो सहित वहाँ रखे जाने का उल्लेख है।

१७ वि० स० १८६१ श्रावणी तीज के दिन बडे अधिकारियो के विशेष पोशाकें आदि बनवाई उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

"समत १८६१ रा सावण सुद ३ लोडी तीज नु श्री हजुर पिंडा रे ने सारा सिरदारा मुतसदी पास पासव ना रे फूल गुलाबी पौसाका कराई नै गिडदीकोट कन घोडा फेरासा और आउवा रा ठा० माधोसिंघजी मर गया सो बेटा बखतावर सिघजी नु खातर तसली आछी तरै फुरमाई के मौसर आछी तरै कीजो।'

१८ नागौर मे धाधल उदयराम द्वारा जीतमल सूरजमल, इन्द्रमल, गभीरमल और धीरजमल को पकड कर सलेमकोट जोधपुर मे और स्त्रियों को नागौर के किले मे ही रखने का उल्लेख है।

१९ सवत् १८६१ माघ सुदि ५ महामदिर की प्रतिष्ठा होने का उल्लेख, इस समय दुपट्टे आदि दिये जाने और चडावल ठाकुर बिसनसिंह कूपावत के रूष्ट होने पर बक्सीराम को चडावल के काम पर नियुक्त किये जाने का वृत्तात।

२० वि० सवत् १८६१ फाल्गुन म खेतडी झुझणु नोलगढ, सीकर आदि के सेखावतो तथा भाटी छत्तरसिंह (धोकलसिंह का पक्षपाती) डीडवाना म उपद्रव करने का उल्लेख है।

२२ उदयपुर राणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जयपुर व जोधपुर राजाओ के बीच सवाईसिंह चापावत ने विवाद उत्पन्न किया इसका वृत्तात इस प्रकार है—

"सवाईसिंहजी जयपुर वाळा नु बुतो दियो क महाराज भीमसिंहजी री माग है जिण रो ता निरदावा करा देसा नै भीमसिंघजी रा क्वर धोकलसिंघजी नु जोधपुर रो राज थे मदत कर दिराय दजो ।

अर उदयपुर वाळा नु मवाईसिंह कवाई क महाराजा भोवसिंघजी रो सगपण ग्रापरै उठै कियो छै सो मानसिंहजी नु ता परणायजो मती न ।
जयपुर माराजा जगतसिंघजी नुं परणाय दो, मै इण माग रो टटा था सु करसा नही ।

माराज मानसिंघजी सु ग्ररज कराई कै ग्रापाणी माग उदयपुर वाळा जैपुर राज जगतसिंघजी नु परणावे छै ग्रर जगतसिंघजी परणीजण नु त्यार हुवा छै सा ग्रो काम सही पड गयो तो इण मे ग्रापोणी वात राजस्थान म थाप न हळकी घणी लागसी इण तारू री कुबदा सवाईसिंघजो पोकरण बठा चलाव ।'

२२ मानसिंह ग्रौर धोकलसिंह के पक्षपातियो के बीच लडाई होना जसवतराव होल्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना ग्रौर उसे सम्मान नही दिये जाने पर होल्कर का दक्षिण की तरफ जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

'हुलकर जसवत राय कूच कर सावठी फौज सु श्री हजूर र बुलायाडो ग्रायो जसवतराय रा डेरा नादर नावे हुवा हालकर रे सामी पधारिया नही न बराबर बसाणिया नही तिण सु पूरो वराजी हुवो ।'

नादर गाव इन्द्रराजसिंघवी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

'फौज मे एक परदेसी तरवार म्यान वारे ले सिंघवी इ द्रराज रे वावण लागो । इन्द्रराज नाडो ग्वालतो था पछ आदमी कने उभा था तिणा पकड लीयो
पछै इद्रराज रा ग्रादमी तरवार वावण वाळा नु मारण लागा तरै इद्रराज मारण दीनो नही श्री हजूर इन्द्रराज रो सुख पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटो बधायो ।"

२३ महाराजा द्वारा नथकरण को पोकरण मवाईसिंह के बुलाने पर नही ग्राने पर उसको कद करने का उल्लेख है ।

२४ जयपुर महाराजा जगतसिंह ग्रौर बीकानेर महाराजा सूरतसिंह का सेना सहित मारोठ ग्राने और मानसिंह का भी सेना सहित मुकाबले मे जाने का उल्लेख है । सरदारो का महाराजा की सेना म ग्रलग होकर धोकलसिंह के सहायक मे शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

१२ देवनाथ, हरनाथ, मुरतनाथ, ओपनाथ इत्यादि सभी नाथो को पट्टे आदि लिखने का उल्लेख है।

१३ जालोर के घेरे मे सिरोही के शासक उदयभाण द्वारा मानसिंह को मदद नही देने पर महाराजा के द्वारा सिरोही पर आक्रमण करने तथा युद्ध म लडे योद्धाओ की सूची भी अकित है।

१४ घाणेराव पर मेहता साहबचद की अध्यक्षता म सेना भेज कर वहाँ महाराजा का अधिकार होने का उल्लेख है।

१५ सिरोही और घाणेराव मे विद्रोह होने के कारण भडारी गगाराम और सिघवी गुलराज को सिरोही और इन्द्रराज को घाणेराव सेना सहित भेजे जाने का वत्तात।

१६ सोजत की ओर बखेडा होने पर अखेमल को २०० घोडो सहित वहाँ रखे जाने का उल्लेख है।

१७ वि० स० १८६१ श्रावणी तीज के दिन बडे अधिकारियो के विशेष पोशाकें आदि बनवाई उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

'समत १८६१ रा सावण सुद ३ लोडी तीज नु श्री हजुर पिडा रे ने सारा सिरदारा मुतसदी पास पासवा ना रै फूल गुलाबी पौसाका कराई नै गिडदीकोट फनै घोडा फेराया और आउवा रा ठा० माधोसिंघजी मर गया सो बेटा बखतावर-सिंघजी नु खातर तसली आछी तरै फुरमाई कै मीसर आछी तरै कीजो।"

१८ नागौर मे धाधल उदयराम द्वारा जीतमल, सूरजमल, इन्द्रमल, गभीरमल और धीरजमल को पकड कर सलेमकोट जोधपुर मे और स्त्रियो को नागौर के किले मे ही रखने का उल्लेख है।

१९ सवत् १८६१ माघ सुदि ५ महामदिर की प्रतिष्ठा होने का उल्लेख, इस समय दुपट्टे आदि दिये जाने और चडावल ठाकुर बिसनसिंह कूपावत के रूष्ट होने पर बक्सीराम को चडावल के काम पर नियुक्त किये जाने का वत्तात।

२० वि० सवत् १८६१ फाल्गुन म खेतडी झु जणु नोलगढ सीकर आदि के सेखावतो तथा भाटी छत्तरसिंह (धोकलसिंह का पक्षपाती) डीडवाना मे उपद्रव करने का उल्लेख है।

२२ उदयपुर राणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जयपुर व जोधपुर राजाओ के बीच सवाईसिंह चापावत ने विवाद उत्पन्न किया इसका वृत्तात इस प्रकार है—

"सवाईसिहजी जयपुर वाळा नु बुलो दियो क महाराज भीमसिहजी री माग है जिण रो ता निरदावा करा देसा नै भीमसिघजी रा कवर धोकलसिघजी नु जाधपुर रो राज थे मदत कर दिराय देजो ।

अर उदयपुर वाळा नु सवाईसिह कवाई कै महाराजा भीवसिघजी रो सगपण आपर उठै कियो छ सा मानसिहजी नु तो परणायजा मती नै । जयपुर माराजा जगतसिघजी नु परणाय दो, मै इण माग रो टटो था सु करसा नही ।

माराज मानसिघजी सु अरज कराई कै आपाणी माग उदयपुर वाळा जैपुर राज जगतसिघजी नु परणावै छै अर जगतसिघजी परणीजण नु त्यार हुवा छै सो ओ काम सही पड गयो तो इण मे आपोणी बात राजस्थान मे थाप नै हळकी घणी लागसी इण ताछ री कुबदा सवाईसिघजी पोकरण बठा चलाव ।'

२२ मानसिह और धोकलसिंह के पक्षपातिया के बीच लडाई होना, जसवतराव हाल्कर का महाराजा द्वारा बुलाया जाना और उस सम्मान नही दिय जाने पर हाल्कर का दक्षिण की तरफ जान का उल्लख इस प्रकार है—

' हुलकर जसवत राय कूच कर सावठी फौज सु श्री हुजूर र बुलायाडो आयो जसवतराय रा डेरा नादर नावे हुवा होलकर रे सामी पधारिया नही न बरोबर बसाणिया नही तिण सु पूरी वैराजी हुवा ।'

नादर गाव इन्द्रराजसिघवी पर एक व्यक्ति द्वारा तलवार चलाय जान का उल्लेख इस प्रकार है—

"फौज मे एक परदसी तरवार म्यान बारे ल सिघवी इन्द्रराज र वावण लागो । इन्द्रराज नाडो खोलतो थो पछ आदमी कन उभा था तिणा पकड लीयो पछै इद्रराज रा आदमी तरवार वावण वाळा नु मारण लागा तर इद्रराज मारण दीनो नही श्री हजूर इ द्रराज री सुप पूछण अस्वारी कर पधारिया, पाटा बधायो ।"

२३ महाराजा द्वारा नथकरण को पोकरण सवाईसिह के बुलान पर नही आने पर उसको कद करन का उल्लेख है ।

२४ जयपुर महाराजा जगतसिह और बीकानेर महाराजा सूरतसिह का सना सहित मारोठ आन और मानसिह का भी सेना सहित मुकाबले मे जान का उल्लेख है । सरदारो का महाराजा की सना म अलग होकर धाकलसिह के महायका मे शामिल होने का उल्लेख इस प्रकार है—

'हरसोळाव रो चापावत जालमसिंह अर मारोठ ठाकुर मेसदान गीघोली री घाटी मुजरो माराज श्री मानसिंहजी सु कीयो क मैं तो सवाईसिंघजी सामल जावा छा आप कनै देवनाथजी माराज छै सो झगडा कर लेमो ।

सिरदारा मे ठाकुर कुचामण सिवनाथसिंघ ग्राउवा रा बखतावरसिंघजी ग्रासाप रा केसरीसिंघजी रास रा जवानसिंघजी, नीवाज रा सुरतार्णसिंघजी लाविया रा भानीसिंघजी बुड्सु रा मनाणो, बडु वगर सारा भाय हाजर हुवा ।'

ग्रागे महाराजा मानसिंह के पक्ष मे सरदार रहे उनके नाम दिये हैं। बहुत मे सरदारो द्वारा धोकलसिंह का पक्ष लिये जाने पर मानसिंह ने युद्ध नही कर जालोर जाने की इच्छा प्रकट की पर सामन्तो ने महाराजा के विचार बदल दिये—

''पछ श्री हजूर फुरमायो कै मैं तो जालोर पधार जासो जोधपुर रै गढ री पूरी भरोमो मानु है नही ग्रर जाळोर पधार रो भरोसो पको है ग्रर जनाना न जाळोर ले जासा तिण उपर मामयस्सी सिरदार मुसदीया वगेरा अरज करी कै हुजूर जाळोर नही पधारो जाळोर पधारिया जाळोर रा राजा वाजसो न जोधपुर गढ विराजिया जोधपुर रा राजा वाज सो जोधपुर लारे जालोर है ।''

२६ वि० सवत् १८६३ मे होली के दिन नागौर महाराजा के हाथ से चले जाने का उल्लेख—

२७ इस प्रकार साभर नावो, डीडवाना, कोलीया नागौर, मेडता, सोजत और जतारण म विरोधी सरदारो का अधिकार होने का उल्लेख है।

२८ सवाई जगतसिंह के दीवान ने ग्रब यह इच्छा प्रकट की कि उदयपुर चल कर कृष्णाकुमारी से विवाह करें पर सवाईसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर धोकलसिंह को राजगद्दी का हकदार बनाकर फिर उदयपुर जाने को कहा, इसका उल्लेख इस प्रकार है—

' जगतसिंघजी सु उणा रा दिवाण रायचद मालम करी क माराज आपरी तो मोकळी मज गई सो हमे अठा सु परवारा उदपुर पधारा सा आपरा व्याव कर पछा जैपर दाषल हुईजे ।'

सवाईसिंह कहता है—

'उदयपुर व्याव भातर तो ईतरा योक हुवा छै अर लाखा रुपया खरच लगाया छ आप पली जोधपुर पधारो अर धोकलसिंघनु जोधपुर र गढ चढाय राज दिरावो मारवाड रा बितराक सिरदारा नु साथे ले हू ग्रापरी जान मे

उदयपुर चाल ब्याव कराय वडे हुगमे सु आप नु जेपुर दाषल करायं दूण बात मे राजसथान मे आपको अर मारो नामुन हुय जासी ।"

२६ वि० स० १८६३ चैत्र वदि ७ का प्रसादी बाग स्थान लेजाने का वृत्तात इस प्रकार दिया है—

'सवत् १८६३ रा मोनि चेत वदि ७ सोलसातम नु सवाईसिंघ री फौज रा डेरा मडोर आसपास कोया मो उण दिन सोलसातम थी सो गढ उपर सु माताजी रो पुजापा मार्नसिहजी री तरफ सु गढ उपर सु कामे गयो मरदा मरदी सु पाछो पुजापे वाळी जनानी डावडीया नु गढ चढाई ।"

३० जयपुर और बीकानेर की फोज द्वारा जोधपुर गढ के घारा ओर घराव डालने, किले के पास सुरग खोदन का वृत्तात इस प्रकार है—

"पछ फतैपोळ री सफील रे नीचे सुरग खोदी अर सोर रा कूपा सुरग म गेरीया तिणरी षबर गढ मे हुय गई तरे फतपोळ कन तन री कडाव तल उबाळ नालियो तिण सु बारली फौज रा आदमी चालीस तथा ४० ता उठै हीज तेल सु सीजने मर गया जितराक अदवळीया हुय नीसर गया ।"

३१ जोधपुर दुग से मोर्चे किस व्यवस्था स लगाय गये इसका वृत्तात इस प्रकार है—

'मोहण बूड मापली तोप २ बारली फौज वाळा री मडी थी सो उण तोपा रा गोळा पादरा इमरती पोळ कन आय पडै सो लोक अठी उठी फिर सग नही दूसरो मोरचो विरमपुरी वाळी तोप रो सो पिण मोरचा पारो, तीसरो मोरचो सीगोरीया री भाषरो उपरलो बीकानर वाळा रो सो भाषरी उपर तोप २ चढाई सो तोपा रा गोळा पादरा लाहपोळ तथा फतपोळ पादरा लागै रात दिन गढ उपरली तथा बारली फौज वाळा री तोपखानो चालतो रहै सो रात दिन सर रा लोक बारे फिर सके नही सो पूरो दुप सो लिपण ज्यू नही ।'

३२ इन्द्रराजसिंघवी द्वारा कुछ प्रलोभन मीरखा को देकर अपनी ओर मिला कर बडी सेना सहित जयपुर पर आक्रमण करने पर जोधपुर का घेराव खत्म होने, जयपुर जोधपुर के बोच दोना सेनाओ के घमासान युद्ध होने का वृत्तात है। उस समय सवाई जगतसिंह ने बहुत पश्चाताप किया उसके सबध मे गीत दिये हैं—

"जगो जेपुर गयो तिका वात सुपा जो जसुर हसे
वोहो नारीया कोध हासी ।"

३३ घेराव उठ जाने के पश्चात् महाराजा द्वारा विभिन्न व्यक्तियो को गाव, पद पट्टे आदि दिये गये उसका उल्लेख सविस्तार है।

३४ सवाईसिंह को धोखे से मारने का उल्लेख इस प्रकार है–

पछे नवाब उठासु उठीया अर कहता के म्हे अबी पेसाब कर आता हु इण तर कहे भेट टेरे बार आय आपरा आदमीया नु इसारो कीयो, जठा पली तबू रो मथा उखलता हुवा अर तबू री डोरीया काठी जिण मु तबु गिडलीज गयो जिणसू सवाईसिंघ वगेरा मीन्दार–मीरखा र भाणेजो माग दबुचीज गया अर उपर सु तोपखाना सरू हुय गया।"

अनुग्रा व कर सिर लेकर अनापराम के जोधपुर महाराजा के सामने लाने का उल्लेख इस प्रकार है–

"अनापराम माथा ले जोधपुर आयो श्री हजूर मालम हुवा, कुसी मोकळी कीवी फुरमाया (महाराजा) के इणा हरामखोरा रा माथा पाव म मडाय बजार मे ढढा बना सु देडा रमावा।'

३५ वि० स० १८६४ भाद्रपद मे बीकानेर पर चढाई करने का उल्लेख है।

३६ लाडनू के सरदार पदमसिंह जो धोकलसिंह के पक्ष मे थे उनसे ४० हजार रुपये वसूल करना, जयपुर से सबंध कर संधि करने और कृष्णाकुमारी को जहर देकर मारने का उल्लेख है।

३७ जोशी समुदत्त का जिसन नाथ चन्द्रिका कृति लिखी और शिवपुरान की कथा सुनाने पर देवनाथ बडे खुश हुए उसका वृत्तात इस प्रकार है–

'शिवपुराण री देवनाथजी माराज कने बाची पछे कथा सपूरण हुइ तर दवनाथ सिमुदत्त नु पाल्खी मे बसाण पालखी रे कावो दे भेट कर सिरपाव दे घरे पौछायो।"

३८ मुहता अपचद के पुत्र लिखमीचद का विवाह फलोधी हुआ उसका वत्तात इस प्रकार है–

जान जोधपुर सु वणाय चढीया पाळा दोय अढाइ हजार आसरे सु फलोधी गया सो जान सारी नु चीरत भाव ज्यु पावायो पास जोधपुर रा ३६ पौण नु पाड रो सीरो कर जीमाया भोजका नु मुडके लीठ दोय दाय रुपीया हाजर था त्यानु दीया।'

३९ ओसवाळा द्वारा मृत्युभोज दिये जाने का उल्लेख इस प्रकार है––

'मुते सूरजमल बापरो कारज कीयो साजत री ३६ पूण जिमाई अर चावड माता सोभत मे तिणरे पगत्या बदाया।

मुता साहबचद बाप रो कारज कीया नाडुलो रा सो जाळोर रा ५२ गाव जीमीया जस चोपो आयो।

सिंघवी इन्द्रराज रो मा संवत १८६८ में मुई तिण र्‍हारे सेर सारणी रा जीमण हुवा २६ पुरा नू जीमाई।"

४० वि० सं० १८६८ में अकाल पड़ा उसका वृत्तान्त इस प्रकार दिया है—

'महा भयानक काल पड़ गया सो मुलक सारो उचल गया, वित मुलक रा मर गया, मिनष भूषा मरता घणा गरीब आदमी मर गया अर पेट रा टाबरा नु बेचे पण साळ में लेवाळ नहो धान रुपीया १ रो जोधपुर रे तोल रो पुराणो तीन सर विक सो सोर साम मिले नहीं।"

४१ महाराजा की जयपुर शादी होने की तैयारियों का उल्लेख इस प्रकार है—

'हजूर मारा मुसदीया ने बुलाय हुक्म दीया के जपुर रे व्याव री ताकीद आई है सो ३६ कारखाना मु ताकीद कर काम सरंजाम कराया तर हुक्म मुजब मारोमार त्यारी हुई।'

फिर पहले मानसिंह का विवाह जगतसिंह की बहिन से और दूसरे दिन मानसिंह की पुत्री का विवाह जगतसिंह के साथ होने का उल्लेख है।

४२ सिरोही के नामक उदयभाण के गंगा तीर्थ यात्रा से लौट कर पाली में ठहरते हुए महाराजा की फौज द्वारा पकड़ कर जोधपुर लाने, उससे दण्ड स्वरूप रुपये वसूल करने आदि का उल्लेख है।

४३ नवाब (मुहम्मदशाह) ५०० पठानों के साथ महाराजा से मिलने और सिंघवी इन्द्रराज द्वारा ३ लाख रुपये पांच दिन में दिये जाने का आश्वासन देकर उसे लौटाने का वृत्तान्त है।

४४ मीरखां द्वारा देवनाथ और इन्द्रराज को चूक से मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

'संवत १८७२ आसोज सुद ८ नवाब मीरखां नु पवर लागी के आज देवनाथजी ने सिंघवी इन्द्रराजजी गढ उपर गया है जद नवाब आपरा पठाणो ने बुलाय केयो के तुम गढ पर जाओ अर अपनी परची पिरणी रा चूकता रुपीया मागो, खूब तगादा करो तुम और तो किसी का नाम न लेणा न देवनाथ इन्द्रराज चूक कर नाखजो, तुमारा नाम कोई नहीं लेवगा, जिसकी हमने जोधपुर के राज वालों से पकावट कर लीया है तुमकू ईनाम १० हजार देवेंगे।"

पठानों द्वारा पैसे मांगने पर इन्द्रराज ने कहा—

आज काल ने पीरसु श्री तीन दिन मारे दसरावे रा नवा दीन है सो आज ते जावो जद कुतबदीन वगेरा कहे हमकु तो नवाब का हुक्म है आज का

आज ले जाणा हमता लेकर पीछे आवेंगे, जद वे उठण लागा के हजूर मे जाय मालम कर आवा जितरे थे ठहरा जद पठाणा करावीणा भाडता हीज हुवा सो श्रेवे समचे छूटी सा देवनाथ इन्द्रराजजी मर गया नै फेर तिवरी रो पिरोहित न मारीजियो ।'

देवनाथ और इन्द्रराज की अ तिम क्रिया की व्यवस्था करान और अमीरखा को रुपय दकर मारवाड से प्रस्थान करने का उल्लेख है ।

४५ सिघवी मूलराज को दीवान नियुक्त करन और महाराजा के उदासीन रहते हुए भीमनाथ क आग्रह पर कुवर छत्तरसिंह को राज्याधिकार देने उस समय राज्य म नय अधिकारी आदि नियुक्त किये उसका वृत्तात है

४६ आग गुलराज का चूक सा मारने और उसके अ तिम सस्कार इत्यादि किये जाने का उल्लेख है ।

४७ छत्तरसिंह क राज्य काय म रुचि न लेन का हाल इस प्रकार दिया है—
झरोखा म विराजे हाथीया री लडाईया करावे, आपो दिन पिलबत म रहै पिण राज र काम री सुणवाइ करै नही, सोवत नादान आदमीया री आसा पीवरण र सभाव घाल दीना सो राज काज र काम उपर अमन नही, फर स्वाह म भगतण सजनी नू चाकर राप लीवी सा छान राप ।'

४८ छत्रसिंह क राज्य-काल म अग्रेजा के साथ सधि हुई उसका उल्लख १० शर्तों का सधि पत्र लिखा गया उसके बारे लिखा है—

'तरै मसादा दिली विसनराम अभेराम आसोपा कन गयो तरै अहदनावा री कालमा १० ठेरी । सिरकार अग्रेजो री तरफ मु मिस्टर मटकलफ साहब बहादर अर जोधपुर री तरफ मु उकील आसोपा व्यास विसनराम अभेराम री मारफत कलमा ठेरी जिणरी नकल तथा असल सिरकार रा दफ्तरा म दाखल है ।

४६ सिघवी चनकरण का वध और किस प्रकार ताप स उडाया उसका वृत्तान्त इस प्रकार है—

समत १८७४ म सारा सिरदार मुसदी छत्रसिघजी सु मालम करी के सिघवी चनकरण भाटो हरामखार है श्रीजसिघजी राज म (चनकरण) फोज ले गयो सा गाव मारकर्डे जाय पाना सो हजूर री फौज सु भगडो कीयो अर मुंडा माह सु हरामखोरी रा बाहर काढीया था जिण इन्द्रराज रा मुलायजा म सभा दिदीजी नही । पछे हम गुलराज नू चूक हुवा पछ आप सू डरतो कागाणा री हवेली म जाय बैठो पछ महाराजकवर सिरे पधार कोसाणे री हवेली

सू चैनकरण नु ले जाय सिवाणची दरवाज बारे ले जाय तोप रे सू ढे दे   मराय नाथीयो उण मिती सु करणोता री पांप री वात हळकी पड गई।'

५० छत्रसिह के देहान्त के बारे मे लिखा है—

"पछे समत १८७४ रा मिती चैत वद ५ महाराज कवर श्री छत्रसिघजी देवलोक माहला बाग मे हुवा। पाहा मोकळी हुई। श्री हजूर महाराजा मानसिघजी र जीव नु तो ग्राग ही दुप दवनाथजी ईदरराजजी रो थो हीज फेर महाराज कवार री ग्रा हुई सो दुप रा पार नही   सारा फौजी ग्राप भदर हुवा पछै वाकी रा ही सिरदार मुतसदी तथा सर री नै परगने री रत सारी भदर ग्यानमल रा कणा सू हुय गया   पछ मुलक री काम ता   अपचद वगेर सारा सिरदारा री सला सु हुवै   ।"

उस समय लूटमार की स्थिति के बार मे लिखा है—

'चोरी धाडो लूट-पोस हुवे पिण जिण री वार   सुणवाई कठैई हुवै नही, मुलक म ग्रधाधु ध मच गई। गर इलाका रा वापारी माल ले मारवाड मे ग्रावे ग्रर माल लूटीज जावे   मस मत सारा माच गया   ।"

५१ छत्रसिह की मृत्यु उपरान्त मानसिह के मौन साध रहने किसी से बात न करन की खवर राजधानी पहुँचन पर ग्रग्रेजा की ग्रार स वक्तर ग्रली का वातचीत करने के लिए भेजने का उल्लेख है। आगे वर्णित है कि पहले महाराजा वक्तर अली से कुछ नही बोल पर दूसरे दिन उसके जान पर बातचीत हुइ जिसम महाराजा न बनाया कि मरे मौन साधे रहने का कारण देवनाथ, इन्द्रराज, मूलराज को चूक से मारे जान का है। ग्राग वक्तर ग्रली के द्वारा पूरी हकीकत ग्रग्रेजा को सुनान ग्रौर ग्रग्रेजों द्वारा मानसिह को ग्राश्वासन दन पर कि हम ग्रापके साथ है प्रसन्नता से राज करें विरोधिया का सजा दें। इसस महाराजा के दिल म खुशी हुई ग्रौर एकान्तवास का परित्याग कर राज्य काय सम्भाला।

५२ जोधपुर के कवि बाकीदास के भागन का वत्तात इस प्रकार है—

'बारट ग्रासीयो वाकीदास उपर श्री हजूर रा मरजी मोकळी थी परत नारला दिना मे महाराज कवार छत्रसिघजी कने जलधरनाथजी रा धरम री निंदा कीवी के 'मान का नद गोवि द रटै जब कन फटो   फटै', फेर गजल जोडी के आये जलधर लाये दलदर,' सब दुनीयन कु कीवी कलदर, ठौड ठौड बणाये मामदर। ईण ताछ रा माराज कवार नु राजी रापण वास्त कहता था। जिणरा समाचार हलकारा री फरद म मालुम हुवा जद वाकीदास नु गढ उपर

बुलायौ बाकीदास ने घुजणी छूट गई (महाराज) फुरमायौ क चारण सो सीव दा तरै बाकीदास उठा सु भागो सो गाळ री घाटी मारग होय पादरौ भाद्रजण रा ठाकुर बखतावरसिंघजी रै सरणो बेस गयौ ।"

५३ मृत्युभोज के लिए चाकरो का पस दिये उसका उल्लेख इस प्रकार है— पछ समत् १८७६ रा फागुण मे हुकम फुरमायौ कै सारा चाकरा रै माईना लारे कारज नही हुवा वे तो करौ, सिरकार सुं रुपिया दिरीज जासी सो सारा चाकरा नु पाच हजार, दोय हजार, हजार ।"

५४ महाराजा द्वारा अपने विरोधियो को पकडवाना और मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है।

पछ सारा मुसाब भेळा दोळतपाना मे हुवा तर आप याद रौ पाना ? बणायो था के ईतरी आसामीया नु कद करणा हजूर धाबल गोरधन वगरा मरजीदाना हुकम दियो के हरामषोर नु कैद करदो सो दौलतषाना रा चोक मे सारा बैठा था सा तीजे पोर ग्रामरे सारा नु पकड लीया नै सलेम कोट मे सारा नु घाल दीना। बावस्ता मुधा आदमी ८४ नु पकड लीना कैद किया तिणा रै घरे चौकिया बेस गई असबाब सिरकार म ले आया, पछै अपेचद नु जिनसी रा डेरा सु रथ म बैसाण ले आया ने बेटा लीपमीचद पोतरो मुकनचन्द गुमास्तो रामचद सारा नु सलेमगढ मे दाखल किया नित तसतिया दिरीजै, रूपीया पण भरीजे नही (जब) मुतौ अपचद नु जर रो प्यालो दीयो बेटा लिपमीचद पौतरो मुकनचद ने कैद मे सावत रापीया। व्यास विनोदीराम नु प्यालो जर रौ दीयौ ने बेटा गुमानीराम नु कैद म रापीयो सो तसती दीरीज। चडवाणी जोसी भगतदत्त तो मर गयो भाई फतो ने बटो विठलदास नु पकडीया सो जहर रौ प्याला मगदत्त र बैठा रै मैलीयो थो सो डरण लागो तरै मगदत्त र भाई फतेचद आप पीयौ तर मगदत री बहु बाँडू देवर फतजी लारे सत कर गई म्हारे क म्हारे धणी रै नाव रा प्याला पीयो । किलेदार भैवराजोत नथकरण मुनसीजी ग्रराज जात पचोली नु प्यालो पायो सु मर गया।'

खीची मोहारीदास जो सेजडला ठाकुर सादुलसिंह की हवली म घुस कर बठ गया और महाराजा के कहन पर उसे नहीं सौंपे जाने पर हवेली का घेराव करने और माटी योद्धाग्रो सहित मोहारिदास के मारे जाने का उल्लेख है।

इसी प्रकार नोवाज की हवली के घेराव डालने और ठाकुर सुलतानसिंह के अपने साथियो सहित वीर गति प्राप्त को होने का उल्लेख है।

५५ नीवाज पर फौज भेजने पट्टा जब्त होने आदि का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त अन्य ठिकानों के पट्टे जब्त किये उनका वृत्तांत है।

५६ विरोधियों से दण्ड स्वरूप पैसे वसूल करने और अपने पक्ष के व्यक्तियों को आहद आदि देने का वृत्तांत है।

५७ वि० सं० १८८० में अत्याचार पूर्ण व्यवहार से तंग आकर सरदारों का अजमेर में पोलिटिकल एजेण्ट से मिलने और ठिकाने वापस किये जाने का उल्लेख है।

५८ फतराज व्यास और कंवरदास आदि हाकिमों द्वारा पैसे खा जाने पर उनसे अलग अलग रुपये वसूल किये उनका उल्लेख है।

५९ महाराजा की छोटी पुत्री स्वरूप कंवरी का विवाह बूंदी के रावराजा रामसिंह के साथ होने का उल्लेख है। बरात में घोड़े, हाथी आदि आये उसकी संख्या इस प्रकार दी है—

'बूंदी सु जान विदा मासुद १ हुई सो जान में घोड़ा १२००, हाथी ३, ऊँट २०० छकड़ा १२५, भारबिरदारी गाडी १०० ऊँट २००, पीनसां १०, पालखीयां ४, रथ २५, सिपायां रो साथ ५०० आदि।"

६० वि० सं० १८९१ फाल्गुन सुदि १२ सिंघवी फौजराज मेघराज और कुसलराज को समेलगढ में बंदी बनाने, भाद्राजूण ठाकुर बख्तावरसिंह का अपनी हवेली से भागने और व्यापारियों से ३ लाख का माल लूटने पर महाराजा द्वारा अंग्रेजों को शिकायत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

'महाराज अंगरजी सिरकार में अरजी लगाई के म्हारो माल अजमेर जावतां भाद्राजण रै ठाकुर तीन लाख रो उतार लीयो ।'

६१ बाडमेर सरदारों के कच्छ भुज, सिंध में लूटमार करने पर अंग्रेजों ने महाराजा को इसके बन्दोबस्त के लिए लिखा नहीं तो उसका हरजाना जोधपुर सरकार देगी।

६२ जालोर की ओर भी लूट खसोट अधिक होने के कारण १८९१ में अंग्रेजों ने वहाँ की व्यवस्था सुधारने हेतु लिखा इस पर सिमुदत्त को हाकिम नियुक्त होने पर स्थिति में सुधार होने, फिर १८९२ में सिमुदत्त को कैद कर फतराज को वहां हाकिम नियुक्त करने और फिर से भारी लूट-खसोट इत्यादि जालोर गोडवाड में होने का उल्लेख है।

६३ वि० सं० १८९४ में ओसिया भटियानी रानी की कोख से कंवर सिद्धान्तसिंह का जन्म और १८९५ बैशाख सुदि ७ को देहान्त होने का उल्लेख है।

६४ चापावत चिमनसिंह और डाकुआ के डाके रोकने के लिए अंग्रेजो की ओर से प्रयत्न।

६५ जोधपुर परगने मे लूटमार होने, नाथा द्वारा षडयन्त्र करने, सरकार के हक के रुपये महाराजा द्वारा नही भिजवाने तथा अंग्रेजो के प्रश्नो का उत्तर नही देने के कारण सदरलण्ड द्वारा महाराजा के विरुद्ध शिकायतें दर्ज की गई उसका वृत्तात है।

६६ सदरलैण्ड और कप्तान लडलो के महाराजा से बातचीत हुई इसमे अंग्रेजो ने महाराजा से कहा—

'आपके मन मे लडाई का ईरादो होवे तो हमारा जरणैलसा हाजर है नही तो सब काम मुलासब मुजब हो जासी जितरै आपका किला मे हमारी सिरकारी थाणा रहसी अर आपका गुरु नाथा का दखल राज के काम म बिलकुल नही रहेगा ।

जद श्री महाराज मानसिंह कबूल अर मजूर कीयो ।

६७ लडलू पर एक करमसोत राठौड ने तलवार चलाई उसका हाल इस प्रकार है—

'गढ म एक करमसोत बिरादरी म चाकर थो सो उण रै मन म काई बस गई सो लडलु साहब रै तरवार स्गाई तरै लडलू साहब करमसोत रै दाय तीन तरवार वाही चार दिना पछै करमसोत मरगो ।"

६८ मानसिंह और अंग्रेजी सरकार के बीच शर्तो का नया अहदनामा हुआ उसका वृत्तात है।

६९ महाराजा मानसिंह की ओर से ४८ शर्तो का नया अहदनामा हुआ उसका वृत्तान्त है।

७० १३ पच राज्य प्रबन्ध के लिए नियुक्त किये उनकी विगत दी गई है।

७१ महाराजा को फिर राज्याधिकार मिलने, नाथो द्वारा उपद्रव किये जाने पर अंग्रेजो की आज्ञानुसार नाथो को गिरफ्तार करने, जिस पर महाराजा द्वारा साधु का वेश धारण करने आदि का उल्लेख है।

प्रस्तुत ख्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध की गई है। इसमे महाराजा मानसिंह का क्रमबद्ध इतिहास लिखा गया है। ग्रन्थ पर कपडे का गत्ता मढा हुआ है। राजस्थान के 'रजवाडो' के अशक्त होने और अंग्रेजो का आधिपत्य होने का विस्तृत वर्णन इसमे मिलता है। साथ ही जागीरदारो के राजकीय सम्बन्धो और रीति रिवाजो पर भी इसमे पर्याप्त सामग्री है।

१४५ अ शाहपुरा की ख्यात

१ शाहपुरा की ख्यात, २ रा० शो० सं० ३ १६६५६, ४ २०.५ × ३३.२ ५ २४० ६ २०, ७ १६४०, ८ अज्ञात, ६ उर्दू मिश्रित खड़ी बोली देवनागरी, १० इस ख्यात मे शाहपुरा (मेवाड) के शासकों का विस्तृत वृतान्त महाराजा सूरजमलजी से लेकर महाराजा उम्मेदसिंह तक का दिया गया है। शाहपुरा पहले मेवाड राज्य का ही एक हिस्सा था परन्तु बाद मे उसने स्वतन्त्र राज्य का अस्तित्व ग्रहण कर लिया था। इस प्रयास की भी विस्तृत भूमिका इसमे है। शाहपुरा के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन करने मे फारसी फरमानो शिला लेखों आदि का भी प्रयोग किया गया है। इसके अध्ययन से मेवाड राज्य के इतिहास के कई अज्ञात तथ्य सामने आते हैं तथा मुगल कालीन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पडता है। इसकी भाषा उर्दू मिश्रित होने से अटपटी सी है और वीर विनोद की लेखन शैली का स्मरण दिलाती है। इस ख्यात मे निम्नलिखित शासकों का वृतान्त दिया गया है—

महाराज श्री सूरजमलजी
महाराज श्री सुजाणसिंहजी
महाराज श्री हिम्मतसिंहजी
महाराज दौलतसिंहजी
महाराज भारतसिंहजी
महाराज उम्मेदसिंहजी

ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

'महाराजा अमरसिंहजी साहब रईस ऊदयपुर के तीन बहुए बड़े कवर करणसिंहजी रियासत ऊदयपुर गद्दी नशीन हुऐ। उनसे छोटे भीमसिंह टोडे पर काबिज हुए और तीसरे महाराज सूरजमलजी मोरसयाला खानदान शाहपुर हुए। इनको फलाणा मय दीगर देहात कि। जिनकी आमदनी करीब पचास हजार रुपये साल थी अता हुवा। चू उमर ऊमर भर उदयपुर ही मे कयाम पजीर रहे। इनकी तारीख पैदाइश दीगर हालात दरमियानी और बकुंठवासी होने की तारीख वगैरा पर पुरा हाल यहा के कागजात मे दरज नहीं। गालिबन ऊदयपुर के ही कागजात मे होगा वहा से देख लिया जावें।'

प्रत्येक शासक से सम्बन्धित कुछ ज्ञात तथ्य इस प्रकार है—

महाराजा सुजानसिंह

''महाराजा सुजानसिंहजी चंद रोज के बाद बादशाह से रुखस्त होकर करने कब्जा पट्टे फूलिया और करने शहर आबाद दर कूच फूलिया की तरफ

किया। चद रोज म फूलिय तशरीफ लाये। यह महाराज रियास्त शाहपुरे की जड जमान वाले हुए और बहुत लायक थ। उस जमाने म कसबे फूलिया वो परगणे फूलिया मे बिलकुल सूरत बद न जमी इलाके म नजर आई याने कोम रजपूत गोड वा घूडिया व सोले की वो मेन्तिया व रतनमोत व देवडा व शेखावत व जाट गुजर मीना वगेरह हर एक कोम इलाके मे खुद मुखतार हो रह थ और देन हासिल म सरकसी रखते, जब महाराज साहिब न पशतर यह इन्तिजाम दखकर पशतर हाकिम फूलिया नजर अलीमरदान बग खालस की तरफ स रहता था उसको बुलवाया और जो इन्तिजाम इलाके मे खराब हो रहा था उसका हाल दरयाफ्त किया। जब वापिस अरज कि मरे पास फौज सिपाही तो है नही फक्त हुक्म से काम ल रहा हू। यह अरज करके अपने आदमियो को सब पहले फूलिया म भेजकर सब कोम को वो जागिरदार वो भोमियो को फूलिया म बुलवाये और उन सबको हुक्म सुना दिया कि महाराज सुजाणसिहजी का यह फूलिया इनायत हुवा है। मुवाफिक हुक्म महाराजा साहब सुजाणसिहजी के हुक्म की तामिल हमेशा करते रहा। इसी तरह से ही सब रियाया वा सरदारान वो जागिरदारान वो भोमियान को हुक्म सुना दिया और महाराजे साहब से अपने जाने की रुखस्त मागी। जब महाराजा सुजाणसिहजी ने ऊनका खिलत वो नकदी बखस कर रुखस्त किया। चद रोज क्याम फूलिय किया और जो हमराह महदू भीमजी ऊदयपुर स आय थ उनको अपना पोलपात करके नेग कर बखसा।

उज्जैन के युद्ध म (स० १७१५) मे सुजानसिंह के वीर गति पाने तथा काम आने वाले तथा घायल योद्धाओं की सूची भी दी है।

महाराज दौलतसिंह के समय का वृतात इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

महाराज दोलतसिहजी—

सम्वत १७२१ का आसोज सुदि ३ को गद्दी नशीन हुए जब इनकी ऊमर २६ साल की थी इ होने अपने राज का बदोबस्त बहुत ऊमदा किया और डूगाजी चेचाणी भी आदमी बहुत होसियार वो लायक वो सलाहकार था। उस कामदार को शाहपुरे रखकर आप दिल्ली का कूच किया। कूच दर कूच दहली पहुचे। दुसरे ही राज बादशाहा आलमगीर ने इन महाराजे साहिब का डेरे म बुलवाये। उस जमाने म ठाकुर घोली ने बादशाह की हुक्म उदूली का थी उन लोगा की चसमनमाइ व जेरबारी व गिरफ्तार करने कु वास्ते महाराज दोलतसिहजी को हुक्म दिया कि खुद मय फौज क जावें और किला छीनकर उन लोगो को गिरफ्तार करें। जब वापिस डेरे आकर अपनी फोज की हाजिरी लिया वा फरिस्त दफ्तर

से मिली वो दरज किया जाता है—अस्वार ५००, हाथी ४, पैदल सिपाही १६००, तोपें ३, सो दरहा की गाडिया २ सुतर १३० छकडा २३। इतने तो अपने हमराह थे। चार हजार के करीब बादशाह की फोज के लोग साथ लेकर घोली भेजे गये। पहुचन घोली कु एक कोस के फासले पर डेरा किया और घोली की खबर मगवाई तो मालुम हुवा कि ठाकुर धाली ने बहुत से लोग गट मे इकट्ठे कर रखें हैं आदि आदि ।"

महाराज दोलतसिंह की मृत्यु गोल कुडा के युद्ध मे सवत १७४२ मे होना बताया गया है।

महाराज भारतसिंह—

महाराज भारतसिंह का वृता त इस प्रकार हुआ है—

'महाराज भारतसिंह का जन्म महासुद १३ सम्वत १७२७ को हुवा और सम्वत १७४२ मगल ता० १७ नवम्बर १६८५ ई० मगसर सुद १ को गद्दी नशीन हुए जब महाराज की उमर १५ साल की थी। यह रईस रियास्त शाहपुरे की बहतरी को जड जमाने वाले हुए।'

भारतसिंह व अजीतसिंह द्वारा कालिजर के किले पर कब्जा करने का वता त इस प्रकार है—

इस सबब बादशाह औरगजेब मय फोज वो जोधपुर महाराज अजीतसिंहजी व महाराजे भारथसिंहजी हमराह लेकर दक्षण की तरफ रवाने हुए और कितनेक लाग हुक्म उदूली करते थे उन लागो को चस्मनमाई करके हमराह फोज लेते गये और जो कालिजर का किला दखन मे मशहूर है किले मे सजे हुए करने झगडे के तैयार थे वहा बादशाह मय फोज के जाकर पहुँचे और दूसरे ही रोज किले को घेर लिया मगर उन रजपूता ने एसी बहादुरी के साथ बादशाहा की सब फोज को किले से झगडा करके हटा दिया और कितनेक रजपूत किले के बाहिर ही थे। जब बादशाह की फोज का वापिस हटी हुई देखकर इन महाराजे भारथसिहजी ने अपना मोका पाकर जो फोज मे निसरणियें थी वा मगवाकर किले के लगवा दी और किले मे मय अपनी फोज के कूदना विचारा और इसी मोके पर एक किले मे का आदमी अपने डेरे म आया और उससे किले का हाल दरियाफत किया तो कहा कि किले मे और सामान तो मौजूद है मगर लक्डी बलीते का तगी बहुत है। यह बात कहकर फोज के बाहिर चला गया। जब महाराज ने विचार कर असमी नव्वे अपने रजपूतो को हुक्म दिया कि—जो लकडियें अपने डेरे मे मोजूद हैं

इसकी मोलिया बाधकर उन मोलिया म अपनी अपनी तलवारें छिपाकर किले के दरवाजे पर बेचन के बहान चले जावो और जा कि तुम्हारी मोलियो किले क अ दर वाले माल लेवे और तुमको किले म घुस जाने स्वे तो किला के पीछ स हम निसरणिया पर चढकर किले म कूद कर आत हैं। तुम भी वहा ही मोके पर अपनी तलवारे सम्हालना। जो जैसा चाहा वैसा ही भगवान न सब सामान बना दिया। य रजपूत मोलियें लेकर किले के दरवाजे पर जाकर खडे हात ही किल वालो ने इनका माल पूछा और दरवाजा खोलकर अदर लिया और जहा महाराजे साहिब न चाहा था उस कोट क नजदीक उनका रसावडा था वहा ले जाकर मोलिया डाली और एक सखस मोली डालककर किले के ऊपर चढा और महाराजे साहब का इशारा किया। इतन मे ही खुद महाराजे साहब मय अपनी फोज के निसरणियो पर चढ चढकर किले मे कूदना शुरू किया और किले के सब रजपूता न तलवार चलाना शुरू किया। अब दुतरफा तलवार खूब चली और जो पेशतर मोलिया के बहाने स रजपूता को भीतर भेज दिय थे उन्होने भी इस मोके पर काम बहुत ऊमदा किया और खूब झगडा किया और कितना ही को मार लिया और कितने ही अपने काम आये जिन सरदारो के नाम का पता नही मिल सका और किला फतह किया।

भारथसिंह की राजनतिक उपलब्धियो युद्ध, जागीर आदि का विस्तार से बयान किया गया है। यह बडा शक्तिशाली शासक हुआ, एक दोहा इस प्रकार अंकित है—

दोहा—आटा थारा न रहे थरा न तसा जाय।
थारी बेला भारता, नोबत बाजी थाय॥

महाराजा उम्मेदसिंहजी—

महाराजा उम्मेदसिंह सवत १७८६ मे गद्दी नशीन हुए थे पर सवत १७८४ मे युवराज पद पर रहते हुए भी अपने पिता भारथसिंह का राज्यच्युत कर दिया था और स्वय सब काय करन लग गय थे इसका वृतात इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

'सम्वत १७८४ मे महाराज कवर उम्मेदसिंहजी न अपने वालीद भारथसिंहजी कु रीआसत स अलेहद किये और मोती महल म रहना हुवा और सब लोगो का आना जाना महाराज भारथसिंहजी के पास स बद करा दिया इसका कुल हाल महाराज भारथसिहजी क हाल मे दरज कीया गया है—और कवर उम्मेदसिंहजी ने जुगराज ले लिया और कवर उम्मेदसिहजी न अपन हुक्म का

इका रियास्त मे जारी किया ओर जो कवर पद मल के जुगराज दो साल तक रहा जिसमे जो काम किय वो नीचे दरज किय जाते ह ।"

उम्मेदसिंह जैसा वीर था वैसा ही इल्म का कद्रदान और साहित्य प्रेमी भी था, इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

"ये रईस ज्या मरद वो लियाकतदार या हिन्दी का इल्म भी पूरा पूरा था और राजपुत सिपाह कु कैसा समझत थ मुवाफक अपने भाई ओर बेटा के ओर इस मुवाफक रजपुत वो सिपाह का पालना करते थे ।'

उम्मेदसिंह का वचस्व दिल्ली तक स्वीकार किया जाने लगा जिससे महाराणा रुष्ट हुए इस प्रसग का उल्लेख इस प्रकार है—

"ओर इसी साल मे बादशाह की तरफ से फरमान फारसी का तमाम रईस वो सरदारा इलाक जेपुर वा जोधपुर वो हाडोती वो मवाड के सरदारा के नाम लिखा गया—सीरदारी वा स्युजात क मुरतबे की महाराना जगतसिंह राजा उम्मेदसिंह बननदार मोजे साहापुरा समले परगन फुलीया वो जमीदारी जहाजपुर-सबब नाखुशी हान का ये हुवा क जिस वकत राजा उम्मेदसिंह दरबार बादसाह स इनायत मनसब जागीर वा खीलअत वो खासा वो ज्वाहीर वगेर पाकर पीछे साहापुर कु गए ओर तमाम जागीरदार आसपास साहापुरे के इलाकेदार हाजर हाकर राजा उम्मेदसिंह की ताबेदारी इख्तीयार कर नजर निछरावळ गुजारी, बर वक्त सुनने इस बात क महाराना नाखुस हाकर तमाम फाज से इरादा लेन राज का किया ओर बेदखल कर दना राजा उम्मेदसिंह का चाहा । तमाम फोज उदयपुर से वो तोपखाना लेकर इरादा लेने साहापुर का किया ओर सरदारी वो बहादुरी के मरतब के राजा जयसिंह वो महाराव दुरजन साल जमीदार कोटे ओर रावराजा दलेलसिंह जमीदार बुन्दी ओर राजा इन्दरसिंह सवाई स्योपुर वगरह के ही जमीदारा का महाराना ने अपनी कुमख कु बुलवाऐ वो चारा तरफ स साहापुरे को घर लिया परन्तु राजा उम्मेदसिंह मजबुत दिल वो बहादुर था । किसी तरफ का ख्याल न करके मुसतद जग ओर लडाई फोज महाराना से हुवा ।'

जोधपुर महाराजा अभयसिंह तथा नागोर बख्तसिंह से मिलकर उम्मेदसिंह ने महाराना को परेशान करना चाहा । इस पर महाराना को प्रतिक्रिया इस प्रकार ख्यात मे अकित है—

"श्री राजाजी अजमर पधारना इस बात से दीवाणजी बेराजी ज्यादा हुआ ओर असयो हुकम कियो राजाजी उम्मेदसिहजी म्हाकी बात बिगाड गया अर

चितौड़ ने जोधपुर ने लड़ायो चावै छै अर चितौड़ को राज उठायो चावै छै मा राठोड़ तो सबळा छै पण मानै भी श्री चीतोड़ का राज श्री एकलिंगजी दियो छै सो सारा को लिया जावे नहीं सो भली बात है।"

उम्मेदसिंह और राजकुमार अदोतसिंह के बीच मनमुटाव का उल्लेख भी विस्तार से किया गया है।

मल्हार राव होल्कर का राजस्थान में दखल और उम्मेदसिंह के सम्पर्क का उल्लेख एक स्थान पर इस प्रकार किया गया है—

"और इसी साल में गनीमा की फोज में एलची ऊदयराम को भेजा जिसकी अरजी भादवा सुद ११ के दीन म राव मलारजी सू मलो अर राव मलारजी कु श्री हुजुर का कागज दीया जिस पर बहोत राजी हुवा और पीछा कागज लीखाई मोकलिया है और माहाराजा ईसरीसिंहजी की तरफ से गनीमा को सोला हजार रुपीये रोजीना का कर दिया है और गनीमो की फोज राजा ईसरीसिंहजी के हुक्म की तामील करते हैं और कोटा बुदी से कजीयो करके फोज ऊदयपुर जासी और वहा कजीया करेगा और ऊदयपुर से वापीस आकर जोधपुर ऊपर फोज बसी करसी और हाल मे फोज साहपुरे होकर जावेगी। जिससे कोट को बसेक जाबतो करवासी और राव मलारजी से अपनी तरफ की सब बात पकी कर ली गई है और राव मलार जी श्री हुजुर के कहने मुवाफक काम देवेगे और इसी साल म पपलाज पर डेरा से जोधपुर का पचोली रामकसन का कागज सारा समाचार राव मलारजी श्री हुजुर ने मालम किया। आप गणा राजी हुवा अर आपका वकील लालाजी न फरमायो के तु राजाजी ऊमेदसिंहजी न लखदो सो मैं अर ये दोनु आपका काम ने तैयार हा और आपके पास पंडित ऊतमरामजी ने भेज्या है सो सब हकीकत आपका काम की आप सू मालुम करेगा।'

मरहठो के आतंक से बचने के लिये उदयपुर और अन्य लोग भी उम्मेदसिंह के मुखापेक्षी थे इसकी एक झलक ख्यात में इस प्रकार है—

और इसी साल में कागज उदयपुर सु पचोली देवकरणजी लिख्यो अप्रच पहली दखण्या री फौज अठीन आव ही जणी थी श्री दीवाणजी रो खास दसखता रो रूको आपने बुलाबा रो वा खच वास्ते रुपया की हुंडी भेजी ही अर फागण सुदि २ फौज में से कागज आया अर मालुम हुआ जीमे दखण्या की फौज गुजरात की तरफ झुकी सबब नवाब फकरूदौला रै हर बीच्या रे म्हावो म्हाय कजियो हुवो सो बीच्या रुपया तीन लाख देणा कर दखणिया ने वा मलारजी ने वा कानी

बुलाया सो गुजरात जायगा अस्या समाचार मालुम हुआ जीसु श्री दीवाणजी होकम दियो सो राजाजी सिताब आवेगा जीसु कागज लिखार साहियो राजाजी की हजूर जल्दी भेज्यो सो त्योहार रा दिन करेन पाछै पधारै। अठा सु पधारया भी दिन थाडा हुआ है और दखणी भी मास एक तई गुजरात कानी रहसी तावै आपरी हजूर कागज वा माहयो भेज्या है।... इ कागज के सिर प श्री दीवाणजी लिखा—राजाजी री हजूर म्हारो जुहार मालुम हो। होली आप घर कीज्यो फेर हका आव न पधारज्या और इसी माल म चत सुदि ६ कागज कोटा से भट बेणीरामजी लिख्यो प्रपच अवार म्हाको रोलो हुवा जीमे आपका कवरा ने देही घणी करी अर रजपूती आछी गेली सो आपका घर को परवाडा पीढया सु छ जीसोहीज हाडोती म जाहिर कीदो। कठा तइ कवरा की तारीफ लिखा। रजपूती का गाढा छ।"

माधासिंह को जयपुर की गद्दी दिलवाने के लिये महाराणा की सहायतार्थ उम्मेदसिंह को बुलाया गया था उसका उल्लेख भी विस्तार के साथ ख्यात म है।

शाहपुरा पर राजाधिराज बखतसिंह की चढाई का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

"और इसी साल म माहाराज बखतसिहजी मय दखणीयो की फौज लेकर साहापुरे पर चढाव किया और मोजे भणाय मुकाम रहकर फतेगढ आकर डेरा किया और फतेगढ से काला बडो आकर मुकाम हुआ और किसनगढ से महाराज बाहादुरसिहजी को भी माहाराज बखतसिह ने बुलवाये सो आ सामिल हुये और माहाराज बाहादरसिहजी इन माहाराज साहब से बहुत दिला की दास्ती वो माहुबत रखते थे। इस सबब माहाराज बाहादरसिहजी न न आन देने शाहपुरा कु वो न करने भगडा शाहपुरा के महाराज बखतसिहजी का अरज मारुज किया मगर माहाराज बखतसिहजी ने सफा य ही हुकम माहाराज बाहादुरसिहजी का दिया जो के मैं शाहपुरे जाकर भगडा करु गा। मेरे दिल पै बहुत दिना से उम्मद हा रही है। जब माहाराज बाहदुरसिहजी ने फिर अरज किया जो कि माहाराज उम्मेदसिहजी काम आया बिना शाहपुरे पर कभी कब्जा आपका न होने देंगे और सोचना चाहिय आपकी सब फौज मारी जावेगी और कई बाता का नुकसान पदा होगा मगर माहाराज बखतसिहजी ने एक नही मानी। जब एक दो रोज के बाद माहाराज बखतसिहजी कु जहर हुआ और बकु ठ चले गये और सब सामान वो इरादा वहा का वहा ही धरा रहा। सच कहते हैं ससार रूपी बाग म तमाशा तो अजब है मगर फूल जब खिलेगा उसका मुरझाना भी

साथ ही है। महाराज बखतसिंहजी के वैकुठवास होने से सब लशकर आया था वा ही राह वापिस ली और महाराज बाहदुरसिंहजी का भी जाना परवाड हुआ।'

महाराणा अडसी के विरुद्ध स्थानीय जागीरदारों ने षडयंत्र किया, उसमें उम्मेदसिंह को साथ लेने का प्रयास किया पर उम्मेदसिंह ने मंजूर नहीं किया, यह बतात भी इस ख्यात में है।

रतनसिंह के विरुद्ध उम्मेदसिंह न युद्ध मे जाते समय शाह नारायण दास के निवेदन पर अपने वारिस की बात पत्र पर स्पष्टतया लिख दी—

"जब शाह नारायण दासजी ने अरज किया के पिछला क्या हुकम बखसते हैं जब दवात कलम मगाकर खास दसखता रुका लिख बखसा कि मैं काम आ जाऊ जिसके बाद मौजे कोठिया से रणसिंह को बुलवा कर तख्त नशीन कर देना। इसमे ज्यो सामिल रहगे वो मेरे स्यामखार हैं यह रुका लिखकर नारायणदासजी को बखसा और ज्यो ऊपर दरज किए दोए सरदारां क पीछे सिरदार सिपाह रखे थे उनको यह हुकम दिया जो के हमारे काम आने के बाद साह नारायणदासजी कहे वो मेरा खास रूका देखकर जिसको मैंने लिख दिया है उसको तख्त नसीन करना।'

क्षिप्रा नदी के किनार उम्मेदसिंह का युद्ध मे वीर गति पाने का शब्द चित्र ख्यातकार ने इस प्रकार अंकित किया है—

"इन महाराज साहब के ५३ तलवार वो पाच वास लगे और गनीमो ने शिकस्त खाया और गनीम मय फतूर को वहा से भगना पडा। जब यह महाराज साहब अपने घोडे से जमीन पै आये। जमीन पै आकर अपने खून से मट्टी के महादेव बीस २० तो बनाया और इक्कीसवा २१ बना रहे थे जिस वखत एक मरैठा सिपाई ने   वास की टकर के कहा के चीतोड अपने सिर के बधी हुई बताते थे वो कहा है? इस पर महाराज ने कहा के वो चीतोड हम अपने सिर के नीचे देकर सोते हैं।'

अंत मे उम्मेदसिंह के साथ काम आने वाले योद्धाओं की सूची तथा गीत दिया गया है। उम्मेदसिंह के परिवार, सतति आदि की विगत तथा उसके द्वारा करवाये गये निर्माण कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख किया गया है।

पूरी ख्यात मे उम्मेदसिंह का वर्णन बहुत विस्तार मे है। मेवाड के सदर्भ म १८वी शताब्दी मे जागीरदारो का आतरिक विग्रह और पूरे राजस्थान मे मरहठो के दखल के सम्बन्ध म इसमें बहुत उपयोगी सामग्री सकलित की गई है। ख्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। भाषा काफी अशुद्ध है।

१४६ राजाओ की पीढियें तथा परधानगी दीवानगी की विगत

१ राजाओ की पीढिये तथा परधानगी, दीवानगी की विगत, २ रा० शो० स०, ३ १३५०२ ४ ३१ × २४ ५ सेमी०, ५ १०६, ६ २१ ३२ ७ अनुमानत २० वी शताब्दी पूर्वार्द्ध   ८ अज्ञात, ९ हिन्दी, राजस्थानी, देवनागरी, १० ग्रथ मे सकलित कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ राठौड राजाओ रा दूहा –

राठौड राजाओ के सम्बन्धित दूहे कवित्त निबिद्ध है —

प्रारम्भ—

आसथान सोनग अज सीहा तणा सकाज
मुरधर ईडर दवारका रिध घणा दिन राज ॥१॥   (पत्र–१/२)

२ मडोर मे राजावा रा देवल है तीण री विगत –

मडोर मे स्थित राव मालदेव राजा उदैसिह, राजा सूरसिंह, राजा गजसिंह, महाराजा जसवतसिंह और महाराजा अजीतसिंह के देवलों का निर्माण कब किसने करवाया, जानकारी दी गई है। मडोर मे मरूजी की बावडी पर देवताओ (१८) की मूर्तियाँ विद्यमान उनकी सूची दी गई है।

३ राठौडों री पीढिया मे राजा हुवा, राजावो री जन्म तथा पाटबी विराजीया तथा धाम पधारिया तिण री याद –

मारवाड के शासको (राव सीहा से महाराजा सरदार सिंह के जन्म, गद्दीनशीन, सतति और मृत्यु के सवत तिथियाँ आदि दी गई हैं। यथा—

रावजी सीहाजी सेतरामजी रा बेटा जनम स० ११६६ रा मीती काती सुद ३ री पाट कनोज मे बैठा स० ११६७ मीती माध सुदि ५ धाम पदारिया कनोज सु गोमदाणे गढ करायो जठे सवत १२३१ रा मीती   ।"   (पत्र–१५)

४ परधानगियां ईनायत हुई जोधपुर मे मुसायबा मे तिण री विगत –

जोधपुर मे ओसावल तथा राजपूत जाति के लोग प्रधान नियुक्त हुए, उनको गाव इत्यादि दिये गये उसका विवरण दिया गया है। यथा—

१ मडारी नारमल समरावत पालसे कीयो समत १५१५ रा असाढ सुद ३ ताई।

२ वट बरजाग भीयोत ने समत १५१६ मे ही इनायत कीयो नै गाव १४० सु रोयट दीवी पट सु तागीरायत हुई समत १५३१ रा।



अन्तिम—

"४२ महाराजा श्री जसवंतसिंघजी (द्वितीय) संवत १६२६ रा मीती असाढ सुद ५ ने रात रा राईकाबाग मे सीरापाव संवत १८६७ रे उजव दीयो पोकरन ठाकुरा ने ईनायत।" (पत्र–३)

५ दीवाणगीया ईनायत हुई जोधपुर मे उण री विगत –

जोधपुर मे दीवानगी आदि इनायत की गई उसका विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

१ भंडारी नारमल अमरावत मुलक रो काम कीयो राव श्री जोधाजी री वक्त में।

अन्तिम—

१३७ मेतो बीजेमल रा बेटा सीरदारमल र दीवाणगी १६४६ रा मीता भादरवा सुद १३ ने राईकाबाग मे हुई। (पत्र–७)

६ बगसीयाँ ईनायत हुई जोधपुर में तिणरी विगत –

जोधपुर मे बक्सी आहुदे आदि दिये उसका विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

१ पचोली हरीकिसन रामचदोत चमरीया ने सं० १७६५ रा मीती सावण सुद १३।

अन्तिम—

२८ सीघवी करनराज सुरज रै सं० १६३१ रा मीती चैत वद ६ ने समस्त राज रो सोरज हुवो। (पत्र–१$\frac{1}{2}$)

७ बीकानेर रे महाराजा साहब री विगत –

इसमें बीकानेर के राजाओं (राव बीका से गंगासिंह) के जन्म, राज्यरोहण संतति मृत्यु के संवत इत्यादि के अतिरिक्त कुछ घटनाओं पर भी बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। (पत्र–६)

८ किशनगढ के महाराजा साहब री विगत –

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह से महाराजा सादूलसिंह (किशनगढ दरबार) के जन्म, राज्यारोहण, संतति, मृत्यु के संवत इत्यादि कुछ घटनायें वर्णित हैं। (पत्र–४)

९ जयपुर उदयपुर के राजाओ री विगत –

दुलहराव से राजा कुंतल तक वंशावली दी है फिर राजा कुंतल से महाराजा माधोसिंह (जयपुर) तक के राजाओं की संतति आदि का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त चित्तौड के शासक बापा रावळ से महाराणा फतेसिंह तक वंशावली अंकित है। (पत्र–४$\frac{1}{2}$)

१० अलवर के राजाओ की पीढियां –

अलवर के शासको के पूवज उदयकरन से महाराजा मगलसिंह तक की पीढियाँ और कुछ राजाओ की सतति आदि का विवरण है। (पत्र–१)

११ बूदी री तवारीख –

बूदी के हाडा राजाओ की वशावली राव विष्णुसिंह तक दी है कुछ राजाओ की सतति व कुछ घटनाओ का वृत्तात भी दिया है। (पत्र–८)

प्रारम्भ—

'बूदी वाले चुहान कोम की हाडा साप म अजमेर के राजा माणकचद के पोते असीतपाल की औलाद ।"

१२ राठौडो री ख्यात –

इसमे मारवाड के राठौडो के राज्य के सस्थापक राव सीहा से जसवतसिंह प्रथम तक राठौड राजाओ के जन्म, राज्यारोहण, मृत्यु के सवत, सतति आदि कुछ घटनाओ का विवरण सक्षेप मे दिया गया है।

प्रारम्भ—

"कनवज सु सीहोजी स० १२१२ रा काती सुद १२ ने द्वारकाजी री जातरा करण नु पदारिया आसोज सुद ७ चैत रा कीवी पाछे पाटण पदारि ने गुजरात री सोळखी मूलराज मदत कर लाखा फुलाणी उपर गया काती सुद ६, लाखा फुलाणी ने आदमी ५०० सु मारिया ।" (पत्र–३८)

ग्रन्थ मे गुलाम वश और खिल्जी वश के शासकों का विवरण भी सक्षेप मे दिया गया है।

ग्रथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। बहुत से पत्र खाली पडे हैं, ग्रथ पर गत्ता है।

राजस्थान के राजवशो और प्रशासनिक प्रमुख अधिकारियो की जानकारी के लिये यह ग्रन्थ उपयोगी है।

१४७ गुणसार (गुणसागर) महाराजा अजीतसिंह जोधपुर

१ गुणसार (गुणसागर) महाराजा अजीतसिंह जोधपुर, २ पु० प्र०, ३ १५ तथा १६, ४ ३३×२५ ५ सेमी, ५ १६०, ६ २५-२७ ७

वि० स० १७६९ ई० सन् १७१२ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ 'गुणसार' में अनेक रचनाएँ संग्रहित है।[1]

प्रारम्भ—

'श्री परमात्मने नम श्री गणेशायनम श्री म्हामाय हींगुलाजजी सदा सहाय अथ श्लोक नवा महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंह कृत गुणसार ग्रंथ लिख्यते ॥ अथ गाथा ॥

गणपति गौरी सुतन लाल वरण तुझ लबोदर।
सिधा बुध प्रसन सुग्यान, नागदेव तुम्ये नम ॥१॥
तब गज वदन गणेस दसन मेक प्रसन लबोदर।
रिधसिध देय सुग्यान जै जै देव तुम्य नम ॥२॥

अंतिम पुष्पिक का अंश—

वह यह श्रवणन सुनें वलि देय करि माय।
नहचे उण मानव तणा पाप दूर होय जाय ॥१॥
प्रथम वरण शृगार को राजनीत निरधार।
जोग जुगति या मे सब, ग्रंथ नाम गुणसार ॥२॥

पुष्पिका—

संवत १७६९ वर्षे फागुण वदि त्रयोदशी दिने गुणसार ग्रंथ श्री महाराजधिराज महाराज श्री अजीतसिंहजी कृत गुणसार ग्रन्थ सपूर्णम् ॥"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि में लिखा गया है। पत्र बारीक काम में लाये गये हैं, ग्रंथ में करीब अन्त के आध पत्र रिक्त पड़े हैं। ग्रंथ पर जीर्ण कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। अनुच्छेद पर पत्र संख्या अंकित है।

महाराजा अजीतसिंह की साहित्यिक कृतियों के परिचय हेतु देखें परम्परा रा० शो० स० अजीत विलास अंक २७ पृष्ठ १२३ पर गोपालसिंह का लेख। उस समय की साहित्यिक परम्परा और सामाजिक मान्यताओं के अध्ययन के लिये ये कृतियाँ उपयोगी हैं।

---

१ देखें परम्परा रा० शो० स० ग्रंथ उद्धार ग्रंथ भाग १३ (पृ० १२) सम्पादकीय डॉ नारायण सिंह भाटी।

१४८ वीसलदेव चहुग्राण रास[1]

१ वीसलदेव चहुम्राण रास कवि नाल्ह २ रा० प्रा० वि० प्र० ३ २४४८५, ४ ११×२५.५ सेमी० ५ २५, ६ १२-१३, ७ वि० स० १७७३, ई० सन् १७१६ ≈ ग्रभयधम, ८ राजस्थानी देवनागरी, १० यह राजस्थानी का महत्वपूर्ण ग्रथ है। इसम अजमेर के शासक चौहान वीसलदेव का इतिवृत ग्रकित है।

श्री गणेशाय नम

गवरि का नद त्रिभुवन सार, नादभेदई थारड उदर मझार
एक दत उमुणि झलहलइ, मूसका वाहण तिलक सिंदूर,
कर जोडी नरपति भणइ जाणि करि राहणी ज्यू तावउ सूर ॥१॥

रचनाकाल के बारे मे लिखा है[2] —

सवत सहस ततहतरड जाणि, नाल्हकवी सर सिरसईय वाणि,
गुण गुथा चउहाण का, सुक्ल पख पचमी सावण मास
रोहिणी नक्षत्र सोहामणउ, सुदिन गिणीजो इमी जोडिउ रास ॥६०॥

पुष्पिका—

"इति श्री वीसलदेव चउहाण रा मती रास पूण समाप्त ॥ सवत १७७३ वर्षे मीती कात्ती वदि ११ दिने वार अदीत पूरी लीयी तीज रास री चोमासे म लीपी प० श्री महिमासारजी तत् शिष्य अभय धम लिपत ॥ वाचे भणे गुणे तिन ने वदना धरम लाभ ॥ श्री श्री श्री ।"

प्रस्तुत ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि सुवाच्य है। पत्र सब खुल हैं, प्रत्येक पत्र पर पत्र सख्या ग्रकित है।

१४९ ग्रजीतोदय

१ ग्रजातोदय (भट्ट जगजीवन), २ पु० प्र०, ३ ४९४ (सस्कृत सूची), ४ १३×२७.४ सेमी०, ५ ३१२, ६ ८, ७ १९ वीं शताब्दी का मध्य, ८ ग्रज्ञात ९ सस्कृत, देवनागरी, १० इस वृहदाकार ग्रथ मे जाधपुर के

---

१ प्रकाशित नागरी प्रचारी सभा।
२ रचनाकाल के बारे म इतिहासकारो म मतभेद है देखें राजस्थानी श०० कोश प्रथम खण्ड पृ० ६४-१००।

महाराजा अजीतसिंह के जीवनकाल की सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

श्री नाथायनमः श्री सारमेवदता ॥ शार्दूल विक्रीडित छंद ॥ प्रोधन्नूतन यौवनान्वितमया, पृक्त सत्य राधया।

श्री कृष्ण ज्जलद छवि कम्पापाङगच्छटा मज्जुल।

वृन्दारण्यनिकुंज धाम निरत गोपीगणाराधित ॥१॥

अन्तिम भाग व पुष्पिका—

तत्रोषित्वा त्रिरात्रं तदनु समधि गम्यैव राधारम्यकुण्ड स्नात्वा

गोवर्धनाद्रि विधि वदपि तथा पन्य दिल्लो भगात्समगात् ॥४०॥

"इति श्री मद जितोदय महाकाव्य भट्ट जगजीवनि कृते मय नृपोद्वाहो नाम द्वा त्रिंशत्तम सर्ग ३२ समाप्तोयम्।"

यह एक वृहदाकार ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है, लिखावट साफ सुथरी है। प्रत्येक पत्र पर पत्र सख्या अंकित है। पत्र सब खुले हैं तथा काफी जीर्ण हैं। घटनाओं के विस्तृत वर्णन होने तथा ग्रंथ उक्त महाराजा के समय में ही लिखे जाने से तत्कालीन इतिहास अध्ययन के लियेतथा उस युग की मान्यताओं, विचारधाराओं एवं संस्कारों को समझने हेतु उपयोगी है। रेऊ तथा ओझा ने अपने इतिहास में इसका उपयोग किया है। अब यह ग्रंथ महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर द्वारा अंग्रेजी साराश सहित प्रकाशित कर दिया गया है। इसमे समस्त नामानुक्रमणिकाए तथा विस्तृत भूमिका भी है।

———

सातवा अध्याय

ऐतिहासिक वहियें

१५० महाराजा श्री अजीतसिंह के समय कपडा रा कोठार री वही

१ क्रम सख्या—१, २ वही का नाम—महाराजा श्री अजीतसिंह के समय कपडा रा कोठार री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२८०, ५ लिपि समय—सवत् १७७७, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा अजीतसिंह क काल मे कपडा के काठार एव उनकी खरीद म खच हुए रुपयो का विस्तृत विवरण है।

इस वही से उस समय म प्रचलित विभिन्न वस्त्रो व कपडो के बारे मे तो जानकारी मिलती ही है, साथ ही साथ राजघरान के रीति रिवाजो विभिन्न अवसरो पर दिय जाने वाले वस्त्रो प्रसिद्ध स्थानो के कपडे रखन वाले दुकानदारो वस्त्रा को रगने वाले रगरेजो और सुनहरी (गोटा) लगान वाले कारीगरो कपडो के मूल्य कपडो के नामो, कपडा को खरीदने के लिए प्रचलित मुद्रा आदि के बारे मे भी पर्याप्त जानकारी मिलता है।

इसमे कई प्रकार के कपडो का विस्तृत विवरण आया है। पाघ कीमखाव पातिया, दुपट्टा, बाला चुदरी आसावरी, कीरमची घाघरा, काचली चोली, पाट जामा, सरेजन, बागा के रूप म उल्लेख है। मलमल, छीट मखमल लटठा रेशम आदि का कपडो के रूप मे वणन है। कोर सुनहरी गोटे का भी उल्लेख है। कपडो को नापने के लिए 'गज' का उल्लेख आया है। मुद्रा के रूप मे रुपया, आना पैसा, पाई आदि का उल्लेख है।

वस्त्र

पाघ –

इस वही मे विभिन्न प्रकार की पाघा का उल्लेख आया है, जैसे—पाघ मुक्नी, पाघ पट्टी, पाघ सफेद मुक्नी, पाघ लाल, पाघ मुलमुल, पाघ कसूमल, पाघ कोमली, पाघ छीट की पाघ ऊटठे की पाघ बादळाई आदि।

ये पाघें राजघराने के रीति रिवाजा के अनुसार विभिन्न अवसरा पर राज घराने से सम्बंधित लोगा व अन्य लोगो को बधवाई जाती थी। विवाह, सगाई वष गाठ व अन्य अनेक अवसरा पर पाघें भेंट की जाती थी। यहाँ तक कि महाराजा साहब को भी कुछ विशिष्ट व्यक्ति नजराने के रूप मे जरी की पाघ भेंट करते थे ऐसा भी उल्लेख इस वही मे आया है।

कुछ विभिन्न प्रकार की पाघा उनकी खरीद के स्थाना तथा विभिन्न अवसरा पर भेट किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

१ पाघ बादळाइ सजजवा खरीद धरम चन्द ११)

पत्र सख्या—१ ए

८१" पाघ बादळाई कसुमल गुजरात सू अनोपसिंह मेलीया—

२१७॥) पाघ २६ ७॥)

१३५) पाघ १६ ८॥)

४१) पाघ ४ १०)

७४॥। –) पाघ ७ १०॥≡)

पत्र सख्या—१ ब

वष गाठ के अवसर पर पाघें भेंट करने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

'१ पाघ बादळाई लपादार खरीद मु० जोधपुर
सामीदास नागौरी
१ कवर श्री रतनसीघजी रे वसर गाठ रा सीरपाव"

पत्र सख्या—३ ब

कुछ रस्मो पर राजघराने के कमचारिया को भी पाघें इनायत की जाती थी यथा—

५ पाघ बादळाई कसुमल वगसीस
१ जैतसिह
२ नाजर माहाराम

१ ब्यास भीखो
१ पीरागदास रोजबाई"

पत्र सख्या—४ ब

कुछ अवसरो पर किलेदार, किलेदार के सम्बधियो मनसबदार, सहीवाल (घोडा सम्हालने वाला) आदि को भी पाघें भेंट की जाती थी। विदाई के अवसर पर सेवामुक्त चौधरी को पाघ बाधकर उसका यथोचित सम्मान किया जाता था, यथा—

"१ महा सुद ५ सनवार मुकाम मेडता
पाघ १ छीट री, खरीद गुलाबचन्द
१ गाव भावी रो चौधरी धीज उतरियो
तरे सीकदार दयालदास बधाई"

पत्र सख्या—२१ ब

सम्मान के लिए राजपूतो को कपडा इनायत होता था यथा—

"९० कपडो मोजुदान श्री मोहन साहब ने इनायत हुयो तीण ९० कवर साहबा ने

१० कवर श्री अभेसिंघ जी
१० कवर श्री बखतसिंघ जी
१० कवर श्री आनदसिंघ जी
१० कवर श्री जोरसिंघ जी
१० कवर श्री रायसिंघ जी
१० कवर श्री परतापसिंघ जी
१० कवर श्री रतनसिंघ जी
१० कवर श्री रूपसिंघ जी
१० कवर श्री सुलतानसिंघ जी

पत्र सख्या—२२ ब

कीमखाब –

बही मे कीमखाब वस्त्र का भी उल्लेख है। यह कीमती वस्त्र होता था और किसी विशेष अवसर पर विशिष्ट व्यक्तियो को इनायत किया जाता था। एक उदाहरण द्रष्टव्य है, यथा—

[illegible] के [illegible] का [illegible],

वस्त्र

पाघ —

[illegible]

मुकनी, प

कोमली,

[illegible] के काम करने वाले [illegible] को भी [illegible] भेंट किये जाते [illegible]

ये

घराने में

[illegible] है—

बप गाठ

महाराजा

करते थे

[illegible]

[illegible]

[illegible] में'

कु

पर भेंट [illegible]

[illegible] को (हाडों) का भी उल्लेख है। पातिये कई तरह [illegible] पोतिया [illegible], पोतिया कसूमल, पोतिया [illegible] पोतिया [illegible] आदि। पोतिया के [illegible]

[illegible] है—

[illegible]

बप

कुछ

थी यथा—

बालाबंदी साफा (चुंदडी) का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"१ बालाबंदी चीरमजो बेलदार

वग सीरपाव राव खीवसी राजा रो

१ तोर रावल बुधसीध जेसलमेर रे मेलावो' पत्र सख्या—७६ अ

दुपट्टा –

किसी विशेष खुशी के अवसर पर दुपट्टा इनायत किया जाता था ये कई प्रकार के होते थे, जैसे—जरी का दुपट्टा, कसुमल दुपट्टा, दुसालो आदि। जरी के दुपट्टे का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"२ मगसर सुद ३ ब्रसपतवार मुकाम मेडता

२ दुपटा जरी श्री हजूर मगाया

१ दुपटो १ चीगणाखाती श्री दुपटा

१ गावणीया ने इनायत

१ नदलाल ने भाव रो इनायत" पत्र सख्या—१०८ ग्र

वर्ष गाठ के अवसर पर कपडे वितरित किये जाते थे, यथा—

"१ आसावरी चीरमची कसूमल वग

खरीद करमचंद गज ६।≡ ६२।।।≡

२४।)

१ कवर श्री रायसीघ रे बरसगाठ रा वागा ने" पत्र सख्या—८३ अ

वर्ष गाठ पर वागा भी भेंट किया जाता था, यथा—

१२।। कवर श्री ग्रानदसीघजी रे वागो १ पत्र सख्या—८८ अ

यही मे लहगा व साफो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

४६ खालसा री बकारण ४६ अरगीया

४६ घाधरा ४६ फेटीया पत्र सख्या—४५ ब

उस समय बादलाई साडी का प्रचलन था, यथा—

४ वादलाई साडी

२ राजाजी रे बहण ने

१ साडी रूपेदार

१ साडी मेहताबी पत्र सख्या—१०४ ग्र

यही मे काचली, कुरती आदि का भी यथास्थान उल्लेख है।

"कीमखाव खरच—
६ सहेलीया ने, नग १
२) पडदायतीया ने, नग १"

पत्र सख्या—४५ ब

कमठे के काम करने वाले गजधरो को भी कपडा भेंट किये जाने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"मगसर सुद ६ जुगल कीरमची बग
१ अमीन ने
१ गजधर केसा ने
१ गजधर आफाय ने" पत्र सख्या—४८ ब

पोतिया –

इसमे पोतियों (साफो) का भी उल्लेख है। पोतिये कई तरह के होते थे, जैसे—पोतिया लछेनार, पोतिया गुजराती, पोतिया कसुमल, पोतिया कीरमची, पोतिया जरीबेल, पोतिया रेशमी लाल बेलदार आदि। पोतिया के खरीदने का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"१०४ पोतीया खरीद गुजरात भग, अनोपसीघजी मेलीया
२ पोतीया लछेदार
५६॥) पोतीयो) १ गज ५
४८) पोतीयो १ गज ५" पत्र सख्या—५५ अ

पोतिये इनायत किये जाने का जिक्र इस प्रकार है, यथा—
"पोतीये इनायत
१ सावण वद ४ मुकाम जोधपुर
१ पोतीयो कसुबल बग सीरपाव ४०
अजबसीघ रे सीरपाव
१ नाजर अणदराम ने ईनायत" पत्र सख्या—५८ ब

रेशमी पोतिया व उसकी कीमत का उल्लेख द्रष्टव्य है—
'आसोज सुद १२ मुकाम मण्डोवर
२ बग खरीद सोमीदास
२ पोतीया रेशमी लाल
बेलदार ३॥)" पत्र सख्या—७४ अ

बालाबन्दी साफा (चुन्दडी) का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"१ बालायन्दी कोरमजी बेलदार
बग सीरपाव राव सीवसी राजा रो
१ तोर रावल बुधसीध जेसलमेर रे मेलावो" पत्र सख्या—७६ अ

दुपट्टा –

किसी विशेष खुशी के अवसर पर दुपट्टा इनायत किया जाता था ये कई प्रकार के होते थे, जैसे—जरी का दुपट्टा, कसुमल दुपट्टा, दुसालो आदि। जरी के दुपट्टे का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"२ मगसर सुद ३ ब्रसपतवार मुकाम मेडता
२ दुपटा जरी श्री हजूर मगाया
१ दुपटो १ चीगणालानी श्री दुपटा
१ गावणीया ने इनायत
१ नदलाल ने भाव रो इनायत" पत्र सख्या—१०८ अ

वर्ष गाठ के अवसर पर कपड वितरित किये जाते थे, यथा—

"१ आसावरी कीरमची कसुमल बग
खरीद करमचन्द गज ६। ≡ ६२॥। ≡
२४।)
१ कवर श्री रायसीघ रे बरसगाठ रा वागा ने" पत्र सख्या—८३ अ

वर्ष गाठ पर वागा भी भेंट किया जाता था, यथा—

१२॥ कवर श्री आनदसीघजी रे वागा १ पत्र सख्या—८८ अ

बही मे लहगा व साफो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

४६ खालसा री बकारण ४६ अरगोया
४६ घाघरा ४६ फेटीया पत्र सख्या—४५ ब

उस समय बादलाई साडी का प्रचलन था, यथा—

४ बादलाई साडी
२ राजाजी रे बहण ने
१ साडी रुपेदार
१ साडी महताबी पत्र सख्या—१०४ अ

बही मे काचली, कुरती आदि का भी यथास्थान उल्लेख है।

कपडे

मलमल –

बही म दो रगो की मल्मल का उल्लेख आया है ।

१ मलमल कसुमल

२ मलमल सफेद

बही मे कसुमल का उल्लेख इस प्रकार है—

'७। मलमल १ कसुमल गज १५॥ =

बर ॥ ☰ ॥

७॥ कवर श्री आनदसीघजी रे दूपटा जरी सेद-

नोमा आणे वरस गाठ रा बागा का ७॥ दाम ६ ☰ पत्र सख्या—६४ ब

राजघराने की तरफ से छोटे इनायत करने के लिए खरीदी जाती थी। बही म विभिन्न प्रकार की छीटो का उल्लेख आया है। कुछ छीटो के नाम इस प्रकार है—केसरिया छीट मोलाखी छीट, लाल छीट, सफेद छीट, सुदामी छीट, बदरी छीट, गुजराती छीट, मुलतानी छीट, बिदामी छीट, गुलाबी छीट आदि-आदि। इनमे मुलतानी छीट प्रसिद्ध थी।

बही के अनुसार छीट इनायत किये जाने का उदाहरण द्रष्टव्य है—

"१ छीट पो केसरिया

२ दफ्तरी देवराज बीकानेर रा ने इनायत

वग अमीनन १५॥ =)" पत्र सख्या—१५४ ब

इस बही मे मखमल का भी उल्लेख है। यह ठाकुरजी के सिंहासन को सजाने के लिए, तलवार की म्यान पर लगाने के लिए घासिये तथा रजाइया बनाने के लिए, बठने की जाजम बनाने के लिए काम मे ली जाती थी।

ठाकुरजी (कृष्ण भगवान) के सिंहासन को सजाने के लिए मखमल काम मे ली जाती थी यथा—

"५॥ श्री ठाकुर जी रे सिंघासण रे

५॥ मुखमल कासानी

२॥। देवजुलणी इग्यारस री डोलोरी , पत्र सख्या १६६ अ

वषगाठ के अवसर पर ब्राह्मणो, ढोलियो वेश्याओ, गरीबो आदि को कपडा इनायत किये जाने का उल्लेख भी इस बही मे है।

कपडो को नापने के लिए 'गज" का उपयोग किया जाता था।

मुद्रा मे रुपयो, आनो, पैसो एव पाइयो का प्रयोग होता था।

इस वही से विभिन्न प्रकार के कपडो के महत्व के बारे मे जानकारी है, इसके साथ ही राजघरान के रीति रिवाजो से हम राजस्थानी सस्कृति के वशिष्टय को भी जान सकते है।

१५१ महाराजा तखतसिंह री राणी राणावत रै मंदिर तालके री वही

१ सग्रह क्रम सख्या—५१६, २ वही का नाम—महाराजा तखतसिंह री राणी राणावत रै मदिर तालके री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या—५६४, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६२६, ५ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत द्वारा मन्दिरो मे भेजी गई सामग्री का विवरण दिया गया है। यत्र-तत्र ब्राह्मण भोज का भी उल्लेख है। मन्दिरो मे भेजी गई सामग्री एव ब्राह्मण भोज पर खर्च हुए रुपयो का वर्णन मुख्य रूप से हुआ है।

इस वही से प्रतीत होता है कि राणावत रानी ने अपने गृहस्थ जीवन के साथ साथ धार्मिक जीवन मे भी रूची ली है। समय समय पर मन्दिरो मे पुजापा, कपडे, आभूषण व अन्य सामग्री भेजने एव ब्राह्मणो का भोजन करवाने से प्रतीत है कि राणावत रानी ने धर्म पुण्य मे विशेष ध्यान दिया है।

इस वही मे विभिन्न देवी देवताओ के मन्दिरो म विभिन्न अवसरो पर भेजी गई सामग्री भेंट किये गये रुपये आदि का पर्याप्त आलेख है—

फागण मास में—

१) मादैवजी गढ ऊपर राजसाल मे वीराजे तीणारे सीवरात री भेंट रो दीयो, बद ६

१-)॥। मादव जी श्री पारर्थेश्वर री पुजन ताई' पत्र सख्या—१ ब

वही म शरद पूर्णिमा के अवसर पर मन्दिरों मे भेंट किये रुपयो का आलेख दृष्टव्य है—

"१) आसोज रा मास म सुद १५ श्री नाथजी गढ ऊपर राजसाल मे वीराजे तीणारे सरद पुनमरा रा उछव री भेंट रो

१) गढ ऊपर उछव रो दीयो" पत्र सख्या—५ अ

मन्दिरो मे भेजी जाने वाली पोशाको का वर्णन भी आया है। वही मे पोशाको की सिलाई का वर्णन इस प्रकार है यथा—

"॥) पोसाया सोवाई तीणरो मुकरदे रुपयो ॥) दीयो हस्ते सेवग पुनीयो
पाशाको पर कोर गोटा भी लगाया जाता था, यथा—

'कपड़ो ने कोर गोटो लयो कपड़ा रा कोठार ऊ" पत्र संख्या—५ म

पुजारी ब्राह्मणो को भेंट के रुपये दिये जाने का उल्लेख भी है—

२) भादवा मे सुद ३ गाजी श्री चुतरभुज जी महते बीराजे तीणारे सेवग पईतरा भागसरा पईतरा ने रासीयो प्रसाद लेने भायो तीणा ने भेंट रा २) हस्ते सेवगा" पत्र संख्या—१५ ब

बही मे मन्दिरो मे पुजापे की सामग्री मिठाई, देवी-देवताओं के आभूषण, वस्त्र, कपड़े आदि भेजने का यथा स्थान उल्लेख है। इसमे विभिन्न उत्सवों, पर्वों व त्योहारों की भी जानकारी मिलती है। इन उत्सवो एव पर्वों पर राजघराने मे सम्पन्न किये जाने वाले विभिन्न धार्मिक रीति रिवाजो के बारे मे भी उल्लेख हुआ है।

बही म नवरात्रि के पव पर रुपया की भेंट तथा मिठाई खरीद का उल्लेख आया है, यथा—

१।।।)। मीगसर रा माम मे भामोजी नवरता री थापना रे होम तानुके मीठाई खरीद कदोई कनीराम री तीणरा सुद ३" पत्र संख्या—१६ म

वैशाख माह म देवी दुरगा की स्थापना का पाठ किया गया। उसम खच हुए रुपयो का वर्णन इस प्रकार है—

२) जोसी बालकीसन दुरगाजी रो पाठ कीयो ताई तीणारे रोजगार पैटीया दीया हस्ते सुद वद १०

☰)। नीरम जळ रा कळस मगाया" पत्र संख्या—२१ म

सूय भगवान के स्नान मे खच हुए रुपया का विरण द्रष्टव्य है—

१।)।।। श्री लालजी मामवा री तरफ सु श्री सुरजजी रो दान करायो, मीती वद १४ तीण तालुके

।।।)।।। वद १४ मे

।।) हेम री टीकडी १ नग सुनार अमरचन्द री तीण री

।) वय सुपारी सुनार अमरचन्द री

१।) चनएा सुपेद खरीद तीणरी

२१।। ≈) अन रा कोठार सु चावल घी सीर
७।) ७

। कपडा रे कोठार सु लगे गज ॥ –)

इसी तरह से मगलजी, सुखाजी, कँवजी, सनीसरजी, राहाजी आदि की दान की सामग्री भी दान मे देने का वर्णन है।

यही तत्कालीन धार्मिक मान्यताओ, खाद्य सामग्री, रीति रिवाज आदि की दृष्टि से उपयोगी है।

१५२. महाराजा तख्तसिंह री राणी राणावत री बहिन रे विवाह री वही

१ सग्रह क्रम सख्या—७३७, २ वही का नाम—महाराजा तख्तसिंह री राणी राणावत री बहिन रे विवाह री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—४५, ६ लिपि समय—वि० स० १९२४ फाल्गुन वद ८, ६ विशेष विवरण—महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत (झालामण्ड) की बहिन प्रताप कुँवर के विवाह के अवसर पर राणावत रानी ने राजघराने की ओर से विवाह की सम्पूर्ण सामग्री भेजी। आलोच्य वही मे भेजी गई वैवाहिक सामग्री के विस्तृत विवरण के साथ विवाह की सामग्री म खर्च हुए रुपया का उल्लेख है।

रानिया अपनी बहिनो के विवाह म राजघरान की ओर से सम्पूर्ण वैवाहिक सामग्री भेजती थी। ऐसा उल्लेख इस वही मे है।

वही के अनुसार विवाह के अवसर पर प्रीतिभोज की सामग्री, आभूषण, वस्त्र व दहेज का अन्य सामान भेजा गया।

प्रीतिभोज मे भेजी गई सामग्री का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"फाल्गुन वद ७
१३ आटा रा थेला
१ बेसण रा थेला रो कठा मेली ने आयो
१ लूण रो थेलो
१ चीणा री दाळ रो थेलो
१ मीरचा लाल रो थेलो सीलीयो आयो" पत्र सख्या—२ ब

राजघराने की ओर से दहेज के निम्न बर्तन व अन्य वस्तुए भेजे गये—कळस, थरी, परात, थाल, कटोरदान लोटा, कासी के बाटके, थरी, झारा, दूकनिया, थालिया, कुडचिया, चरु, कुडी, लोटा, दीवडा, प्यालो, चालणी, चूला, तवा, बाजोट, डोरिया, चौपटा आदि।

सरकार की गाडी मे भेजे गये वस्त्रो का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

"८ दुपटा केसरिया चोलीदार
१ दुपटो कसुमल कीरण जवारा रो

२ साटिया २ कसुमल
१ दुपटो सीयादार जालो रा लपो जवारा रो
१ पाचनो कसुमल कबीयादार गोटा रो
१ चमरी १ मोन री छापा री गोटा रो
२ मदी पागा २
१ लवोर नवरी १ हलकी लवोर टेसी
२ दुपटो कसुमल सीनगाप हलको
१ १
१२ पेच केसरिया २ २ सुफेद ५ गुलाबी
४ ३
६ चुदडिया नग वतीर रा छापा री पत्र सख्या—४ म

झालामण्ड भेजे जाने वाले कुछ दहेज के बिस्तरों का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

"१ बीटो १ मे पथरणो वगैर डोरा सुधा
१ पथरणो खुमखी मीसरू रो हासीया रो खोळी सूधो
१ रजाई १ कसुमल खोळ सुधो" पत्र सख्या—१२ म

इनके अतिरिक्त जाजम, चानणीया पडदा आदि भी भेजे गये।

बही म झालामण्ड व अन्य गावो से आई जीनस का भी उल्लेख है।

राणावत रानी की ओर स अपनी बहिन की शादी म पर्याप्त वैवाहिक सामग्री भेजी गई। इस प्रकार वैवाहिक सामग्री भेजना राजघराने की परम्परा रही है।

१५३ महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत री कमठा री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—७८४, २ बही का नाम—महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत री कमठा री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—८१ ५ लिपि समय—१६१७ स १६१८, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही म महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत ने गोल मे नया नोहरा (परिचारिकाओ के रहने का स्थान) बनवाया उसके कमठे का विवरण दिया गया है। इसम कमठे के उपयोग मे ली गई सामग्री का मूल्य, कारीगरो व मजदूरो की मजदूरी, चूना, पत्थर, इंधन व कमठे की अन्य सामग्री का भी यथास्थान उल्लेख मिलता है।

बही मे मजदूरो को दी जाने वाली मजदूरी, कमठे मे काम आने वाली सामग्री का पर्याप्त उल्लेख है। मूंगीया नपवाने (छत पर कंकरी बिछवाने का नाप) को मजदूरो को जो मजदूरी दी गई उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"४॥= मूंगीयो नपायो भादवा वद २
१ माली गीरदारी छब्रोलियो ४
१ माली सीरामो सुधार छवोलिया ४
। माली बीरदीयो छवोलियो १॥
१॥ माली जोरा री वऊ छबालियो ६
।॥ मालण ऊमेदी छबोलियो ३

१८॥ पत्र सख्या—१३ ब

छत कूटने वाले मजदूरो को उस समय प्रतिदिन एक आना व कुछ पैसे मिलते थे। इसका प्रमाण बही मे इस प्रकार ज्ञात होता है, यथा—

सावण सुद १४ छात कूटे तीणा ने हीसाब दीनो
१४) सगस १४ सावण सुद १४
१) सीताराम जोदा रो
१) मगनो भीया रो
× × × × × ×
१) चदो माला रो
१) फकीरो नानग रो
१) मोयतो मुला रो
१) छोगो लखा रो
१) रामबगस मोतीलाल रो" पत्र सख्या—१० ब

बही मे पत्थरो की घडवाई की मजदूरी का भी उल्लेख है यथा—

"चैत मे भाठो घडीयोडो
१३।। कडाऊ ईक्‌रवा घडीयोडा
५ वद ६ लबा गज ५॥ चोडा गज ॥ जाडा २
६॥ सुद १५ लबा गज १२॥ चोडा गज ॥ जाडा २

१३॥ पत्र सख्या—१ म

वही में कंकरी, मुरड, चूना, खड्डी आदि का उल्लेख है। मट्टी को पकाने के लिए छाणें (गोबर का ईंधन) उपयोग में लिये जाते थे।

वही के अनुसार पौन चमालीस रुपये में सत्तर छीणें (पटियें) आती थी, यथा—

४३।।।) छीणा नग ७० मेलो कौंमरा दासा मोरी ऊपर

६७ २ १ पत्र संख्या—७ ब

वही में चुनगरा को प्रतिदिन सवा रुपया मजदूरी के दिये जाने का उल्लेख है, यथा—

"चुनारा री हाजरी

अबदुल पीरखास रो

५ वद १४ वद ७ वद १ वद २ वद ३ वद ५

१। १। १। १। ० १।

पत्र संख्या—३१ ब

10978
9।4।92.

तत्कालीन समय में पत्थर का मूल्य इस प्रकार था, यथा—

मेमदा री खान रो भाटो अणघड

=) चोको १ आयो

=।।) नाल री मोरी री मवलीया २ नीचगी लबो गज ३ जाडो गज १ चवडो गज ।।

× × × × × ×

२१।।। ≡) छीणा नग ४५ अणघडमोडी

।।। ≡) नाल री मोरी री छीणा नग ३" पत्र संख्या—७२ ब

इस बही में कमठे की सामग्री का अच्छा उल्लेख है। कमठे का काम करने वाले मजदूरा, कारीगरा, पानी लाने वाला की मजदूरी के साथ साथ कमठे के उपयोग मे लिये जाने वाले पत्थर, चूना, कंकरी मुरड, खड्डी, छीणा आदि के मूल्यों के बारे में भी पर्याप्त जानकारी मिलती है। साथ ही रानियों की स्थापत्य कला में रूचि का भी आभास होता है।

१५४ महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत रे आभूषणों री बही

१ संग्रह क्रम संख्या—७५२, २ बही का नाम—महाराजा तख्तसिंह री रानी राणावत रे आभूषणों री बही, ३. प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—७८, ५ लिपि समय—वि० संवत् १९११, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत

बही मे महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत के आभूषणो के उल्लेख के साथ-साथ इन पर खर्च हुए रुपयो का विवरण है। इसमे आभूषणो के प्रकार एव उन्हे बनाने वाले सुनारो की मजदूरी उनके मूल्यो आदि के बारे मे भी जानकारी मिलती है।

बही मे कई प्रकार के आभूषणो का उल्लेख हुआ है जैसे —वाळिया, काटा, बेल, कडिया, पन्ने की मिण डोरा, मुजबन्द बीटिया मोतियो की लडे टोटिया, झूमरा, जुटणो की जोडिया, मोतिया का चोवडा, पन्नो की चुनिया, थेकडा, कातरियो की जोडिया, दावणा, काना की साकली टिक्यिा सिंगोडा चूम्पा, मोतिया हीरो की कठियें, बाजुबन्द, गुन्दा की जोडी चाकिया छल्ले, कडे सोने के फूल, टोडा, काठला, कगन, टुसी, सावळी, मादलिया साकलो की मोगरी तीमणिया, सोने की लडें आदि।

सोने के आभूषणो मे हीरे जवाहर व मोतिया के व कई प्रकार के रगो के नग जडे जाते थे ऐसा उल्लेख भी बही मे है।

बही उल्लिखित जुटणो की जोडी मे मोती जडाये एव जडने वालो की मजदूरी दी, उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"१२।॥ –)। जुटणारी जोडी १ जडाव मीना रा काम री मोतीमादार जपर मे १६११ रा बरस मे असवारी गगा जी पधारी तरे पाछा आवता नवी कराई तीण मे माती पुवाया तीण नग मीना रा तारा रा लगाया मेनतरा

११। =)। असल मीना रा तारा रा लागा तीण रा

१।।) मेनत मोती पुवाया तीण री सुनार अमरा ने पत्र सख्या—८ अ

हाथी दात के मूठिया पर सोने का काम होता था। बही मे मूठिया पर सोने की खोली चढाने का उल्लेख है।

सोने के फूल लोक देवी-देवताओ के नाम के राजघराने के लोग गले मे धारण करते थे, यथा—

"रामदेवजी रो फूल १ नवो करायो काती सुद १०" पत्र सख्या—२१ ब

उस समय एक सोने की चोकी की घडाई की मेहनत बही के अनुसार निम्न-लिखित दी जाती थी—

॥)॥ चोकी १ पत्र सख्या—३२ अ

सोने के आभूषण बनाने वाले सुनारो को मेहनत की दी जाने वाली मुद्रा का उल्लेख भी हुआ है। एक सोने की चोकी व आदलिया बनाने वाले सुनार को छ आने की मजदूरी मिलती थी।

वही के अनुसार एक साने के तिमणिये की घडाई के बारह आन दिये जाते थे। यह उल्लेख दृष्टव्य है—

३ =) आसाज मे तीमणियो १ नवो करायो सु जडायो जडीया अगरचद करन तीण रा दीया आसाज वद १

१॥ =) कुनण मोती ॥ " रती १॥

।) पुखराज १ पीरो जगे १

॥) चुनीया आगली ३ नवो २ खरीद तीण रा

॥।) मेनतरा

———

३ = पत्र सख्या—४३ ब

उस समय बनने वाले सोने के आभूषणो के प्रकार के वार म विस्तृत जानकारी तो मिलती ही है साथ ही साथ उन पर मोती, जवाहर मीना की जडाई का काम एव आभूषण बनान वाले सुनारो की मजदूरी पन्ने मोती मीना जवाहर आदि जडने वाले जोहरियो की मजदूरी आदि के बारे मे भी पर्याप्त उल्लेख है।

१५५ महाराजा तखतसिंह के पुत्र माधोसिंह रे जन्मोत्सव री वही

१ सग्रह क्रम सख्या—७७४, २ वही का नाम—महाराजा तख्तसिंह रे पुत्र माधोसिंह र जन्मोत्सव री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या—१६, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६१३ आपाढ सुद १३, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा तख्तसिंह के पुत्र माधोसिंह के जन्म के दस दिन पश्चात् मनाये जाने वाले दसोटण नामक उत्सव पर बटवाई गई लापसी (गेहूँ के दलिये से बनाया जाने वाला मारवाड का मिष्ठान) पर खच हुए रुपयो का उल्लेख है।

जन्मोत्सव —

राजघराने मे राजकुमारा के जन्म पर विशेष उत्सव मनाये जाते थे। यहाँ राजकुमार के जन्म के दस दिन पश्चात् लापसी बटवा कर खुशी मनाने की परम्परा रही है। यह लापसी देवस्थाना, थडा, पितरा के स्मारको, सतिया के स्मारको रानियों, पडदायतो राजकुमारिया सामन्त परिवारा डावडियो (दासिया) नौकर-चाकर व नौकरा को बाटी जाती थी।

वही मे इस अवसर पर बटवाई गई लापसी का उल्लेख इस प्रकार है—

देवस्थानो पर भेजी गई लापसी का उल्लेख द्रष्टव्य है—

निम्नलिखित देवी-देवताओं में लापसी भेंट चढ़ाई गई—

देवी नागणेची जी, देवी चावण्डा जी देवी हिंगलाज जी, श्री ज्वालामुखी जी, श्री सटियाल जी, गणेश जी, महादेव जी पच देवता मगार क भेरजी, काला-गोरा भेरूजी, गुसाईजी, गागाजी रामदेव जी मच्छीनाथ जी आदि।

यहा पर भेजी गई लापसी का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

"यहा नग—

श्री प्रतीतसिंघ जी, हस्ते—परभूदास री बऊ २

श्री अमरसिंघ जी, हस्ते—रावताणी १

श्री प्रतापसिंघ जी, हस्ते—रावताणी १" पत्र सख्या—१ ब

जनानी ड्योढ़ी म भेजी गई लापसी का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"राज साल म

दादाजी श्री देवडी जी सा १

हस्ते पुगता री बऊ १

दादी जी श्री चूवाण जी सा १

हस्ते पुगता री बऊ

दादी जी श्री माई भटियाणी १

हस्ते पुगता री बऊ" पत्र सख्या—४ ब

पितरा (जन धारणा के अनुसार परिवार में मृत व्यक्ति जो देव योनि मे चले जाते हैं) के थाना पर भी लापसी भेजी गई, यथा—

"पीतर जेतसिंघ जी १

पीतर जोरावरसिंघ जी

हस्ते सोलकी सुपार दोईतारी बऊ १

मायर पीतर जी

हस्ते मुथरा—१" पत्र सख्या—४ ब

रानियों को भेजी गई लापसी के थालो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

"श्री मेला सायबा

श्री वडा राणावत जी सा ४

हस्ते मुमल

श्री वडा भटीयाणी जी सा १

हस्ते वदु बाई जी सारी

श्री चावडी जी सा १" पत्र सख्या—५ ब

महाराजा को नजराना उनके सामन्त निकट सम्बन्धी ठाकुर पडदायतें, नौकर एव रानिया को महाराजा की पडदायते, निकट सम्बन्धी एव दीवान आदि दिया करते थे। राजकुमारो व राजकुमारियो को भी उनकी वर्ष गाठ एव विवाह पर नजर दी जाती थी।

महाराजा तख्तसिंह के समय हुई निछरावल का विवरण अग्र लिखित पंक्तियो मे द्रष्टव्य है।

महाराजा तख्तसिंह की रानी भटियाणी को निछरावळ हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है, यथा—

"वीगत नीजर नोछावर री—

४७)) १३५५) श्री माजी सायबा रा थी हजूर सायबा रे

नीछरावल कीया सुने बाकी रया सु—

४)) १३८) माजी श्री वडा भटियाणी जी सा

आया १ ——————बाकी

————१———१

४)) १०८) तीवारा रा———१०)) ५५२)

आया—— ————बाकी

तीवारा रा वरस १ मे तीवार ४ हुव सु ५०४)

१४) दसरावा रा १४) दीवाली रा

१४)

१४) होली रा २८) वरसगाठ रा पत्र सख्या—१ अ

इसी तरह पर्वों पर निछरावळ हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है—

४)) ५०) बछ वारस रा ओगडा रा ईगसग १०)) ८२)

सवत् १९०१ रा लगाई १९०८ रा सुधा—

बरस ८ रा गन ८)) १४) लेख सुधा—

१५)) ११२) सु आया तथा बाकी मे आया— पत्र सख्या—अ

विभिन्न अवसरो पर महाराजा तख्तसिंह को दिये गये नजराने का विवरण द्रष्टव्य है—

"२८) सवत् १९०० बरस रा आया

७) काती सुद ९ अँमदनगर सु पधारीया तरे माय मुजरो करण मे पधारीया तरे कीया सु

मरदानी ड्योढी में लापसी निम्न व्यक्तियों को भेजी गई—
"मरदानी ढोढी हस्ते
दीवाण १
खानसामा १
१ ढोढीदार सेसकरण
१ खजाना रा ओदेदार पत्र सख्या—१४ अ

वही मे कमीणो (ढोली नगारची, पिंजारे, रगरेज सुथार आदि) को भी लापसी बाटने का यथा स्थान उल्लेख आया है।

सरकारी नौकरो को लापसी बाटी गई, यथा—
१ कामदार
१ चाधरी उत्तमचन्द मनछाराम २ १ १
१ पनयालियो जेतराम—१—
चोपडो जीतमल—१ पत्र सख्या—१८ ब

जोधपुर राजघराने मे बच्चे के जन्मोत्सव के समय किस प्रकार रस्मो का आयोजन किया जाता था, इस विषय पर अच्छा प्रकाश पडा है।

१५६ महाराजा तख्तसिंह रे नजर निछरावल री वही

१ सग्रह क्रम सख्या—८२६, २ वही का नाम—महाराजा तख्तसिंह रे नजर निछरावल री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१३१ ५ लिपि समय—वि० सवत् १६०० के कार्तिक मास से १६२७ तक, ६ विशेष विवरण—इस वही मे महाराजा तख्तसिंह के समय हुई नजर निछरावळ का विवरण दिया गया है।

निछरावल –

राजघराने की एक परम्परा के अनुसार राजाओ, रानियो, राजकुमारो, राजकुमारियां आदि को महत्वपूर्ण अवसरो पर दी जाने वाली रुपयो की भेंट (नजराना) कहलाती थी। उनका विशिष्ट सम्मान करने के लिए निछरावल भी की जाती थी (यह राशि नौकरो को बाट दी जाती थी)। यह विभिन्न अवसरो पर दी जाती थी जसे—दीपावली, दशहरा, होली, वषगाठ, विवाह, पव, राजतिलक, युद्ध में जाते समय, युद्ध से लौटते समय, दुश्मन को पराजित करने के उपलक्ष मे तीर्थ यात्रा जाने पर, किसी प्रमुख स्थान पर जाने पर, किसी विशिष्ट खुशी पर आदि।

महाराजा को नजराना उनके सामन्त निकट सम्बन्धी ठाकुर पडदायतें, नौकर एव रानियो को महाराजा की पडदायते निकट सम्बन्धी एव दीवान आदि दिया करते थे। राजकुमारा व राजकुमारियो को भी उनकी वर्ष गाठ एव विवाह पर नजर दी जाती थी।

महाराजा तख्तसिंह के समय हुई निछरावल का विवरण अग्र लिखित पंक्तियो मे द्रष्टव्य है।

महाराजा तख्तसिंह की रानी भटियाणी को निछरावळ हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है, यथा—

"थीगत नीजर नोछावर री—
४७)) १३५५) श्री माजी सायबा रा श्री हजूर सायबा रे
नीछरावल कीया सुने बाकी रया सु—
४)) १३८) माजी श्री वडा भटियाणी जी सा
आया १ ————————बाकी
————१————१
४)) १०८) तीवारा रा————१०)) ५५२)
आया————————बाकी
तीवारा रा बरस १ मे तीवार ४ हुव सु ५०४)
१४) दसरावा रा १४) दीवाली रा
१४)
१४) होली रा २८) वरसगाठ रा पत्र सख्या—१ अ

इसी तरह पर्वों पर निछरावळ हुए रुपयो का विवरण इस प्रकार है—
४)) ५०) बछ बारस रा आगडा रा ईगसग १०)) ८२)
सवत् १६०१ रा लगाई १६०८ रा सुधा—
बरस ८ रा गन ८)) १४) लेख सुधा—
१५)) ११२) सु आया तथा बाकी मे आया— पत्र सख्या—अ

विभिन्न अवसरो पर महाराजा तख्तसिंह को दिये गये नजराने का विवरण द्रष्टव्य है—

"२८) सवत् १६०० बरस रा आया
७) काती सुद ६ अमदनगर सु पधारीया तरे माय मुजरो करण मे पधारीया तरे कीया सु

७) मीगसर बद ५ रग पधरायो तीण रा
१४) मीगसर सुद १० राजतीलक बीराजीया तीण रा"

———

= ७८

"(१४) सवन् १९०१ रा मा बद १ मुजरो करण पधारीया तरै कीया
१४) सवत १९०२ रा बरस मै आया
७) दुसमणा रे पीसती री खेद रा सपाडा री खुसी रा दीया
७) फागण सुद ३ फाग रा"

———

१४ पत्र सख्या—१ अ

महाराजा तख्तसिंह की पुत्री राजकुमारी फतह कवर को त्यौहारों पर निछ रावळ हुए रुपया का विवरण द्रष्टव्य है—

'बाई जी श्री फतैकवर बाईजीसा रा———५२
——————१——————१
तीवारा रा——————————५२
४) दसरावा ४) दीवाली ४) होली ८) वरसगाठ रा
२०) सुदग १९२५ रा होली १९२७ रा असाढ सुद १५ तीवार १० रा
जोड ५२" पत्र सख्या—५४ ब

रानी चावडी की विभिन्न खुशियो पर किये गये नजराने का विवरण इस प्रकार है, यथा—

७) सवत १९०५ रा बरस रा——४२)
७) आया बारा जेठ सुद १३
१ बाकी माडा———४२)
७) हीडा रा
७) मायले बाग घोडा फैरीया तीण रा
७) चुडो पधरायो तीण रा
७) कायलाणा री कुसी रा
७) बालसमद री कुसी रा
७) खगेदि री कुसी रा ४२)

———

४२ पत्र सख्या—५६ ब

पडदायत कानराय द्वारा महाराजा तख्तसिंह व उसकी रानियों को दिये गये नजराने के रूपयों का विवरण इस प्रकार है यथा—

"पडदायत कानरायजी रा—

१४५) तीवारा रा ईग १६०० रा होळी लग १६२७

रा बरसगाठ सुधा बरस २७ तीवारा रा जुग १० लेने मु २७५)

वीगत—

१६०० रा जुग ५) मागा मु वाकी ५)

२) १६०१ रा जुग १०) मे आया जेठ सुद १३

× × × ×   × × × × वाकी ८ ८)

५) १६२७ रा जुग १०) मे आया असाढ म ४)

होळी ने	बरसगाठरा	जुग ५)	बाकी
७)	४)		४)

पत्र सख्या—२५ व २७ अ

इस बही मे राजघराने के लोगो को उनके सम्मान मे दिये जाने वाले रुपयो की भेंट का अच्छा विवरण दिया गया है। उनको दिया जाने वाला नजराना और स्थानीय रीति रिवाजो के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१५७ जोधपुर राजघराने रै विवाह री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—८३२, २ बही का नाम—जोधपुर राजघराने रै विवाह री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१५६ ५ लिपि समय—वि० सवत् १७९६ से १९२९ तक, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे महाराजा सूरसिंह से लगाकर महाराजा तखतसिंह के शासन काल तक हुए राजाओ एव महाराजकुमारो के विवाहो का विस्तृत विवरण दिया गया है।

इसमे तवारीख लेखो का भी उल्लेख है। मण्डोवर राव रिडमल से लगा कर महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) तक की वशावली अकित है।

इस बही मे मुख्य विवरण महाराजा तख्तसिंह ने अपने विवाह के लिए खाण्डे (तलवार) की असवारी भेजी का है। उनके खाण्डे के साथ राजा रिडमल सिंह की पुत्री ने तीन फेरे (भावर) खाये, का विवरण एव खाण्डे की असवारी मे खर्च हुए रुपयो का वर्णन है।

खाण्डे के साथ फेरे –

राजस्थान म राजपूत कन्या द्वारा खाण्डे के साथ फेरे (भावर) खाा या लेन की एक विशिष्ट परम्परा रही है। उस समय यह परम्परा थी कि राजा लोग छोटे ठिकाने मे स्वय न जाकर अपना खाण्डा (तलवार) भेजकर अमुक सामन्त की पुत्री से विवाह कर लेते थे। वर का प्रतीक खाण्डे की असवारी भेजी जाती। असवारी मे राजघराने के लोग, सगे सम्बन्धी आदि पडला (वधु क वस्त्र, आभूपण मेवे, फल आदि) ले जाते थे।

राजपूत वधु वर के प्रतीक खाण्डे पर ही अपना पूरा विश्वास व्यक्त कर परिणय सूत्र मे बध जाती। वह खाण्डे को ही अपने पति के प्रतीक रूप मे मानती। उस समय एक राजपूत वधु का एक खाण्डे पर भी कितना दृढ विश्वास होता था, वह एक तरह से वर के प्रतीक खाण्डे के समक्ष ही समर्पित हो जाती।

दूसरी तरफ वर को भी यह विश्वास होता था कि वधु उसके (वर) प्रतीक खाण्डे के साथ फेरे खा लेगी। इस प्रकार उस समय खाण्डे का विशेष महत्त्व था। यह खाण्डा ही वर-वधु को परिणय सूत्र मे बध जाने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था। दूसरे शब्दों म हम यह कह सकते हैं कि खाण्डा वर-वधु को वैवाहिक बन्धन म बाधने की कडी के रूप मे प्रयुक्त होता था।

वधु द्वारा खाण्डे से भावर लेने की प्रक्रिया केवल राजघराने तक ही सीमित नही थी। यह प्रक्रिया छोटे राजपूत परिवारों में भी सम्पन्न होती थी जब अत्यधिक व्यस्तता के कारण निश्चित तिथि पर वर फेरे खाने को उपस्थित नहीं हो सकता था। इतिहास म ऐसे कई उदाहरण मिल सकते हैं जबकि एक तरफ वधु वर के प्रतीक खाण्डे के साथ भावर ले रही है दूसरी तरफ उसका होने वाला पति युद्ध भूमि मे लडता हुआ मारा गया है। तब नव वधू सती हो गई।

उल्लिखित वही म महाराजा तखतसिंह ने जामनगर की राजकुमारी से विवाह करने के लिए अपना खाण्डा भेजा। बडी धूमधाम से खाण्डे की असवारी गई। सवत् १९०७ चैत्र बद ४ (चतुर्थी) को जामनगर के राजा रिडमल सिंह की पुत्री ने महाराजा तखतसिंह के प्रतीक खाण्डे के साथ तीन फेरे खाये। चौथा फेरा महाराजा तखतसिंह ने अपने यहाँ गाव मोगडा म अपनी विवाहित जामनगर का राजकुमारी के साथ खाया।

वही मे खाण्डे की असवारी भेजने व उसम खच हुए रुपया का विवरण इस प्रकार है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इसी तरह बाजा वालों व ग्रन्थों को रुपये देने का उल्लेख द्रष्टव्य है—
११ बाजा ओछाटाया मोगरू पुरबी सु सु का पत्र तहात १ षेद रो मु
हाजर था तीणा ने
२ ढोली रा १ नगारची न १ आळगु ने १ रबाबी ने १ माड ने १ ग मुन्र ने
१ तबलयदा १ सेरदार
१ जनानी दाळो १ भगतणीया न
नारा रो
नगारची पत्र सख्या—३३ म

गणेश जी की स्थापना की पूजा में निम्न सामग्री उपयोग में लाई गई, यथा—
१ अन रा कोठार सु
१ घुट सारु गुळ घीरत
७५ ७५
७। नीत भोज नु लाडू
७१
७। जात सारु घीरत रोजीना
१)७ कुभ हट दण नु लागे
१)७ पत्र सख्या—३३ म

विवाह के अवसर पर शराब की मनुहार की गई, यथा—
' (दारू—
(मीजमानी रा जामतायवा मेलीयो को तीण माय सुगोट
काचरी खरच मे जनानी दोढी आयो सु उपडीयो —८
१
(४।।।) रो मोल खरीद हुवा को।" पत्र सख्या—३४ म

विवाह के रात्रि जागरण की मिठाई बाटी गई यथा—
(राती जोगा री मीठाई बारली वोर बाटी चेत बद ४
१ श्री पच देवता रे थाळ मे लाडू पापड चीणा रो थोबो
३ नाजर हरकरणजी रे दुपेटा रा लाडू पापड चीणा
२ १६ ४ २
थोबो अणदराम लग पग की
१ १० २१
× × × ×
बाजदारा ने लाडू पापड चीणा दीया पत्र सख्या—३४ ब

बही मे साण्डे की असवारी के साथ भेजे गये वधू के लिए वस्त्र, आभूपण, मिठाई, मेवे, फल आदि के थालो का पर्याप्त वर्णन आया है, यथा—

"पडळो ले ने चेत वद ४ लारलो दीन पोर १ आसरे रपा गाजा बाजा सु माढे गया × × × × माढे जायने उठे जाजम बीछाइ थी ने पछे उठे सु गग भला आदमी आय बेग चीणा न सुम सभळाया सु पेली तो सरवसु वाग रो लगन माय चोकडायो १ ऊपर कुकुम रो सापीयो सु दीयो, पछे चुडो चुदड नथ तीमणीयो पछे गेहणो कपडा मवा वगरे—वीगत पडला री—

"२)३३ जरजर खाना सु

१ नथ १ हीरा री मोर मोरडा री

१ तीमणीयो हीरा रा मोती पोयोडो खानापुर

१ टीको हीरा रो भळोलख मोतीया रो

१ पायजेबा री जोडी १ जडाऊ

× × × × × ×

२ फाकण डोरडा रा मोला २ सुपारा।" पत्र सख्या—३४ ब

पडळे मे भेजे गये वस्त्रो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

८५ कपडा रा कोठार सु —

२७ साडीया नग चोपेर लपा री ऊपर सीक दुपटा बणारसी, रेशमी नग
१० २

अेक अेक दुपटो पसमारी छपयोडी चुदड कसुमल चोपेर

१५७। ≈)॥ ७० ≡)१

लपो दुपटा तास सोनेरी दुपटा फरकसाई काम तास सान री
१० २

ओरणी पसमीना री काम री जरदोजी रो—२७
१

× × × × × ×

७ मोडा री जाडी मतर तोला ४) सोसीया पगरखीया रा जोडा — २ पत्र सख्या—३५ अ

राजघराने मे विवाहिता लडकी के साथ दासिया भेजने की परम्परा रही है। इस बही के अनुसार जाडेची के साथ दो डावडिये (दासियें) भेजी गई, यथा—

"३० चत सुद ५—
जाम सायव रे सीरदार सु डावडीया २ माई ग्रणदु ने रामु रथा मे बेठन सु
१ १
पेली तो नाजर हरकरण रे डेरे गई, सु अठासु डावडीया ने उठे मली।"
पत्र संख्या—३७ अ

इस वही मे विवाह के लिए खाण्डा (तलवार) भेजने की राजघराने की परम्परा का विशिष्ट उल्लेख हुआ है जिसका सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व है। साथ ही जोधपुर के विभिन्न शासकों के वैवाहिक सम्बन्धों पर भी अच्छा प्रकाश इस वही मे पड़ा है।

१५८ महाराजा अजीतसिंह एवं महाराजा मानसिंह री वही (कुंवरियों के विवाह की)

१ संग्रह क्रम संख्या—८३३, २ वही का नाम—महाराजा अजीतसिंह एवं महाराजा मानसिंह री वही (कुंवरियों के विवाह की), ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—१००, ५ लिपि समय—वि० संवत् १७७६ के ज्येष्ठ बदी ९ से १८८१ फाल्गुन बदी ९ तक, ६ विशेष विवरण—इस वही मे महाराजा अजीतसिंह की पुत्री सूरज कंवर, अभय कंवर, महाराजा मानसिंह की पुत्री सिरेकंवर उदयकंवर स्वरूप कंवर आदि के विवाह मे खर्च हुए रुपयों तथा विवाह संस्कारों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

वही से राजघराने मे सम्पन्न होने वाले राजकुमारियों के विवाह के रस्म एवं रीति रिवाजों के बारे मे विशेष जानकारी मिलती है।

राजकुमारी के कुंवर होने पर पीहर वालों की तरफ से कड़ा (आभूषण) वस्त्र आदि भेजने की परम्परा का भी उल्लेख हुआ है।

विवाह मे बारातियों के ठहरने की व्यवस्था, उनके सत्कार की तैयारी, सत्कार की रस्मे वर व वधु पक्ष का आपस में मिलना, दुल्हे द्वारा तोरण वन्दना, तोरण वन्दना के समय सास द्वारा दस्तूर, कन्या पक्ष के यहाँ माया व गणेश की स्थापना, चवरी का निर्माण पुरोहित, व्यास आदि का कर्त्तव्य, हथलेवा जोड़कर दुल्हे व दुल्हन द्वारा भावर (फेरे) लेना कन्या पक्ष की ओर से कन्यादान प्रीतिभोज वर-वधु द्वारा राजसी ठाट-बाट (वैभव) के साथ विभिन्न लोक-देवी-देवताओं की पूजा व उनके थानों व मन्दिरों की परिक्रमा, प्रीति भोज व मिठाइयें, दहेज आभूषण, बर्तन, वस्त्र व अन्य वस्तुएँ राजघराने से सम्बन्धित लोगों द्वारा कन्या व जवाई को

आभूषण व वस्त्रो की भेंट विदाई, कन्या-पक्ष की ग्राग से सगे-सम्बन्धियो, देवस्थानो, ग्रादि पर मिठाइयो के थाल एव रुपया की भेंट, ब्राह्मणा को भूरसी दक्षिणा देना, अन्य गरीबा को रुपये, मिठाइया, वस्त्र ग्रादि देना, ढोलियो, कमीणा व ग्रन्य लोगो को भी मिठाइयो व ग्रन्य वस्तुग्रा से राजी करना ग्रादि ग्रादि बाता का इस वही मे सागोपाग वर्णन हुआ है।

विवाह सस्कार –

भारतीय सस्कृति मे सोलह सस्कार मान गये है। उनमे विवाह सस्कार का महत्वपूर्ण स्थान है। राजघरानो म यह सस्कार ग्रत्यन्त ही हर्षोल्लास व खर्चीले ढग से सम्पन्न किया जाता रहा है।

इस बही मे महाराजा श्री अजीतसिह जी की राजकुमारी सूरजकवर के विवाह का विस्तृत रूप स उल्लेख हुआ है। इनका विवाह सवत् १७७६ की ज्येष्ठ वदी ६ का सवाई जयसिह ग्रामर नरेश के साथ हुआ तथा डेरा (बारात के ठहरने का स्थान) सूरसागर के पास रखा गया।

राजस्थान मे विवाह का मुहूत एव सम्पन्न होने के पूर्व तक गुड बाटने की की परम्परा रही है। सूरजकवर के विवाह के मुहूत पर भी गुड बाटा गया। गुड राजघराने के निकट सम्बन्धिया, रानिया, पडदायता, राजकुमारियो, राजपूतो की विभिन्न खापो के विशिष्ट व्यक्तिया जैना व ब्राह्मणो को बाटा गया।

चौहान, चापावत, रावळोत, कूपावत मेडतिया, जोधा, जैतावत, करणोत करमसोत पातावत, बाला, नहड, भीवोत, भाटी, सोनगरा तुवर, गहलोत आदि राजपूत जाति की खापा के लोगा को, सिंघवी भण्डारी, मुहणोत, मुहता ग्रादि जैन खापो क लोगा को, कोठारी, पचोली, पोकरणा व्यास श्रीमाली ग्रादि ब्राह्मणा की खापा के लोगा को, इनके अतिरिक्त खवास, पासवान, धाधला, पडियार, ढोली, कमीण आदि को गुड बाटा गया।

मुहूत का गुड देवस्थानो मे भी दिया गया, यथा—

"अतो खरच गुड तालुके

। श्री दवसथान

७५ श्री ग्रगददान जो गढ ऊपर बीराजे

श्री कीलाणराय जी गढ ऊपर बीराजे

श्री माता जी चावडा माता जी

श्री हीगलाज माताजी
श्री गु जार रा भेरू जी
श्री बाजरा भेरू जी' पत्र सख्या—२ अ

इस शुभ अवसर पर राजघराने के नौकरो को भी गुड दिया गया, यथा—
७७ नाजर दोलतराम
१) खवास पासवान
७५) पासवान जी ७५ पवास नेणाखजी
१) पत्र सख्या—२ ब

दरजणिया, नाईना, गीत गाने वाली स्त्रियो, ढोलणियो का भी गुड बाटा गया।

विवाह के मुहूत पर सवप्रथम विनायकजी (गणेश जी) की पूजा की जाती थी। कुम्हार के घर जाकर विनायकजी की मूर्ति लाई जाती। वहा उसकी चाक (मिट्टी के वतन बनाने का पत्थर) की भी पूजा होती थी। कुम्हार को नेक (विनायकजी की मूर्ति देने के बदले मे दी जाने वाली वस्तुएँ) मे गेहू का दलिया, चावल, कुकुम मेदा (आटा), गुड, नारियल आदि दिये जाते थे।

उपयु क्त सभी प्रक्रियाएँ सूरजकवर के विवाह पर सम्पन्न की गईं।

विनायक जी की पूजा कर सूरजकवर के हाथो मे काकण डोरे बाधे गय। उन्ह पाटे पर बिठाकर घी पिलाने की रस्म पूरा की गई। तत्पश्चात् उनके तेल-पीठी चढाई गई।

इस अवसर पर नव वधु को नीजर निछरावळ के रुपये भी भेंट किये गये। नीजर निछरावळ देने का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

'श्री राणावतजी बाईसा रे २५) नीछावर कीया ने पछे रू० २०) श्री बाईसा री मासी छोटा भटियाणी जी कीया। रुपीया श्री दरबार माय ऊ ईनायत हुवा पछेऊ ५)" पत्र सख्या—२० अ

इस अवसर पर राजघराने के नौकरा की स्त्रिया ने भी निछरावल की, यथा—

"१) सीनदार दयाल्दास री बऊ कीयो' पत्र सख्या—२० ब

इस रस्म के बाद सभी जगह विनायकजी की लापसी बाटी गई। यहो म गढ ऊपर लापसी पर खच हुए रुपया का विवरण द्रष्टव्य है—

। श्री वीनायक जी रे लापसी री गुघरी दी
गढ ऊपर लापसी री गुघरी दी

३६॥) लापसी नु
२०॥।) बाट ८) पीरत
१०॥।) गुळ" पत्र संख्या—२१ ग्र

इसके बाद माया माडकर उसकी पूजा की। हवन म निम्न सामग्री काम मे लाई गई, यथा—कुकुम, मोळी, श्रीफल, सुपारिया, जवार, तिल, घी गुलाल, खारक, गुळ, पिसता, दाग्गा, बादाम, मूग, गीरी, दही, दूध, मिसरी, दरियाई, लाल कपडा, चावल, सरसूं आदि।

तत्पश्चात् रात्रि जागरण (रातीजोगा) दिया गया। उसमे विभिन्न देवी-देवताओ की स्तुति की गई।

बही के अनुसार सगे-सम्बन्धियो द्वारा बनोले (नववधु को भोजन के लिए आमन्त्रित करना) दिये गये, यथा—

"। बाई जी श्री सूरजकवर बाई जी रा व्याव रा बनोला आया तीगरी बीगत गाजे-बाजे गीत गावता तलेटी उ गढ़ ऊपर आया क राणी श्री भटियाणी जी रे घरा आया।

। मैला सावत्रा रा आया
। राणीजी श्री राणावतजी रे तरफ सू" पत्र संख्या—२६ अ

विवाह के अवसर पर विशाल मण्डप बनाया गया। बही म चवरी सजाने का भी उल्लेख है।

तोरण वन्दना –

तोरण वन्दन की रस्म दुल्हे के शक्ति परीक्षण के लिए की जाती है। सूरज कवर के विवाह के अवसर पर सवाई राजा जयसिंह जी ने तोरण की वन्दना की। बही के अनुसार पाच तोरण द्वार बनाय गये, यथा—

'तोरण ५ रुपया इतरी जायगा दिया—
१ बकी पोळ १ लाहा पोळ
१ मरदानी ड्योढी १ सीदुरिया पोल, जनानी ड्योढी
१ नागणेचीया माता रे थान पत्र संख्या—२९ ब

हथलेवा जोडने के पश्चात् चवरी म सूरज कवर का सवाई राजा जयसिंह जी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कन्यादान हुआ। कन्यावळ राजघराने के सगे-सम्बन्धियो व कुछ विशिष्ट सरकारी नौकरो द्वारा भी किया गया।

अब सूरज कवर का पाणिग्रहण सस्कार सम्पन्न हुआ। उस समय उनकी आरती उतारी गई। आरती मे उन्होने बारह सोने की मोहरें व एक सौ रुपये डाले।

इसके बाद वर-वधु ने विभिन्न लोक देवी देवस्थानो की जात (परिक्रमा) दी। वहाँ रुपये भेंट किये, यथा—

"जुगपले श्री नागणेचीया जी रे थान पधारीया न देवता री पूजा कीवी
२१)) श्री नागणेचीयाजी रे धोक देने चढायो
५)) पचदेवतावा ने चढाई सु मेवगजी री
७) श्री वीनायकजी रे चढाया रु सेवग गाजी री
१४) श्री माया री पूजा कीवी
१४) रोकड चढाई । लाग कोरो पान
सुपारी १४" पत्र सख्या—३३ अ

माया की पूजा करने पर जयसिहजी के पुरोहित को कन्या पक्ष की ओर से दो सोने की कटोरिया भेंट की गई।

जयसिह जी को निम्न आभूषण एव वस्त्र दिये गये, यथा—
"इतरा जसिघजी न दीयो
"२ जीनोई दीया सोना रा
१ मोती, सोना रा वाळा
२ परण ने दीया
१ वीटी जडाव री पत्र सख्या—३३ ब

सूरज कवर के विवाह पर जिन राजाओ एव नवाबो को आमन्त्रित किया गया। उन्होने निमन्त्रण के उपलक्ष मे भेंट भेजी। उस भेंट मे रुपये व सोने की मोहरें भेजी। वही से एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

'नोता रा आया—
१०००)) नवाब अमी उमराव हुसन खा रे नोता रा आया मोरा १०००))
जेठ बद ६
१०००)) नवाब अबदुल खा री मोरा १०००)) नोता री उकीया आई'
पत्र सख्या—३४ ब

प्रीतिभोज के लिए लड्डू, जलेबी, घेवर, मावे की मिठाइया, दहीवडे, पुडिया आदि मिठाइया बनाई गई।

बारात के साथ मिठाई भेजी गई उसका विवरण द्रष्टव्य है—

"सीरावणी राजा जैसींघजी नु भैटे नीया तीरा री विगत, तोल २६ री जेठ वद १०

१०) राजा जसिंघजी नु मीठाई मण दस

३) लाडू ३) जलेबी ३) दही वडा १) पुडियां"   पत्र संख्या—४० ग्र

इस अवसर पर राजघराने के सम्बन्धियों, सामन्तों, उमरावों, राजपूतों, की विभिन्न खापों के लोगों, राज के नौकरों आदि को मिठाइयों के थाल भेंट किये गये। बही से एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"उमरावां नै मीठाई

३।।।) खाप चांपावत र मीठाई

।) गहलनाथ भाइदानोत

।) मगसिंह भगवानदासोत

।) वीजैसिंघ सबलसिंघोत

× × ×   × × ×

७२ सूरजकरण भासथानोत री

× × ×   × × ×

।।) फरे आसीस नौबत"   पत्र संख्या—४४ ब

दहेज —

बही के अनुसार बाईजी श्री सूरज कवर का बहुत सा दहेज दिया गया। जड़ाऊ सोने व चांदी के आभूषण दिये गये। सोने चांदी के बर्तन दिये गये। इनके अतिरिक्त हीरे, पन्ने व जवाहरात भी दिये गये। आमेर नरेश सवाई राजा जयसिंह जी को भी बहुमूल्य आभूषण व वस्त्र भेंट किये गये।

इन सबके अतिरिक्त हाथी, घोड़े, रथ, बैल व ऊट भी दिये।

सूरज कवर को जड़ाव के निम्न आभूषण दिये गये—

नथ, नवसर हार, वामरा बीटिया, टीका, पडिया, दुगदुगी जड़ाव की आदि।

इन सब आभूषणों में हीरे पन्ने व मोती जड़े गये थे।

बही का एक उदाहरण इस प्रकार है—

"१ नवसर हार वग श्री माताजी रो घोटी को

१ दुगदुगी गर कड री तरे उरी

३ माणक मोटा

१ पनो मोटो
३ हीरा मोटा
४ छोटा माणक
। और छोटा मोटा माणक पना ।

पत्र सख्या—५० ब

बाईजी साहिबा को सोने एव चादी के आभूषण भी दिये गये। कुछ आभूषण इस प्रकार है—बाजूबन्द, गुजरिया, तिमणिया, बीटिया, मालाए वाकणिया आदि ।

बही मे दहेज म दिये जाने वाले सोने के आभूषणो का उल्लेख इस प्रकार है यथा—

१ बकारणिया ४
जोडी ४ अकोटा री
× ×   × ×
४ बाजूबन्दा री जाडिया ४ तोला १४
४ गुजरिया री जाडी ४ तोला १५   पत्र सख्या—५२ अ
बहुमूल्य वस्त्रों की विगत द्रष्टव्य है—
' १ तोरा री वीगत
१ बागा १ री वीगत
१ घाघरो पार चरो सुपदे कोरदार सोने री
चागेरद मायजी सजाव दरीयाई री लाल री
१ साडी जरी री बादलाई सोना री कीमत रुपया ७६।।।)
१ काण बादलाई लाल जरी री'   पत्र सख्या—३५ अ

बाईजी साहिबा को दहेज मे बहुत से कीमती सोने चादी के बरतन दिये गये। थाल, बाटका जरजरीनो कलसिया, पानदान डबिया आदि सोने के व थाल बाटका बाटकिया, रकेबी, पानदान चरिया, कुडो, बाजोट, प्याला, पीलजात पीकदानी गुलाबदानी मुतणा, चकलोटो, बेलण चमचा, कलसिया, कुडचिया, बडा, कुडिया चालणी आदि चादी के बतन ।

बही मे चादी के बतनो का उल्लेख द्रष्टव्य है—

' रूपा रा
१ थाळ तोला १७३।।)२
९ बाटका बाटकीया तोला ११२।।)२"   पत्र सख्या—५२ ब

जयसिहजी व उनके परिवार वाला को कपड़े देने का उल्लेख भी द्रष्टव्य है—पार्घे, पोतिया, बालाबन्दी चुदडिया, जरी की पार्घे, जनाना जरी के वेश, केसरिया साडिया, लहगा, काचलिया आदि।

वही मे ऐसे वस्त्रों का उल्लेख इस प्रकार है—

"जैगोपजी रा कवर नु तोरा मग तोरा १ नग ५०० सिरपाव मरदाना जरीरी पागा, कीमखाव पोतो ५०० कस जनाना जरी तास कमरीया कसुवल साडी घाघरा काचळिया" पत्र सख्या—५३ अ

तकीया, बडी गादी, मखमल का गादरा आदि-आदि बिस्तर दिये गये।

दहेज मे पशुधन देने का भी उल्लेख हुआ है—

"२ हाथी

४० घोडा—सान री सागत रा

२०

रूपा री सागत रा

२०

१ रथ

१ बहल १ ऊँट" पत्र सख्या—५३ ब

इस बही के अनुसार सवत् १८४७ की आषाढ बदी ८ को अभयकवर का प्रतापसिहजी के साथ, सवत् १८७० की भादवा सुदी १० को महाराजा श्री मानसिह जी की पुत्री सिरेकवर का जयपुर के राजा जगतसिहजी के साथ, सवत् १८१८ की आषाढ सुद ८ को उदयकवर का बूदी के हाडा उम्मदसिह के साथ, सवत् १८८१ म स्वरूप कवर का विवाह बूदी के राजा रामसिह के साथ सम्पन्न हुआ।

य सभी विवाह राजघराने के उन्ही रीति रिवाजो के साथ सम्पन्न हुए है जिन रीति रिवाजो के साथ महाराजा श्री अजीतसिह जी की पुत्री सूरजकवर का विवाह हुआ। अत इस बही म उल्लिखित इन विवाहो क रीति रिवाजा को पुन दोहराना समीचीन प्रतीत नही होता।

उदयकवर के पुत्र हुआ। जिसकी बधाई के रुपये व हसली कडोलिये बूदी भेजे गये।

शिशु के जन्म की बधाई लेकर आने वालो को सिरपाव के कपडे तथा रुपये भेंट किये गये, यथा—

'१७५) श्री बाईजी रे कवर हुवा री बधाई लेने खारी सेवी नेवीडो आया तीणान सीरपाव ने कग ने रोकड दीरायो सवत् १८१९ रा आषाढ मे"

पत्र सख्या—८३ ब

बाईजी माहिवा के कवर के लिए हसली

पुत्र होने की बधाई आने के पश्चात् बाईजी माहिवा के कवर के लिए हसली कडोलिय व उनके वेश (वस्त्र) भेजे गये—

२००) श्री बाईजी रे कवर हुवा री बधाई आया पछे मेलीया सवत् १८२० रा मीगसर म हस्ते पीरायत के

२००) हसली पगरा मेडताऊ

१) दाडमा श्री रावराजा जी ने

१००

बाई जी ने—१००

१०। नवा कपडा रा फोगर ऊ वेश

१ वेस १ तो श्री बाईजी नै

१ साडी मुनमुल री कसुमल चोगडद लपो सोने री जालदार पर पै गोटो सोनेरो चोगड

१ गाघरो तासरो सोनगी बूटी जरद

१ काप आसावरी रो कसु मल सोने री बूटीदार

पत्र सख्या—८३ ब

३

इस अवसर पर उन्हे परावणी के वेस (पुत्र जन्म पर पीहर की ओर से दिये जाने वाले कपडे) भी दिये गये, यथा—

१००) वेस पैरावणी रा—

७२ कसुमल मुलमुल रो थान रा

१६

२८ केसरा मै रगीना गोरसा भीलारी थान ७

पत्र सख्या—८३ ब

१००

इस बही मे राजघराने म सम्पन्न होने वाले विवाह-सस्कार एव बच्चे के जन्मोत्सव सम्बन्धी रीति रिवाजो के बारे मे अच्छी जानकारी मिलती है।

१५६ देवलोक हुवा री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—८५३, २ बही का नाम—देवलोक हुवा री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—३०७, ५ लिपि समय—वि० सवत् १६५२ से १६६६ तक, ६ विशेष विवरण—यह बही मृत्यु सस्कार से सम्बन्धित है। इसमे महाराजा तख्तसिंह से लगाकर महाराजा सरदारसिंह के समय तक

मृत्यु प्राप्त होने वाले राजघराने के लोगो की गुणावणिया (मृत्यु सम्बन्धी सूचनाएं) का विवरण है। वही मे इस सस्कार से सम्बन्धित रीति रिवाजो का उल्लेख मुख्य रूप से है।

मृत्यु सस्कार –

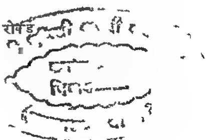
सोलह सस्कारो म मृत्यु सस्कार का भी अपना महत्त्व है। राजघराने मे इस सस्कार पर बहुत से रीति रिवाज सम्पन्न किये जाते थे। मृत्यु होने की सूचना पर शोक की लहर व्याप्त हो जाती थी।

वही के अनुसार पार्थिव शरीर को विभिन्न आभूषण व वस्त्र पहनाकर शव-यात्रा प्रारम्भ की जाती थी। विभिन्न मन्त्रोच्चारण के साथ पार्थिव शरीर को अग्नि के सुपुर्द किया जाता था। अन्तिम सस्कार सम्पन्न होने के पश्चात् लोकाचार जाने वाले किसी तालाब मे स्नान करके घर लौटते थे। राजघराने से सम्बन्धित लोग व अन्य शोक सतप्तो को सात्वना देने आते थे। ऐसा उल्लेख भी इस वही मे है। मृतक के पीछे राजघराने की परम्परानुसार द्वादशा होता था। द्वादशा तक हवन चलने का उल्लेख भी आलोच्य वही मे है। हवन ब्राह्मण किया करते थे। वही म उल्लेख है कि महाराजा जसवतसिंह द्वितीय की पवार रानी के मृत्यु होने पर पुरोहितो द्वारा हवन किया गया। हवन मे निम्न सामग्री उपयोग मे ली गई—

कुकुम, श्रीफल, सुपारिया, घी, पेडे, मेदा (आटा) गुड, दही, दूध, अबीर, मिस्त्री, कपूर, मजीठ, दोहद दरीयाई, मोली चावल केसर, चन्दन, लाल चन्दन, जावतरी कण गूगली, मेवोकुल, सरडा, गुलाल, काली मिर्च, सिन्दूर, हीगळू नागर-बेल इत्यादि-इत्यादि।

अन्तिम सस्कार के समय क्रिया कर्म करने वाले पुरोहित को बर्तन, खाद्य सामग्री, वस्त्र व अन्य वस्तुएँ दी जाती थी। महाराजा जसवतसिंह द्वितीय की पवार रानी का निधन सवत् १९५३ मे हुआ। उसके अन्तिम सस्कार पर पुरोहित को निम्न सामग्री दी गई—

"पीरोयत दान तणा—
थाली नग १ धीरत, कुकुम, चावल, रोकड़
कासी री ।   ।
पीरोतायण री पोसाख—
ओरणो
काचली
गागरो।"



पुरुष की मृत्यु पर उसे पुरुष की पोशाक व स्त्री की मृत्यु पर स्त्री की पोशाक दी जाती थी।

द्वादशा के दिन ब्राह्मणो को दान दिया जाता। मृत्यु-भोज का आयोजन होता। मृत्यु भोज पर उपयोग म ली गई खाद्य सामग्री का उल्लेख भी आलोच्य बही मे है। मृत्यु भोज पर राजघराने से सम्बधित लोग तो आमन्त्रित होते ही थे। इस अवसर पर ब्राह्मणा व गरीबो को भी भोज दिया जाता था। ब्राह्मणो को दान मे रोकड रुपये वस्त्र आभूषण व खाद्य सामग्री दी जाती थी। इस अवसर पर उन्हे बिस्तर भी बाट जाते थे। मृत व्यक्ति के पीछे देवल या छतरी (स्मारक) का निर्माण करवाया जाता था। राजघराने से सम्बन्धित व्यक्ति भी इस अवसर पर मृतक के पीछे ब्राह्मणो व गरीबों को दान देते थे।

इस प्रकार आलोच्य बही मे राजघरान मे मृत्यु-सस्कार पर सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजो का विस्तृत उल्लेख हुआ है।

१६० महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) रे पुत्र सरदारसिंह रे विवाह री बही

१ सग्रह क्रम सख्या—८५४, २ बही का नाम—महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) रे पुत्र सरदारसिंह रे विवाह री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या—७३३, ५ लिपि समय—वि० सवत् फाल्गुन वद ७ शनीवार १६४८ ६ विशेष विवरण—आलाच्य बही मे महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) के पुत्र सरदारसिंह का विवाह बूदी के रावराजा विशनसिंह की पौत्री एव रावराजा रामसिंह की पुत्री लिछमण कवर के साथ सम्पन्न हुआ, का विवरण दिया गया है। विवाह के पूव सगाई की रस्म का उल्लेख भी है। विवाह मे पेरावणी (विवाह के अवसर पर वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष के लोगा को दिये जाने वाले वस्त्र) के आने वाले कपडा एव अन्य वैवाहिक सामग्री पर खच हुए रुपयो का उल्लेख है।

इसम श्रावण की तृतीया के प्रथम सिंचारे (व्रत) पर पीहर की तरफ से वधु (लिछमण कवर हाडी रानी) के लिए आयी व्रत की सामग्री का भी वणन आया है। इस प्रकार राजघराने मे सम्पन्न होने होने वाली ववाहिक रस्म व्रत सम्बन्धी रीति रिवाजो के बारे म अच्छी जानकारी मिलती है।

सगाई –

विवाह के पूव वर व वधु का सम्बध तय करने की राजस्थान मे एक विशिष्ट परम्परा रही है। इम अवसर पर वधु पक्ष वाले वर पक्ष के यहाँ जाकर

सम्बन्ध तय करते हैं। वर के हाथ मे नारियल देकर सम्बन्ध पक्का करने का रिवाज है। प्रस्तुत वही मे भी ऐसा ही उल्लेख है। बूदी के रावराजा रामसिंह अपनी पुत्री लिछमण कवर का सरदारसिंह के साथ सम्बन्ध तय करने के लिए जोधपुर आये। उन्होने महाराजा जसवन्तसिंह के पुत्र सरदारसिंह को अपना जवाई बनाने के लिए सोना-रूपा के नारियल सोने की मोहर व रोकड रुपये दिये।

श्रावण की तृतीया का व्रत –

राजस्थान म यह परम्परा है कि जब वधु ससुराल म श्रावण की तृतीया का प्रथम व्रत करती है उस दौरान व्रत की सम्पूर्ण सामग्री उसके पीहर (मायके) से आती है। उस सामग्री म फल, मिठाईया एव वस्त्र आदि भेजे जाते हैं। यह परम्परा राजघराने मे भी सम्पन्न होती थी। जसा कि इस वही म उल्लिखित है कि महाराजकुमार सरदारसिंह की नवविवाहित्ता हाडी रानी लिछमण कवर ने श्रावण की तृतीया का प्रथम व्रत अपने ससुराल (जोधपुर दुर्ग) म किया। उस व्रत की सम्पूर्ण सामग्री उसके पीहर बूदी स आयी।

इस वही म उल्लिखित सरदारसिंह की सगाई का वर्णन द्रष्टव्य है—

"१ सगाई रा टीका रा नाळेर आया समत १९४७ रा मा वद ३ बुधवार तारीख २८ जनवरी सन् १८९१ रा न।" पत्र सख्या—३ अ

सगाई के दस्तूर के अवसर पर सरदारो की सभा म महाराजकुमार सरदार सिंह को दिये गये नारियल व रोकड मुहर का उल्लेख इस प्रकार है—

"प्रायत हरनारायण श्री माराजकवार साथब रे तीलक पधराया पछे पुसपा रा हार पधराया पछे कसुमल बटका रा रुमाल म सोना रूपा रा नाळेर न सुपारीया न रोकड मोर १)) रु ५)," पत्र सख्या—५ अ

इस अवसर पर नारियल के साथ सिरपाव के वस्त्र देने का उल्लेख भी है, यथा—

वीगत नाळेर आया न सीरपाव आया तीण री

× × × × × ×

२१)) ४००) थाल १ रूपा रो तीण म नीजर गुदराया

२१)) मोरा रा थान २१))

६००) रुपीया ४००) पत्र सख्या—५ ब

वही मे वर पक्ष की ओर से विवाह के दौरान सम्पन्न किये जाने वाले रीति रिवाजो का भी उल्लेख है, जसे—सात काम का मुहूत (बाने बैठाना), विभिन्न

वैवाहिक रस्मो मे गुड बाटना, बनोले देना, देवी-देवताओ के रात्रि जागरण देना आदि।

विवाह के दौरान राजघराने से सम्बन्धित विभिन्न लोगो को जीनस भेजी गई—

'(बोगत जीनस री—

ᅟ=॥)८। =।

थाल तासलीया ४५ नग जीनस

॥) =॥ आटो नग थाल १ रो रोजीना

॥ लेसे पको तोल

—।)१। घीरत नग थाळ १ रोठा राजीना लेसे पका तोल री

—।)१॥ बूरो नग थाळ १ रोठा पका तोल री लेसे

।)१। चावल कमोद नग थाळ १ राठा लेरो मुग पका

।)१। दुध रोजीना नग थाल १ रोठा लेसे"   पत्र सख्या—१६ व

विवाह के दौरान राजघराने से सम्बन्धित लोगो द्वारा वर को बनोल (भोज के लिए आमन्त्रित करना) दिये गये। उसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"४०)६२ माराजधिराज श्री परतापसिघजी सा रे बहुवा

२०)४१ बहु श्री वडा भटीयाणीजी सा री घरबीद सु ऊणेटो

२०) थाळ १ तीलक री

२०) रोकड   । पुसप

१ श्रीफल   । पान

। अतर   । गुलाबजल'

२०)   पत्र सख्या—१२७ ब

भोज के पश्चात् वर के तिलक किया जाता। उस रोकड रुपये, फूलो की माला, पान, इत्र गुलाबजल आदि भेंट किये जाते।

बही मे सरदारसिंह के ननिहाल मे बत्तीसी (भात भरने के लिए ननिहाल वालो को आमन्त्रित करना) ले जाने का भी उल्लेख है।

विवाह के अवसर पर राजघराने की ओर से नौकरो, कमीणो (राजघराने का काम करने वाले), गरीबो आदि को रुपये देने का भी वर्णन आया है। इस अवसर पर देवस्थानो सतियो एवं पितरो के स्मारको आदि पर मिठाइयो के थाल वस्त्र व रुपये भेंट करने की जानकारी भी मिलती है।

बारात प्रस्थान के समय महाराजकुमार सरदारसिंह पर विभिन्न सम्बन्धित व्यक्तियो द्वारा की गई रुपया की निछरावल (न्योछावर) का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

"जान चढी तरे सेवरा री न्योछावर हुई
१)० रावराजा सोनसिंहजी री लाई डावडी जडाव
४) २०) रावराजा जवाहरसिंघजी
× × × × ×
२)० रावराजा सुलतानसिंघ री वहु राणावतजी रा" पत्र सख्या—१४ व

वही मे वधु लिछमणकवर के लिए वर पक्ष की ओर से भेजे गये पडले (आभूषण, वस्त्र, मेवे, फल आदि के थाल) का उल्लेख है। पडले म विभिन्न प्रकार के हीर, जवाहर, सोने आदि के आभूषण भेजे गये। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"१ टीको १ हीरा रो मे हीरा अमोलक मोती
१४ ७
गर मे मोती माग री लडा रा मोती चुनी पना री
६ २४ ४ १
मीना रो आयुडो सोना रो तोला"
२)२॥ पत्र सख्या—२३२ व

पडले मे भेजी गई विभिन्न प्रकार की पोशाका का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"१ पोसाख १ लहर १ कसुमल री
१ पोसाख १ मुलमुल री
× × × ×
१ दुपटो एक केसरिया
× × × ×
१ काचली १ कसुमल चौफुली जाळीदार पत्र सख्या—२३४ ब

वही म कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के विशिष्ट व्यक्तियो को वस्त्र व बारातियो का जान जवारी (कन्या पक्ष की ओर से बारातियो को रुपये भेंट करना, जान जवारी कहलाती है) देने का उल्लेख है।

हाडी रानी लिछमणकवर को अनेक कीमती आभूषण, वस्त्र व दहेज दिया गया।

महाराजकुमार सरदारसिंह के विवाह पर बूदी राजघरान से जोधपुर राजघरान के लोगो को परावणी के वस्त्र दिये गये, यथा—

'माराजक्वार श्री सिरदारसीघजी सायब रो वीहाव बूदी क्वराणीजी श्री हाडीजी सा परणोज न पधारीया तीण री पेरावणी रा सीरापाव बूदी सु श्री रावराजाजी री तरफ रा आया सु डायजा साथ समळाया।"

पत्र सख्या—५८२ अ

परावणी क वस्त्र जोधपुर राजघरान से सम्बन्धित लोगा के लिये आय। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"६ बुदी वीहाव हुवा तीणा रे वाईजी श्री सोभागकवर वाईजी श्री समरत कवर वाईजीसा रे

२ साडीया रे मसुमल मुलमुल री चौपर लीर पौर सीकीन ऊपर लपो घेरदार आगरा री।'

पत्र सख्या—५८२ ब

सरदारसिंह की बारात जोधपुर दुग मे लौटी। उस समय वधु ने राजघराने से सम्बन्धित बडे लोगा क चरण स्पश कर पगा लागनी की रस्म अदा की। वधु को पगा लागनी' के विभिन्न लोगा द्वारा दिये गये रुपयो का उल्लेख इस प्रकार है—

'६ राणीजी श्री राणावतजीसा रे

७) पगे लागणी रा

२) मरी रा कळस मे।"

पत्र सख्या—७०७ अ

हाडी रानी लिछमण कवर के श्रावण की तृतीया के व्रत के प्रथम अवसर पर पीहर की तरफ से वस्त्र रुपय, फल आदि आये।

लिछमणकवर की भाभी द्वारा भेजे गये रुपया एव वस्त्रा का उल्लेख द्रष्टव्य है—

'१))६०)६ श्री कवराणीजीसा रे वाभीजीसा भाणेजाजी श्री भीवसिघजीसा री बहु री तरफ सु —

१))२०) वाभीजी श्री——जीसा री तरफ सु वेस रा बुदी चलण रा इग्यारे रुपीया

२०)४ वाभीजी श्री पीडीयारजी री तरफ सु बेस रा

२०) रोकड मातवा रा ईग्यारे रुपीया

४ वेस

१ साडी गुलावी र लोटपोट सी की ऊपर दोवडो मगजी वीचे गोखर

१ भुडतो गुलाबी गाज रो रेसमी बु दी री र लोटपोट मगजी पगणी गोटा री
१ कांचली गुलाबी गजरो रेशमी बु दी री ऊपर हुमी को पगणी बीचे गोखरू
१ मोनसापो हवासी सोरपाव ।"   पत्र सख्या—६२८ ग्र

इस बही मे राजघराने मे सम्पन्न होने वाले सामाजिक एव धार्मिक रीति रिवाजा के बारे मे विशिष्ट उल्लेख हुआ है।

१६१ महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री (सूरजकवरीजो) रे हाथ खर्च री बही

१ क्रम सख्या—१, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिहजी साहब के राजलोक श्री कलेंवीजी (सूरजकवरीजो) रे हाथ खच री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—६४, ५ लिपि समय—वि० स० १८७१, ६ विशेष विवरण—इस बही मे महाराजा मानसिंह की पुत्री सूरजकवरी के पूजा-पाठ एव दान पुण्य से सम्बन्धित दैनिक खर्चे का विवरण है। इसमे राजकुमारी का धार्मिक जीवन विशिष्ट रूप से उभर कर आया है।

धार्मिक जीवन —

इस बही के अनुसार राजकुमारियो का धार्मिक जीवन द्रष्टव्य है। महाराजा मानसिंहजी की सुपुत्री सूरजकवरी नित्य पूजा-पाठ व दान-पुण्य किया करती थी। इस बही मे पितरेसुरा, गणेशजी, हनुमानजी, भेरूजी, गोगाजी, महासतिया जुझारा (युद्ध मे वीर गति को प्राप्त हुए) चामुण्डाजी, नागणेचीजी की पूजा का उल्लेख है। इन सब की पूजा मे रोळी मोळी, सुपारी, कुकुम, नारियल, चदन, कपूर, श्रीफल, केसर आदि को उपयोग मे लिया जाता था। इससे ऐसा लगता है कि उस समय लोक-देवी-देवताग्रा को तो विशेष महत्व दिया ही जाता था इसके अतिरिक्त उस युग मे महासतियो एव जुझारा को भी विशिष्ट आस्था की दृष्टि से देखा जाता था।

इस बही मे सूरजकवरी जी के द्वारा किये गये दान-पुण्य का भी उल्लेख है। ब्राह्मणो को दक्षिणा म रुपये, अन-मेटूं (चने की दाल, चावल) हल्दी, गुड, मिसरी आदि दिये जाने का उल्लेख है। उन्ह विशिष्ट अवसरो पर भोजन कराये जाने का भी उल्लेख हैं। उन्ह भाजन मे हलुआ जलेबी, दही दूध, पेडा, घेवर मालपूवा, लडडू, पेठा, मोठ की फली व काकडी का साग आदि खिलाये जाने का भी उल्लेख है। आज भी ये सब मारवाड के विशिष्ट व्यजना के रूप मे प्रसिद्ध हैं।

इसमे एक सुहागिन ब्राह्मण स्त्री को हाथी दात का चूडा दान मे दिये जाने का भी वर्णन है। इससे ऐसा लगता है कि उस युग मे सुहागिन स्त्रिया हाथी दात के चूडे को विशिष्ट रूप से पहनती थी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उस युग मे राजकुमारियाँ नित्य पूजा पाठ से रुचि रखती थी एव ब्राह्मणो एव प्रपगा को दक्षिणा एव दान दिया करती थी।

१६२ महाराजा विजयसिंह री राणी इन्दर कुवर री वही

१ क्रम सख्या—७, २ वही का नाम—महाराजा विजयसिंह री राणी इन्दर कुवर री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या ८२, ५ लिपि समय—वि० स० १८२३ से १८३८ फाल्गुन सुद ८, ६ विशेष विवरण—सवत् १८२३ मे महाराजा विजयसिंह का श्रीमती इन्दर भाणात से विवाह हुआ। जिनकी अभोट, पचमासी आगरणी का उत्सव सम्पन्न हुआ। १८२४ विक्रम सवत् मे महाराजकुमार चिमनसिंह का जन्म हुआ। महाराजकुमार चिमनसिंह का विवाह भाटी कन्या से सवत् १८३८ मे हुआ। इनकी पत्नी के अभोट का उत्सव सवत् १८३८ जेष्ठ सुदी एकादशी को सम्पन्न हुआ। प्रस्तुत वही मे उपयुक्त उत्सवो पर अच्छा प्रकाश पडा है। इस वही से लोक-देवी-देवताओ के महत्त्व को भी समझा जा सकता है।

प्रस्तुत वही मे १८ वी शताब्दी मे राजघराने मे सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजो एव उत्सवो का वर्णन आया है। ऐसे रीति रिवाजो के माध्यम से राज घरान के व्यक्तियो का सामाजिक जीवन विशिष्ट रूप से उभर कर आया है। इन अवसरो पर खर्च हुए रुपयो का भी इस वही मे लेखा-जोखा है।

सामाजिक जीवन —

राजस्थानी संस्कृति मे विभिन्न उत्सव मनाने की परम्परा है। यहाँ राज घरानो मे तो विभिन्न उत्सव मनाये जाते रहे हैं। जिसमे अभोट, पचमासी, आगरणी, जन्मोत्सव आदि का विशिष्ट महत्व है। इन उत्सवो को मुख्य रूप से राज महलो मे ही मनाया जाता था। ये उत्सव बडी धूम धाम से सम्पन्न होते थे। इन अवसरो पर राजकर्मचारियो व अन्य लोगो को गुड बाटने की विशिष्ट परम्परा रही है। इन अवसरो पर देवी-देवताओं को भेंट चढा कर प्रसन्न किया जाता था। उनकी पूजा की जाती थी। राजघराने मे सम्पन्न होने वाले उपयुक्त उत्सवो का संक्षिप्त परिचय अग्रलिखित पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

अभीट –

राजघरानो मे इस उत्सव का विशिष्ट महत्त्व रहा है। यह उत्सव किसी महाराजा या महाराजकुमार की रानी गभवती हान पर मनाया जाता था। मारवाडी भाषा मे रानी के गभवती होने को 'रानी के अभीट का हाना' कहत है। इस अवसर पर सभी लोगा को गुड वाटा जाता था। देवी-देवताआ की पूजा की जाती थी। उनके वस्त्र, छतर आदि चढाये जाते थे।

पचमासी –

रानी के गभवती होने के पाँच महीने पूरे होने पर पचमासी उत्सव बडे ही धूम धाम से सम्पन्न होता था। इस अवसर पर भी गुड वाटा जाता एव देवी देवताओ की पूजा होती थी।

आगरणी –

यह उत्सव भी रानी के प्रसव पर सम्पन्न होता था। इस अवसर पर भी देवी-देवताओ की पूजा का विशिष्ट आयोजन होता था।

जन्मोत्सव –

रानी जब राजकुमार या राजकुमारी को जन्म दे देती, उस अवसर पर जन्मोत्सव मनाया जाना। राजघराने मे यह उत्सव अत्यन्त ही धूम धाम से होता, इस अवसर पर गुड, मिठाईया, रुपये व वस्त्र बाटे जाते थे। इस खुशी म कदियो को कद से मुक्त भी किया जाता था। कुछ विशिष्ट लोगा को गाव के गाव इनायत कर दिये जाते थे। इस अवसर पर 'सूरज भगवान' 'भैरूजी' आदि की विशिष्ट पूजा होती थी।

एसे अवसरा पर पूजा मे काम आने वाली चीजें इस प्रकार थी —

नारियल सिंदूर, मालीपना, तल, घी, कूकू, मेहदी, मोळी, चावल मूग, गुड आदि। इन अवसरो पर देवी देवताओ के आभूषण व पोशाकें भी चढाये जाते थे। पोशाक मे देवताओ के वागा एव देवियो के घाघरा साडिया चोली आदि होते थे।

पचमासी के अवसर पर देवस्थानो मे बतन आदि भेंट किये जाते। बतना मे कडाइया, थालिया आदि प्रमुख थे। ऐसा इस बही से प्रमाणित होता है। उदाहरण के लिए इस अवसर पर ठाकुर जी के मदिर मे ग्यारह बतन दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"ठाकुर जी श्री सीतारामजी रे ११"   पृ० सख्या—१४

राजकुमार चिमनसिंह के जन्मोत्सव को बडी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर भैरूजी की पूजा की गई। पूजा मे निम्न सामग्री काम म ली गई—

बाट (दला हुआ गहूँ) मूग तेल घी, गुड, तिल, मेहन्दी, मालीपना, सुपारी पोथी कुसुम, नारियल आदि।

राजस्थान के लोक-देवताओ मे भैरूजी का विशिष्ट स्थान है। भरूजी पुत्र देने के दवता मान जाते हैं, इसलिए राजघरान म भी भैरूजी की जन्म उत्सव पर पूजा होती थी।

इस अवसर पर माताजी की भी पूजा होती थी।

इस वही मे प्रसव के बाद रानी को खिलायी जाने वाली सामग्री का भी उल्लेख है, यथा—

बीदाम, अजमो, पीपलामूल, केसर बिस्तूरी, जीरा, गुद, खोपरा आदि।

ये ही चीजें देवस्थान मे भेंट किये जाने की परम्परा इस वही से प्रमाणित होती है।

जन्मोत्सव पर वेश्याओ को भी मिठाईया एव वस्त्र भेंट किये जाते थे—
"पातरीया नु बागा १० ।" पृ० सख्या—६६

वही के अनुसार चिमनसिंह के जन्मोत्सव पर भक्तिन औरतों को वस्त्र बाटे गये। नगारखाने के लागो को भी बागे (लम्बा कोट) बाटे गये। कुछ नगारचिया के नाम इस प्रकार है—

दईदास, नूरो खीवो रेहमतुलो, कासम आदि।

राजस्थान म होली के अवसर पर ढूढ लाने की विशिष्ट परम्परा रही है इस अवसर पर ढूढ लाने वाला मनुष्यो का समूह बालक के दीर्घायु होने की आशिष देता है एव उसके पिता से कुछ भेंट लेता है।

इस अवसर पर राजघराने मे भी ढूढ उगाई जाती थी। वही मे चिमनसिंह की ढूढ लान वाला को विशिष्ट भेंट दी गई। इस अवसर पर नाजर, जोगी, सेवग, कोतवाल आदि लोगो का महाराजा ने मिठाईया के थाल भेजे। इस उत्सव को भी बडी धूम धाम से मनाया जाता।

राजस्थान मे बालक के प्रथम केश मुण्डन के उत्सव को भी मनाया जाता है। बालक के प्रथम मुण्डन के समय देवी देवताओ को भेंट चढाई जाती थी। यह उत्सव राजघराने मे विशिष्ट रूप से सम्पन्न होता था। राजघराने की भाषा म केश

के दम्पद की 'सोहिन दाव्दो' [illegible] है। [illegible] जाती। [illegible] के 'देवर दम्पती' [illegible] व [illegible] है।

राजघराने में विवाह की [illegible] इस अवसर पर [illegible] जाती थी।

राजघराने में विवाह के अवसर पर कई परम्परा [illegible] जैसा कि इस बही में उल्लेख है।

गढ़ में प्रवेश होते समय कमल परिक्रमा के [illegible] रही। [illegible] उन्हें रुपये आदि भेंट [illegible] दे। बही के अनुसार महारानी इन्दर भाणेज [illegible] आई तब 'आरती' उतारी गई। राजस्थान में यह परम्परा आज भी विद्यमान है। आरती उतारने के बाद 'बार' रोका गया। उस समय इन्दर भाणेज ने 'बार रोकाई' के पचास रुपय दिये। रानी ने आरती के भी [illegible] रुपये दिये।

राजस्थान में सुखी वैवाहिक जीवन के लिए नेहड़ी के थार की [illegible] दुल्हन द्वारा परिक्रमा की जाती है। इस बही में भी महाराजा श्री विजयसिंह जी एवं महारानी श्रीमती इन्दर भाणेज द्वारा नेहड़ी के थार की परिक्रमा देने का वर्णन द्रष्टव्य है—

''नहनी रे गुजार रे ऊपर कला पूजा कर पधारो। [illegible] ठजोड़ा खोलीयो।'' पृ. [illegible]—२

अन्य देवी-देवताओं की भी पूजा की गई। उनमें पुजापा चढ़ाया। उनके नाम इस प्रकार है—

महादेवजी नागणेची माताजी, हींगलाज माताजी, पथदेवता, श्री [illegible] गोराजी, मलीनाथजी, पितराजी आदि।

गढ़ में प्रवेश होने के पश्चात् महारानी को 'खोळ' भी भराई जाती। महारानी भाणेज को 'खोळ' भराई गई, उसमें निम्न चीजें डाली गई, यथा—

रोकड़ रुपय, नारियल' बादाम, दाखे, खारके, मिसरी, नारियल के गोटे, पिसता आदि।

राजस्थान में आज भी नववधु के घर आने पर उसकी 'खोळ' [illegible] जाती है।

राजस्थान मे विभिन्न लोक देवी देवताओ की आराधना रोग निवारण के लिए भी होती थी। अमुक बीमारी से पीडित व्यक्ति सम्बंधित लोक देवी देवता की पूजा एव आराधना करे तो उसकी बीमारी ठीक हो सकती है। यहा रामदेवजी लूले लगडे, अन्ध, कोढी की, पाबूजी ऊट की, गोगाजी एव तेजाजी साप के काटे व्यक्ति की, मोती महाराज मोतीझरा की, लुरकी माता खासी की, ओरी माता छोटी चेचक की, शीतला माता बडी चेचक की बीमारियो को ठीक करने वाले माने गये हैं।

वही के अनुसार महाराज कुमार चिमनसिंह को तीन वार ओरी एव शील माता का प्रकोप रहा था। सवप्रथम उन्हे सवत् १८३१ मे, दूसरी बार सवत् १८३५ मे एव तीसरी बार सवत् १८३८ म चेचक निकली। तीन बार ही महाराजा एव रानी ने शीतला माता की विशिष्ट पूजा की। उन्हे पोशाकें चढाई गई। उनके आभूषण चढाये गये। आभूषणो मे गुजरियो, तीमणियो, बरण, चीढ, माला, बारलो, नथ, नैंतर, कठ आदि।

राजघराने म सम्पन्न होने वाले उत्सवो, पर्वों, त्योहारो से राजस्थानी सस्कृति को विशाल परिप्रेक्ष्य मे समझ सकते हैं। राजघराने के अपने कुछ विशिष्ट रीति-रिवाज हुआ करते थे पर तु अनेक रीति रिवाज सामान्य जन के रीति रिवाजो की ही तरह मनाये जाते थे, आर्थिक सम्पन्नता के कारण उनमे कुछ अन्तर अवश्य रहता था।

१६३ महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडदायतजी श्रीमती पनराय बावडी खुदाई जिण री बही

१ क्रम सख्या—१० २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी रे पडदायतजी श्रीमती पनराय बावडी खुदाई जिण री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२८७, ५ लिपि समय—वि० स० १८६२ ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे महाराजा मानसिंहजी की पडदायत श्रीमती पनरायजी द्वारा खुदाई गई बावडी एव बगीचे लगाई की मजदूरी के जमा खच का विवरण है।

इस बही से यह ज्ञात होता है कि उस समय रानिया अपनी इच्छानुसार कुछ भी सास्कृतिक काय करवा सकती थी। बावडी खुदवाने एव बाग लगवाने स उनके नाम की प्रतिष्ठा बढती थी। वे अपने नाम को अमर करने के लिए भी ऐसे काय सम्पन्न करवाती थी। इस दृष्टि से पडदायत श्रीमती पनरायजी का विशिष्ट

रूप से उल्लेख किया जा सकता हैं। इस बही से उनके जीवन की लोक कल्याणकारी प्रवति उभर कर सामने आयी है। इससे लोगो को मजदूरी भी मिलती थी।

१६४ महाराजा श्री मानसिहजी रे पडतायत श्री पनराय रे हरिद्वार व गगा तीर्थ री बही

१ क्रम सख्या—७२, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिहजी रे पडदायत श्री पनराय रे हरिद्वार व गगा तीथ री बही ३ प्राप्ति स्थान – पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—५५, ५ लिपि समय—सवत् १६११ फागुन सुदि ५ से आषाढ सुदि १५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही म महाराजा मानसिह की पडदायत पनराय गगा स्नान के उपलक्ष मे किये गये दान पुण्य मे हुए खर्चे का विवरण है।

धार्मिक जीवन –

राजघरान की स्त्रिया राजनैतिक कार्यों के अतिरिक्त धार्मिक कार्यों मे भी रुचि लिया करती थी। वे दान-पुण्य और तीथ यात्रा करती थी। इसका प्रमाण प्रस्तुत बही है। बही के अनुसार पनराय गगा स्नान के लिए हरिद्वार गई। वहा ब्राह्मणो को दान दिया। विभिन्न मन्दिरो मे दान दिया। गगाजी की पूजा की। गगा स्नान के पश्चात् जोधपुर लौटी। यहाँ पर भी खूब दान किया। विभिन्न मन्दिरों मे रुपये एव गगाजल की सीसिया भेंट की, ब्राह्मणो को भोजन करवाया एव उन्हें दक्षिणा दी।

पडदायत ने गगाजी मे स्नान करते समय गगाजी की पूजा के लिए निम्न सामग्री उपयोग मे ली—

दूध, घी, पेडा, पुष्प, दही, पतासा, नारियल आदि।

वहाँ ठाकुरजी, ब्रह्माजी, श्री चौथमाताजी एव महादेवजी के मन्दिरों मे रुपये भेंट किये।

पडतायत ने गगाघाट पर गौदान भी किया, यथा—

"गऊदान रो रुपीयो एक" पृ० सख्या—२१

गगाघाट पर ब्राह्मणों को वस्त्र भेंट किये जिनमे अगोछा व दुपट्टा प्रमुख थे।

पनराय गगा स्नान करके जोधपुर लौटी तब उन्होंने श्रीनाथजी के मन्दिर मे रुपये व सोने की मोर भेंट की, यथा—

'१)७ भेंट मोर १) भेक ने रुपीया सात

॥) दीखणा रो

।) सेवग हीरालाल ने रुपीयो पाव।" पृ० सख्या—१४

इस अवसर पर जोधपुर के मन्दिरो मे तो भेंट चढाई साथ ही मेडता म चतुरभुजजी के मन्दिर म भी पडदायत ने रुपया व प्रसाद चढाया, यथा—

"१ =) ठाकुर जी श्री चतरभुजजी मेडता मे बीराजे तीण रे
=) पुजापो परसाद आना दोय रो
१) भेट रुपीयो एक" पृ० सख्या—२२

पडदायत न महादेवजी के मन्दिर मे गगाजल भेंट किया, यथा—

"। =) माहादेवजी श्री रामेश्वरजी चाद पोळ बार बीराजे तीण रे श्री गगा जळ री सीसीया भराई।" पृ० सख्या—२४

गगाजी तीर्थ स्थल से लौटन के बाद आषाढ सुदी १२ (द्वादशी) को ब्राह्मणो का भोजन एव हवन करवाया। हवन मे निम्न सामग्री उपयोग मे ली—

कुकुम, पुष्प दही, नागरबेल, सुपारी, नारियल मूग, जवार, नारगिया आदि।

१६५ महाराजा श्री मानसिहजी साहब रे पडदायत श्रीमती पनराय री बही

१ क्रम सख्या—८४ २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिहजी साहब रे पडदायत श्रीमती पनराय री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२१, ५ लिपि समय—सवत् १६२२ आषाढ वदी १२, सोमवार ६ विशेष विवरण—इस बही में पाली के महाजन अगरचन्द सचेती की पुत्री महताब के विवाह पर महाराजा मानसिह की पडदायत पनराय द्वारा किये गय खच का विस्तृत रूप मे वर्णन है।

इस बही म पडदायत का सामाजिक जीवन उभर कर आया है। इसम विवाह की रस्म पर अच्छा प्रकाश पडा है। बही के अनुसार पडदायत पनराय न व्यक्तिगत रूप से मेहताब के विवाह पर खच किया है। इससे हम यह अनुमान लगा सकत हैं कि राजघराने के व्यक्तियो एव बडे-बडे महाजन परिवार के आपस म घनिष्ट सम्बन्ध हुआ करते थ। वे एक दूसरे क विवाह जसी रस्मो पर खच किया करते थे। विवाह जैसी रस्मो मे केवल महाराजा ही नही बल्कि रानिया व पडदायतें भी भाग लिया करती थी। पडदायतें साधारण रखैलें नही होती थी।

इस बही के शोधात्मक अध्ययन से हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि वे लोग उसके सम्बन्धी रहे हो। इसलिए रानी ने उसके विवाह पर व्यक्तिगत रूप से खर्च किया है।

इस बही मे विवाह की रस्मा का वर्णन आया है। जैसे—बनोला देना, मिलणी करना, पेरावणी आदि। राजस्थानी सस्कृति म विवाह की इन रस्मा का अत्यन्त ही महत्व है।

बनोला –

दुल्हा या दुल्हन को उनके परिजन भोजन के लिए आमन्त्रित करते है उसे बनोला देना कहते हैं। जैसाकि इस बही मे उल्लेख है। पनराय न महाजन की पुत्री मेहताब का बनोला दिया, उसम खर्च हुए रुपया का उल्लेख है —

"४।।।) बनालो दीयो असाढ वदी १०"   पृ० सख्या—१६

मिलणी –

राजस्थान मे विवाह रस्म पर 'मिलणी का भी विशिष्ट महत्त्व है। दुल्हे की बारात कन्या पक्ष के यहाँ पहुँचने पर सन्ध्या के समय दोना पक्षा के लोगो मे प्रथम मिलन होना है, उसे राजस्थान मे 'मिलणी कहत है। उसम रुपय भी भेंट किय जाते हैं। इस बही मे मिलणी का भी उल्लेख है—

"मीलणी रो रुपीयो एक।"

पेरावणी –

राजस्थानी सस्कृति की दृष्टि से इसका भी महत्व है। दुल्हे के परिजना का वस्त्र व रुपये भेंट किये जाते हैं, उसे 'पेरावणी' कहते हैं। पेरावणी से तात्पर्य वस्त्र पहनाना है। इस बही मे इसका भी उल्लेख है।

सामाजिक जीवन –

बही के अनुसार विवाह के अवसर पर उपयोग म ली जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, आभूषण व बर्तन) निम्न थे—

खान पान –

इस बही म विवाह के अवसर पर देशी घृत खरीदे जाने का वर्णन है। इसी तरह विवाह के लिए अन्न खरीदे जाने का भी उल्लेख है। अन्न मे चना, गहूँ, मूग, जवार आदि। इनके विशिष्ट व्यजन बनते थे। सब्जी खरीद मे कुमटिया, गवार, फलिया, सेलरा, गुदा आदि का उल्लेख है। खीर बनाने के लिए दूध खरीदे भी उल्लेख हुआ है। प्रतीत होता है कि हरी सब्जी यहाँ कम ही मिलती थी

वेशभूषा –

इस बही मे विवाह के अवसर पर दिये जाने वाले वस्त्रों का भी उल्लेख है। जैसे—मोलीया (साफा), जयपुर की छींट, कोर गोटो, दुपट्टो चोलदार, कसुमल, मलमल आदि। उस समय विवाह मे ये ही वस्त्र भेंट किये जाते थे। मुख्य रूप से इन्हीं वस्त्रों का प्रचलन था।

आभूषण –

इस बही में विवाह मे दिये जाने वाले कुछ आभूषणों का भी वर्णन है। आभूषणों में सोने के डोरे, बाजूबन्द, मोतियों की कण्ठी आदि का उल्लेख है। बही के अनुसार मेहताब के पति को मोतियों की कण्ठी व कड़े के रुपये दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"मेहताब रे बींद रे मोतीया री कण्ठी,
कड़ा रा रूपीया ५४" पृ० सख्या—५

विवाह मे दुल्हे को रोकड़ रुपये भी दिये गए इसका भी यथास्थान बही मे उल्लेख आया है।

दहेज –

विवाह पर दहेज का दिया जाना तो एक सामान्य परम्परा कही जा सकती है। इस बही मे भी दहेज का वर्णन है। इस विवाह पर बिस्तरों के रूप में रेशम की गुलाबी रजाई, जाजम आदि दिए गए। बर्तनों के रूप में कळस, थाळ कांसी रा, थाळी, पीतल का लोटा, कांसी का बाटका, दुकनिया पीतल का बाटकी, पीतल की कुडछी (चम्मच), थरिया आदि दिए गए। उस समय विशेष तौर से कांसी एवं पीतल के बर्तनों का प्रचलन था।

हम कह सकते हैं कि राजा रानियों की अपनी इच्छाएँ हुआ करती थीं। वे चाहे जैसा कर सकते थे। वे जिस किसी पर द्रवित हो जाते उसको बहुत कुछ दे दिया करते थे। किसी प्रियजन की पुत्री का विवाह [illegible] । उनके लिए मामूली बात थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रानियाँ [illegible] थी। महाजन कन्या के विवाह का पूरा खर्च रानी [illegible] दृष्टिकोण भी प्रकट होता है।

बही के अनुसार उस समय विवाह [illegible] में तो मिलता ही है साथ ही साथ तत्कालीन समय [illegible]

जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, जेवर, बतन आदि) के बारे मे भी अच्छी जानकारी मिलती है।

१६६ महाराजा श्री मानसिहजी रो महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) रो मन्दिर बणवायो उण री वही

१ क्रम सख्या—१४५, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिहजी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) रो मन्दिर बणवायो उण री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२६, ५ लिपि समय—सवत् १६०५, श्रावण बदी प्रथमा से, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी ने ठाकुरजी का मन्दिर बनवाया उसका लेखा जोखा है। बही मे उस मन्दिर को बनाने वाले कारीगरो के नाम एव उनकी उपस्थिति का विवरण है। इसमे भटियाणी रानी का धार्मिक जीवन भी विशिष्ट रूप से उभर कर सामने आया है। इस बही से यह प्रमाणित होता है कि रानी की नाथ सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य देवताओ म भी आस्था रही है। रानी द्वारा ठाकुरजी का मन्दिर बनवाना इसी बात की पुष्टि करता है।

उस समय के बने हुए मन्दिरो की मजबूती का प्रमुख कारण विशिष्ट मसाले का होना है। उस समय मसाले के रूप म चूना, मूरड कक्र, खड्डी, कळी आदि काम म आते थे।

बही के अनुसार खड्डी को पकाने के लिए छाणो (सूखे गोबर) का प्रयोग किया जाता था। उस खड्डी के उपयोग से मन्दिरो का मजबूत बनना स्वाभाविक है।

बही के अनुसार कुछ कारीगर और मजदूरो के नाम इस प्रकार है—

कारीगर—मुकीम, घासू रमजानी, गुमान, खेतो, मानो, रामलाल, गिरधारी, नाथो, पीरो मूळो आदि।

चूनगर—गिरधारी, गेगो।

घडाईदार—तेमो, खुदाबगस, भूरियो, दुरगियो, रेहमान, हुसेन आदि।

मजदूर—करणो, जीवण, पनो बुदो तनु, बहादुर, मेताब, बगसो आदि।

इन सब कारीगरो एव मजदूरो की उपस्थिति और समय-समय पर इन्हे दिये जाने वाले रुपयो का लेखा-जोखा प्रामाणिक ढग से रखा गया है।

वेशभूषा –

इस बही मे विवाह के अवसर पर दिये जाने वाले वस्त्रो का भी उल्लेख है। जैसे—मोलीया (साफा), जयपुर की छींट, कोर गोटो, दुपट्टो घोलदार, कसुमल, मल्मल आदि। उस समय विवाह मे ये ही वस्त्र भेंट किये जाते थे। मुख्य रूप से इन्ही वस्त्रो का प्रचलन था।

आभूषण –

इस बही मे विवाह म दिये जाने वाले कुछ आभूषणों का भी वर्णन है। आभूषणो मे सोने के डोरे, बाजूबन्द, मोतिया की कण्ठी आदि का उल्लेख है। बही के अनुसार मेहताब के पति को मोतियो की कण्ठी व कडे के रुपये दिये गये उसका उल्लेख द्रष्टव्य है—

"महताब रे धीद रे मोतीया री कण्ठी,
कडा रा रूपीया ५४" पृ० सख्या—५

विवाह मे दुल्हे को रोकड रुपये भी दिये गए इसका भी यथास्थान बही म उल्लेख आया है।

दहेज –

विवाह पर दहेज का दिया जाना तो एक सामान्य परम्परा कही जा सकती है। इस बही मे भी दहेज का वर्णन है। इस विवाह पर बिस्तरो के रूप मे रेशम की गुलाबी रजाई, जाजम आदि दिए गए। बर्तनो के रूप मे कळस, थाळ कासी रा, थाळी, पीतल का लोटा, कासी का बाटका, दुकनिया पीतल का, बाटकी, पीतल की कुडछी (चम्मच), चरिया आदि दिए गए। उस समय विशेष तौर से कासी एव पीतल के बर्तनो का प्रचलन था।

हम कह सकते हैं कि राजा रानिया की अपनी इच्छाएँ हुआ करती थी। वे चाहे जैसा कर सकते थे। वे जिस किसी पर द्रवित हो जाते उसको बहुत कुछ दे दिया करते थे। किसी प्रियजन की पुत्री का विवाह करना तो उनके लिए मामूली बात थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रानिया खर्च करने मे स्वतन्त्र थी। किसी महाजन कन्या के विवाह का पूरा खर्च रानी द्वारा उठाने मे उसका उदारवादी दृष्टिकोण भी प्रकट होता है।

बही के अनुसार उस समय विवाह रस्म की परम्परा के बारे मे तो परिचय मिलता ही है साथ ही साथ तत्कालीन समय मे विवाह के अवसर पर उपयोग मे ली

जाने वाली सामग्री (भोजन, वस्त्र, जेवर, बर्तन ग्रादि) के बारे म भी अच्छी जानकारी मिलती है।

१९६ महाराजा श्री मानसिहजी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) रो मन्दिर बणवायो उण री बही

१ क्रम सख्या—१४५, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिहजी री महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी साहिबा ठाकुरजी (श्री कृष्ण भगवान) रो मन्दिर बणायायो उण री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२९, ५ लिपि समय—सवत् १९०५, श्रावण वदी प्रथमा से, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी ने ठाकुरजी का मन्दिर बनवाया उसका लेखा जोखा है। बही मे उस मन्दिर को बनाने वाले कारीगरो के नाम एव उनकी उपस्थिति का विवरण है। इसमे भटियाणी रानी का धार्मिक जीवन भी विशिष्ट रूप से उभर कर सामने आया है। इस बही से यह प्रमाणित होता है कि रानी की नाथ सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य देवताओ मे भी आस्था रही है। रानी द्वारा ठाकुरजी का मन्दिर बनवाना इसी बात की पुष्टि करता है।

उस समय के बने हुए मन्दिरो की मजबूती का प्रमुख कारण विशिष्ट मसाले का होना है। उस समय मसाले के रूप मे चूना, मूरड, ककर, खड्डी, कळी ग्रादि काम मे ग्राते थे।

बही के अनुसार खड्डी को पकाने के लिए छाणो (सूखे गोबर) का प्रयोग किया जाता था। उस खड्डी के उपयाग से मन्दिरो का मजबूत बनना स्वाभाविक है।

बही के अनुसार कुछ कारीगर और मजदूरो के नाम इस प्रकार है—

कारीगर—मुकीम, घासू, रमजानी, गुमान, खेतो, मानो, रामलाल, गिरधारी, नाथो, पीरो, मूळो ग्रादि।

चूनगर—गिरधारी, मेघो।

घडाईदार—तेमो, खुदाबगस, भूरियो, दुरगियो, रेहमान, हुसेन ग्रादि।

मजदूर—करणो, जीवण, पनो बुदो, तनु, बहादुर, मेताव, बगसो ग्रादि।

इन सब कारीगरो एव मजदूरो की उपस्थिति और समय-समय पर इन्हे दिये जाने वाले रुपयो का लेखा जोखा प्रामाणिक ढग से रखा गया है।

१६७ महाराजा श्री मानसिंहजी रे वर्ष गाठ री वही

१ क्रम संख्या—१५३ २ महाराजा श्री मानसिंहजी रे वर्ष गाठ री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—३६, ५ लिपि समय—संवत १८९१ वैसाख माह ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा श्री मानसिंहजी की वर्ष गाठ पर उनकी रानी श्रीमती देवड़ी ने दावत (गोठ—किसी विशेष खुशी के अवसर पर मिठाइयां खिलाना एवं बांटना गोठ कहलाती है) रखी। इस अवसर पर सब को मिठाइयां व थाल वितरित किए गए आदि का वर्णन है।

इस वही से राजघराने के रस्म एवं रीति रिवाजों की अच्छी झलक मिलती है। वर्ष गाठ का उत्सव राजघराने में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न किया जाता रहा है। महाराजाओं की वर्ष गाठ के समय उनकी रानियां व्यक्तिगत रूप से उनकी वर्ष गाठ मनाती थी जैसाकि इस वही से प्रमाणित होता है। यह उत्सव अत्यन्त ही खुशी के साथ सम्पन्न होता था। इस अवसर पर विभिन्न मन्दिरों में एवं परिजनों को मिठाइयों के थाल भेजने की परम्परा रही है। इस समय सभी देवताओं पितरों, सतियों के मन्दिरों में मिठाइयों के थाल भेजकर उन्हें इस शुभ अवसर पर याद किया जाता था। इस प्रकार महाराजा मानसिंह की रानी देवड़ी ने उनकी वर्ष गाठ पर गोठ देकर अपनी व्यक्तिगत खुशी जाहिर की है।

इस अवसर पर मन्दिरों में थाल भिजवाने की विशिष्ट परम्परा रही है। इन मन्दिरों में कार्यरत सेवगों (पुजारियों) रसोईदारों पूरबीया ब्राह्मणों, नाइयों, धोबियों, चौकीदारों आदि को मिठाइयों के थाल भेजे जाते थे। वही के अनुसार जयमन्दिर महामन्दिर पदमसर के ऊपर मन्दिर फूल मन्दिर श्रीनाथजी के मन्दिर, श्री मन्दिर श्री मन्दिर मण्डोर, श्री मन्दिर बालसमन्द, श्री मन्दिर अभय सागर ऊपर आदि में मिठाइयों के थाल भेजे गये।

इसी प्रकार महादेवजी के मन्दिरों पर भी मिठाइयों के थाल भेजे गए। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

"श्री माहादेवजी माथ बिराजे तिण रे थाळ।" पृ० संख्या—७

इन मन्दिरों में वैजनाथजी व अम्लेसरजी के मन्दिर में थाल भेजे गए।

इस अवसर पर विभिन्न देवियों के मन्दिरों में थाल भेजे गए हैं, जैसे—श्री नागणेची माताजी, श्री हींगलाज माताजी श्री करणी माताजी, श्री चावंडा माताजी आदि। देवताओं में पंच-देवताओं एवं भैरूजी के मन्दिरों में थाल भेजे गए थे।

इस अवसर पर मृत आत्माओ को भी याद किया जाता था। नायो की समाधियो पर भी थाल भेजे गए थे। उदाहरण द्रष्टव्य है—

'श्री देवनाथजी महाराज रे समाध

१ सेवग जणा ४" पृ० सख्या—६

इस खुशी के अवसर पर स्वर्गीय महाराजाग्रा के थडा (समाधिया) पर थाल भेजे गए। महाराजा श्री अजीतसिंहजी के थडे मडोर मे एक मिठाई का थाल भेजा गया।

वप गाठ के अवसर पर सतियो की समाधिया पर थाल भेजकर उन्हे याद किया गया। जिन जिन सतियो के थाल भेजे गये उनके नाम इस प्रकार है—

दादीजी श्री चवाणजी, चदरावतीजी आदि।

अजीतसिंहजी की कुछ महासतिया इस प्रकार है—

अभयकवर, श्री पासवान, सुखशोभाजी आदि।

इस अवसर पर पितरा (राजघराने के मृत व्यक्ति जो देवताओ की श्रेणी मे माने जाते है) का थाल भेजे जाते थे। पितरजी श्री जोरावरसिंहजी, जेतसिंहजी, सामर पितरजी, सूरसिंहजी, सावतसिंहजी आदि।

इस अवसर पर राजपरिवार के व्यक्तियो को भी थाल भेजे जात थे।

महाराजा की वप गाठ पर कमीणा को भी थाल भेजे गये। जसे—दर्जिया, रगरेजा, पिंजारो दलाला, गजधरो, खातियो नाइया चौकीदारो, राईका दरोगो आदि।

इस प्रकार इस वही से राजघराने के सामाजिक जीवन को जान सकते हैं। वप गाठ का उत्सव तो राजघराने म विशिष्ट रूप से मनाया जाता रहा है। इस अवसर पर सभी लोगो को मिठाइया बाट कर वप गाठ की खुशी जाहिर की जाती थी।

१६८ महाराजा मानसिंहजी रे पडदायत श्री छोटा रूपजोतजी देवलोक हुवा उण री वही

१ क्रम सख्या—१६५, २ वही का नाम—महाराजा मानसिंहजी र पडदायत श्री छोटा रूपजोत देवलोक हुवा उण री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु०प्र०, ४ पत्र सख्या—१०, ५ लिपि समय—सवत् १८९५ श्रावण सुद २ से श्रावण सुदी १३, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही म महाराजा मानसिंह के पडदायत छोटा रूपजोत के मृत्यु-सस्कार पर होने वाले खर्चे का विवरण है। राजघराने मे

मृत्यु सस्कार पर विशिष्ट परम्पराओ एव रीति रिवाजा का पालन किया जाता था जिनका वर्णन इस वही म है। कुल खच चार हजार तीन सौ सात रुपये पौने ग्यारह आने हुए।

मृत्यु सस्कार –

वही के अनुसार मृत्यु सस्कार पर राजघराने म विभिन्न तरह के दान दिये जाने की परम्परा रही है। इसमे वस्त्र दान, शैयादान, बतन दान, आभूषण दान, भोजनदान, गऊदान, रुपयादान आदि प्रमुख हैं। वही के अनुसार पटदायत श्री छोटा रूपजान जी के देवलोक होने पर महाराजा मानसिंह जी ने उनके पीछे "बारहवा" किया। बारह दिना तक ब्राह्मणा, गरीबो एव कबीना को दक्षिणा एव दान दिया। उन्हे भोजन कराया। पडदायत जी के पीछे बारह दिन तक गरूड पुराण पढवाया।

पडदायत के पीछे उनका एक, तीजे नवें, ग्यारहवें व बारहवें के दिन पर विशेप दान दिय गये। मन्दिरो मे रुपये भेंट किए गए। जनानी व मर्दानी पोशाक दुपट्टा, अगोछा, "ययादान म ढोलिया, पथरा, रजाई तकिया, बतन दान म तोरवाण परात, झारा कडछी, करी, तासली पीतल का लोटा आभूषण दान म कई तरह के आभूषण एव भगवान की सोने की मूर्ति आदि ब्राह्मणा का दिय गये। उनकी भस्मी पुष्कर जी म भेजी। उस अवसर पर भी ब्राह्मणा को दान दिया गया।

१६६ महाराजा श्री मानसिंह जी रे राजकुंवर छत्रसिंह रे विवाह री बही

१ क्रम सख्या—२४४, २, वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह जी रे राजकुवर छत्रसिंह रे विवाह री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१६०, ५ लिपि समय—सवत् १८८६ वैशाख सुदी १२, ६ विशेप विवरण—महाराजा मानसिंह क महाराजकुमार छत्रसिंह की सगाई गाव कल्याणपुर के राव दुरजणसिंह चौहान की पुत्री स हुई। प्रस्तुत वही मे देवडी रानी द्वारा महाराजकुमार छत्रसिंह जी की सगाई पर खच किये गए रुपया का विवरण है।

सामाजिक जीवन –

राजघराने म सगाई की रस्म का विशिष्ट महत्व था। इस रस्म को भी अत्यन्त ही ठाट-बाट के साथ सम्पन्न किया जाता था। वर व वधु पक्ष के बीच रुपयो, कपडा, मिठाईया व आभूषणा का लेन-देन होता था। इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से विभिन्न देवी-देवताओ क रुपया, मिठाईया, वस्त्र व आभूषणा की भेंट चढ़ाई जाती थी। ब्राह्मणा को भोज दिया जाता था। कमीणा (राजघराने का काम-काज करने वाले व्यक्ति) को रुपया मिठाईया से प्रसन्न किया जाता था।

प्रस्तुत बही के अनुसार महाराजकुमार की सगाई में ऐसी ही परम्पराओं का पालन किया गया है। सगाई के समय पायड़ा माताजी के आभूषण चढ़ाए गये।

इस अवसर पर माताजी का होम (हवन) भी किया गया। सम्बन्धित राजघराने के व्यक्तियों को भोज दिया गया। ब्राह्मणों को भोजन खिलाया गया। चमीणों को विभिन्न भेंटों से प्रसन्न किया गया।

इस बही में राजघराने के रीति-रिवाजों परम्पराओं आदि की तो जानकारी मिलती ही है साथ ही साथ इन ऐतिहासिक बहियों से राजस्थानी संस्कृति के वशिष्ट्य को भी भली भांति समझा जा सकता है।

१७० महाराजा श्री मानसिंह जी की रानी श्रीमती भटियाणी साहिबा रे हाथ खर्च री बही

१ क्रम संख्या—२४६, २ बही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी की रानी श्रीमती भटियाणी साहिबा रे हाथ खर्च री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—५६ ५ लिपि समय—संवत् १६२१ श्रावण वदी प्रतिपदा से चैत्र सुदी पूर्णिमा, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में महारानी भटियाणी के हाथ खर्च का विवरण है। बही में विभिन्न उत्सवों एवं पर्वों पर बांटी गई मिठाई एवं रुपया का विवरण है। रानी ने व्यक्तिगत रूप से विभिन्न पर्वों एवं उत्सवों पर मन्दिरों में, ब्राह्मणों को, अपने परिजनों को मिठाइयां रुपये एवं वस्त्र भेंट किए हैं। इस बही में रानी का धार्मिक एवं सामाजिक जीवन उभर कर आया है। यहाँ वर्ष गांठ के उत्सव का भी विवरण है।

धार्मिक जीवन –

राजपरिवार में विवाह एवं अन्य उत्सवों पर ब्राह्मणों को जो दक्षिणा दी जाती, उसे 'भूरसी दक्षिणा' कहते थे। इस दक्षिणा का इस बही में उल्लेख।

राजस्थान में प्राचीन समय से ही विभिन्न पर्व मनाए जाने की परम्परा रही है। जैसे—छमछरी (संवत्सरी), श्रावण की तीज, नागपंचमी, रक्षाबन्धन बछबारस, जन्माष्टमी, गोगानम आदि। ये सभी पर्व राजघराना में भी मनाए जाते रहे हैं। इन पर्वों पर महारानी श्रीमती भटियाणी ने विशिष्ट रूप से मिठाइयां, रुपये एवं अन्य चीजें वितरित की हैं। इस बही में ऐसे पर्वों पर ही प्रकाश डाला गया है। पर्वों का धार्मिक दृष्टि से महत्व है। साथ ही अन्न के बटवारें की प्रक्रिया भी ज्ञात होती है।

महारानी ने छमछरी (संवत्सरी) के अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन कराया, इसका उल्लेख निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

"१) बाई ईदर कुवर बाई रे छमछरी रा ब्रामणा ने भोजन कराया तीणरा सावण सुद ६ नम नु जीमाया।" पृ० सख्या—३

नाग पचमी पव –

इसका भी धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट महत्व है। राजघराने में इसे भी धूमधाम से मनाया जाता रहा है। रानी ने इस अवसर पर मिठाई के लिए रुपये दिये उसका वर्णन द्रष्टव्य है—

"सावणीया नागपाचम रे मेले गई जीण ने—

५) मीठाई रा दीया" पृ० सख्या—५

राजस्थान मे रक्षाबन्धन का पव भी अत्यन्त ही धूमधाम के साथ सम्पन्न होता है। यह पव भाई बहिन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है। इस अवसर पर राजघराने म मिठाइया रुपये एव वस्त्र देने की परम्परा रही है। रानिया व राजकुमारिया अपन भाइया के राखिया बाधती थी एव मिठाइया भेजती थी। इस वही मे भी इस अवसर पर महारानी द्वारा भेजे गए मिठाइयो के थाला एव रुपयो का उल्लेख है—

'सावण सुद १५ राखडी रा थाळ मेलीया रुपीया घरीया।"

इस अवसर पर ओढणी व काचली भी दी जाती थी यथा—

छोटा भटियाणीजी बाई परतापक्वर ने दीना राखडी रा—

केसरिया ओढणी, दुसीकेरी ने काचली कोर गोटा री।'

राजस्थान मे 'नागानम के अवसर पर नागदवता की पूजा हाती है। इस वही मे इस पव का भी मनाए जाने का उल्लेख है। महारानी द्वारा नागमन्दिर मे रुपये भेंट किए गए थे—

' नागमिन्दर र पुजारी न १ रुपया।"

इस वही म 'जन्माष्टमी' के पव को मनाने का भी वणन है। महारानी ने कृष्ण भगवान के मन्दिर के पुजारी को इस अवसर पर एक रुपया भेंट किया।

यहाँ भाद्र मास मे पडने वाली बछवारस' के पव को भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन पुत्रविहीन ललनाएँ 'बाव माता' की पूजा करती है। यह पव राजघराना मे भी सम्पन्न होता रहा है।' है पर— न अपने परिजना एव ब्राह्मणा को रुपये व सोने ३

इस वही म द्रष्टव्य है—

"श्री जोरावरसिंघजी लाल भवरसिंघ ने

१ ३

'टोगडा बछब्रारस' की पूजा करने वाली सवगणियो का भी रुपये भेंट किए गए। इस अवसर पर मन्दिरो मे भी रुपये भेंट किए जाते थ।

भाद्र मास मे ही पडने वाले श्राद्ध पक्ष पर राजघरान द्वारा ब्राह्मणो का भोजन करवाने की सुदृढ परम्परा रही है। वही मे इस अवसर पर ब्राह्मणो को भोजन कराए जाने का उल्लेख है—

"बाईजी श्री चादकवर बाईसा री सराध तीज नुवे जीएा रा ब्रामएा न भोजन कराया" पृ० सख्या—१३

राजघराने मे धम पर विशिष्ट खच किया जाता रहा है। जो भी साधु-सन्यासी उपवास करते थे, उन्ह भी रानी द्वारा भेंट किए जाने का उल्लेख है—

"२) फतेसागर माथे बाबा जमी मे बैठ न उपवास कीया जीण रे भेंट मेलीया।" पृ० सख्या—१६

उपयु क्त उल्लेखो से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि महारानी भटियाणी के मस्तिष्क म धार्मिक विचार कूट कूट कर भर हुए थे। महारानी ने ऐसे अवसरो पर ब्राह्मणो को गायें तक दान म दी है।

राजघरानो मे विवाह की रस्म तो विशिष्ट रूप से मनाने की परम्परा रही ही है। अपने सम्बन्धियो के विवाह क अवसर पर रानी ने कपड एव रुपये भेंट किए हैं। इस अवसर पर दुल्हे को बनोला (विवाह के अवसर पर दुल्हे के परिजन उसे विशिष्ट भोजन के लिए आमन्त्रित करते हैं, उसे बनोला देना कहते ह) देने का भी वर्णन इस वही मे आया है—

"२०) चवाणजी के लाल रे बनोला म सरच।"

इस अवसर पर दुल्हे की मा को वेस (पूरी पोशाक) क रुपये भी भेंट किए जाते थे। महारानी द्वारा एसे ही विवाह पर २००) दो सौ रुपये वेश के खच किए जाने का इस वही मे उल्लेख द्रष्टव्य है—

"भादवा सुद ७ बहु श्री चवाणजी रे लाल रीणजीतसीघ रे व्याव रा वेस रा दीया रोकडी दोय सौ।" पृ० सख्या—१०

इस अवसर पर कमीणा (दरजी लोहार, खाती, माली, नाई आदि) को रुपये एव कपडे भी भेंट किए जाते रहे है। महारानी ने एक दरजन को रुपये एव ओढणी भेंट की उसका उल्लेख इस प्रकार है—

'दरजी दयाराम री वऊ ने दोय रुपीया ने अेक ओढणी।'

पृ० सख्या—२६

राजघरानो मे होली का त्योहार तो विशिष्ट धूमधाम से सम्पन्न होता रहा है। इस अवसर पर राजा अपने परिजनो एव अन्य लागो को दावत देते थे। रानिया भी व्यक्तिगत रूप से राजघराने के लोगो को एव अन्य लोगो को रुपये व मिठाइया भेंट करती थी। इस वही म भी होली के अवसर पर रानी भटियाणी द्वारा राजघराने के सेवको को दावत के रुपये दिए जाने का वर्णन है—

'सीरकार रा मीनखा नै गोठ रा दीना वीस रुपीया।"   पृ० सख्या—५५

इस वही मे श्रीमती भटियाणी रानी ने कुछ विशिष्ट पर्वों, उत्सवो, रस्मो एव त्यौहारो पर व्यक्तिगत रूप से रुपये खर्च किए उसका उल्लेख है। राजघराना मे ऐसे पर्वों, उत्सवो रस्मो एव त्यौहारो को किस तरह मनाया जाता था, उसकी झलक तो मिलती ही है साथ ही साथ महारानी भटियाणी के धार्मिक एव सामाजिक जीवन को भी समझा जा सकता है। इस वही मे राजघराने मे सम्पन्न होने वाले रीति रिवाजो एव परम्पराओ के बारे मे अच्छी जानकारी मिलती है।

१७१ महाराजा जसवन्तसिहजी (द्वितीय) रै थडे री वही

१ क्रम सख्या—२५६, २ वही का नाम—महाराजा जसवन्तसिहजी (द्वितीय) रै थडे री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या— , ५ लिपि समय—सवत् १९५६ वैशाख बद १ रविवार (सूरजवार) से जेठ बदी १०, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा श्री जसवन्तसिहजी (द्वितीय) के थडे (मृत्यु स्मारक) पर हुए 'भोग', 'छमछरी' (सवत्सरी), 'तसली' 'पूजापा', 'वरसगाठ' (महाराजा जसवन्तसिहजी की जयन्ती) एव 'फूल मण्डली' आदि उत्सवो पर खर्च हुए रुपयो का विवरण है।

धार्मिक जीवन –

महाराजा जसवन्तसिह के निधन के पश्चात् अगले वर्ष उनके थडे पर छम छरी, तसली पूजापा वरसगाठ (जयन्ती) एव फूलमण्डली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्राह्मणो को भोजन, वस्त्र आभूषण, वतन रुपये आदि दान मे दिए गए।

छमछरी फूलमण्डली वरसगाठ आदि का धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट महत्व है। राजघराने मे स्वर्गीय महाराजाओ की छमछरी उनके देवल पर फूलमण्डली का आयोजन एव उनके जन्म दिन (जयन्ती को उत्सवों के रूप मे मनाने की परम्परा रही है। ये राजघराने के अपने रीति रिवाज एव परम्परायें कही जा सकती हैं।

धमधरो –

भारतीय संस्कृति मे धार्मिक दृष्टि से इसका विशिष्ट महत्व है। महाराजा जसवन्तसिहजी के मृत्यु के दिन ब्राह्मणो को भोजन, वस्त्र बतन एव रुपय दान म दिए गए। बतनो मे थाल, थाटकिया परात चरिया लोटा भारा आदि दिए गए इसे धमधरो कहा जाता है।

फूलमण्डली –

होली के बाद राजघराने द्वारा राजकीय 'थडा' को फूलो से सजाया जाता था। उसे 'फूलमण्डली' कहते हैं। महाराजा जसवन्तसिह के 'थडे' को भी फूलो से सजाया जाता था। इस अवसर पर ब्राह्मणो को दक्षिणा दी गई एव उन्ह भोजन कराया गया। इस अवसर पर ब्राह्मणो को सोने की तार के दुपट्टे भेट किए गए।

वरसगांठ –

राजघरान म स्वर्गीय महाराजाओ की वरसगाठ (जयन्ती) मनाने की भी परम्परा रही है। महाराजा जसवन्तसिह की भी वषगाठ सवत् १६५६ आश्विन वदी नम (६) के दिन मनाई गई। इस दिन राजघराने के सदस्यो न उनके नाम के ब्राह्मणो को रुपय, वस्त्र, प्रसाद एव इत्र आदि दिए। इस अवसर पर देवस्थान म भी रुपयो की भेंट चढाई गई। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है—

"२) माजी श्री देवडी सायबा रा भेंट' पृ० सख्या—६

'श्री दादीजी सायबा रा—

४)१ ४) भेंट १) दुपट्टो केसरीया भीरानपुरी

।) परसाद पुसपा री पुडी रा' पृ० सख्या—८५

महाराजा जसवन्तसिह के थडे की पूजा के लिए निम्न वस्तुएँ काम मे ली गईं—

केसर, परसाद, कु कुम, पुष्प आदि।

इस वही म राजघराने के सदस्यो का विशेषत धार्मिक जीवन के साथ दिवगत राजा को श्रद्धाजलि दिये जाने के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश पडा है।

१७२ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तोजा भटियाणी रे हाथ खर्च री वही

१ क्रम सख्या—२६४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा भटियाणी रे हाथ खच री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु०प्र०,

४ पत्र सख्या—६८ ५ लिपि समय—सवत् १९३२, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे तृतीय भटियाणी के निजी खच का विवरण है।

धार्मिक जीवन –

वही मे महादेवजी के पुजापे एव कृष्ण भगवान के लिए बनाई गई पोशाक के खर्चे का उल्लेख है। वही म जगह जगह गवरी पूजन का भी वर्णन है। गवरी पूजन वाली कुवारी कन्याओ को महारानी द्वारा दिए गए रुपये एव मिठाइयो के थालो की भी चर्चा है। इससे लगता है कि महारानी की महादेवजी, पार्वती एव कृष्ण भगवान म प्रति विशिष्ट आस्था थी।

दान –

इस वही म धार्मिक उत्सवो पर ब्राह्मणो को दान दिए जाने का वर्णन है। यहाँ विकलागो एव ढालियो को प्रदान किए गए रुपयो के खच का भी उल्लेख है। इससे महारानी की उदार प्रवृत्ति का परिचय मिलता है।

सामाजिक जीवन –

खानपान—वही मे जगह जगह मिठाइयो, पिसतो, दाखो आदि मे खच हुए रुपयो का विवरण है। उस समय मिठाई राजघराने का विशिष्ट व्यजन था।

वेशभूषा—वही मे मलमल, फागणिया, ओढणी आदि खरीदे जाने म खच हुए रुपयो का भी विवरण है। फागणिया ओढने फाल्गुन मास मे ओढे जाने का आज भी रिवाज है। फाल्गुन मास मे महिलाओ द्वारा फागणिये ओढने का प्रयोग किया जाना जोधपुर शहर की विशिष्ट परम्परा रही है।

खोळ मे रुपये डालने की रस्म—वही म किसी नव विवाहित वधु की खोळ (झोली) म रुपये डालने का वर्णन है। यह परम्परा आज भी निभाई जाती है।

घुडले की रस्म—वही म घुडले की रस्म पर महारानी द्वारा कुवारी कन्याओ को घुडले की गोठ के लिए दिए गए मिठाई के थालो का वर्णन है। आज भी कुवारी कन्याए चैत्र मास मे घुडले खा के बिंधे हुए सिर के प्रतीक के रूप म छेद किए हुए घडे को लेकर घर घर घूमती हैं। प्रत्येक घर से उन्हे कुछ न कुछ दिया जाता है। इस रस्म का पालन वर्तमान युग म भी वैसा ही हो रहा है जैसा पहले होता था।

इस वही से तत्कालीन महारानियो के धार्मिक एव सामाजिक जीवन तथा रहन सहन के बारे म अच्छी झलक मिलती है।

इस वही से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि महारानियो को व्यक्तिगत रूप से धार्मिक व अन्य कार्यों मे खर्च करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वे अपने व्यक्तिगत खर्चे म अपने रूचि की चीजें मगवा सकती थी।

१७३ महाराजा श्री मानसिह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही

१ क्रम सख्या—३००, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या—४२, ५ लिपि समय—सवत १६०४ व १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही म महाराजा मानसिहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी द्वारा गुलाव सागर के ऊपर बनाय गये एक ठाकुरजी के मन्दिर पर खर्च हुए रुपया का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमे मन्दिर को बनाने वाले कारीगरो के नामो का भी उल्लेख हुआ है।

इस वही के अनुसार यह कहा जा सकता है कि महारानी न राजनीतिक गतिविधियो के साथ साथ धार्मिक गतिविधियो मे विशेष रुचि ली है।

यह एक सराहनीय काय कहा जा सकता है क्योकि उस समय नाथ सम्प्रदाय का बोलबाला था। भटियाणीजी द्वारा स्वतन्त्र रूप से कृष्ण मन्दिर बनवाने से ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि वे उच्च कोटि की वैष्णव विचारो की महिला थी। इस मन्दिर के बनवाने से एक तथ्य और उद्घाटित होता है कि नाथो की पूजा के साथ-साथ अन्य सम्प्रदायो की पूजा पर कोई रोक नही थी।

१७४ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी रे रेवास री वही

१ क्रम सख्या—३०४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी रे रेवास री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२४, ५ लिपि समय—वि० स० १६०५ ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा मानसिंह की महारानी तृतीय भटियाणी के रहन सहन और खर्चे का विवरण दिया है। विभिन्न वस्तुओ पर किये गय खर्च के माध्यम से हम उनके सामाजिक जीवन को भली भाति समझ सकते हैं।

सामाजिक जीवन —

वस्त्र—मलमल की रगाई पर हुए विशेष व्यय से ऐसा लगता है कि उस समय मलमल का विशेष प्रचलन था। मलमल को विभिन्न रगो से रगा जाता था।

४ पत्र संख्या—६८, ५ लिपि समय—संवत् १६३२, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में तृतीय भटियाणी के निजी खर्च का विवरण है।

धार्मिक जीवन –

बही में महादेवजी के पुजापे एवं कृष्ण भगवान के लिए बनाई गई पोशाक के खर्चे का उल्लेख है। बही में जगह-जगह गवरी पूजन का भी वर्णन है। गवरी पूजन वाली कुमारी कन्याओं को महारानी द्वारा दिए गए रुपये एवं मिठाइयों के थालों की भी चर्चा है। इससे लगता है कि महारानी की महादेवजी, पार्वती एवं कृष्ण भगवान के प्रति विशिष्ट आस्था थी।

दान –

इस बही में धार्मिक उत्सवों पर ब्राह्मणों को दान दिए जाने का वर्णन है। यहाँ विकलांगों एवं ढालियों को प्रदान किए गए रुपयों के खर्च का भी उल्लेख है। इससे महारानी की उदार प्रवृत्ति का परिचय मिलता है।

सामाजिक जीवन –

खानपान—बही में जगह जगह मिठाइयों, पिस्तों, दाखों आदि में खर्च हुए रुपयों का विवरण है। उस समय मिठाई राजघराने का विशिष्ट व्यंजन था।

वेशभूषा—बही में मलमल, फागणियां ओढणी आदि खरीदे जाने में खर्च हुए रुपयों का भी विवरण है। फागणियां ओढने फाल्गुन मास में ओढ़े जाने का आज भी रिवाज है। फाल्गुन मास में महिलाओं द्वारा फागणिये ओढने का प्रयोग किया जाना जोधपुर शहर की विशिष्ट परम्परा रही है।

खोळ में रुपये डालने की रस्म—बही में किसी नव विवाहित वधु की खोळ (झोली) में रुपये डालने का वर्णन है। यह परम्परा आज भी निभाई जाती है।

घुडले की रस्म—बही में घुडले की रस्म पर महारानी द्वारा कुंवारी कन्याओं को घुडले की गोठ के लिए दिए गए मिठाई के थालों का वर्णन है। आज भी कुंवारी कन्याएं चैत्र मास में घुडले खां के बिंधे हुए सिर के प्रतीक के रूप में छेद किए हुए घड़े को लेकर घर घर घूमती है। प्रत्येक घर से उन्हें कुछ न कुछ दिया जाता है। इस रस्म का पालन वर्तमान युग में भी वैसा ही हो रहा है जैसा पहले होता था।

इस बही से तत्कालीन महारानियों के धार्मिक एवं सामाजिक जीवन तथा रहन सहन के बारे में अच्छी झलक मिलती है।

इस वही से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि महारानियों को व्यक्तिगत रूप से धार्मिक व अन्य कार्यों में खर्च करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वे अपने व्यक्तिगत खर्चे में अपने रूचि की चीजें मगवा सकती थी।

१७३ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही

१ क्रम सख्या—३००, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी से सम्बन्धित वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—४२, ५ लिपि समय—सवत् १६०४ व १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा मानसिंहजी की महारानी श्रीमती तीजा (तृतीय) भटियाणी द्वारा गुलाब सागर के ऊपर बनाये गये एव ठाकुरजी के मन्दिर पर खर्च हुए रुपयो का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमे मन्दिर को बनाने वाले कारीगरो के नामो का भी उल्लेख हुआ है।

इस वही के अनुसार यह कहा जा सकता है कि महारानी ने राजनीतिक गतिविधियो के साथ साथ धार्मिक गतिविधियो मे विशेष रुचि ली है।

यह एक सराहनीय कार्य कहा जा सकता है क्योकि उस समय नाथ सम्प्रदाय का बोलबाला था। भटियाणीजी द्वारा स्वतन्त्र रूप से कृष्ण मन्दिर बनवाने से ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि वे उच्च कोटि की वैष्णव विचारो की महिला थी। इस मन्दिर के बनवाने से एक तथ्य और उद्घाटित होता है कि नाथो की पूजा के साथ-साथ अन्य सम्प्रदायो की पूजा पर कोई रोक नही थी।

१७४ महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी रे रेंवास री वही

१ क्रम सख्या—३०४, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंह के राजलोक श्री तीजा भटियाणी रे रेवास री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—२४, ५ लिपि समय—वि० स० १६०५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही मे महाराजा मानसिंह की महारानी तृतीय भटियाणी के रहन सहन और खर्चे का विवरण दिया है। विभिन्न वस्तुओ पर किये गये खर्च के माध्यम से हम उनके सामाजिक जीवन को भली भाति समझ सकते हैं।

सामाजिक जीवन –

वस्त्र—मलमल की रगाई पर हुए विशेष खर्च से ऐसा लगता है कि उस समय मलमल का विशेष प्रचलन था। मलमल को विभिन्न रगो से रगा जाता था।

उन्होंने अपनी कविता मे भगवान श्री रामचन्द्र जी का गुणगान किया है। उनसे भवसागर से पार लगाने की प्रार्थना की है। बही से ऐसा प्रतीत होता है कि यह भटियाणी रानी प्रताप कुँवर अच्छी कवयित्री थी जिसका उल्लेख मुशी देवीप्रसाद ने भी किया है। उनकी राम के प्रति विशिष्ट आस्था थी। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है—

"भवसागर मे डूबता
कर गहि काढो बार
पिता मातु सुत बधु सर्वं
औ झूटो जजाळ
साचो एके प्रीतम हरी
रघुबर दीन दयाळ।" कविता की पृ० स०—१

बही के अनुसार भटियाणी साहिबा (प्रताप कुवर) ने श्री रघुनाथ जी (राम जी) के मन्दिरो म भेंट (रुपयो की) चढाई। उन मन्दिरो के पुजारियो को वस्त्र, वतन, रुपये आदि दान मे दिये। उदाहरण के लिए—

"साध दामोदरदासजी रे
२ लोटा १ गीलास १ जपुर रा" पृ० सख्या—१

अन्य पुजारियो का भी वस्त्र, वतन आदि दिये। बतनो मे लोटा, कलसिया एव वस्त्रो म सतरग, धोतिया एव पार्चे दी गई।

प्रतापकुवरजी ने श्री रघुनाथजी के जरी की पोशाक बनवाई एव एक सोने के मुजबन्द की जोडी भेंट की।

प्रतापकुवरी का साहित्यिक जीवन के साथ-साथ धार्मिक जीवन आदि सस्कारो का अच्छा दिग्दर्शन इसमे हुआ है।

१७६ महाराजा मानसिहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर रे विवाह री वही

१ क्रम सख्या—४००, २ वही का नाम—महाराजा मानसिहजी के बाईजी श्री स्वरूपकवर र विवाह री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—१६६, ५ लिपि समय—सवत् १८८६ फाल्गुन बदी ६, ६ विशेष विवरण – महाराजा मानसिह की पुत्री स्वरूपकवर के विवाह म खच हुए रुपया का प्रस्तुत बही में विवरण दिया है।

मलमल पर बधज का काम भी होता था। रंगा करने में रंगरेज और पटवे प्रसिद्ध थे। ये दो जातियां आज भी रंगाई का ही काम करती हैं। मलमल पर गुलाबी फूलों का काम किया जाता था। दुपट्टा, दुशाला व ओरना भी काम में लिया जाता था। इन बहीं में जयपुर की चुन्दड़ी का भी उल्लेख है। उस समय यह चुन्दड़ी भी प्रसिद्ध थी। आज भी इस चुन्दड़ी के बारे में लोकगीत प्रसिद्ध है। बही के अनुसार सोने के गोट का उपयोग किया जाता था। मखमल भी विशिष्ट रूप से काम में आती थी। ये सब चीजें महारानी अपने लिए उपयोग में लेती थी।

शृंगार –

बही में महारानी के शृंगार के इत्र के खर्च का उल्लेख है। इत्र मुख्य रूप से गुलाब, केवड़ा आदि का उपयोग में लिया जाता था। मोतियों की लड़ का भी उल्लेख हुआ है। यह लड़ गले में पहनी जाती थी। आज भी मोतियों की लड़ का आभूषण के रूप में विशिष्ट महत्व दिया जाता है।

खान-पान –

बही में महारानी के खाने योग्य विभिन्न मिठाइयां के खर्च का लेखा जोखा है। महारानी के लिए विभिन्न तरह की मिठाइयें बनती थी। जिनमें मुख्य हैं— लड्डू, जलेबी पेड़ा पेडा मीठे था, खोवारो पेठो, गुलगी, घेवर, दाल के लड्डू, मालपुवा सवादाल, मीसरी, पतासा आदि मिठाइयां पर सोने का वर्क चढ़ाया जाता था। ये सब मिठाइयां आज भी विशिष्ट व्यंजना के रूप में प्रसिद्ध हैं।

उत्सव –

इस बही में महानी की वर्ष गांठ पर किए गए खर्च का भी विवरण है। इसमें रानी की गांठ पर मिठाइयां बांटने का उल्लेख है। इस अवसर पर पूजा पाठ किए जाने का भी उल्लेख है। ब्राह्मणों को दान भी दिया जाता था।

१७५ महाराजा मानसिंह जी के राजलोक श्री तीजा भटियाणी साहिबा (प्रताप कुंवर) रे बणाया कवित्त री बही

१ क्रम सख्या—३४६, २ बही का नाम—महाराजा मानसिंह जी के राजलोक श्री तीजा भटियाणी साहिबा (प्रताप कुंवर) रे बणाया कवित री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—७३ ५ लिपि समय—सवत् १९२१, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे महाराजा मानसिंह की तृतीय भटियाणी (प्रताप कुंवर) के साहित्यिक व धार्मिक जीवन का दिग्दर्शन है। बही के अनुसार

उन्होंने अपनी कविता में भगवान श्री रामचन्द्र जी का गुणगान किया है। उनसे भवसागर से पार लगाने की प्रार्थना की है। बही ऐसा प्रतीत होता है कि यह भटियाणी रानी प्रताप कुंवर अच्छी कवयित्री थी जिसका उल्लेख मुंशी देवीप्रसाद ने भी किया है। उनकी राम के प्रति विशिष्ट आस्था थी। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है—

'भवसागर में डूबता
कर गहि काढो यार
पिता मातु सुत बंधु सब
भो झूठो जंजाळ
साचो एके प्रीतम हरी
रघुवर दीन दयाळ।"   कविता की पृ० सं०—१

बही के अनुसार भटियाणी साहिबा (प्रताप कुंवर) ने श्री रघुनाथ जी (राम जी) के मन्दिरों में भेंट (रुपया की) चढ़ाई। उन मन्दिरों के पुजारियों को वस्त्र, बर्तन, रुपये आदि दान में दिये। उदाहरण के लिए—

"साध दामोदरदासजी रे
२ लोटो १ गीलास १ जैपुर रा"   पृ० संख्या—१

अन्य पुजारियों को भी वस्त्र, बर्तन आदि दिये। बर्तनों में लोटा, कलसिया एवं वस्त्रों में सतरंग, धोतिया एवं पाघे दी गई।

प्रतापकुंवरजी ने श्री रघुनाथजी के जरी की पोशाक बनवाई एवं एक सोने के मुजबन्द की जोड़ी भेंट की।

प्रतापकुंवरी का साहित्यिक जीवन के साथ साथ धार्मिक जीवन आदि संस्कारों का अच्छा दिग्दर्शन इसमें हुआ है।

१७६ महाराजा मानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकंवर रे विवाह री बही

१ क्रम संख्या—४००, २ बही का नाम—महाराजा मानसिंहजी के बाईजी श्री स्वरूपकंवर रे विवाह री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—१६६ ५ लिपि समय—संवत् १८८६ फाल्गुन बदी ६, ६ विशेष विवरण—महाराजा मानसिंह की पुत्री स्वरूपकंवर के विवाह में खर्च हुए रुपयों का प्रस्तुत बही में विवरण दिया है।

सामाजिक जीवन –

प्रस्तुत बही में विवाह की रस्म के समय सम्पन्न किये जाने वाले राजघराने के रीति रिवाजों का उल्लेख है। बही के अनुसार इस अवसर पर कई रस्म रिवाजों एवं परम्पराओं का पालन किया गया।

रस्म –

सर्वप्रथम इस अवसर पर राजघराने के रिवाज के अनुसार राठौड़ों की कुल देवी नागणेची जी की पूजा की गई। इसके बाद विनायक जी (गणेश जी) की पूजा की गई। गणेश जी की पूजा में नारियल, कुंकुम, मोली चावल आदि उपयोग में लाये गये। इस समय विभिन्न देवी देवताओं की भी पूजा होती थी। जिनमें चावडा माताजी, हींगलाज माताजी, काला जी गोरा जी, महादेव जी आदि प्रमुख होते थे।

बारात के आने पर वर पक्ष का विशिष्ट आदर सत्कार हुआ।

तोरण की वन्दना –

राजस्थानी संस्कृति में तोरण की वन्दना का अपना महत्व है। बही के अनुसार स्वरूप कंवर के पति (वर) ने परम्परागत रूप से तोरण वन्दना की।

भावर लेने की रस्म –

विवाह मण्डप में (चवरी में) कन्या अपने बनने वाले पति के साथ सात भावरे (फेरे) लेती है, तभी विवाह पूर्ण माना जाता। बही के अनुसार स्वरूप कंवर का उसके पति के साथ हथलेवा जोड़ा गया। उसने अपने पति के साथ सात भावर (फेरे) खाये।

कन्यादान की रस्म –

विवाह मण्डप में कन्या को सगे सम्बन्धियों द्वारा रुपया आभूषणों एवं वस्त्र आदि की भेंट दी जाती है उसे कन्यादान कहते हैं।

बही के अनुसार यह रस्म परम्परागत रूप से सम्पन्न हुई। इस अवसर पर स्वरूप कंवर को राजघराने के सम्बन्धित लोगों ने बहुत सी भेंटें दी जिनमें रुपये, आभूषण व वस्त्र प्रमुख थे। इस अवसर पर उसे शृंगारदान भी भेंट किया गया।

बारात को भोजन खिलाने की रस्म –

इस अवसर पर बारात में आने वालों को विशिष्ट मिठाइयों का भोज दिया गया। मिठाइयों में जलेबी घेवर लड्डू मावा पेडा लपसी हलुआ आदि खिलाए गए।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ... के अनुकूल [illegible]

[illegible] कुम्हारी को [illegible] दिए गए। [illegible] (१०७) [illegible] कुम्हारी को [illegible] दी गई। [illegible] बही के अनुसार [illegible] ड्योढ़ी में [illegible] इस प्रकार है, यथा—

' कवरीजी रे देवाह [illegible] ड्योढ़ी मे [illegible] ।"

इस अवसर पर डावड़ियो (दासियो) को नई पोशाके दी गई। [illegible] मिठाइयो के थाल देकर प्रसन्न किया गया।

नाजर लोगो को भी मिठाइयो के थाल [illegible] गए।

विवाह सम्पन्न होने के बाद [illegible] दूल्हा [illegible] विभिन्न देवताओ देवियो व लोक देवी देवताओ की [illegible] पूजा की। [illegible], काला गोराजी, लक्ष्मीजी [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], गुसाईजी, मल्लीनाथजी, गोगाजी, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि प्रमुख थे। इन सभी को [illegible] गई।

दहेज —

इस अवसर पर बाईजी [illegible] दहेज दिया गया। दहेज में सोना चांदी दिए गए। [illegible] आभूषण [illegible] दिये। आभूषणों [illegible] इस प्रकार है—[illegible], [illegible], [illegible] और [illegible], मुजबन्द आदि। [illegible] और विभिन्न [illegible] (पात्रें) भी दिए गए।

दान —

इस अवसर पर ब्राह्मणों [illegible] दान [illegible] किये गए।

इस वही से जोधपुर राजघराने के विवाह सम्बन्धी रीति रिवाजों के अलावा उस समय प्रचलित वस्तुओं के भाव और खानपान आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

१७७ महाराजा श्री मानसिंहजी के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी रे हुवन री वही

१ क्रम संख्या—४१०, २ वही का नाम—महाराजा श्री मानसिंहजी के राजलोक श्रीमती तीजा तृतीय भटियाणी रे हुवन री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—१५, ५ लिपि समय—संवत् १६१८, ६ विशेष विवरण—इस वही में महाराजा मानसिंह के तृतीय भटियाणी द्वारा महलों में हुए हुवन (होम) एवं उसमें ब्राह्मणों को दिए गए दान-दक्षिणा के बारे में विस्तृत विवरण है। इसमें राज परिवार के लोगों का धार्मिक जीवन विशेष रूप से उभर कर सामने आया है।

धार्मिक जीवन –

राजस्थानी संस्कृति में व्रतों का विशिष्ट महत्व है। राज परिवार में भी व्रत रखने की परम्परा प्रचलित थी। विशेष तौर से रानियां व राजकुमारियाँ व्रत रखा करती थी। व्रत पूरे होने पर उन्हें 'उजवणा' (व्रत पूरा होने पर होम द्वारा समापन करने की प्रक्रिया) किया जाता था। इस अवसर पर ब्राह्मणों को बुला कर महलों में हुवन करवाया जाता था।

प्रस्तुत वही में ऐसे ही हुवन का वर्णन आया है। यह हुवन महारानी भटियाणी के समय महलों में सम्पन्न करवाया गया। वही के अनुसार हुवन सामग्री यह थी—मूंग, तिल, घी, बाजरी, चावल, जायफल, गुलाल, चावल, हीगळू, कपूर, तमाल पत्र, श्रीफल, केसर, सुपारियां, भोजपत्र, पताशा, पान, नागर, जवार, नारियल आदि।

दान दक्षिणा –

अन्न दान—इस हुवन में ब्राह्मणों को अन्न दान दिया गया। जिसमें मसूर की दाल, मूंग, जवार, उड़द, तिल, चने की दाल, बाजरी आदि दिए गए।

वस्त्र दान—केसरिया दुपट्टे, मुलमुल, रजाइयां, धोतियां आदि दिये गये।

आभूषण दान—ब्राह्मणों को सोने की टीकड़ी, मुरकियां, बींटियां आदि भेंट किए गए। इस अवसर पर ब्राह्मणों को बर्तन भी भेंट किए जाते थे।

इस प्रकार राज परिवार में समय-समय पर हवन आदि हुआ करते थे। ब्राह्मणों को दान दक्षिणा दी जाती थी। इससे ज्ञात होता है कि रानियां एवं राजकुमारियों की धर्मपालन के प्रति विशिष्ट रुचि थी।

१७८ महाराजा मानसिंहजी के राजलोक पांचवां भटियाणीजी री छतरी री बही

१ क्रम संख्या—४३४, २ बही का नाम—महाराजा मानसिंहजी के राजलोक पांचवा भटियाणीजी साहिबा री छतरी री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—८१, ५ लिपि समय—संवत् १८३७ फाल्गुन सुदी १३ से संवत् १८३८ फाल्गुन सुदी ४ ६ विशेष विवरण—यह बही महाराजा मानसिंह की महारानी पांचवी भटियाणी की यादगार में बनाई गई छतरी (मृत व्यक्ति की स्मृति में बनाई जाने वाली समाधि) से सम्बन्धित है। छतरी को बनवाने में लगभग दो वर्ष लगे। प्रस्तुत बही में इन दो वर्षों में छतरी पर खर्च हुए रुपयों का विवरण है। यह छतरी 'पंच कुण्डा छतरी' के नाम से तैयार हुई। पंच कुण्डा छतरी राजपूती स्थापत्य कला की दृष्टि से विशिष्ट मानी जाती है।

राजघराने में लोगों की छतरियां विशिष्ट रूप से बनाई जाती रही हैं। जोधपुर में न केवल राजाओं की बल्कि रानियों की भी कई छतरियां मंडोर में देखने को मिलती हैं। ऐसी छतरियों में महाराजा मानसिंह की महारानी श्रीमती पांचवा भटियाणीजी की पंचकुण्डा छतरी का विशिष्ट महत्व है। यह छतरी स्थापत्य कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। इससे ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें कारीगरी का विशिष्ट कार्य हुआ है।

छतरी की नींव देते समय या छतरी बनाने का मुहूर्त करते समय पूजा के कार्यक्रम का आयोजन होता था। इस अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन भी करवाया जाता था। पूजापे के रूप में दूध, दही, श्रीफल, तेल, पतासा आदि काम में लाते थे। इस अवसर पर ब्राह्मणों को खाद्य सामग्री (जैसे—आटा, गुड़, दाल, घी, रत आदि), बर्तन (जैसे—कलसियों, वाटकियों आदि) आभूषण (जैसे—सोने की टीक्डी) आदि दान में दिये जाते थे। इन सब दान दक्षिणाओं के पश्चात् छतरी बनाने का कार्य प्रारम्भ किया जाता था।

इस बही के अनुसार कुछ कारीगरों के नाम इस प्रकार हैं—गजधर—माली गणेश, किसना, सूरजमल, सीताराम माली धनो आदि। कारीगरों एवं चूनगरों

के ऊपर एक पेदागार होता था जो इनकी हाजरिया एव रुपये पैसा का लेखा-जोखा रखता था।

छतरी बहुत सुन्दर बनाई जाती थी। छतरी मे मृत व्यक्ति की प्रशस्ति लिखने हेतु मकराने के पत्थर का उपयोग किया जाता था, ऐसा इस बही से प्रमाणित होता है। इस बही मे 'घाटू भाटे' का उल्लेख है। यह पत्थर "गाय" छतरिया के लिए विशिष्ट उपयोगी रहा है। इस बही के अनुसार छतरी को सफेद रग से रगने हेतु कली में 'मकराने की जीफरी' को मिलाया जाता था। मकराने की जीफरी सम्भवत सफेद पत्थरो से बनती थी। जिसे कली में मिलाया जाता था। जिससे कली विशिष्ट प्रकार की हो जाती थी।

इस बही से हम इस निश्चय पर पहुँचते है कि मृत व्यक्तियो पर छतरिया बनवाना राजघराने की अपनी परम्परा रही है। मारवाड मे स्थापत्य कला के विकास की दृष्टि से इसका अध्ययन उपयोगी है।

१७९ महाराजा श्री तख्तसिहजी रे महाराजकुमार श्री माधोसिंहजी रे वर्ष गाठ री बही

१ क्रम सख्या—५३६, २ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिहजी रे महाराजकुमार श्री माधोसिहजी रे वष गाठ री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—१५३, ५ लिपि समय—सवत् १९२५, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही मे महाराजा तख्तसिह की राणावत रानी द्वारा महाराजकुमार माधोसिंह की वर्ष गाठ पर खर्च किये गये रुपयो का विवरण है। राजघराने मे वर्ष गाठ के उत्सव को विशेष रूप से मनाया जाता था। बही के अनुसार इस अवसर पर राजघराने से सम्बन्धित व्यक्तियो, देवस्थानो, ब्राह्मणो, कमीणो आदि को मिठाइयो के थाल भेंट किए गए। ब्राह्मणो को वस्त्र दिए गए।

यह बही, बही न० १५३ से मिलती जुलती है। विशेष विवरण के लिए बही न० १५३ देखें।

१८० महाराजा श्री तख्तसिहजी रे राजलोक श्री राणावतजी री बही

१ क्रम सख्या—८०६ २ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिहजी रे राजलोक श्री राणावतजी री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—३०४, ५ लिपि समय—सवत् १९३६ ६ विशेष विवरण—महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत द्वारा देवस्थानो के लिए तथा 'राखी', 'सोमवती अमावस्या',

'निरजला इग्यारस' पर खर्च हुए रुपयों का इस वही में वर्णन है। इस वही में रानी का धार्मिक जीवन ही उभर कर आया है।

यह वही, वही न० ७४६ से मिलती जुलती है। विशेष विवरण के लिए वही न० २४६ देखें।

१८१ महाराजा श्री तखतसिहजी रे राजलोक रे जनम कुंडलियो री वही

१ क्रम संख्या—८७६, २ वही का नाम—महाराजा श्री तखतसिंहजी रे राजलोक रे जनम कुंडलिया री वही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—७८, ५ लिपि समय—वि० स० १६०० से १६३० के मध्य, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत वही में महाराजा तखतसिंह के राजलोक पडदायत, महाराजकुमार एवं महाराजकुमारियों की जन्म कुण्डलियों का विस्तृत विवरण संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध किया है।

प्राचीन समय से ही जन्म कुण्डलिया बनवाने का रिवाज रहा है। जनमानस अपना भविष्य व भाग्योदय जानने के लिए पण्डितों द्वारा जन्म कुण्डलिया बनवाता है। राजस्थानी संस्कृति के अनुसार विवाह संस्कार पर वर व वधु की जन्म कुण्डलिया को विशेष महत्व दिया जाता है।

राजघरानों में भी अपने भविष्य की जानकारी के लिए जन्म कुण्डलिया बनवाई जाती थी। जन्म कुण्डलिया बनाने के बदले में पण्डितों को रुपये, वस्त्र, मिठाइयें आदि की भेंट दी जाती थी।

वही में बडा राणावतजी बडा भटियाजी श्री चावडीजी, श्री भटियाणीजी, श्री राणावतजी श्री बडा कुंवरजी श्री तीजा भटियाणीजी श्री कुंवरजी महाराज कुमार जसवतसिंह, बाईजी श्री यादवकवरजी, बडा भटियाणीजी के महाराजकुमार, बडा राणावतजी के महाराजकुमार प्रतापसिंहजी श्री चावडीजी के महाराजकुमार रणजीतसिंहजी, बडा राणावतजी के महाराजकुमार केसरीसिंहजी बाईजी इन्द्रकवर, मानसिंहजी (सुरताणसिहजी), गंगा के बेटे जुहारसिहजी, परवत के बाईजी, गगा के बाईजी भियकवरजी, वड बेटे की कुरजा, गगा के बाईजी छोटेकी, गगा के बाईजी की, मनोहरसिंहजी, सूरतसिंहजी, पडदायत जसराजजी श्री मतमगी आदि की जन्म कुण्डलिया अंकित है।

तत्कालीन ज्योतिष सम्बन्धी मान्यताओं के अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

१८२ महाराजा जसवंतसिंहजी (द्वितीय) रे राजलोक श्री जाडेचीजी जसवंत सराय कराई उण री बही

१ क्रम सख्या—८३१, २ बही का नाम—महाराजा जसवंतसिंहजी (द्वितीय) रे राजलोक श्री जाडेचीजी जसवंत सराय कराई उण री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—४१ ५ लिपि समय—सवत् १९५५ माह सुद १३ से माह सुद ७, ६ विशेष विवरण—सवत् १९५५ में महाराजा जसवंत सिंह की जाडेची रानी ने महाराजा जसवंतसिंह (द्वितीय) की यादगार में जसवंत सराय बनवाई। उस सराय की प्रतिष्ठा पर खर्च हुए रुपयों का विवरण है।

धार्मिक, सामाजिक रीति रिवाज —

भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने पर उसकी प्रतिष्ठा करवाई जाती है। राजघराने में यह परम्परा एक विशेष ढंग से निभाई जाती रही है। इस शुभ अवसर पर ब्राह्मण लोगों से हवन करवा कर इमारत की प्रतिष्ठा करवाई जाती थी। पूजा पाठ का आयोजन होता था। हवन के पश्चात् ब्राह्मणों को 'भूरसी दक्षिणा' (किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने पर राजघराने की ओर से ब्राह्मणों को जो दान दिया जाता था उसे भूरसी दक्षिणा कहते हैं) दी जाती थी। उन्हें भोजन करवाया जाता, वस्त्र व रुपये भेंट किये जाते थे। इमारत का निर्माण करवाने वाले महाराजा या रानी को उनके सम्मान में सामंतों व अन्य विशिष्ट लोगों द्वारा नजराना (सम्मान में भेंट किये गये रुपये व सोने की मोहरें) दिया जाता था।

उपर्युक्त सभी उल्लेख इस बही में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार यह प्रतिष्ठा का उत्सव भी राजघराने के रीति रिवाजों में विशेष महत्व का विषय है।

इस समय गोदान होता था और हवन में रुपये भी भेंट किये जाते थे, यथा—

५) गऊदान रा

७) होम री भेंट' पत्र सख्या—५ ब

ब्राह्मणों को भूरसी दक्षिणा दी गई यथा—

'१०)। सीरमालीया ने भूरसी रा'' पत्र सख्या—६ अ

प्रतिष्ठा पर पुष्पों की मालाएँ एव चौसरे मंगवाये गये। उन पर खर्च हुए रुपयों का विवरण इस प्रकार है यथा—

१७) पुसप खरीद मालो भगवान रा

४।।) चौसरा नग ५० नग ११ लेसे

७॥ =) पवीतरा नग २०० नग २५ लेखे

८॥।) मालावा नग २४ रा २ लेखे पत्र सख्या—६ ब

जाडेची रानी ने महाराजा जसवतसिह (द्वितीय) की यादगार एव लोकोपकार हेतु जसवत सराय का निर्माण करवाने पर सामन्तो एव ग्रन्य विशिष्ट लोगो ने उनके सम्मान मे नजराना भी दिया, यथा—

"श्री दरबार सायबा रे नीजर नीछरावर करण ने हस्त कामदारजी

२))१४) श्री दरबार सायबा रे लेखे भेट करण सारू रोकड

२))१४)

४) श्री जवानसिघजी

१५) श्री गोपालसिघजी

२) पूजर रसूलजी रे" पत्र सख्या—११ ग्र

प्रतिष्ठा के समय ग्रग्निहोत्री श्रीकृष्णजी को रुपये भेंट किये गये यथा—

"२५) ग्रगनोतरी सीरीकीसनजी रे भेंट" पत्र सख्या—१७ ब

ब्राह्मणो को वतन दान मे दिये गये यथा—

सीरमाली गीरधारी हसते रसीद—

५) कळस माटो छोटो

१२) कळसीया ताबा रा छोटा

७) कळसीया ताबा रा माटा

३) चरीया पीतल री" पत्र सख्या—३४ ग्र

जसवत सराय की प्रतिष्ठा के पुनीत पावन ग्रवसर पर हवन किया गया। उसके लिए निम्न चीजें उपयोग मे ली गई—

कुकुम मोळी मरसू सुपारिया, लूग डोडा जगाल, मेहदी, दाल चीनी, कवल के बीज, कुटक, श्रीफल हिंगळू, जावतरी, नतरवालो, ग्राबी हळद, हळद के गाठिय बादाम, दाखें, पिसता, काजल की पुडी, भोज पत्र मिसरी, कपास, धूप, चदन, सिंगोडा, जायफल, काली मिच सलाजीत, जटामाणसी, कपूर, केसर, ग्रबीर, सिंदूर, गुलाल, सेहत, सरव ग्रोसदी, चदन का चूरा, कामणी गोटा, खारक, गुड, किस्तूरी, इत्र पचमूर्तिया ताबे की आदि।

इस ग्रवसर पर मन्दिरो मे भेंट चढाई गई, यथा—

"१२५) मूरता नग १। ग्रासरे री

२) बाटकीया नग २ २) ग्रासरे री

१) छतर नग १।) भर ग्रासरे पत्र सख्या—३६ ग्र

बही में सुथार रतन द्वारा जसवन्त सराय के लिए बनवाये गए दरवाजा के खर्च का भी उल्लेख है। दरवाजा के लिए सागवान की लकड़ी काम में ली गई।

बही में राजघराने के धार्मिक एवं सामाजिक रीति रिवाजों के अन्तर्गत इमारत (जसवंत सराय) की प्रतिष्ठा करने का जिक्र है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि रानी जाड़ेचीजी ने लोकोपकार के लिए जसवन्त सराय का निर्माण करवा कर अपने लोक कल्याणकारी चरित्र का परिचय दिया है। स्थापत्य कला की दृष्टि से भी बही का अध्ययन उपयोगी है।

१८३ महाराजा विजयसिंह री बही

१ क्रम संख्या—८३७, २ बही का नाम—महाराजा विजयसिंह री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र संख्या—२०, ५ लिपि समय—वि० सं० १८१७ से १८३८ ६ विशेष विवरण—इस बही में महाराजा विजयसिंहजी के समय सम्पन्न हुए मुण्डन संस्कार एवं ढूंढ के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया है।

सांस्कृतिक रीति रिवाज –

ढूंढ उगाना—होली के त्यौहार पर एक समूह के रूप में कुछ गहरिये लोग गाते-बजाते जन्म लेने वाले शिशु के पिता के घर पर आते हैं और बच्चे को ढूंढते हैं अर्थात् दीर्घायु होने का आशीर्वाद देते है।

राजघराने में तो राजकुमारों की ढूंढ उगाने के लिए कई समूह आते थे। वहाँ से रोकड़ रुपये, वस्त्र तथा मिठाइयां प्राप्त करते थे।

झडूले को बड़ा किया जाना (मुण्डन संस्कार)—सोलह संस्कारों में मुण्डन संस्कार का भी अपना विशिष्ट महत्व है। अब भी राजस्थान में इस संस्कार को विशेष ढंग से सम्पन्न किया जाता है। बच्चे का मुण्डन किसी देवी देवता के थान पर सम्पन्न किया जाता है। देवी-देवता को 'चूरमे' (मिष्ठान्न) की भेंट चढ़ाई जाती है। औरतें गीत गाती हैं। मुण्डन करने वाले को सवा रुपया, सवा पांच या सवा इक्कीस रुपये भेंट किये जाते हैं।

राजघराने में इस संस्कार का पण्डितों द्वारा मुहूर्त निकलवाया जाता था। पूजा-पाठ होता था। मुण्डन-संस्कार धार्मिक वातावरण में सम्पन्न किया जाता था।

इस बही में ढूंढ एवं मुण्डन संस्कार पर काफी प्रकाश डाला गया है।

बही में ढूंढ उगाने का उदाहरण द्रष्टव्य है—

"राणीजी श्री सेसावतजी रा डावडा रे ढूढा हुई तीण री वीगत—
३ नागोर म श्री कवरा रा जनम हुग्रा तीण री ढूढा नागोर मे हुई
१ कवर श्री फतेहसिघजी री
१ कवर श्री मोमसिघजी री
१ कवर श्री सीग्दारसिघजी री" पत्र सख्या—१ अ

ढूढ करण ने माय गया तीण री विगत नीचे—
२५) कवर श्री गुमानसिंधजी रे ढढ स० १६१६ रा
फागण सुद १५ री हुई तर
२५)२ श्री हजूर मू पावा
२५) रोकड ? वागो तावी
१ १ पत्र सख्या—१ ब

ढूढ के अवसर पर रानी को भी उसके पीहर से रुपये व कपडे भेंट होते थे। इसके अलावा अन्य रानिया भी उसे रुपये व वस्त्र भेंट करती थी यथा—

'३३)१५ बीकाजी श्री मानसिहजी कवरजी श्री गुमानसिधजी रे बेटा री वऊ चऊवाणजी रे १६३६ रा मगसर सुद ११ न कवर जनमिया जीण री ढूढ १६३६ रा फागण सुद १५ रे दन हुई, तर इण मुजब ग्राया सु जमा—
७५) रोकड खासा खजाना सु
२) नवा कपडा रा कोठार सु
१) वागो १ केसरीया वज वाडा रा सला र गज २॥ ≡
× × × ×
।।।) गोटो सोनेरी तालो ।।।) लबी १।। रा गज ६। = पत्र सख्या—३ अ

राजघराने म व्यक्ति ढूढ उगाने जाते थे, उन्हे वहाँ स रुपये दिये जात थे—
'१२)१५ ढूढण न होळी मगळाय ने माय गया जणा १०

१ नाजर गगादास	१ व्यास
२ जोसी	१ पीरोयत
२ बदीया	१ कोतवाल
१ सेवग श्री माता जी रा	१ जनानी दाढी री दोढीदार

पत्र सख्या—३ ब

इस अवसर पर ढूढ के उपलक्ष म रुपय व मिठाइया के थाल दिये जात थे यथा—

नीमन ईणानु दिया—
१२ गेवड रुपीया
१ नाजर गगाराम ने   २ व्यास नु प्रोयत न
                              १   १
१ जोसीया नु   ३ कानवार ने
१ बदीयानु   १ नग रो
                    २ मीसगी रो थाळ री
१ सालमा रा मिनरा नु ३)
१ ज्नानु दोढी रा   १ सेवग श्री माता जी नु
१२)   पत्र सख्या—३ म ब

इस अवसर पर मिठाइयां से भरे थाल भी दिये जाते थे, यथा—
११ थाल ११ पुरस्या
१ व्यासजी रे   १ नाजर गगादास रे
× × ×   × × ×   × × ×
१ जोसीया र   १) कोतवाल न
आदि आदि ।   पत्र सख्या—४ म

मुण्डन सस्कार पर भी राजघराने से रुपये, वस्त्र तथा मिठाइयां बांटी जाती जाती थी यथा—

बका महाराज श्री बिजैसिंघजी सायबा रा राज म
२५) राणीजी श्री रूपडीजी रे कवरा री तथा कीकाजी खीवरा हुई
२५) कवरजी श्री सरसिंघजी री खीवर
२५)१ श्री दरबार सु पायो
२५) गेवडा   १ पासाख १
२५)१   पत्र सख्या—८ अ

खावर (मुण्डन) सस्कार पर देवी-देवताओं की पूजा होती थी । मुण्डन का मुहूर्त निकाला जाता था और मगलाचार के गीत गाये जाते थे । इस बही की निम्न पक्तियों से उपयुक्त बात स्पष्ट है यथा—

'मीरथ रो थाळ श्री राणीजी सा रा डावडा तारे राज रा मीनख गीतरेणीया क दोढी ऊपर जरोखा म व्यास प्रोयत जोसी बेदीया सारा हाजर हुवे जठे डावडा रे माथे ऊ थाळ श्री नागणेचीया माताजी रो सेवग

से ने पधराव तर जोसी लगन लीसे तीण री पुजन व्यास पुरायन करे तीण मसन मगलाचार कराव। पछे पाछा थाळ सवग लेने डावडा रे माये धरे नरे रगराग करती माय गइ।" पत्र सख्या—१० अ

ऐसे अवसरों पर राजघराने में भी प्राय उन्ही देवताओं की पूजा होती थी जो सामान्य जनता पूजती है। वही रीति रिवाज सम्पन्न होते थे जो सामान्य जनता सम्पन्न करती है। अन्तर केवल इतना ही था कि राजघराने में ऐसे रीति रिवाज विशेष ढग से सम्पन्न होते। उनमें हजारो रुपये खर्च होते। दूसरी तरफ जनता साधारण ढग से ऐसे ही रीति रिवाजों को सम्पन्न करती थी।

इस बही में उल्लिखित उपर्युक्त दोनों संस्कार राजस्थानी संस्कृति की विशेषता को उद्घाटित करते हैं।

१८४ महाराजा श्री तख्तसिंहजी रे राजलोक श्री जाडेचीजी री बही

१ क्रम सख्या—१२७४, ३ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिंहजी रे राजलोक श्री जाडेचीजी री बही ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र० ४ पत्र सख्या—४६ ५ लिपि समय—सवत् १९३२ भादवा सुद १२ से मिगसर सुद ४, ६ विशेष विवरण—राजघराने में 'अगरणी' व जन्मोत्सव मनाने की परम्परा रही है। बही के अनुसार महाराजा तख्तसिंह के जाडेचीजी ने बड़ी रानी राणावत की अगरणी एव महाराजकुमार के जन्म होने पर उनका जन्मोत्सव मनाया। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रानियो में परस्पर घनिष्ठ प्रेम था। व आपसी सद्भाव बनाये रखती थीं।

अगरणी का उत्सव —

गर्भवती रानी के सन्तान होने के पहले अगरणी उत्सव मनाया जाता था। इस समय गुड बाटा जाता था। राजघराने की महिलाएँ (रानियाँ, राजकुमारियाँ व अन्य) गर्भवती रानी का खोळ भराती थी। उसकी खाने-पीने की हर इच्छा पूर्ण की जाती थी। इस अवसर पर गर्भवती रानी को रुपये वस्त्र, मिठाइयाँ आदि भेंट किये जाते थे। बही की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है—

'अगरणी रा उछव भादवा सुद १२ ने हुयो तरे
गाळा तथा साधा आई तीण रा
खाळा रा जमा—

६) माजी श्री तीजा भटीयाणी दादीजीसा रा दुरोटा रा

६) रोकड कळदार	१) साडी	
१) मवा रा थाळ	१) काचळी	पृ० सख्या—१

६) रानजी श्री गोपालसिघजीसा रे बळभ्रा रा—

४) राकड	१) साडी लपा री	
२) मवा रा थाळ	१) काचळी कोर री	
	१) श्रीफल	पृ० सख्या—५

रानी को दी गई वस्त्रा की भेंट स लगता है कि उस समय साडी का भी प्रचलन था।

जन्मोत्सव —

राजघराने म ज मोत्सव मनाने की परम्परा रही है। बही क अनुसार रानी जाडेची बडा रानी राणावत द्वारा महाराजकुमार को जन्म देन पर उनका जन्मोत्सव विशेष हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर राजघराने के व्यक्तिया को मिठाइया व थाल ब्राह्मणो को दक्षिणा, कमीणो का इनाम व मन्दिरो मे पोशाक एव मिठाइया के थाळ भेंट किये गये। महाराजा तो अपने राजकुमार का जन्म उत्सव मनाते ही थे। मगर किसी रानी द्वारा दूसरी रानी क राजकुमार जन्म लेने पर उनका जन्मोत्सव मनाना राजकुमार को जन्म देने वाली रानी क प्रति विशिष्ट सम्मान एव प्रेम का ही प्रतीक है।

ज मोत्सव पर राजकुमार के हाथ मे राजघराने के एव सम्बन्धित व्यक्ति रुपये देते थे। ऐसा ही उल्लेख इस बही में आया है यथा—

'श्री भवरजीसा रा हाथ मे रोकडा कळदार

५) श्री छोटा राणावतजीसा री तरफ ऊ श्री भवरजीसा र हाथ मे

१) भार थान

५) रुपीया पाच कळदार बही के अन्तिम पृष्ठ पर

इस अवसर पर पडदायतें भी महाराजकुमार के हाथ म रुपए, मिठाइया व वस्त्र भेंट करती थी यथा—

१) पडदायत श्री मेहताबरायजी रा

१) रोकड रुपीया	१) आरणीयो	
१) थाळ मवा रा	१) टोपी	पृ० सख्या—६४

अन्य लोग भी जिनका राजघराने से सम्बन्ध होता था, महाराजकुमार को भेंट देते थे, यथा —

२) नथुजी री बऊ रा १) आरणीयो दुसीका रो

१) टोपी दुसीका री पृ० संख्या—७२

महाराजकुमार के जन्म की बधाई देने वालों को भी रुपये इनाम में दिये गये, यथा—

श्री मयरजीसा रा जनम मीगसर वद ४ गुरुवार ने

१२) श्री तीजा देवडीजीसा रा

५) डावड़िया न

६) खालसा वालीया ने पृ० संख्या—५१

इस बही में राजघराने में राजकुमार के जन्म के पहले व जन्म होने पर सम्पन्न की जाने वाली परम्पराओं एवं रीति रिवाजों के बारे में विशेष रूप से जानकारी मिलती है।

१८५ महाराजा श्री तख्तसिंहजी रे राजलोक श्री तीजा (तृतीय) चवाणजी रे जनानी ड्योढी खर्च री

१ क्रम संख्या— १५५६, २ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिंहजी साहब रे राजलोक श्री तीजा (तृतीय) चवाणजी रे जनानी डयोढी खर्च री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र संख्या—६५, ५ लिपि समय—संवत् १९३६ आश्विन मास से १९३७ मिगसर बद १४, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत बही में जनानी डयोढी के खर्चे का विवरण है। तृतीय चौहान रानी द्वारा रंगरेज, सुनार, कन्दोई पिंजारे आदि को काम के बदले दिये गये रुपयों का विवरण है। इस बही से उस समय उपयोग में आने वाले कपड़े, आभूषण, मिष्ठान्न, बर्तन, बिस्तर आदि तथा वस्तुओं के भावों के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है।

कपड़े —

बही में दुपट्टे व मलमल का उल्लेख आया है। इनको कुछ विशेष रंगों में रंगा जाता था, इनके मूल्य भी अंकित किये गये हैं। कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य है—

।=) रोपीया रो कीरमची गज २।=

॥≡)॥। मुलमुल बेंगणीया गज ४=

।-)॥ मुलमुल गेरी गुलाबी गज ६॥- पृ० संख्या—१

अंगरखिया व पायजामा के रंगाने का भी वर्णन है, यथा—

गुलाबी रंगीया

अंगरखीया ४

पायजामा ४

उस समय अंगरखिया व कुरता में पहनने का बहुत रिवाज था। जगनाथी मलमल प्रसिद्ध थी। इसका उल्लेख इस प्रकार है—

॥ =)८ जगनाथी मुनमुल गज ४ पृ० सख्या—१

इस मलमल से अंगरखिया, ओरणे व पायजामे बनवाये जाते थे। जाली के ओरणा की भी इसमें चर्चा है।

बही के अनुसार कपड़ा को रंगने के लिए उपयोग में लिये जाने वाले रंग निम्न है—

गहरा गुलाबी बैंगनिया, कबूतरिया, मयूरिया मोतिया हल्का गुलाबी, कपासिया (कपास जैसा आदि।

इसमें राजस्थान के रंगरेजों के नाम भी आये है। यह रंगत ईमाम बक्श व जमाल रंगरेज से करवाई जाती थी।

इसमें स्त्रियों की पोशाक का भी उल्लेख है। यथा स्थान कांचली, कुरती व लहंगा का भी वर्णन है।

मिष्ठान्न —

इस बही में देवस्थान में भेजी गई एवं जनानी ड्योढी में विभिन्न अवसरों पर मंगवाई गई मिठाई का उल्लेख आया है।

राजकुमारी की वर्ष गाठ पर मंगवाई गई मिठाई का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

७) मीठाई खरीद

१) छोटा लाडू

१) पताशा खरीद पृ० सख्या—२२

ओरी माता के चढाई गई मण्डार में बोलमा का प्रसाद व शिवरात्रि के अवसर पर चढाई गई मिठाइ का वर्णन है। मिठाइयों में घेवर, लड्डू जलेबी कौटी, पेडा हलुआ मोतीचूर के लड्डू, मोडलिली (छोटे मखाणे) तिल पापडी आदि का उल्लेख है। कुछ नमकीन का भी जिक्र है यथा—कचोरिया सेव, सिंगोड की सेवा आदि।

विवाह के अवसर पर मगवाई गई मिठाई का उल्लेख है, यथा—

॥।=) पोस रा मास मे

॥।–) वद १० माराज श्री जालमसिहजीसा रा व्याव

रो बनोलो मलीयो तीण मे मीठाई—

घेवर मीसरी

।–) ॥) पृ० सख्या—२७

वष गाठ पर मगवाई गई मिठाई का उल्लेख इस प्रकार है—

श्री समरथ बाईजी लाल री बरस गाठ रो उछब

४) मीठाई

१) पतासा मारू

१) गुजा रा पठा १) ॥।)

१) मीठाई १) री २=

१) छोटा लाडू २=) पृ० सख्या—२८

इस प्रकार 'कीरयावर', ओरी माता की पूजा के लिए 'बोलमा का प्रसाद' चढाने के लिए, माताजी के मदिर पर फूल मण्डली के समय एव गढ ऊपर आने वाली मिठाइया का उल्लेख इस बही मे है।

आभूषण –

इस बही मे विभिन्न आभूषणो का भी जिक्र है जो समय-समय पर बनवाये गये। इनमे कुछ आभूषणो के नाम इस प्रकार है—बोर (सोने का), मादलिया, कडा, हासली, टोटिया साकलिया, कडला, गुगरो की बालिया, नवरिया, सोने की चूडिया, सोने का हार, मोतियो का हार, हाथी दात का चूडा आदि।

इनम से कुछ आभूषण देवस्थान भी भेजे जाते थे। बही म राजघराने के आभूषण बनाने वाले कुछ सुनारो के भी नाम आये हैं, यथा—पूनाराम, मगाराम, रतनाराम, जीतमल आदि।

बहा के अनुसार सोन चादी के आभूषणा को तोलने के लिए तोले व रती का प्रयोग होता था।

बतन –

बही मे उस समय उपयोग मे लिये जाने वाले विभिन्न धातुआ के बतना के बारे मे भी उल्लेख है।

पीतल के बर्तनो के नाम इस प्रकार है—थाल, थालिया, परात, कड़ावलिया, भारा कुंडची कुंडचा लोटा, पीतल का मठवा, कलश, वाटकिया आदि।

ताबे के बर्तन इस प्रकार हैं—वागना, दग, दग के ढकणे, डाल आदि।

कासी के बर्तन इस प्रकार है—वाटकिया, वाटका, तासली, थाली आदि।

कुछ पीतल के बर्तनो का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

वासण री बीगत

पीतल रा वासण

१२) थाल मोटा छोटा

३ ६

१०) थालीया

१) परात

बिस्तर —

बही मे पिंजार से जनानी ड्योढी के लिए तैयार किये गये कुछ बिस्तरो का भी यथास्थान उल्लेख है। कुछेक के नाम इस प्रकार हैं—

घासिया, तकिया, पौडे (बाजोट) पर रखने की गादी, गदरा, पथरणा, रजाई आदि।

इसमे लाडूखा नामक पिंजारे का नाम आया है। यह राजघराने का पिंजारा था।

घासिये का उल्लेख इस प्रकार है, यथा—

घासीया १ लाखी रो पाटरे रो, बाईजी लाल साहबा रे।

इस बही मे उस समय के कपडे, मिठाइया, आभूषण, बर्तन एव बिस्तर आदि के बारे मे विस्तृत रूप से उल्लेख है। साथ मे वस्तुओ के मूल्य भी अकित है और कही-कही मजदूरी के पैसे भी इगित किये गये है। इससे तत्कालीन राजघराने के सामाजिक एव आर्थिक जीवन पर प्रकाश पडा है।

१८६ महाराजा श्री तख्तसिहजी के पडदायत श्री रूपजोत री बही

१ क्रम सख्या—१६२१, २ बही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिहजी के पडदायत श्री रूपजोत री बही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४ पत्र सख्या—६४, ५ लिपि समय—सवत् १९१६ जेठ बदी १०, ६ विशेष विवरण—प्रस्तुत

वही मे देवस्थान, पाकशाला तथा दासियो पर खर्च हुए रुपया का विवरण दिया है। वही म महाराजा तख्तसिह न श्री रूपजोत को पडदायत की पदवी दी, उस रस्म पर खर्च हुए रुपया का भी विवरण है।

पडदायत की पदवी, राजघराने की रस्म –

राजघराने में यह परम्परा थी कि महाराजा जिस रखैल पर खुश हो जाते उसे 'पडदायत' (पर्दे म रहने वाली) की पदवी देते थे। इस अवसर पर उसे सोना इनायत किया जाता था। इस अवसर पर एक रस्म का आयोजन होता था। जिसमे नई पडदायत को पूर्व की पडदायतें रुपयो व वस्त्रो की भेंट भी देती थी। राजघराने के अन्य लोग भी उसे भेंट देते थे। इस दिन नई पडदायत का सम्मान होता था। यह रस्म भी राजकुल मे महत्वपूर्ण मानी जाती थी। प्रस्तुत वही मे उपयुक्त सभी उल्लेखो का वर्णन है।

इस वही के अनुसार महाराजा श्री तख्तसिहजी ने अपनी रखैल रूपजोतजी को पडदायत की पदवी दी और उसे पैरों म सोना व हाथो मे हाथी दात का चूडा पहनन का अधिकार प्रदान किया। यह दिन राजकुल की परम्परानुसार एक रस्म के रूप मे मनाया गया। इस अवसर पर ब्राह्मणो को रुपये दान मे दिये गये। वही का कुछ अश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है—

"जेठ वद १० सोनो इनायत हुवो ने चूडो दात रो
पटीया रो नै पडदायत पदवी हुई तरै
६॥) नग श्री धरम वद—
१) जोसी सावलदास दीठी रा चुडा रो
१) घर रा बीरामणा ने भूरसी रो
× × ×
१) पनरामजी री बामणी ने भूरसी रो   पृ० सख्या—१३८

इस अवसर पर कमीणो को भी रुपये दान मे दिये जाते थे, यथा—

६।।।) कमीणा ने दीया
१।।।) लखारा काळु री बहु न
१) चूडो पेरायो तिण ने
× × ×
१) घर री नायण काच दीखायो तरै १)   पृ० सख्या—१४१

१८७ महाराजा श्री तख्तसिंहजी के पडदायत श्री फूलराय रे दान पुन री वही

१ क्रम संख्या—१६४५ २ वही का नाम—महाराजा श्री तख्तसिंहजी के पडदायत श्री फूलराय रे दान पुन री वही, ३ प्राप्ति स्थान—पु० प्र०, ४. पत्र संख्या—१५ ५ लिपि समय—१९३७ वैशाख वद ७ से १९४६ आषाढ वद ७, ६ विशेष विवरण—महाराजा तख्तसिंह के पडदायत फूलराय द्वारा पुण्य हेतु विभिन्न अवसरों पर ब्राह्मणों को कराये भोजन व दक्षिणा में खर्च हुए रुपयों का विवरण है।

धार्मिक जीवन –

राजघराने की स्त्रियाँ राजनीतिक कार्यों के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में भी बराबर भाग लेती थी। वे ब्राह्मणों को मुक्त हस्त से दान करती थीं एवं उन्हें विभिन्न अवसरों पर भोजन व दक्षिणा के लिए आमन्त्रित करती थी।

प्रस्तुत वही में ऐसा ही उल्लेख है। महाराजा तख्तसिंह की पडदायत फूलराय ब्राह्मणों को पुण्य अर्जन करने हेतु भोजन कराती थी व उन्हें दक्षिणा देती थी। वही के अनुसार ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराया। उस भोजन के लिए पाँच रुपया की चीजें आयी, जिनका उल्लेख द्रष्टव्य है, यथा—

५)

२।) खाड	१) घीरत
।।।) आटो	।) मुगमणो
≈) केरीया	≈) साग
≈) दूध	≈) मसाला
	।) दीखणा

पृ० संख्या—१

कुछ ब्राह्मण व ब्राह्मणियों को दक्षिणा के रुपये भेंट किये, उनके नाम इस प्रकार है यथा—

१) जोसी छोटमलजी
१) जोसी रघुनाथ री बहू
१) जोसी देवीचन्दजी

पृ० संख्या—१

संवत् १९३९ में भाद्रपद मास में बारी के ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। उस समय जो जीनस आयी उसका उल्लेख द्रष्टव्य है, यथा—

३) खाड
३।) घीरत
॥) मदा
।=) आटो
।☰) दीमणा रा दीया पृ० सख्या—२

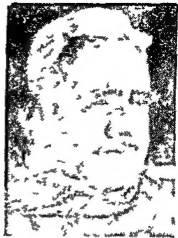
सवत् १६४४ मे जिन ब्राह्मणो को भोजन कराया उनके कुछ नाम इस प्रकार है, यथा—

वीगत बीरामणा री
१) वोरा मानीरामजा
१) बारा साळगरामजी
१) व्यास मगदत्तजी पृ० सख्या—१६

इस प्रकार तत्कालीन धार्मिक कर्मकाण्डो एव महाराजा के उप पत्नियो के जीवन पहलुओ पर वही म प्रकाश पडा है।

51/512-

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०
महदास	महेशदास	२३	१०
३५	४५	४५	१९
आसा	आशा	१२५	१
रूपसिंघणी	रूपसिंघजी	१२६	१
सिपीत	सिपोत	१३१	२१
६६	३६	१३२	२२
४२	४३	१३३	५
रो	रौ	१३३	१३
मानसिच	मानसिंघ	१३६	१६
१०२	१०३	१४६	८
६	३	१५५	१५
क्यात	स्यात	२०३	१०
धुपटो	दुपटो	२१६	२
बाजुबन्द	बाजुबन्द	२१९	८
मिस्त्री	मिसरी	२३९	१८
यादि	आदि	२४५	२०
दायादात	दायादान	२५८	६
वप	पत्र	२६०	२०
रपये	रुपये	२६१	१
हष्टि	दृष्टि	२६३	२
महानी	महारानी	२६६	२०
गाठ	वषगाठ	२६६	२१



* जन्म सन् १९३०, माळूंगा ग्राम (जोधपुर)
* शिक्षा एम ए, एल एल बी, पी एच डी
  (राजस्थान विश्वविद्यालय)
* संस्थापक निदेशक राजस्थानी शोध संस्थान,
  चौपासनी, जोधपुर (१९५५)
  (जोधपुर विश्वविद्यालय से मान्यता
  प्राप्त शोधकेन्द्र)
* सम्पादक शोध पत्रिका परम्परा (१९५६ से
  वर्तमान तक
* सम्पादित ग्रन्थ इतिहास की सामग्री—बीस ग्रंथ
  प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रंथ
* ग्रन्थ लेखन डिंगल गीत साहित्य, राजस्थानी
  साहित्य कोष व छंद शास्त्र आदि
* राजस्थानी के युग प्रवर्त्तक मूर्धन्य कवि
  ग्यारह काव्य कृतियां प्रकाशित
* केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनेक संस्थाओं
  से पुरस्कृत व सम्मानित
* शोध निर्देशक इतिहास व राजस्थानी विषय
  (जोधपुर विश्वविद्यालय)
* प्रोजेक्ट निर्देशक भारतीय इतिहास अनुसंधान
  परिषद्, नई दिल्ली
* महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोर्ट
  जोधपुर) के सम्मान्य निदेशक